

राजस्थान में शिक्षानुसंधान

सम्प्राप्तियाँ एवं
सम्भावनाएँ

सम्पादक
इन्द्रजीत खन्ना
डा पन्नालाल वर्मा

शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर

राय शोध प्रकोष्ठ

© शिक्षा विभाग, राजस्थान,
बीकानेर
334001



प्रथम संस्करण
1976



मलाहकार
सुखी उषासुंदरी बली
प्रो चतरसिंह मेहता
डा इयामलाल कौशिक



समीक्षक
भगवानलाल व्यास
जनादनप्रसाद शर्मा



मुद्रक
अय्यपुर प्रिण्टर्स
एम धाद राह अय्यपुर
302001

प्राक्कथन

शिक्षानुसंधान से प्राप्त निष्कर्षों का समुचित लाभ उठाने का भाग में जो समस्याएँ अनुभव की जाती रही हैं, उनमें मुख्य है — समय का समस्या तथा अनुसंधान से निःसृत तथ्या के प्रसारण और प्रकाशन की समस्या । समय के अभाव में जहाँ एक ओर अनावश्यक दोहरान और अपव्यय होता है वहाँ दूसरी ओर ज्ञान की खोज व ज्ञान का विकास में रत अनुसंधातागण अपने पूर्ववर्ती अनुसंधातागण के छात्र प्रयत्ना का लाभ से वंचित रह जाते हैं । इसी प्रकार अनुसंधान से उभरा ज्ञान यदि प्रकाश में नहीं लाया जाता तो उससे स्कूला में कार्यरत अध्यापक, शिक्षक प्रशिक्षक और शिक्षा प्रशासक भी वंचित रह जाते हैं । ऐसी स्थिति में शिक्षानुसंधान केवल उपाधि पाने का साधन अथवा अनुपयोगी मानसिक ब्दायाम मात्र बन कर रह जाता है । प्रस्तुत प्रकाशन समय का दृष्टि से और अब तक की खोजों को प्रकाश में लाने का राजस्थान-स्तर पर पहला प्रयास है ।

राज्य शोध प्रकोष्ठ,

© शिक्षा विभाग, राजस्थान,

बीकानेर

334001



प्रथम सम्बरण

1976



सलाहकार

मुन्शी उषामुन्दरी बली

प्रो. चतुरसिंह मेहता

डा. श्यामलाल बौशिक



समीक्षक

भगवानलाल ध्यास

जनादनप्रसाद शर्मा



मन्त्र

जयपुर प्रिण्टस

एम. एच. राट जयपुर

302001

प्राक्कथन

शिक्षानुसंधान से प्राप्त निष्कर्षों का समुचित लाभ उठाने का माग में जो समझाएँ अनुभव की जाती रही हैं उनमें मुख्य है — समय का समस्या तथा अनुसंधान से निःशुन तथ्यांक प्रसारण और प्रकाशन की समस्या । समय के अभाव में जहाँ एक ओर अनावश्यक दोहरान और अव्यय होता है वहाँ दूसरी ओर ज्ञान की खोज व ज्ञान का विकास में रत अनुसंधातागण अपने पूर्ववर्ती अनुसंधाताओं के शोध प्रयत्ना के लाभ से वंचित रह जाते हैं । इसी प्रकार अनुसंधान से उभरा ज्ञान यदि प्रकाश में नहीं लाया जाता तो उससे स्कूलों में कार्यरत अध्यापक, शिक्षक प्रशिक्षक और शिक्षा प्रशासक भी वंचित रह जाते हैं । ऐसी स्थिति में शिक्षानुसंधान केवल उपाधि पाने का साधन अथवा अनुपयोगी मानसिक व्यायाम मात्र बन कर रह जाता है । प्रस्तुत प्रकाशन समय की दृष्टि से और अब तक की खोजों की प्रकाश में लाने का राजस्थान-स्तर पर पहला प्रयास है ।

राजस्थान में शिक्षानुसंधान का शुरुआत 1953 से हुई है, जब एम एड उपाधि प्राप्त करने के प्रयाजन से इस क्षेत्र में अनुसंधान कायदा शुरू हुआ। तब से 1974 तक एम एड स्तर पर 673 पाठ्य ढा (गिना) स्तर पर 19 तथा सध्यागत धोर व्यक्तिगत स्तर पर कई अनुसंधान काय गणप्र हूण । विभिन्न स्तरा पर हूण न कायों में समन्वय स्थापित करना अधरा इनके निष्कर्षों का पुनर्वाचना का न अधमागिषा में वातावरण का आरखकता एवं मन्ता स्थापित तो का जानी रहा, जगा रि दाम्भन छुट पुट रूप में सस्था-स्तर पर शाप मुनिया अधरा मार-मधेवा के प्रकाशन के प्रवर्तना में अनुमान लगाया जा सकता है कि नु नम गिना में काई मुनियामित काम अब तक हुआ है एगा नना समता । ही राष्ट्राय स्तर पर एन सा ई धार टी धाम मा एम एम धार तथा यू जा सा द्वारा शाप गुना प्रकाशन के माध्यम में धोर शाप प्रवर्ति निष्पण के माध्यम से एम गिना में कुछ प्रवर्तन हुए धरख । फिर भी, राजस्थान में हूण शिक्षानुसंधान का समग्र चित्र कभी उजागर नहीं हो पाया । फिर जा कुछ हुआ पर अधरा में हमा । पवन सूत्रा में कायरन अध्यापका शिक्षक प्रशिक्षका गिना प्रशासका धाति का उनका पूरा लाभ नहीं मिल पाया ।

शिक्षानुसंधान में समन्वय का भूमिका निमान के तहत से 1973 में जब निम्नलिखित में राज्य शाप प्रकाठ की स्थापना हुई तो इन बिगरे धिनर भिन्न भिन्न स्तरा पर हूण शिक्षानुसंधाना का सवर्तिन करके प्रकाशित करने के बिचार पर पहली बार ध्यान गया । उपलब्ध ज्ञाना के मार-मधेवा एम सधम अध्यापका/प्रधानाध्यापका द्वारा तयार करवाण गण । प्रश्न या प्रकाशन के स्वरूप निधारण का । एम एड अनुसंधाना मन्ति मभा अनुसंधान कायों के मार-मधेवा प्रकाशित करने का बिचार स्थापना उचित समझा गया कपाकि उस रूप में प्रकाशन करने व्ययगाध्य हा जाना धोर उगत । उपयागिता भी मन्थिय रहता । प्रम्नुन प्रकाशन के स्वरूप निधारण का मुनियाना धारणा यह रहा है कि यह एक धार ता सूत्रा में कायरन अध्यापका धोर शिक्षक प्रशिक्षका के लिए उपयागा हा मके धोर दूसरा धार शिक्षानुसंधान में रवि रगत वात एवं कायरन व्यति/सध्यापका के लिए म्द प्रामागिक गन्ध माहिय का काम कर मके । इसमें उपलब्ध शाप निष्कर्षों से अध्यापक/प्रधानाध्यापक अपनी अपनी भूमिका के निबन्धन में भी लाभ उठा मके धोर अनुसंधानागण यह जान मके कि अब नव शिक्षानुसंधान के क्षेत्र बिाग में क्या क्या तथा किन्ता कुछ हुआ है कौन-कौन से विषय अधून हैं तथा मामाजिक-सासृहिक परिवर्तना तथा आधखकताधा के मन्ध में किम प्रकार हा शाप प्रवृत्तियाँ जग्गा हैं । इस मन्ध में धा ज या नायन मन्धर मन्धरा धाम सा एम एम धार के प्रति आभात व्यवन

करना उपयुक्त होगा, जिनके द्वारा पहले किए गए सार-संक्षेप के हमारे प्रयास पर दी गई उनकी टिप्पणी से हम भागदशन मिला तथा प्रकाशन को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का चुनौतीपूर्ण निम्न हम लें सब ।

उपलब्ध अनुसंधान की समीक्षा 12 क्षेत्रों में की गई है । क्षेत्र विभाजन का निश्चय किसी पहले से प्रकाशित पुस्तक का अनुकरण करते हुए नहीं, अपितु स्वतंत्र भाव से, राजस्थान के उपलब्ध अनुसंधान की प्रकृति तथा प्रवृत्ति निरूपण की संभावना के सद्वन में किया गया है । इस में सलाहकार मंडल की अनुशंसा समीक्षा समिति की टिप्पणी तथा 16-17 जनवरी 1976 को आयोजित कायगोष्ठी में हुए विचार विमर्शों का मुख्य योगदान रहा ।

उपलब्ध अनुसंधान के अनुशीलन में लेखकों के अनुसंधान कार्यों की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए, प्रवृत्ति निरूपण के प्रस्तुतीकरण में कुछ सीमा तक एकरूपता एवं तारतम्य लाने की दृष्टि से और विभिन्न दृष्टिकोणों से उनकी समीक्षा करते हुए प्राप्त निष्कर्षों को सप्रयोजित करने उनमें समझ भाव स्थापित करने तथा अनुशीलन प्रक्रिया से उभरने वाली प्रवृत्तियाँ अछूते आयातों तथा सामाजिक परिवर्तनों के सद्वन में भावी अनुसंधान के लिए दिशा संकेत करने की नीति में प्रथम के निर्माण में रही है । यह इसलिए कि प्रस्तुत प्रथम भाग निष्कर्षों का संकलन ही न बन, बरन स्कूल और अनुसंधान के लिए पथ प्रदर्शन बन सके ।

निश्चय ही इन अपेक्षाओं के कारण प्रवृत्ति निरूपण का कार्य और अधिक कठिन बन जाता है किंतु मुख्य प्रसन्नता है कि लेखकों ने कार्य के साथ ध्यान दिया है । मैं उन्हें इस कार्य में सफलता के लिए बधाई देता हूँ, वही साथ ही आभार व्यक्त करना चाहूँगा कि उन्होंने बिना किसी पारिश्रमिक की अभिलाषा के यह महत्वपूर्ण व चुनौती भरा कार्य अपने अतिरिक्त समय में पूरा किया ।

लेखकों के चयन में जहाँ एक ओर यह ध्यान रखा गया कि वे शिक्षानुसंधान तथा लेखन क्षमता की समुचित योग्यता/क्षमता रखते हैं वहाँ दूसरी ओर यह भी ध्यान रखा गया कि पूरे लेखक दल में शिक्षानुसंधान से संबंध सभी संस्थाओं/प्रभिकरणों का प्रतिनिधित्व भी हो जाए । इसी प्रकार इस चयन में यह भी ध्यान रखा गया कि अध्यापक प्रधानाध्यापक, शिक्षक प्रशिक्षक शिक्षा प्रशासक आदि सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व भी यथासंभव हो जाए ।

राजस्थान में शिक्षानुसंधान का शुभघात 1953 में हुई है, जब एम एड
उपाधि प्राप्त करने के प्रयोजन से इस क्षेत्र में अनुसंधान कार्य होना लग। तब से 1974 तक
एम एड स्तर पर 673 पाठ्य ढा (शिक्षा) स्तर पर 19 तथा सम्मानित और
अविश्वस्त-स्तर पर कई अनुसंधान कार्य सम्पन्न हुए। विभिन्न स्तर पर हुए इन कार्यों
में समन्वय स्थापित करने अथवा स्तर निष्कर्षों का पुनर्वासना का बंधनमात्रिका में
बाह्य स्तर का आश्चर्यता एवं मन्त्रा स्तरांतर तो भी जाना रहा, जगा कि स्मृत
छुट छुट रूप में मन्त्रा स्तर पर शाध सुविधा अथवा मार-मन्त्रा के प्रकाशन के प्रयत्न।
में अनुमान लगाया जा सकता है कि नु र्ग शिक्षा में कोई सुविधाजित काम अब तक
होना ही एगा नही लगता। ही गण्टाव स्तर पर एने मा र्ग स्तर ढा, पाठ्य
मा एम एम स्तर तथा यू जी सी द्वारा शाध सुविधा प्रकाशन के माध्यम में
और पाथ प्रवृत्ति निम्नण के माध्यम में इस शिक्षा में कुछ प्रयत्न हुए अवरय। फिर भी,
राजस्थान में हुए शिक्षानुसंधान का समग्र चित्र कभी उजागर नहीं हो पाया। फिर जो
कुछ हुआ वह अथडा में हुआ। पत्रन स्मृति में बाधरत अध्यापना शिक्षा प्रशिक्षण
शिक्षा प्रणमना शिक्षा का उनका पूरा लाभ नहीं मिल पाया।

निष्ठानुसंधान म मन्त्रालय का भूमिका निम्नानुसार 1973 म जब निष्ठानुसंधान म राज्य शासक प्रकाशित का स्थापना हुई ता इन विचार विमर्श भिन्न भिन्न स्तर पर निष्ठानुसंधान का संचालन करने प्रस्तावित करने का विचार पर पहला बार ध्यान गया । उपलब्ध साधन का मन्त्र-मन्त्र सभाम अध्यापक/प्रधानाध्यापक द्वारा तयार करवाए गए । प्रश्न था, प्रस्तावित का स्वयं निष्पत्ति का । मन्त्र मन्त्र अनुसंधान सन्धि सभा अनुसंधान कार्यो का मन्त्र-मन्त्र प्रस्तावित करने का विचार त्यागना उचित मन्त्रभा गया क्योकि उस मन्त्र म प्रस्तावित करने व्ययगाध्य हा जाता और उमरा उपयोगिता भा मन्त्रिम रत्ना । प्रस्तुत प्रकाशन का स्वयं निष्पत्ति की बुनियाद धारणा यह रहा है कि यह एक मन्त्र ता मन्त्रता म कायम अध्यापक और निम्न प्रविष्टता का लिए उपयोग हा मन्त्र और दूसरा मन्त्र निष्ठानुसंधान म मन्त्र मन्त्र वास्तव्य कायम व्यति/मन्त्राभा का लिए मन्त्र प्रामाणिक मन्त्र मन्त्र का काम कर मन्त्र । मन्त्र उपलब्ध साधन निम्नो म अध्यापक/प्रधानाध्यापक अपना अपना भूमिका का निम्न म भा साम उठा मन्त्र और अनुसंधानागण यह जान मन्त्र कि मन्त्र तन्त्र निष्ठानुसंधान का क्षेत्र विषय म क्या क्या तथा विन्ता कुछ मन्त्रा है कौन-कौन म विषय मन्त्र है तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन तथा मन्त्रमन्त्रताका मन्त्र मन्त्र मन्त्र प्रकार का मन्त्र प्रवृत्तियाँ मन्त्रा है । मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र ज का नायक मन्त्र सन्त्रेदी मन्त्र सा मन्त्र मन्त्र मन्त्र का मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

करना उपयुक्त होगा, जिनके द्वारा पहले किए गए सार-संक्षेपों के हमारे प्रयासों पर दी गई उनकी टिप्पणी से हम भागदशन मिला तथा प्रकाशन का हिंदी भाषा में प्रस्तुत करने का चुनौतीपूर्ण निष्पत्ति हम से सके ।

उपलब्ध अनुसंधानों की समीक्षा 12 क्षेत्रों में की गई है । क्षेत्र विभाजन का निश्चय किसी पहले से प्रकाशित पुस्तक का अनुकरण करते हुए नहीं, अपितु स्वतंत्र भाव से, राजस्थान के उपलब्ध अनुसंधानों की प्रकृति तथा प्रवृत्ति निरूपण की संभावना के संदर्भ में किया गया है । इस में सलाहकार मंडल की अनुशंसा समीक्षा समिति की टिप्पणी तथा 16-17 जनवरी 1976 को आयोजित कार्यगोष्ठी में हुए विचार विमर्शों का मुख्य योगदान रहा ।

उपलब्ध अनुसंधानों के अनुशीलन में लेखकों के अनुसंधान कार्यों की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए, प्रवृत्ति निरूपण के प्रस्तुतीकरण में कुछ सीमा तक एकरूपता एवं तारतम्य लाने की दृष्टि से और विभिन्न दृष्टिकोणों से उनकी समीक्षा करते हुए प्राप्त निष्कर्षों को संग्रहित करने, उनमें संबंध भाव स्थापित करने तथा अनुशीलन प्रक्रिया से उभरने वाली प्रवृत्तियाँ, अछूते आयामों तथा सामाजिक परिवर्तनों के संदर्भ में भावी अनुसंधानों के लिए दिशा संकेत करने की नीति इस ग्रंथ के निर्माण में रही है । यह इसलिए कि प्रस्तुत ग्रंथ मात्र निष्कर्षों का सङ्कलन ही न बने, बरन् स्कूलों और अनुसंधानों के लिए पथ प्रदर्शक बन सके ।

निश्चय ही इन अप्रत्याशा के कारण प्रवृत्ति निरूपण का कार्य और अधिक कठिन बन जाता है किन्तु मुझे प्रसन्नता है कि लेखकों ने कार्य के साथ 'यात्रा' किया है । मैं उन्हें इस कार्य में सफलता के लिए बधाई देता हूँ, वहाँ साथ ही आभार व्यक्त करना चाहूँगा कि उन्होंने बिना किसी पारिथमिक की अभिलाषा के यह महत्वपूर्ण व चुनौती भरा कार्य अपने अतिरिक्त समय में पूरा किया ।

लेखकों के चयन में जहाँ एक ओर यह ध्यान रखा गया कि वे शिक्षानुसंधान तथा लेखन दोनों की समुचित योग्यता/क्षमता रखते हैं वहाँ दूसरी ओर यह भी ध्यान रखा गया कि पूरे लेखक दल में शिक्षानुसंधान से संबंध सभी संस्थाओं/अभिकरणों का प्रतिनिधित्व भी हो जाए । इसी प्रकार इस चयन में यह भी ध्यान रखा गया कि अध्यापक प्रवर्ग/अध्यापक शिक्षक प्रशिक्षक, शिक्षा प्रशासक आदि सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व भी यथासंभव हो जाए ।

राज्यशाप प्रकाश न इस प्रयाजना व आयाजन तथा त्रिशोऽयन म जा भूमिना निभाइ वह इमका स्थापना व औचित्य का सिद्ध करना है । मैं उन सभी व्यक्तियों एवं सम्प्रदायों व प्रति जिनका हम म प्रत्यक्ष अवका एकाग्र मन्त्राण रहा आभार व्यक्त करता हूँ ।

मैं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् व प्रति कृतज्ञ हूँ जिनके हम पुस्तक का उपयोग माना और आर्थिक सहायता प्रदान का ।

मुझे आशा है कि प्रस्तुत प्रकाशन राज्य म एवं मन्त्रालय अभाव का पूर्ति कर सकगा तथा अप्यायन, अभिभावक अनुसंधान विभागाधिकार विम्व प्रविम्व आनि सभी व विम्व उपयोग सिद्ध हागा तथा सभी का भूमिशाखा व विम्व विम्व न विम्व रूप म वमविम्व माग-पान कर सकगा । विम्व विभाग का यह एव विम्व प्रकाश है जा कई स्तर व विम्व विम्व जगता व सामाजिक विम्व विम्व रा कर है । बहुत समय है वता काई श्रुति एव भी गद हा । मुझे विश्वास है कि महम्व पाठक एव आर ध्यान आरविम्व करेगे, ताकि विम्व व विम्व उम पर विम्व विम्व जा सक ।

इन्दुजीन लाला

आचार्य

विम्व

31 3 76

आरविम्व एवं माध्यमिक विम्व

अन नवरान प्रथमा

राजस्थान आचार्य

अनुक्रम

राजस्थान मे शिक्षानुसधान विहगावलोकन	1	श्री इन्द्रजीत सन्ना डा पद्मलाल बर्मा
शिक्षा दशन एव शिक्षा समाजशास्त्र	18	श्री रवीन्द्र अग्निहोत्री श्री बीरेन्द्र समरवाल
शिक्षात्रम एव पाठ्यपुस्तकें	32	डा श्यामलाल नैशिक श्री पुष्पोत्तमलाल तिवारी
अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया	48	डा आकारसिंह देवल श्री कलाशविहारी वाजपेयी
व्यक्तित्व	61	डा छलविहारी माथुर डा चन्द्रप्रकाश माथुर
शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह सम्ब धव	78	श्री जगन्नीशनारायण पुरोहित श्री कृष्णगोपाल बीजावत
मापन एव मूल्यांकन	93	प्रो बजरगलाल भोजक
शैक्षिक निर्देशन	109	डा भरविन्द बी फाटक श्री वासुदेव जी दवे
व्यावसायिक निर्देशन	125	श्री सत्यप्रकाश शर्मा
शिक्षक प्रशिक्षण	136	डा मुल्कराज चिलाना श्री प्रकाशचन्द्र द्विवेदी
शिक्षा प्रशासन	152	श्री हरिविचन्द्र मित्तल श्री सूरजनारायण राव
विद्यालय व्यवस्था	169	श्री विद्यासागर शर्मा श्री शशिशेखर व्यास
समाज शिक्षा	178	श्री मोहम्मद हुसन

इस प्रकार के लिए आर्थिक सहायता भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद में
 प्राप्त हुई। प्रस्तुत तथ्यों अभिमता अथवा निष्कर्षों के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारता हमका
 है। परिषद इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

विहगावलोकन

शिक्षा के प्रसार तथा शिक्षा में सुधार सम्बन्धी समस्याओं के प्रति जिस गति से जागरूकता बढ़ती जाती है लगभग उसी अनुपात में शिक्षानुसंधान की आवश्यकता एक महत्ता की उत्तरोत्तर स्वीकार किया जाने लगता है। इसका कारण है—शिक्षानुसंधान की प्रवृत्ति एक उसकी उपादेयता। शिक्षानुसंधान का प्रारम्भ समस्या के चमन से होता है तथा समाधान खोजने की दिशा में तब सम्मत, बंध तथा विश्वसनीय आधार प्रस्तुत करना उसका लक्ष्य होता है, क्योंकि शिक्षानुसंधान अन्तिम समाधान देने का दावा नहीं करना तात्कालिक समाधान नहीं समस्याओं के चमन की संभावना बनाते हैं और परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में इसका क्षेत्र व्यापकतर तथा नानास्पी होता जाता है। किन्तु शिक्षानुसंधान वैज्ञानिक दृष्टि रखत हुए तथ्यों का विश्वसनीय संचलन करके विवेकपूर्ण विश्लेषण के आधार पर तत्कालीन व्याख्या करने की सीढ़ी का नहीं छाड़ता और शिक्षा नुसंधान की यही विशेषता उसका महत्व की प्रतिपादक है।

भारत में शिक्षानुसंधान की आवश्यकता पर सर्वप्रथम 1913 के शिक्षा नीति सम्बन्धी प्रस्ताव में बल दिया गया था तथा 1917 में सडलर आयोग (Sadler Commission) ने इस दिशा में ठोस सुझाव दिए। आयोग ने सिफारिश की कि भारत के प्रत्येक विश्वविद्यालय में शिक्षा-संकाय खोला जाना चाहिए उसका अध्यक्ष प्रोफेसर हो तथा शिक्षा स्नातकीय उपाधि के बावजूद एम एड का दावे का पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जाए।

किन्तु आयोग की इस सिफारिश पर ठोस कार्यवाही करीब 20 वर्ष बाद ही हो पाई। अलीगढ़ और बनारस विश्वविद्यालयों में शिक्षा संकायों की स्थापना प्रवश्य हुई किन्तु शिक्षानुसंधान प्रारम्भ करने का श्रेय बम्बई विश्वविद्यालय का है जहाँ भारत में प्रथम बार, 1936 में शिक्षानुसंधान का दो वर्षीय पाठ्यक्रम शुरू किया गया। इसी विश्वविद्यालय ने एम एड की उपाधि 1939 में प्रथम बार प्रदान की।

राजस्थान में शिक्षानुसंधान का श्रीगणेश लगभग इसी परम्परा में अर्थात् एम एड उपाधि के प्रयोजन से 1953 में हुआ, जब विद्याभवन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय उदयपुर के सात विद्यार्थियों (एक महिला तथा छह पुरुष) ने राजस्थान विश्वविद्यालय से एम एड उपाधि प्राप्त करने हेतु लघुशांथ प्रबंध प्रस्तुत किए। ठीक छह वर्ष बाद गाँधी विद्यापीठ वैसिक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सरदारशहर में भी एम एड कक्षाएँ प्रारम्भ हुई। यह संयोग था कि इस महाविद्यालय से भी पहली बार एम एड उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या सात ही थी।

1964-65 में उत्तमपुर विश्वविद्यालय का स्थापना हुई और विद्यामवन शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय उत्तमपुर उम नय विश्वविद्यालय में संबद्ध हो गया। चिन्तु घणत दो वर्ष राजस्थान में बनसूना शिक्षायात्रा शिक्षा महाविद्यालय में एक एक कक्षाएं खाली हो जाते हैं पुन राजस्थान विश्वविद्यालय में भी शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय सड़क हो गए। राजस्थान विश्वविद्यालय के अधिनस्थ में 1967-68 में क्रियाशील शिक्षा मन्त्रालय अजमेर में एक एक कक्षाओं खाली हो चिन्तु 5 वर्ष बाद हो वह पाठ्यक्रम बनो बन हो गया। अगले वर्ष 1969-70 में जयपुर विश्वविद्यालय के अजमेर में शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय जयपुर में 16 छात्र छात्राया न एक एक वर्षापथ प्रथम प्रस्तुत किए चिन्तु उम महाविद्यालय में एक पाठ्यक्रम का वह पन्ना और अन्तिम वर्ष रहा।

इस प्रकार राजस्थान में 1970 तक एक एक पाठ्यक्रम चलाने का श्रम सत्यापना प्राप्त हो गया। मन्त्रालय का हा है चिन्तु 1970-71 में प्रथम बार एक राजकाय महाविद्यालय न इस क्षेत्र में प्रवेश किया जबकि राजकाय शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय जयपुर में एक एक पाठ्यक्रम खाली हुआ। अगले वर्ष दो वर्ष राष्ट्रीय शिक्षण अनुसंधान एक प्रशिक्षण परिषद द्वारा संचालित क्षेत्रों शिक्षा महाविद्यालय अजमेर न 1971-72 में एक एक पाठ्यक्रम खाली किया। इस प्रकार एक समय राजस्थान में पांच महाविद्यालयों में एक एक पाठ्यक्रम के प्रयासन में शिक्षार्थियों अनुसंधान काय करने हैं। बार शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय में सड़क हैं तथा एक उत्तमपुर विश्वविद्यालय में।

अगले वर्ष में 1963 में राज्य शिक्षा मन्त्रालय उत्तमपुर का स्थापना शिक्षा अनुसंधान का दृष्टि से एक महत्वपूर्ण घटना माना जा सकता है क्योंकि शिक्षानुसंधान का अमकी तीन प्रमुख भूमिकाओं में से एक माना गया है। अथवा स्थापना में लेकर 1974 तक एक मन्त्रालय न चिन्तु अनुसंधान मन्त्रालय का लेकर 25 अनुसंधान-काय मन्त्रालय किए।

शिक्षानुसंधान का प्रवर्तित्व

राजस्थान में अत तक दो शिक्षानुसंधान कार्यो का संचालन भी वर्गों में चाले जा सकता है—एक वम में उपाधि प्राप्ति के लिए किए गए शिक्षानुसंधान है दूसरे में अनुसंधान मन्त्रालयों का समाधान संचालन की दृष्टि में किए गए अनुसंधान काय जा या हो सम्पन्न-स्तर पर हुए हैं अथवा व्यभिचन स्तर पर। उपाधि प्राप्ति के लिए किए गए अनुसंधान काय पुन दो प्रकार के हैं एक एक स्तर के तथा पीछे की स्तर के।

अ एक एक स्तर के शिक्षानुसंधान 1953 से 1974 की अवधि में कुल मिलाकर 673 एक एक अनुसंधान प्रवर्तित्व विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत हुए। उनका व्यवहार विवरण निम्नांकित तालिका में दिया जा रहा है

तालिका संख्या 1

बदवार विभिन्न विश्वविद्यालयों में हुए एम एड अनुसंधानों की संख्या

वर्ष	विश्वविद्यालय			योग
	राजस्थान	उदयपुर	जोधपुर	
1953	7	-	-	7
1954	12	-	-	12
1955	11	-	-	11
1956	8	-	-	8
1957	18	-	-	18
1958	12	-	-	12
1959	22	-	-	22
1960	22	-	-	22
1961	18	-	-	18
1962	20	-	-	20
1963	16	-	-	16
1964	14	-	-	14
1965	11	10	-	21
1966	18	32	-	50
1967	15	30	-	45
1968	32	16	-	48
1969	34	25	-	59
1970	31	10	16	57
1971	34	12	-	46
1972	50	11	-	61
1973	39	9	-	48
1974	43	15	-	58
कुल	487	170	16	673
प्रतिशत	72.36	25.41	2.23	100

उपरोक्त तालिका से बात होना है कि लगभग तीन चौथाई (72.36%) एम एड लघुशाघ प्रबंध राजस्थान विश्वविद्यालय में ही प्रस्तुत हुए। इसका एक कारण तो यह रहा कि राजस्थान विश्वविद्यालय के परिच्छेन में 1953 में 1974 की अवधि में प्रतिवर्ष एम एड अनुसंधान हुए हैं जब कि उदयपुर विश्वविद्यालय की स्थापना ही 1964-65 में हुई। ऊपर जोधपुर विश्वविद्यालय में तो एम एड पाठ्यक्रम एक ही वर्ष (1969-70) बना। दूसरा कारण परियोजना में भी है। उदयपुर विश्वविद्यालय से

समृद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय जहाँ शुरू से अब तक एक ही रहा राजस्थान में समृद्ध महाविद्यालयों की संख्या अभी भी चार है। राजस्थान में 1953 में 1965 के बीच एम एड स्तर पर प्रतिवर्ष औसतन 15.5 अनुसंधान हुए किन्तु 1966 में इनकी संख्या में काफी वृद्धि हुई तथा 1966 से 1974 की अवधि में इनकी संख्या का वार्षिक औसत 52.33% बढ़े मया। इस स्पष्ट है कि 1966 से इन अनुसंधानों में औसत में तीन गुना से अधिक की वृद्धि हो गई। इस महत्वपूर्ण वृद्धि का एक कारण यह रहा कि राज्य सरकार ने प्रोत्साहन देने के लिए 1965 में एम एड उपाधि प्राप्त अभ्यापका, प्रशिक्षक, अध्यापका व शिक्षाधिकारियों का उनकी वतन से छुट्टी का दावा अधिनियम वृद्धिपूर्ण के प्रावधान किया। यद्यपि यह मुंबई राज्य सरकार ने 1970 के बाद ममान्य कर दा किन्तु 1970 के बाद दो नये महाविद्यालयों में इन पाठ्यक्रम की मुंबई उपनगर हो जान में एम एड स्तरीय अनुसंधानों की संख्या का औसत लगभग पूर्ववत् रहा।

एम एड स्तरीय अनुसंधान कार्यों में मुख्यतः सरकारी संस्थाओं का प्रमुख योगदान रहा है। निम्नांकित तालिका में यह स्थिति अधिक स्पष्ट हो सकेगी।

तालिका 7 संख्या 2

1974 तक विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में हुए एम एड स्तर के शिक्षानुसंधानों का विवरण

क्र.सं.	शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय	संख्या	अवधि	कुल का प्र.सं.
1	विद्याभवन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय उज्जयपुर	304	1953-74	45.25
2	गांधी विद्यामंदिर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सरदारशहर (पूरु)	172	1959-74	25.52
3	बनस्यला विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय, बनस्यली विद्यापीठ	69	1966-74	10.22
4	जियालाल शिक्षा संस्थान अजमेर	38	1968-72	5.63
5	महेश शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय जोधपुर	16	1970	2.47
6	राजकाय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय बीकानेर	47	1971-	7.00
7	क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय	27	1972-7	

उपरोक्त तालिका में
सरकारी संस्थाओं
विशेषतः विद्याभवन
(45.25 प्रतिशत)
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
काय मग्न हुए।

कि एम एड अनुसंधान
सरकारी संस्थाओं
में का प्रतिशत
गांधी

यहा यह ध्यातय है कि राजस्थान म वनस्थली विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय ही इस क्षेत्र म एक मात्र ऐसी संस्था है, जा केवल महिलाओं का एम एड प्रशिक्षण देती है। यद्यपि एम एड अनुसंधान म इसका योग 10.2 प्रतिशत है, तथापि अन्य महाविद्यालयों में भी महिलाओं न एम एड अनुसंधान किए हैं। 1953 से 1974 की अवधि म महिलाओं द्वारा कुल 164 एम एड अनुसंधान किए गए जो कुल अनुसंधानों का 24.4 प्रतिशत होता है। अध्यापिकाओं के राजस्थान म अनुपात को देखते हुए एम एड अनुसंधान म महिलाओं का एक चौथाई योगदान विशेष महत्व की बात है।

एम एड अनुसंधानों में शिक्षा के लगभग सभी क्षेत्रों की समस्याओं का ध्यान है। निम्नांकित तालिका म इन अनुसंधानों का क्षेत्रवार विभाजन प्रस्तुत किया गया है

तालिका 7 सर 7 3

शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सम्पन्न हुए एम एड अनुसंधान

क्र.सं.	शिक्षा का क्षेत्र	1953 1954	1955 1959	1960 1964	1965 1969	1970 1974	कुल प्र.सं. योग
1	शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा समाज शास्त्र	5	7	4	16	11	43 6.4
2	शिक्षाक्रम एवं पाठ्य पुस्तकें	2	11	10	5	25	53 8.0
3	व्यक्तित्व	1	5	9	22	43	80 11.9
4	अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया	—	7	3	12	27	49 7.3
5	शिक्षक निर्देशन	1	16	18	34	33	102 15.1
6	व्यावसायिक निर्देशन	—	3	8	22	6	39 5.8
7	शिक्षक संप्राप्ति के सहसम्बन्धक	—	4	8	23	24	59 8.75
8	मापन एवं मूल्यांकन	4	10	9	13	23	59 8.75
9	शिक्षक प्रशिक्षण	1	2	6	37	41	87 13.0
10	विद्यालय व्यवस्था	4	4	10	31	23	72 10.7
11	शिक्षा प्रशासन	—	1	5	8	12	26 3.9
12	समाज शिक्षा	1	1	—	—	2	4 0.6

उपरोक्त तालिका से बात होता है कि सर्वाधिक एम एड अनुसंधान शिक्षक निर्देशन के क्षेत्र में हुए। यदि शिक्षक निर्देशन एवं व्यावसायिक निर्देशन का एक क्षेत्र माना जाए तो इस क्षेत्र में हुए एम एड अनुसंधानों का प्रतिशत 21 तक हो जाता है। वम दूसरे स्थान पर अनुसंधानों का रजि. का क्षेत्र शिक्षक प्रशिक्षण निम्नलिखित देता है, जिसमें कुल अनुसंधानों का 13 प्रतिशत कार्य दृष्टा है। किन्तु यदि विद्यालय

व्यवस्था एवं शिक्षा प्रशासन का एक ही क्षेत्र माना जाए तो दूसरा स्थान यह क्षेत्र का रहेगा क्योंकि इस सम्मिलित क्षेत्र में अनुसंधानों का प्रतिशत 14 है।

शिक्षण प्रशिक्षण के क्षेत्र में 1953 में 1964 तक 12 वर्ष की अवधि में कुल 10 अनुसंधान हुए किन्तु उनमें बार बार 10 वर्षों की अवधि में नया सन्ख्या 78 हो गई, जो करीब 8 गुना वृद्धि का दायता है। इस क्षेत्र की यह आवश्यकता विशेषतः अथर्व है। इस प्रकार जिन क्षेत्रों में हम एक अनुसंधानों का सन्ख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है वह हैं शिक्षाक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों व्यक्ति-व्यक्ति अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया शक्ति संप्राप्ति के सहसंबंध का पता एवं मूल्यांकन आदि। किन्तु 'यावमायिक' निर्माण के क्षेत्र में पिछले पाँच सालों में हम एक अनुसंधानों की सन्ख्या में गिरावट में परिप्रदय में चलने वाली बात नगना है जिससे समय में यवमाया मुना शिक्षा का विचारधारा प्रदान हुई है, मगर अनुसंधान उस दिशा में कम हो गए हैं। समाज शिक्षा के क्षेत्र में हम एक स्तर पर नगण्य-सा अनुसंधान काय हुआ है।

आ पीएच डी स्तरीय अनुसंधान राजस्थान में पाए गए स्तर पर पहला शिक्षानुसंधान 1963 में श्री गुलशन लाल जुररा ने राजस्थान विश्वविद्यालय से किया था। तब से 1974 तक कुल 19 अनुसंधान शिक्षा में इस स्तर पर सम्पन्न हुए। इनका वर्षवार विभाजन निम्नानुसारित तालिका में दिया जा रहा है।

तालिका 7 सन् 74

राजस्थान में पीएच डी अनुसंधानों का विवरण

वर्ष	राजस्थान	उज्जयपुर	जायपुर	योग
1963	1	—	—	1
1964	2	—	—	2
1965	—	—	—	—
1966	1	—	—	1
1967	1	—	—	1
1968	1	—	—	1
1969	—	1	—	1
1970	1	—	—	1
1971	—	—	—	—
1972	—	5	—	5
1973	2	1	—	3
1974	3	—	—	3
12	7	—	—	19

उपरोक्त तालिका से जात होता है कि पीएच डी स्तर पर शिक्षा में जोधपुर विश्वविद्यालय में अब तक एक भी अनुसंधान नहीं हुआ, जबकि राजस्थान विश्वविद्यालय में सहायक (12) अनुसंधान हुए। इस स्तर पर कुल अनुसंधानों में कोई काल क्रमिकता नहीं दिखाई देती। 1965 तथा 1971 में इस स्तर का एक भी अनुसंधान नहीं हुआ, जब कि 1972 में अकेले उदयपुर विश्वविद्यालय में पीएच डी (शिक्षा) के पांच अनुसंधान हुए, जो हुए बाकि अनुसंधानों में सर्वोच्च उपलब्धि है। अब तक हुए पीएच डी स्तरीय शिक्षानुसंधानों का 58 प्रतिशत केवल पिछले तीन वर्षों में होना एक रोचक एवं महत्वपूर्ण बात है।

क्षेत्रवार वर्गीकरण करने पर मालूम होता है कि सर्वांगिक (पांच) अनुसंधान व्यक्तित्व के क्षेत्र में हुए इसके बाद शिक्षक प्रशिक्षण का क्षेत्र आता है, जहाँ तीन अनुसंधान हुए। शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा समाज शास्त्र, 'सांख्यिक' निश्चयन तथा समाज शिक्षा के क्षेत्र में पीएच डी स्तर पर एक भी अनुसंधान हुआ नजर नहीं आता।

इ सस्था स्तर पर किए गए अनुसंधान इस वर्ग में मुख्यतः वही अनुसंधान उपलब्ध हुए हैं जो राज्य शिक्षा सस्थान, उदयपुर में विभागीय समस्याओं का लेकर किए गए। इनकी कुल संख्या 25 है। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड स्तर पर हुए चार अनुसंधान भी उपलब्ध हुए हैं। अन्य सस्था स्तरीय अनुसंधानों की संख्या गिनती की है, तथा वे प्रायः किसी न किसी अभिवर्णन से प्राप्त अनुदान मिलन पर ही संपन्न हुए हैं।

शिक्षानुसंधान में प्रयुक्त विधियाँ

उपलब्ध शिक्षानुसंधानों की समीक्षा से जात होता है कि वे प्रायः सर्वेक्षण विधि का अपना कर सम्पन्न किए गए हैं। एम एड स्तर के ऐसे अनुसंधानों की संख्या 95 प्रतिशत से अधिक है। ऐसे अनुसंधान इक्के-दुक्के ही मिलते हैं, जिनमें प्रयोगात्मक विधि को अपनाया गया है। जहाँ प्रयोग किए गए हैं वे भी समुचित रूप से विश्वसनीयता के धरातल पर खड़े हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। यह एक गंभीर बात है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जिन पर शिक्षानुसंधान का प्रशिक्षण देने का दायित्व है ऐसी समस्याओं के लिए अनुसंधानात्मक का उत्प्रेरित नहीं कर सके, जिनसे प्रयोगनिष्ठ निष्कर्ष उभरते। सस्था-स्तरीय अनुसंधानों में प्रहर पाठशाला पर राज्य शिक्षा सस्थान द्वारा सम्पन्न प्रयोजना महत्वपूर्ण है।

प्रारम्भिक वर्षों में कतिपय संप्राप्ति परखा तथा विविध मापनियों का निर्माण किया गया था। काय प्रारम्भिक स्तर का था। किन्तु समयानुसार सूचना के अभाव में अथवा श्रमसाध्य माना जान के कारण इस प्रारम्भिक कार्य के सूत्र को पकड़कर मानकीकरण करने की निशा में आगे बढ़ने की प्रवृत्ति नहीं देखी गई। फलतः जहाँ एक ओर ऐसे कार्यों का अनावश्यक दोहरान हुआ वहीं दूसरी ओर प्रारम्भिक अनुसंधान कार्यों से लाभ उठाने के अवसर नहीं खोजे गए। अनुसंधानात्मक की एक प्रवृत्ति जो इस सदन में दिखाई दी, वह यह कि मापनी/परखों का इसी धरातल पर निर्माण करके उसका मानकीकरण

करने की वजह से प्रायः विद्यापीठ अथवा अध्यापक मानकावलीन मापनिया/परिभाषा का प्रयुक्त करने में ही उचित माना जाता है। फिर भी पाठ्य-पुस्तक पर टिके हुए मूल्यपूर्ण कार्य मानकीकरण का शिक्षा में कुछ है।

“शिक्षा” के अर्थ में अनुसंधानात्मक न प्रायः अपनी सुविधा का ही ध्यान रखा है। फलतः अधिकांश अनुसंधान में “शिक्षा” सामग्रिक दृष्टि में प्रतिनिधि तथा विवक्षणीय नहीं बन पाता है। बल्कि अनुसंधान व्यवस्था में त्रिभुज में “शिक्षा” व्युत्पन्न आग एवं माध्यम (Purposive) है। अधिकांश शैक्षणिक एवं विद्यार्थी शिक्षण छात्र-छात्राया अध्यापक अध्यापिका का ही “शिक्षा” में सम्मिलित किए जाने की प्रवृत्ति अनुसंधानों में शिक्षा होती है। इसका परिणाम यह होता है कि “शिक्षा” में सामाजिक परिवर्तन के प्राथमिक अथवा पूर्व प्राथमिक छात्र-छात्राओं पिछड़े वर्गों आदि का सम्बन्ध-सा ध्यान में रखा जाता है। शिक्षा ही “शिक्षा” का अर्थ अनुसंधान के दृष्टि में सबसे महत्वपूर्ण समझा है। फिर भी इस उद्देश्य पर भी बाधों अनुसंधानात्मक समुचित ध्यान में ली जाति होती है।

शिक्षानुसंधान में उपरिपरिधियों का सम्बन्ध

अब तक त्रिभुज हस्ता में शिक्षानुसंधान सम्बन्धित था है। तबसे शैक्षणिक उपरिपरिधियों तथा गतिविधियों की शिक्षा में प्रकाश प्रकाशित है।

शिक्षा शास्त्र एवं शिक्षा समाजशास्त्र इस क्षेत्र में एक एक स्तर के कुछ 43 अनुसंधान व्यवस्था है। पाठ्य-पुस्तक का एक ही अनुसंधान उत्पन्न नहीं। शिक्षा शास्त्र के भी इस अनुसंधान का सम्बन्ध 4 है। जो अनुसंधानों का शिक्षा में इस क्षेत्र का सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करता है।

शिक्षा शास्त्र के क्षेत्र में कुछ प्रसिद्ध विचार शास्त्रों का अन्तर्गत अथवा विभिन्न शिक्षा सम्बन्धी एवं ऐतिहासिक विचारों पर अन्तर्गत अनुसंधान होता है। किन्तु आधुनिक ऐतिहासिक सम्बन्धों का अध्ययन नये शिक्षा शास्त्र के विकास की वजह से प्रचलित शिक्षा प्रणाली में निम्न ऐतिहासिक विचार समाज आदि एवं प्रवृत्त आशय है। त्रिभुज पर अनुसंधानात्मक का ध्यान जाना आवश्यक है।

इस प्रकार शिक्षा समाज शास्त्र के अन्तर्गत में समाजशास्त्र और अध्यापक समुदाय की सम्बन्धों पर जो काफी काम होता है। अन्तर्गत परिवर्तनशील समाज में शिक्षा की भूमिका परिवर्तन के अनिवार्य के रूप में शिक्षा का सामाजिक समझ भूमिका एवं अन्तर्गत स्वस्थ समाज का के समाजशास्त्र में शिक्षा का ऐतिहासिक अनुसंधानों पर अनुसंधानकर्ताओं का ध्यान जाना आवश्यक है। साथ ही यह भी ध्यानित है कि अनुसंधानों में विचार शिक्षा का ऐतिहासिकता का विवेचना किया जाए। इस क्षेत्र में ऐतिहासिक अनुसंधानों के लिए भी शिक्षा एवं गवर्नर एवं शिक्षा है। जो अनुसंधानात्मक के ध्यान की अपेक्षा करता है।

शिक्षाक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें शिक्षाक्रम एवं पाठ्यपुस्तक के क्षेत्र को लेकर जितने अनुसंधान हुए हैं उनमें सामान्य शिक्षा क्रम के अंतर्गत बुनियादी शिक्षा, विभिन्न पाठ्यक्रमीय अंगों में रचित ग्रंथ, पाठ्यपुस्तक के राष्ट्रीयकरण जैसे पक्षों पर तो ब्याप हुआ है और वह किसी सीमा तक ऐतिहासिक विकास क्रम, समसामयिक चिन्तना आदि को भी व्यक्त करता है, मगर भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक सन्दर्भों में प्रचलित शिक्षा क्रम की वक्षता, उपयोगिता तथा उसकी परिवर्तन क्षमता पर अनुसंधानकर्ताओं का ध्यान गया नहीं। लगता तो यह भी है कि एम एड स्तर पर अनुसंधान के पक्ष में पाठ्यक्रम के धेरा से धिरे हुए चले हैं यद्यपि वे ब्याप महत्वपूर्ण नहीं हैं ऐसा तो नहीं कह सकते। क्योंकि अंग्रेजी, गणित हिन्दी, सामाजिक ज्ञान और सामान्य विज्ञान जैसे आधारिक विषयों को लेकर उनके पाठ्यक्रमों का मूल्यांकन, पाठ्यपुस्तकों की परीक्षा, छात्रा/अध्यापकों की अभिवृत्ति, रचित आदि पर साधक अनुसंधान किए गए हैं। मगर आवश्यक है कि उनके कलितायों की जानकारी अध्यापकों, पुस्तक निमाताओं और नीति निर्धारकों तक पहुँचे। हम दृष्टि से शिक्षा व्यवस्था की संचार प्रणाली में कोई उपयुक्त तन्त्र ब्याप करने की आवश्यकता है। निश्चय ही अब तक अगर ब्याप कुछ हा पाता तो सामाजिक ज्ञान, विज्ञान और अंग्रेजी विषय के शिक्षाक्रम और पाठ्य पुस्तक की असंगतियाँ बराबर दूर होती रहती, ब्याप इन पक्षों पर ब्याप हर बप कोई न कोई अनुसंधान हुआ है और उपयोगी मुभाब उभरे हैं।

अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया इस क्षेत्र में समस्या समाधान में पूर्व कल्पना के उपयोग की क्षमता विविध विधियों की प्रयुक्ति की सीमाएँ, प्रशिक्षण का शिक्षण विधियों के साधक उपयोग पर प्रभाव, पठनारम्भ काल की समस्याएँ छात्रा की विभिन्न स्थितियों में विभिन्न विषयगत रुचियाँ विभिन्न विषयों के प्रति छात्रा/अध्यापकों की अभिवृत्तियाँ, खेल, उद्योग, ब्यापानुभव आदि का विविध उपयोग इत्यादि प्रकरणों पर कुछ अध्ययन उपयोगों शोध उपलब्धियाँ तो हुई ही हैं अभिन्नमित्र अध्ययन प्रणाली पर भी कुछ सकारात्मक तथ्य अनुसंधानों ने उभारे हैं। यद्यपि अभिन्नमित्र ब्यापान व्यवहार, प्रस्तुतीकरण की तकनीकों आदि पर प्रयोगनिष्ठ ब्याप कम हुए हैं मगर जो कुछ भी हुआ है, यदि उस पर व्यवहार-फलन हा सकारात्मक होना तो अवश्य ही भावी अनुसंधानों को भी एक और विधायक शिक्षा मिल सकी होती। अनुसंधानों ने विभिन्न विषय क्षेत्रों में निदानात्मक उपयोगों तक भी तयार किए हैं, और सामाजिक आर्थिक विशेषकों के साथ विधियों का सह सम्बन्ध तक भी खोजा है। इतना जरूर है कि उनका ध्यान माध्यमिक स्तर पर ज्यादा रहा है और प्राथमिक तथा पूर्व प्राथमिक स्तर अपेक्षाकृत कम ध्यान आकर्षित कर पाए हैं। अब समय है कि भावी अनुसंधानों में प्राथमिक पूर्व प्राथमिक और अनौपचारिक अध्ययन अध्यापन के पक्षों पर अधिकाधिक ध्यान दिया जाए और अनुसंधानों की उपलब्धियों को त्रिभाष्यन के धरातल पर भी उतारा जाए। इसके साथ ही लोक-संचार के साधनों, शिक्षण अधिगम सामग्री आदि के प्रभावों का भी आकलन करना जरूरी है। शिक्षा की विशिष्ट स्थितियाँ—यथा, एक अध्यापकीय विद्यालय, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, शिक्षक

प्रशिक्षण मन्त्रालय में 'यावहारिक एन' उपयुक्त शिक्षण विधियाँ तथा अधिगम विद्यायाँ का विकसित करके परीक्षण किए जाने का मन्त्र अछूता सा पड़ा है। आयाजित विधियाँ व मन्त्रालयों पर निर्भरता कहाँ तक उचित कही जा सकती? एम एन अनुसंधानाग्रा में न मही सबद्ध शिक्षा मन्त्रालय/मन्त्रालयों से तात्पर्य पर विशेष अपेक्षा का हाँ जा सकती है।

'यत्किंत्व' शिक्षा में मनाविधान की एकात्मिक महत्ता मन्त्रालय शिक्षा की उपपत्ति है। पश्चिमी शिक्षा मनाविधान में 'मीडियम' यत्किंत्व और अधिगम पर स्वतन्त्र अनुसंधान लक्ष्यी कार्य बहुतायत से संपादित मान है। राजस्थान में भी तबतक वही सा स्थिति शिक्षा पत्ता है। 'यत्किंत्व' के विभिन्न पन्ना का लक्ष्य उभर विभिन्न विशेषता और धर्मों के मापन और निर्धारण का प्रयास विदेशी या भारतीय। शिक्षा उपकरणों के माध्यम से किया गया है। यह कल्पना कल्पित है कि एम अनुसंधान शिक्षक का किम सीमा तक लाभ पहुँचा सकेंगे मगर समस्याग्रस्त और अपराधी मनावृत्ति के छाना की पहचान के लक्षण उभर जल्द मान्य हो सकते हैं—वर्णों के अनुसंधान के तथ्य निर्दिष्ट हो और सबका निरपवाद हो। तदर्थ इस क्षेत्र में अनुसंधानों के लिए समुचित 'याग' का धुनाव करके अध्ययन करने तथा विश्वसनाय उपकरणों का निमाण किए जाने की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्र तथा पिछड़े बालकों के 'यादश' का लक्ष्य भा 'यत्किंत्व' के विभिन्न पन्ना का अध्ययन अपेक्षित है। इस क्षेत्र में भारतीय परिवर्ण का पृष्ठभूमि में उपकरणों के निमाण एवं मानकीकरण के कार्य की ता अनुसंधानाग्रा में विशेष अपेक्षा है।

शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह सम्बंधक अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में ही एक महत्वपूर्ण विशेषता हाता है शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह सम्बंधकों के प्रकाशों का जानकारी रखना और उनकी अभिव्यक्ति भूमिका का साथ ही नियोजन करना। राजस्थान में अब तक इस क्षेत्र में 59 अध्ययन हो चुके हैं जो सभी एम एन स्तर के हैं। इनके अनिश्चित चार पाठ्य ढी स्तर के अनुसंधान भी उपलब्ध हैं और उनमें बुद्धि (प्रतिभा) आत्मप्रत्यय अभिवृत्ति दुश्चिन्ता, समायोजन, समाजमिति सामाजिक आर्थिक स्तर ग्रामीण/नगरी पर्यावरण विद्यालयी स्थितियाँ आदि के साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह सम्बंध में भाव व्यक्त हुए हैं। कहना नहीं होगा कि उनके निष्कर्षों का अध्ययन अध्यापन तथा शिक्षक प्रशिक्षण के साथ मिलाकर यदि हमारे शिक्षक प्रशिक्षक या शिक्षा प्रशासक वाद चर्चा करें तो उनसे शिक्षा के सुधार में नये आग्राम जल्द खोज जा सकते हैं। सवाल केवल आस्थापूर्वक प्रयास करने और अनुसंधानगत निष्कर्षों का प्रियाचयन की कमौटी पर परखने का है। विद्यालयी व्यवहार में और विद्यालयी कार्यप्रणाली के संचालन में निश्चित रूप से इस क्षेत्र के निष्कर्ष शिक्षकों और प्रशासकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेंगे अगर वे उनमें शिक्षा व्यय की उद्यतता जगा सकें। इतना जरूर है कि अपनी स्थितिज प्रविद्धताओं या सीमाओं के कारण अनुसंधानागण प्रयागात्मक माध्यम न दे पाए हो मगर जो कुछ उद्दान वष भर या तीन चार वर्षों तक परिश्रम करके तथ्य साज निकाले हैं वे शिक्षाव्ययन के लिए आधार भूमि तो प्रस्तुत करते ही हैं।

व्यवहार क्षेत्र व कायकर्ताओं का दायित्व है कि वे उन तथ्या की त्रिया-वयन के घरातल पर उतारें, जांच परखें और अनुकूल जान पड़े तो उन्हें अपन नमिस्तिर आचरण म ढाल ।

इस सदम म पुरोहित व बीजावत की सवीभात्मक टिप्पणी उल्लेखनीय ह—
 इस क्षेत्र म हुए अनुसधाना म अध्ययन अध्यापन तथा शक्तिर सम्प्राप्ति वाना उपशेन बहुत ही दुजन रह गया ह । यह ठीक ह कि बुद्धि और शक्तिर सम्प्राप्ति का घनिष्ठ सह सम्पन्ध सिद्ध किया गया ह तथा यह भी ठीक है कि सामाजिक आर्थिक स्तर का शक्तिर सम्प्राप्ति पर प्रभाव पन्ता ह परन्तु इनम अध्यापक का अपन दनदिन काय म विशेष सहायता नहा मिलनी । अध्यापक का सहायता तब मिल सकनी है, जब अनुसधान इन प्रश्ना का उत्तर णात करें कि कौनसी अध्यापन विधियाँ शक्तिर सम्प्राप्ति का अध्यापन अधिन उन्नत कर सकनी है ? अधेजी तथा गणित विषया म जिनम कि माध्यमिक शिक्षा-स्तर पर सम्प्राप्ति का स्तर चहुन नीचा है, अधिक व्यवस्थित अनुसधाना की अध्यापना बना हू है । महश्विक प्रवृत्तियाँ तथा शक्तिर सम्प्राप्ति का क्षेत्र भी अधिक नियाजिन अनुसधान की अध्यापना करता है ।

मापन एवं मूल्यांकन मापन और मूल्यांकन अध्ययन अध्यापन प्रनिया की सहज उपपत्ति है । इस श्रेण म राजस्नान व अनुसधातामा ने अथ तन अभिवृत्ति, बुद्धि, अभिधमना, अभिरुचि, व्यक्तित्व विद्यालय व्यवस्था आदि के मापन उपकरणा का विकास करने की चेष्टा की है, पगीमा और परखा के निर्माण, संचालन और संप्राप्तिया के मानन तथा किए ह, कहा विन्गी उपकरणा का भारतीय परिस्थितिमा म अनुकूलन भी किया ह और उनका पुनमानकीकरण भी किया है । उन सनकी उपयोगिता मे इनकार नही किया जा सकना और अगर शिक्षा व्यवस्था उनको सुवन्न करान की निशा म कुछ कर सके ता विद्यालयी शिक्षा अवश्य उनस लाभान्वित हा सकती ह । परीक्षा और परख सम्बन्धी जो तथ्य और निष्पक्ष इन अनुसधाना म उभर है, उनका उपयोग करते हुए विद्यालया की आ तरिक परीक्षाया म भी सुधारात्मक दिशा बन सकती है । इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धिया म कुछ नवनिमित उपकरणा का उल्लेख सबया समीचीन हागा । वे ह—अभिवर्ति मापनी बुद्धि परीक्षण प्रपत्र अभिरुचि मापनी निदानात्मक परख (आमा), कुठा प्रतिनिधा परख मूल्य निर्धारण परख, अध्यापक व्यवहार-तालिका, अध्ययन आदन तालिका और खेल किट । य सबया भारतीय पयावरण म विकसित और निर्मित हैं तथा उनका उपयोग भावी अनुसधाताया तथा शिक्षका क लिए भा प्रन्ताय है ।

अपेक्षित अनुसधाना व मन्म म प्रा भाजक का टिप्पणी, परीक्षाया, असकनता व उमके कारण, छात्रा की विभिन्न विषया म अशुद्धिषया उननी आवश्यक ताया, अभिरुत्तिया, 'व्यक्तित्व समायोजन, आपसी सामाजिक' सबध आदि विषया म और अधिक मूल्यांकन शोध काय किए जान अपन्वित ह । थल शारीरिक विकास आदि क्षेत्रा म मूल्यांकन का तरफ ता शाधकताया का ध्यान गया हा नही, उल्लेखनीय ह ।

शिक्षक निर्देशन राजस्थान में शिक्षक धीरे व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य का प्रतिपाद अधिनाम अथ क्षेत्रों का तुलना में मवाजिक या ठहरता है। शिक्षक निर्देशन के क्षेत्र में किए गए कार्यों का नाम एक द्वार शिक्षा समाज सम्यक व लिए, धीरे दूसरा द्वार अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया के लिए उठवाया जा सकता है। वहीं समजन अभिवृत्तियों अध्ययन छात्रों प्रतिभा मजबूतीकरण अध्ययन में बाधक घटक छात्रों का लक्ष्य तथ्यावली दृष्टा है जो काफी मामा तक शिक्षा प्रणिका धीरे प्रणमिका का सामनापन या कर हा सकता है। मगर जब तक व तथ्य मजबूत छात्र में मनी छात्र धीरे जब तक उन पर क्रियाचरण तथा प्रयाग का का सम्यकता तथा पनी हाता तक तक व शिक्षा जगत का मवा तथा कर मजन म मवीरति मध्य है। शिक्षक निर्देशन के सम्यक का निमाण अनुसंधानाया के लिए मर स्वाकाय चुनौती है। शिक्षक निर्देशन मवाया के प्रभाव का धीरेन तथा तथा सम्यक निमाण प्रतिभापिता तथा मजबूतपन छात्रा के लिए विविष्ट पाठ्यक्रम निमाण विविष्ट विविष्टा का विकास करना शिक्षक निर्देशन का दूर चरण मजबूत कायक्रम बनाना भागना तथा विविष्ट म म मजबूतपना पत्रिका म मजबूतपत्रिका निर्देशन मवाया का सम्यक निमाण छात्रों सम पनी है जो अनुसंधानाया सम मर प्रवर्तित की अरणा मरु है।

और भविष्यो मुखी है—इसका आभास इस क्षेत्र के अनुसंधान हमें कराते हैं । दरअसल वह स्थिति हम यह साचने को मजबूर करती है कि आखिर किन उपायों से हम अपनी शिक्षा और उसके मुख्य प्रेरक शिक्षक प्रशिक्षण को भारतीय भूमि पर स्थापित कर सकेंगे ? प्रशिक्षण में नवाचार प्रशिक्षण की पाठ्यव्यवस्था, प्रशिक्षण की स्तर वारिता, प्रवेश प्रवृत्ति, शिक्षण अभ्यास की स्थितियाँ, सहयोगी विद्यालयों की दुर्दृष्टताएँ जन्मे प्रक्रिया पर और, प्रशिक्षण की व्यवहार में परिणति की स्थिति पर अनुसंधाताओं ने सर्वेक्षणनिष्ठ निष्कर्ष निकाले हैं और एक दो स्थितियों में प्रयोगनिष्ठ तथ्य भी उद्घाटित किए हैं । वे सब मिलकर कम से कम इस क्षेत्र की वास्तविक स्थिति तो बताते ही हैं कुछ मागदर्शन भी करते हैं । उनमें शिक्षक प्रशिक्षण का नई दिशा देना और वहाँ भारतीय विद्यालयों के वास्तविक व्यावहारिक चया विकसित करने में निष्ठा काफी सामग्री मिलती है । मगर ज़रूरत यह भी है कि हमारे शिक्षक प्रशिक्षणालय अपने धार में और अपने ही यहाँ सम्पादित अनुसंधानों का स्वयं ही वाइ उपयोग कर पाएँ तथा निष्कर्षों के आधार पर कार्यक्रम विकसित करके परीक्षण कर पाएँ । इसके अलावा इस क्षेत्र में विद्यालयों वातावरण व्यवहार और पर्यावरण के मध्य में शिक्षण विधियों के इजाजत, पाठ्यक्रम के मूल्यांकन शिक्षण साधनों में उसके रूपान्तर पर अध्ययनों की आवश्यकता है और अनौपचारिक शिक्षण विधियों/कार्यक्रमों में भी प्रशिक्षण को प्रवेश करने की ज़रूरत है ।

शिक्षा प्रशासन शिक्षा प्रशासन के क्षेत्र को लेकर सत्ता व अधिकारों का प्रत्यायोजन विभिन्न घटकों में पारम्परिक सम्बन्ध, नवाचार, परिवीक्षण और वित्तीय मुद्दों पर अनुसंधाताओं ने अब तक काम किया है । इनमें में भी कामिक समस्याएँ और कठिनाइयों पर जितना अधिक ध्यान दिया गया है उसमें आभास होता है कि शिक्षा प्रशासन मूलतः आर्थिक समस्याओं और मानवीय सम्बन्धों की प्रथियों से ही अधिक प्रेरित है और शिक्षक वहाँ जा सकने लायक स्थिति उस प्रशासन के दायरे में अभी तक आ नहीं पाई है । इस क्षेत्र में शायद शक्ति आयोगों और नियोजन के समावेश की स्थिति बनी ही नहीं है न किसी अधिकार प्रत्यायोजन के प्रयास का साहसा समावेश हुआ पाया है । निजी समस्याओं का दायरा और पचायत समितिगत शिक्षा प्रशासन का दायरा भी अज्ञान रह गया है जबकि ये क्षेत्र ज्वलंत समस्याओं से ग्रस्त हैं । अनौपचारिक शिक्षा का आध्यात्मिक आभास नया है यह कहकर उनकी अनुपस्थिति का क्षम्य कहा जा सकता है किन्तु शिक्षाधिकारियों शिक्षकों तथा छात्रों के बीच सम्बन्धों के प्रत्यायोजन, सहकारिता, प्रयोगशीलता, विकेंद्रीकरण इत्यादि के पक्ष में अनुसंधाताओं का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाए यह विस्मयकारक है । वित्तीय व्यवस्थापन और नियोजन पर भी अनुसंधानों की कमी खटकती है । अब जब कि शिक्षा विभाग ने प्रशासनिक अधिकारों का विकेंद्रीकरण कर दिया है, तथा वित्तीय अधिकारों का नया प्रत्यायोजन हो गया है, तो इन प्रक्रिया पर सघन और सतत सर्वेक्षणों की ज़रूरत है ।

इस क्षेत्र में यद्यपि आवश्यकताओं का सर्वाधिक रचि का विषय सम्भवतः प्रशासन में मानवीय पक्ष रहा है, किन्तु शिक्षा प्रशासन के किसी माडल को ध्यान में रखा

और भविष्यो-मुखी है—इसका आभास इस क्षेत्र के अनुसंधान हम कराते है । दरअसल वह स्थिति हम यह साचने को मजबूर करती है कि आखिर किन उपायों से हम अपनी शिक्षा और उसके मुख्य प्रारंभ शिष्टक प्रशिक्षण को भारतीय भूमि पर सस्थापित कर सकेंगे ? प्रशिक्षण में नवाचार प्रशिक्षणा को पाठ्यचर्या, प्रशिक्षणा की स्तर वारिता, प्रवेश ग्रहता, शिष्टक अभ्यास की स्थितिया, सहायो विद्यालया की दुश्चिताएँ जस प्रकरणा पर और, प्रशिक्षण की व्यवहार में परिणति की स्थिति पर अनुसंधातामा न सर्वेक्षणनिष्ठ निष्कर्ष निकाले हैं और एक-दो स्थितिया में प्रयोगनिष्ठ तथ्य भी उद्घाटित किए हैं । वे सब मिलकर कम से कम हम क्षेत्र की वास्तविक स्थिति तो बताते ही हैं, कुछ भागदर्शन भी करते हैं । उनमें शिष्टक प्रशिक्षण का नद दिशा दन और वहा भार-तीय विद्यालया व योग्य व्यावहारिक चर्या विकसित करन के लिए काफी सामग्री मिलती है । मगर जम्बरत यह भी है कि हमारा शिक्षक प्रशिक्षणालय अपन वार में और अपन ही वहा सम्पादित अनुसंधाना का स्वयं ही काद उपयाग कर पाएँ तथा निष्कर्षों के आधार पर कार्यक्रम विकसित करके परीक्षण कर पाएँ । कम अनावा इस क्षेत्र में विद्यालया चानावरण व्यवहार और पयावरण के मदम में शिक्षण विधिया के इजाज, पाठ्यक्रम के मूल्यांकन, शिष्टक साचा में उसक र्पान्तर पर ग्रध्ययना की आवश्यकता है और अनौपचारिक शिष्टक विधिया/वापनमा में भी प्रशिक्षण का प्रवेश करन की जम्बरत है ।

शिक्षा प्रशासन शिक्षा प्रशासन के क्षेत्र को लेकर सत्ता व अधिकारा का प्रत्यायोजन विभिन्न घटका में पारम्परिक सम्बन्ध, नवाचार, परिवीक्षण और वित्तीय मुद्दों पर अनुसंधातामा न ग्रन्त तब काम किया है । कम में भी वार्मिक समस्यामा और कठिनाय्या पर जिनना अधिक बल दिया गया है उनमें आभास होना है कि शिष्टा प्रशासन मूनत आर्थिक समस्यामा और मानवीय सम्बन्ध की प्रयिया से ही अधिक प्रस्त है और शक्षिक कही जा सकन लायक स्थिति उस प्रशासन के दायर में अभी तक मा नहा पाई है । इस क्षेत्र में जायद शक्षिक आयोजन और नियोजन के समावश की स्थिति बनी ही नही है न किमी अधिकार प्रत्यायोजन व प्रयाग का साहमी समावश हो पाया है । निजा समस्यामा का दायरा और पचायत समितिगत शिष्टा प्रशासन का दायरा भी प्रसूता रह गया है जबकि ये क्षेत्र ज्वल त समस्यामा से प्रस्त हैं । अनौपचारिक शिष्टा का आवाम ग्रपन्ताहून नया है यह कहकर उसकी अनुपस्थिति को क्षम्य कहा जा सकता है किन्तु शिष्टाधिकारिया शिष्टका तथा छात्रा व वाच सम्बन्ध व प्रत्यायोजन, सहकारिता, प्रयोगशीलता, विनोदकरण र्प्यादि व पक्ष भी अनुसंधातामा का ध्यान आकर्षित क्या नहा कर पाए यह विम्वयकारक है । वित्ताय व्यवस्थापन और नियानन पर भी अनुसंधाना की कमी खटकती है । अब जय कि शिष्टा विभाग न प्रशासनिक अधिकारो का विनोदकरण कर दिया है तथा वित्ताय अधिकारा का नया प्रत्यायोजन हा गया है, तो इन प्रकरणा पर सधन और गतन सर्वेक्षणा की जम्बरत है ।

हम क्षेत्र में यद्यपि ज्ञानवतामा का सर्वांगिक रुचि का विषय मनवत प्राप्तन में मानवाय पन् रहता है, किन्तु शिष्टा प्रशासन व निजा मानन को मानार बनाकर

म व पूरी तरह सम्पू्ण भी नहीं हो पाए हैं। निश्चय ही तुलना म समाज शिक्षा के क्षेत्र म अनुसंधान का योगदान एम एड स्तर पर उतना नहीं है जितना समाज शास्त्र या प्रौढ शिक्षा सबाया के स्तर पर है। इन अनुसंधान म जो दृष्टि रही है वह विभिन्न समाज शिक्षा कार्यक्रम व सर्वेक्षण या सर्वेक्षण की रही ह मगर सतत शिक्षा, आजीवन शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा की त्रिवेणी का संगम बड़ा हा, कम हो, हो भी या नहीं, काद एसा प्रयोगनिष्ठ अनुसंधान अभी तक हुआ नहीं है न ऐसा जा भारतीय परिस्थितिया म भारतीय समाज शिक्षा के स्वरूप निर्माण मे कोई मदद कर सक। अब, जब कि सावजनौन शिक्षा के लिए अनौपचारिक शिक्षा उपक्रम, त्रियाशील किसान साक्षरता महत् युवक केंद्र, आजीवन शिक्षा आदि विविध प्रयोजनमूलक कार्यक्रम जाग पड़ रहे हैं तब समाज शिक्षा के क्षेत्र का शिक्षा व मुख्य प्रवाह का समानांतर उपप्रवाह मानकर नहा चला जा सकता। चेष्टा यह रखनी आवश्यक है कि विद्यालयी शिक्षा और समाज शिक्षा अलग प्रकृत होकर चलें और अनुसंधान उस दिशा म अधिक सक्रिय और सक्रिय हो। इसके साथ ही साथ समाज शिक्षा म निरत निजी और स्वायत्तशासी संस्थाओं पर भी विशद जाजवीन होनी जरूरी ह।

शिक्षानुसंधान की गतिविधियाँ

1970 के बाद का काल शिक्षानुसंधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा सकता है। शिक्षानुसंधान की गतिविधियाँ मुख्यत दो प्रयोजना का लेकर चल रही हैं ज्ञान के विकास का प्रयाजन तथा सांस्कृतिक समस्याओं के लिए वष तकममत एक उद्युक्त समाधान खोजन का प्रयाजन। पा के विकास का लेकर राजधान म पांच शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (एम एड एव पीएच डी उपाधि की तबारी के निमित्त से) सक्रिय है। साथ ही एम एड स्तर पर सांस्कृतिक समस्याओं के लिए समाधान खोजन का प्रयोजन उत्तरोत्तर बल पकड़ रहा ह। उधर ब्यावहारिक समस्याओं के समाधान खोजन के उद्देश्य का देख जर्न एक ग्राम राज्य शिक्षा संस्थान सक्रिय है वही शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय/महाविद्यालय भी अनुदान/सहायता से अनुसंधान प्रायोजनाओं पर काम करत हैं।

कुछ समय से शिक्षा विभाग की इसम सी गद एचि न शिक्षानुसंधान की गतिविधिया म एक राक एव महत्वपूर्ण आयाम जोड़ दिया है। प्राय य अनुसंधान किया जाता था कि उपाधि प्राप्त करने के बाद शिक्षानुसंधानमग निष्क्रिय म हो जाते थे। जहाँ एव और यह आवश्यकता थी कि उनके पान का अभिनवीर्वाकरण जाना रहे उह अनुसंधान कुशलता व प्रयोग के अवसर मिलत रहे वनी य् आसन्नता भी अनुभव की गई कि उनके पान व कुशलता का अनुभूत शिक्षा समस्याओं व समाधान हों का दिशा म वस्तुतः उपयोग किया जाण। इसका एक नाम य् ना गाया गया कि व अपनी भूमिका निराहन म भी वनानिक दृष्टिकोण रखे। शिक्षा विभाग का पहल तथा उत्प्रेरणा से अब लगभग मया जिना म शिक्षानुसंधाना राकवीट का गठन हो गया है। शिक्षानुसंधाना राकवीट (District Education Researchers

जान का औचित्य सिद्ध होता है। 1966 में विन्यामयन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर में कतिपय एम एड शोधनर्ताओं ने विभिन्न सामाजिक परिवेश की स्थितियाँ में चल रहे माध्यमिक विद्यालयों पर शोध अध्ययन किया। सस्था स्तर पर भी इसी प्रकार राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीकानेर तथा जिला शिक्षा निरीक्षणालय चित्तौड़गढ़ द्वारा 1972 में विद्यालय सगम के भिन्न भिन्न पक्षा को लेकर अध्ययन किए गए तथा निष्कर्षों को समाहित करने शोध अध्ययन प्रस्तुत किया गया। ऐसे प्रयाग, विशेष रूप से व्यावहारिक समस्याओं का सेवर, और भी सफलतापूर्वक किए जा सकते हैं, किए जाने का औचित्य है किए जाने अपेक्षित हैं—एम एड स्तर पर भी, सस्था अभिकरण स्तर पर भी और जिला शिक्षानुसंधाता वाकपीठ स्तर पर भी। आयोजन एक विनियमन सबधी निणय मिल-बठनर किए जा सकते हैं। साथ ही शिक्षानुसंधाता सबधी सूचनाओं के समुचित प्रकाशन प्रसारण की महत्ता की ओर भी पिछले कुछ समय से ध्यान गया है तथा राज्य शिक्षक शोध प्रकोष्ठ इस दिशा में सजग एवं प्रयत्नशील भी है।

कुल मिलाकर राजस्थान में शिक्षानुसंधान की स्थिति काफी सुदृढ, व्यवस्थित तथा आशावादी दिखाई देती है। शिक्षानुसंधान के लिए अभिवर्णा/सस्थाओं का एक व्यवस्थित ढाँचा खड़ा हो चुका है। कक्षा में कामरत शिक्षक के लिए भी शिक्षानुसंधान उपयोगी हो सके, शिक्षानुसंधान में निहित वनानिक दृष्टिकोण अपनाकर सामान्य शिक्षक भी इन विधियों का अपनी राजमर्ग की समस्याओं के समाधान के लिए प्रयुक्त कर सके, इस प्रयोजन से सुनियोजित प्रयत्न चल रहे हैं। शिक्षानुसंधाताओं को समुचित निर्देशन एवं प्रोत्साहन मिले, इसके लिए भी प्रयत्न चल रहे हैं। फिर भी आवश्यकता है कि हम क्षेत्र में प्रयत्न और व्यवस्थित हा, सम्पन्न प्रयत्न का लाभ उठाते हुए प्राथ सुविचारित ढंग से गहन अध्ययन की नीति अपनाई जाए, तो राजस्थान शिक्षानुसंधान के क्षेत्र में और भी अधिक योगदान दे सकेगा—शिक्षा समस्याओं के समाधान के लिए आधार जुटा सकेगा।

शिक्षानुसंधान की आवश्यकता एवं महत्ता के प्रति उत्तरोत्तर बढ़ती जागरूकता एवं रचि निश्चय हा शिक्षानुसंधान को उसके दायित्व निवहन के अवसर प्राप्त करान में सहायक हो सकेगी।

□ इन्द्रजीत लामा

□ डा० पद्मालाल वर्मा

[illegible]

रवीन्द्र नाथ टगोर के शक्ति विचारों का विकासात्मक दृष्टि से अध्ययन किया। उनके अनुसार टगोर का उद्देश्य था—अतीत और वर्तमान की उपलब्धियों का स्वस्थ और नवीन समन्वय। इसके लिए टगोर न घम को आध्यात्मिक अनुभूति की प्रक्रिया माना तथा भारतीय सभ्यता की पुनर्जाँचित करने पर बल दिया, टगोर के ये शक्ति विचार तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक आन्दोलनों के तथा सामाजिक जाग्रति के संवयानुसृत थे।

शिक्षा-दशन सम्बन्धी उपयुक्त तीन अनुसंधानों में दार्शनिक पक्षों के लिए जो गहन विवेचना अपेक्षित है, यहाँ उसका अभाव है।

सम्भावनाएँ और सुझाव

वर्तमान भारतीय समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा दशन के क्षेत्र में निम्नलिखित आयामों में अध्ययनों की अधिक आवश्यकता है (1) शिक्षा प्रक्रिया के विभिन्न आयामों के दार्शनिक निहितार्थ (जैसे—शक्ति उद्देश्यों का पुनर्स्थापन, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन, निर्देश शिक्षा का परिवर्तन) (2) विशिष्ट दार्शनिक विचारधाराओं पर आधारित शिक्षण-मस्यारों के कार्यों का समीक्षात्मक अध्ययन (3) आधुनिक—विशेषतया भारतीय दार्शनिकों के शिक्षा-दशन का आलोचनात्मक अध्ययन अनुशीलन, यादों एवं मूल्यांकन तथा (4) शिक्षानुसंधानों की दार्शनिक विवेचना। उल्लिखित सबसे अंतिम आयाम का सबसे कम महत्व का न समझ लिया जाए। वस्तुतः शिक्षा सम्बन्धी सभी प्रश्न मूलतः दार्शनिक होते हैं। अतः शिक्षानुसंधान का मूल्यांकन दार्शनिक दृष्टिकोण से होना अपेक्षित है। निश्चय ही इस प्रकार के अध्ययन से शिक्षानुसंधान का सही दिशा निर्देश हो सकेगा।

शिक्षा समाजशास्त्र

यद्यपि ऐतिहासिक विकासक्रम में शिक्षा के अंतःसम्बन्धों की पहचान समाजशास्त्र की अपेक्षा दशन के प्रसंग में पहले हो गई थी, तथापि शिक्षानुसंधान की दृष्टि से, समीक्ष्य युग में शिक्षा दशन की अपेक्षा शिक्षा समाजशास्त्र में शोधकार्य अधिक हुआ है। यदि शिक्षानुसंधान के अध्ययनों के कार्यों से तुलना की जाए तो शिक्षा समाजशास्त्र के क्षेत्र में अभी कार्य कम ही हुआ है। इस क्षेत्र में अनुसंधान का शोधपत्र दलिया (1953) ने किया था, और उसके बाद से इसकी लोकप्रियता बढ़ती गई है। सन् 1953 से लेकर अब तक बीच के बचत दो वर्षों (1963 तथा 1964) को छोड़ कर, इस क्षेत्र में निरन्तर शोधकार्य हो रहा है। सबसे अधिक शोधकार्य सन् 1966 में हुआ, जब शिक्षा समाजशास्त्र के विविध पक्षों पर नौ अनुसंधान कार्य सम्पन्न हुए।

उपलब्ध शिक्षानुसंधानों की दृष्टि से शिक्षा समाजशास्त्र के जो प्रमुख उपक्षेत्र हो सकते हैं वे हैं समाजीकरण सामाजिक व्यवस्था के रूप में विद्यालय सामाजिक संरचना का संघटक विद्यालय, विद्यालयों पर सामाजिक नियंत्रण सामाजिक परिवर्तन तथा विद्यालय, विद्यार्थी समाज भारतीय समाज अध्यापक समाज, जनसंख्या प्रवृत्तियाँ आयु, सामाजिक तथा विभिन्न सामाजिक समूह।

भारतीय समाज का समझने का प्रयास करने वाला अथ पाठ्यचर्याया की तुलना में शिक्षाचर्या के क्षेत्र में अधिक अनुसंधान हुए हैं। इस तथ्य में यह स्पष्ट आता है कि शिक्षा को समाजशास्त्र में जा अधिक करना चाहिए वह शिक्षा के विद्यार्थी तो रहे हैं।

इन सभी अध्ययनों में प्रायः सर्वेक्षण विधि का ही प्रयोग किया गया है। 'यादव' माहेश्वर मगर आकस्मिक रहे हैं। अधिकांश अध्ययनों में 'यादव' राजस्थान का ही है। क्वान 4 प्रतिशत अध्ययन ऐसे हैं जिनमें राजस्थान में बाहर का भी 'यादव' लिया गया है। अधिकांश अध्ययनों में माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'यादव' लिया गया और मध्यविद्यालय स्तर के 'यादव' का सकेर 6 प्रतिशत अध्ययन किए गए हैं। सभी अध्ययन गुणात्मक हैं, सांख्यिकी काय इनमें अप्रति नहीं किया गया है। सांख्यिकी काय जिनका किया गया = वह विवरणमय है निष्कर्षात्मक नहीं। जिसमें भी अध्ययन में उच्च माध्यमिकी पढ़निया जम-गफ रणिया, धनानिमित्त आफ वणिम नान परामीद्विक सांख्यिकी आदि का प्रयोग नहीं मिला। समाजमिनिक अध्ययनों में समाजमिनिक उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

दस मामलों के सुवर्ण के लिए प्रायः मानक उपकरणों का ही प्रयोग किया गया है। इनमें मुख्य हैं सामाजिक आर्थिक-स्तर मापनी प्रभावशीलता मापक (सरचित तथा असरचित आना), प्रेरण अनुसूची, संप्रति परागत। कुछ शास्त्रज्ञों ने कतिपय अन्य प्रचलित उपकरणों का भी उपयोग किया है। उहाँ उपयुक्त उपकरण उपकरण नहीं हुआ वहाँ आवश्यकताओं में स्वयं भी आवश्यक उपकरणों का निमाण किया है।

समाजीकरण

समाजीकरण सबकी अध्ययनों के अन्तर्गत थीमारी (1954) ने ग्रामीण और शहरी परिवारों के बालकों का पुष्टि पर पन्न बाल आर्थिक-सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करने पर पाया कि बाह्य ग्रामीण क्षेत्र हा बाह्य गहरी, अन्ते आर्थिक परिवार से आन बाल बालक शारीरिक दृष्टि में स्वस्थ हैं शहरों बच्चा की सुवर्णमय स्थिति ग्रामीण बालकों की अपेक्षा अच्छी है, पर आर्थिक विकास का दृष्टि में गहरी तथा ग्रामीण बालकों में बाह्य अन्तर नहीं है। एम सी तथ्य जन (1966) के आनगना (1966) के अध्ययनों में मिनत है कि माध्यमिक विद्यालय में पन्न बाल उच्च-स्तर पर परिवारों के बालक-बालिकाओं में गतिक संप्रति की अभिवृद्धि का कारण — उन परिवारों में शिक्षा का अधिक महत्व देना। टिकरू (1966) द्वारा स्नातक महाविद्यालय में किए गए अध्ययन में एक आर उपयुक्त अध्ययन की पुष्टि आता है, पर हमारी आर यह भी बात आता है कि मध्यम सामाजिक स्तर से तथा ग्रामीण क्षेत्र से आन बाल छात्र अध्ययन सामाजिक स्तर के तथा शहरी छात्रों का अपेक्षा अधिक अच्छी गतिक संप्रति बाल हैं। भागीरथ सिंह (1959) ने अस्पृश्यता मन्त्रणा अभिवृद्धि के अध्ययन में यह निष्कर्ष किया कि बालक माना पिता द्वारा अन्ति हान के नय में अस्पृश्यता का पानन करने हैं। एम दृष्टि में वे अपन बग के सामाजिक मानकों द्वारा प्रभावित आते हैं। नागिन (1967) ने बालकों के समाजीकरण के सन्दर्भ में यह पता लगाया कि

माता पिता की आयु जितनी कम होती है, बच्चा के समाजीकरण में उनकी भूमिका उतनी ही अधिक माघनमूनक एवं मवेगात्मक होती है। बड़ी आयु वाला की अपेक्षा छोटी आयु वाला माता पिता अधिक माघनमूनक भूमिका निभाते हैं। सुशिक्षित मातापिता की अपेक्षा अल्प शिक्षित मानाएँ अधिक मवेगात्मक होती हैं।

सामाजिक संरचना में ही संबंधित आय तीन अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों का शहरी (महारी 1966), ग्रामीण (सक्सेना 1966) तथा आदिवासी (दुवे 1966) परिवेश में अध्ययन किया गया। तीनों ही अध्ययन में एक सवनिष्ठ निष्कर्ष यह मिलता है कि शहरी, ग्रामीण और आदिवासी—तीनों ही प्रकार की सामाजिक संरचना में उच्चवर्गीय छात्रों की शक्ति संप्राप्ति निम्नवर्गीय छात्रों की अपेक्षा अधिक है, और सामाजिक संभाग में भी य उच्चवर्गीय छात्र अधिक सशक्त हैं। दुवे ने एक अन्य निष्कर्ष यह भी निकाला है कि ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र सामाजिक संभाग और सामाजिक व्यवहार दोनों ही बातों में शहरी छात्रों की अपेक्षा गुणात्मक एवं संप्राप्तक दृष्टि से बेहतर हैं।

सामाजिक व्यवस्था के रूप में विद्यालय

सामाजिक व्यवस्था के रूप में विद्यालय सम्बन्धी अनुसंधानों में अन्तर्निहित का अध्ययन भी किया गया है। माथुर (1965) के अनुसार छात्रावासों में लड़कियों के व्यक्तिगत विकास में जो विकास होता है वह शहरी ग्रामीण, शिक्षित अशिक्षित जन्म अभिधानों में विभाजित नहीं होता। माथी (1967) ने छात्रावासों की सामाजिक व्यवस्था में औपचारिक एवं अनीपचारिक सम्बन्धों की व्यवस्था पर बल दिया, मगर पाण्डेय (1972) ने समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावासों का वातावरण शक्ति दृष्टि से उपयुक्त नहीं पाया। शिक्षण संस्थाओं के वातावरण पर घर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अध्ययन करने पर दशरथ (1969) ने पाया कि विद्यार्थी परिपक्व विद्यालयों में जनतन्त्रीय आदर्शों का पापन करने में अग्रसर रही हैं। य परिपक्व राजनतिक दला का अधिक सहायता में अवाधित हयकषे अपनाती हैं। त्यागी (1972) ने सय भाई-बहना के मध्य स्पर्धा और विद्यालय की परिस्थितियाँ पर पडन वाले उमर प्रभाव का अध्ययन करके आश्रमकता निर्भीकता, संरक्षण के प्रति असंतोष आदि का स्पर्धा का ही प्रति फलन बताया। इसी आधार पर उ हने अध्यापकों तथा संरक्षकों के लिए बच्चा के प्रति स्नेह सहिष्णुता और सहानुभूति युक्त व्यवहार करने की आवश्यकता पर बल दिया। पात्रीवाल (1961) ने सांस्कृतिक संरचना का अध्ययन करने हुए विद्यालयों द्वारा प्रति पान्ति निम्नलिखित चार मायनाओं का विद्यालयों की संस्कृति का आधार बताया (1) मानव व्यक्तित्व के लिए सम्मान, (2) स्वतंत्रता, (3) समुदाय सेवा द्वारा आत्म परिनाथ तथा (4) मजना जय आनंद। तोमर (1968) ने उच्च संप्राप्ति तथा निम्न संप्राप्ति वाले विद्यालयों के सामाजिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि विद्यालयों में मानवीय सम्बन्ध छात्रों के संप्राप्ति स्तरों का विशेष रूप में प्रभावित करते हैं।

सामाजिक संरचना का घटक विद्यालय

राज्यी सामाजिक संरचना के परिप्रेक्ष्य में उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बालानुभव सम्बन्धी कार्यक्रमों की क्रिया बचन पर अभी तक बताना एक ही अध्ययन द्वारा (द्विवेदी 1974)। इस अध्ययन द्वारा यह तथ्य प्रमाण में आया कि निम्न आय वाले परिवारों के छात्र बालानुभव कार्यक्रम में उच्च आय वाले परिवारों के छात्रों की अपेक्षा अधिक रुचि लेते हैं। बालानुभव कार्यक्रम में विद्यालयों की जाति उच्च प्राथमिक स्तर पर होती है। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर बहु प्रवेश घटती जाती है। पारिवारिक आय में ज्यादा-ज्यादा वृद्धि होती जाती है, तथा-तथा भी बालानुभव कार्यक्रम में रुचि का ह्रास होता जाता है। बालानुभव कार्यक्रम में अपेक्षित मकानों में निवास का प्रधान कारण है बालानुभव कार्यक्रम एवं स्वतन्त्र व्यवसायों के बीच अपेक्षित सम्बन्ध का अभाव और बालानुभव कार्यक्रम का विद्यालयी कार्यक्रम का अतिरिक्त अंग न बनना।

सामाजिक संरचना के एक अर्थ में ग्रामीण विद्यालय और समुदाय के सदस्यों का उत्तर प्राप्त (1960) में वर्णित चरण में तथा ग्राम (1966) में उदयपुर जिले में विद्यालय और समुदाय संबंधों के अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकला कि ग्रामीण क्षेत्रों में दानों के संबंधों में निष्कर्षों के आधार पर परस्पर सहयोग के लिए उत्तर उत्त है, परन्तु गहरी बातोंवरण में स्थिति अलग-अलग विवरण है। अलग-अलग निष्कर्षों की बातोंवरण में सामाजिक मापदण्डों में हानि के कारण अध्ययनों के अन्तर्गत शक्ति व्यवसायिक व्यवसायों के आधार पर सम्मान दिया जाता है जबकि ग्रामीण बातोंवरण में ऐसा स्थिति नहीं होती।

विद्यालयों पर सामाजिक नियंत्रण

विभिन्न सामाजिक वर्गों में सामाजिक समूहों, जातीय समूहों तथा शिक्षा में संबंधित चार आयामों में जो शासकत्व द्वारा हैं वे हैं भीत जाति में संबंधित अध्ययन (कनाडा चर्च 1958, हर्षावत 1967, तान 1969) महिना वर्ग समूहों अध्ययन (गुलाटी 1953 कृष्ण 1967 और ब्रजरा 1974), विभिन्न सामाजिक वर्गों की समस्याओं के अध्ययन (परवाना 1954 शर्मा 1970 मोहन 1974, मुखर्जी 1974) और शिक्षा के प्रति ग्रामवासियों के अभिवृत्ति के अध्ययन (चौधरी 1957, भा 1961)। इनमें से भी वास्तविक जातिवादों की शिक्षा में संबंधित अध्ययनों से पता चलता है कि यद्यपि शिक्षा के परिणामस्वरूप भान वास्तविक के दृष्टिकोण में, व्यक्तिगत जीवन में तथा विचारों में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है (कनाडा चर्च) तथापि भान वास्तविकों के दृष्टिकोण अभी भी स्थित है, वे जातीय वर्गों में मुक्त नहीं हो सके हैं (ताल)। भीत छात्रों की समस्याओं संबंधित समस्याओं के अध्ययन करने पर पता हुआ कि वे प्रायः अतिसूखी व्यक्तिगत बातें हैं अथवा सामाजिक संरचना के प्रायः नहीं बनते। आधुनिक शिक्षा के अनेक विषयों में विशेषतया अज्ञेय और गणित में उन्हें अधिगम संबंधी विशेष परिनादों का सामना करना पड़ता है (हर्षावत)।

महिला वयस सवधी अध्ययना के माध्यम से इस क्षेत्र की महिलाओं की शक्ति स्थिति का, तथा शिक्षित महिलाओं की और कारगर महिलाओं की उनका शिक्षणों सवधी समस्याओं का पता चलता है। सामान्य शिक्षा की भाँति ही महिला शिक्षा की अधिकांश शिक्षक सुविधाएँ गृहस्थ में ही केंद्रित हैं अतः ग्रामीण महिलाओं का बहुत बड़ा बगल शिक्षा से बंचित रह जाता है। इस कारण महिलाएँ पिछड़ी हुई हैं। उनका पिछड़ेपन के कुछ अन्य प्रमुख कारण हैं अल्पायु में विवाह परिणामित अल्पायु में ही मानसिक की प्राप्ति स्त्रियों के गुणन पारिवारिक दायित्व आदि (गुलाटी)। शिक्षित एवं कारगर महिलाओं की सतान सवधी समस्याओं के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि सन्तति का पालन-पोषण कारगर महिलाओं की कार्यक्षमता में स्पष्ट रूप से बाधक है, पर ये महिलाएँ इस कठिनाई को समस्या नहीं मानती और कारगर बने रहना चाहती हैं (कुलश्रेष्ठ)। इस तथ्य की पुष्टि भट्टारी (1974) द्वारा किए गए अध्ययन में भी हुनी है। इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि शिक्षित महिलाएँ नौकरी करना चाहती हैं क्योंकि परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारन के लिए उन्हें इसकी आवश्यकता है। वे सोचती हैं कि नौकरी करने पर उन्हें समाज में अधिक सम्मान मिल सकेगा। श्रीवास्तव (1957) के अनुसार बरला आदिम जाति में किशोर आयु के लड़के लड़कियाँ में कोई बठार विभेद नहीं किया जाता। दूसरी वरियता पाने के बावजूद वे लड़कियाँ पिता के घर में अपने का अत्यंत सुरक्षित अनुभव करती हैं। भारतीय समाज की मरचना के सवध में राजपूत (1965) ने मान्य किया कि समुक्त परिवारों से आन वाली छात्राएँ इस समुक्त व्यवस्था को पसंद नहीं करती। उन्हें न तो अपनी पसंद का विवाह करने की अनुमति मिलती है, न शिक्षक यात्राओं पर जान की और न विभिन्न सामूहिक कार्यक्रमों में भाग लेने की। इनका का जेब खर्च भी नहीं मिलता। इनके लक्ष्यिका अपने सरक्षण का अपनी समस्याएँ बताना चाहती हैं पर बताना नहीं पाती। इनका की इच्छा अंग्रेजी नृत्य एवं अंग्रेजी गीत सीखने की होती है, पर सरक्षण के बाधना के कारण वे साक्षर नहीं पाती। इनके लक्ष्यिका की अनुभूति यह है कि घर के धार्मिक कृत्या में भाग लेने के लिए उन्हें विवश किया जाता है। इन विविध कारणों से किशोरियों के सवध अपने सरक्षण के साथ अधुर नहीं रहते।

विभिन्न सामाजिक वर्गों की समस्याओं से संबद्ध अध्ययनों के अनुगत राजस्थान में आ जाने वाले पंजाबी, सिन्धी, पश्तो, बगला, कश्मीरी आदि विभिन्न भाषा भाषी शरणार्थियों की शक्ति समस्याओं का अध्ययन करते हुए परवानी (1954) ने सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों का सवधा अपेक्षापत्र पाया। अध्यापक विद्यार्थी अनुपात 1:60 स्वीकार करते हुए उन्होंने एक ऐसी योजना प्रस्तावित की जिसके आधार पर सभी शरणार्थियों के बच्चा की शिक्षा मुलभ हो सके। ग्रामीण छात्रा द्वारा शरीर विद्यालय में अनुभव की जाने वाली समस्याओं-नम्र्याओं के अध्ययन से यह पता होता है कि धार्मिक कठिनाईयाँ अध्यापकों की उपजावृत्ति आवासीय अनुविधाएँ आदि गम कारक हैं जो ग्रामीण विद्यालयों के (शहरी वातावरण में) समायाजन में बाधक बनते हैं। अतः उनको प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने की तथा अनुगत एवं छात्रवृत्ति द्वारा इनको

हैं। एक यह कि माध्यमिक विद्यालया के, विशेषतया निजी सस्थाओं के अध्यापक, ऋणग्रस्त हैं और दूसरा यह है कि अध्यापक वर्ग भाजन की अपेक्षा अपनी सन्तान की शिक्षा पर अधिक खर्च करता है (शर्मा 1954)। अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षण व्यवसाय चुने जाने के दो कारकों की ओर सुखवाल (1971) ने संकेत किया है। एक तो यह कि लगभग 90% अध्यापिकाएँ अपनी शैक्षिक योग्यता सुधारने के लिए इस व्यवसाय का चुनती हैं, और दूसरा यह कि इस व्यवसाय द्वारा उन्हें समाज सेवा के भी अवसर प्राप्त होते हैं। परंतु स्याल (1955) तथा वर्मा (1967) द्वारा सुखवाल के निष्कर्ष का समर्थन नहीं होता। स्याल और वर्मा के अनुसार सभी अध्यापिकाएँ आर्थिक दबावों के कारण ही इस व्यवसाय को चुनती हैं। अध्यापका की व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं पर केवल एक ही अध्ययन किया गया है और वह अध्यापिकाओं के सम्बन्ध में हुआ है वर्मा (1967) द्वारा। इसके अनुसार अविवाहित अध्यापिकाओं की मुख्य समस्या है—मानसिक अशांति। विवाहित अध्यापिकाओं की समस्याएँ दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी हैं। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी कितनी समस्याएँ इस व्यवसाय में आने से पूर्व थीं और कितनी इसमें प्रवेश करने का परिणाम हैं, यह कहने की स्थिति नहीं बनती। विधवा अध्यापिकाओं की दो मुख्य समस्याएँ सामने आई, एक तो मनोरंजन सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव और दूसरी अस्वस्थता। इन समस्याओं का सामना अविवाहिताएँ भी कर रही हैं। अविवाहित विवाहित और विधवा तीनों ही प्रकार की अध्यापिकाएँ अनुभव करती हैं कि उनकी सामाजिक स्तर निम्नतर है उनकी आर्थिक स्थिति निम्नतर है और उनके प्रति समाज का दृष्टिकोण प्रतिकूल है।

राजस्थान में प्राथमिक शिक्षा पंचायत राज के अधीन है। उस पर एक वृत्त अध्ययन भी हुआ है (जन 1969)। इस अध्ययन के द्वारा नव विनेश्रित व्यवस्था में प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की समस्याओं का पता लगा। इनमें से कुछ समस्याएँ जा प्रकाश में आईं व भी पणोन्नति के सीमित अवसर, निम्न वननमान आवासीय सुविधाओं का अभाव, घर-घर स्थानांतरण, मनोरंजन के साधनों का अभाव, निम्न सामाजिक सम्मान आदि। अध्यापकों की अवकाशकालीन प्रवृत्तियों पर केवल एक अध्ययन किया गया है (मुरारीदास मिह 1966)। शोधकर्ता के अनुसार अधिकांश अध्यापक और अध्यापिकाओं को औसतन तीन चार घण्टे तक दैनिक अवकाश प्राप्त था। इनकी अवकाशकालीन प्रवृत्तियाँ प्रायः चार प्रकार की थी—(1) अध्ययन सम्बन्धी (2) खेल क्रूद सम्बन्धी (3) बागवानी सम्बन्धी और (4) अपनी सन्तान को शिक्षा देने से सम्बन्धित। अधिकांश अध्यापक धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक समितियों के सदस्य नहीं थे। अध्यापकों का आर्थिक सकोच मनोरंजन के अच्छे साधन प्राप्त करने में बाधा उपस्थित करता था। उनकी अवकाशकालीन प्रवृत्तियों में मित्रता के कारण थे—आयु, लिंग और सामाजिक आर्थिक स्थिति।

विद्यार्थी समाज

विद्यार्थी समुदाय विद्यालय एवं समाज से सम्बन्धित अध्ययनों के मुख्य आयाम हैं (क) विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि (दलिया 1953, ठक 1974),

हैं। एक यह कि माध्यमिक विद्यालयों ने, विशेषतया निजी संस्थाओं के अध्यापक, ऋणग्रस्त हैं और दूसरा यह है कि अध्यापक वर्ग भोजन की अपेक्षा अपनी सन्तान की शिक्षा पर अधिक खर्च करता है (शर्मा 1954)। अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षण व्यवसाय चुन जान के दो कारकों की ओर सुखवाल (1971) न संकेत किया है। एक तो यह कि लगभग 90% अध्यापिकाएँ अपनी शक्ति योग्यता सुधारन के लिए इस व्यवसाय को चुनती हैं, और दूसरा यह कि इस व्यवसाय द्वारा उन्हें समाज सेवा के भी अवसर प्राप्त होते हैं। परंतु स्याल (1955) तथा बर्मा (1967) द्वारा सुखवाल के निष्कर्ष का समर्थन नहीं होता। स्याल और बर्मा के अनुसार सभी अध्यापिकाएँ आर्थिक दबाव के कारण ही इस व्यवसाय को चुनती हैं। अध्यापिका की व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं पर केवल एक ही अध्ययन किया गया है और वह अध्यापिकाओं के सम्बन्ध में हुआ है बर्मा (1967) द्वारा। इनके अनुसार अविवाहित अध्यापिकाओं की मुख्य समस्या है—मानसिक अशांति। विवाहित अध्यापिकाओं की समस्याएँ दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी हैं। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी कितनी समस्याएँ इस व्यवसाय में आने में पूर्व थी और कितनी इसमें प्रवेश करने का परिणाम हैं, यह कहने की स्थिति नहीं बनती। विधवा अध्यापिकाओं की दो मुख्य समस्याएँ भ्राम्यमान हैं, एक तो मनोरंजन सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव और दूसरी अस्वस्थता। इन समस्याओं का सामना अविवाहिताएँ भी कर रही हैं। अविवाहित विवाहित और विधवा तीनों ही प्रकार की अध्यापिकाएँ अनुभव करती हैं कि उनका सामाजिक स्तर निम्नतर है उनकी आर्थिक स्थिति निम्नतर है और उनके प्रति समाज का दृष्टिकोण प्रतिकूल है।

राजस्थान में प्राथमिक शिक्षा पंचायत राज के अधीन है। उस पर एक वृत्त अध्ययन भी हुआ है (जन 1969)। इस अध्ययन के द्वारा नव विकेंद्रित व्यवस्था में प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का पता लगा। इनमें से कुछ समस्याएँ जो प्रकाश में आई, वे थी पदान्ति के भीमिष अवसर, निम्न धनमान आवासीय सुविधाओं का अभाव, बार-बार स्थानांतरण, मनोरंजन के साधनों का अभाव, निम्न सामाजिक सम्मान आदि। अध्यापकों की अवकाशकालीन प्रवृत्तियों पर केवल एक अध्ययन किया गया है (मुरारीदास सिंह 1966)। शोधकर्ता के अनुसार अवकाश अध्यापक और अध्यापिकाओं को औसतन तीन-चार घण्टे तक दैनिक अवकाश प्राप्त था। इनकी अवकाशकालीन प्रवृत्तियाँ प्रायः चार प्रकार की थी—(1) अध्ययन सम्बन्धी (2) खेल-कूद सम्बन्धी (3) वागवानी सम्बन्धी और (4) अपनी सतान की शिक्षा देने से सम्बन्धित। अवकाश अध्यापक धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक समितियों के सदस्य नहीं थे। अध्यापकों का आर्थिक गंवाच मनोरंजन के अर्द्धे साधन प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न करता था। उनकी अवकाशकालीन प्रवृत्तियों में मित्रता के कारण स्त्री-पुरुषों के बीच और सामाजिक आर्थिक स्थिति।

विद्यार्थी समाज

विद्यार्थी समुदाय, विद्यालय एवं समाज से सम्बन्धित अध्ययनों के मुख्य प्रायाम हैं (क) विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि (दनिया 1953, डब 1974),

नहीं हो पाया है। ये विकलांग समाज के सांस्कृतिक जीवन में सहज रूप से भाग ले सकें ऐसा प्रयास किया जाना चाहिए।

सम्भावनाएँ एवं सुझाव

शिक्षा समाजशास्त्र के कई क्षेत्रों में अवस्था अपेक्षित रहे है, जिन क्षेत्रों में कुछ कार्य हुआ है, उनके भी अनेक आयाम अपेक्षित रहे गए हैं। समाजीकरण के अतः अनेक चारित्रिक अभिकरणों के साथ तुलना के लिए मूल्यों के एवं निष्ठाओं के विकास पर तथा उनके विकास में बाधक कारकों पर भी अभी अध्ययन नहीं हुआ है। भारतीय समाज की संरचना में केवल परिवार का अध्ययन किया गया, शेष सभी संघटक अभी अध्ययन किए जाने की प्रतीक्षा में हैं। विभिन्न सामाजिक वर्ग सामाजिक समूह, जातीय समूह तथा शिक्षा के अतः अनुसूचित जनजातियाँ में, मुख्यतया भीलों के बारे में ही अध्ययन किए गए हैं। राजस्थान में अभी भी अनुसूचित जनजातियाँ हैं, शिक्षा में उन्हें कितना प्रभावित किया है इसका भी अध्ययन होना चाहिए। विरसागों की शिक्षा के क्षेत्र का विविध आयामों में अध्ययन किया जाना चाहिए। मूल के अतिरिक्त अपंग अपाहिज व्यक्तियों को शिक्षा देकर इस योग्य बनाना आवश्यक है कि वे सामाजिक कार्यों में सभागी बनकर सम्मानपूर्ण जीवन जी सकें। इस दृष्टि में उनकी समस्याओं की, और उस मजल तक पहुँचने के रास्ते के अवरोधकों की पहचान करनी आवश्यक है। जिन विषयों पर अनुसंधान हो चुका है उनमें से अनेक क्षेत्रों के ज्ञान का अद्यतन बनाने के लिए पुनः अनुसंधान अपेक्षित है।

यह सत्य है कि उल्लिखित अपेक्षित क्षेत्रों में अनुसंधान सरल नहीं है पर यह भी सत्य है कि यह आवश्यक है। यह शोधकर्ताओं के लिए एक चुनौती है। इधर जो कुछ भी तथ्य विद्यालय-समाज के बारे में, पारस्परिक अतः प्रतियोगिता के बारे में, अध्यापकों की सामाजिक स्थितियों के उनकी व्यावसायिक कुशलता पर प्रभाव के संबंध में प्रकाशित हुए हैं उन्हें अपेक्षित करके जो भी व्यवस्था शिक्षक सुधार का दावा नहीं कर सकती। इन शिक्षानुसंधानों के तथ्यों को सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों में परख कर उनका उपयोग भविष्यमिति में करना आवश्यक है।

सन्दर्भ कृत अनुसंधान

कुलश्रेष्ठ, स्नेहलता

Problems of Educated Working Women with Special Reference to Their Children,
M Ed Udaipur Uni 1967

कलाशचंद

Education of Blind Children in Vidya Bhawan
Udaipur
M Ed Raj Uni 1958

खान, इशहाक मोहम्मद

Investigation into School Attitudes (Social Distance) of High School Boys and Girls of Udaipur City
M Ed Raj Uni 1956

- भगवान, वास्तव्युष्ण
गुरुकुल व आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्राथमिक स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1972
- गुप्ता हजारीलाल
Growth of Basic Education in India
M Ed Raj Uni 1955
- गुलाटी जी व
The Educational Backwardness of Women in Udaipur Division
M Ed Raj Uni 1953
- चौधरी जहानसिंह
Social Survey of the Village Bedla with Special Reference to the Villagers Attitude towards Education
M Ed Raj Uni 1957
- जन बाबूनाल
A Boys Higher Secondary School in Social Structure of a Small Pilgrim Town
M Ed Udaipur Uni 1966 1
- जन श्यामलाल
A Study of Primary Education in Panchayat Raj (Local Self Government) A Case Study
M A (Sociology) Udaipur Uni 1969
- जागी रविकान्त
A Comparative Study of the Socio Economic Conditions of the Student Teachers of Vdya Bhawan Handicraft Institute and
E C Ed
M Ed Udaipur Uni 1973
- झावर यशोनाथ
छात्रों का समाजमयितिक स्तर और उसका छात्र अध्यापन सम्बन्ध पर प्रभाव,
एम एड उदयपुर वि वि, 1970
- झा आर व
Outcomes of Education as viewed by the Rural Community
M Ed Raj Uni 1961
- टिषू हुलारी
A Degree College in the Social Structure of a Small Pilgrim Town
M Ed Udaipur Uni 1966
- ठाकुर, जितेंद्रसिंह
Changing Socio Economic Status of Teachers after 1947
M Ed Raj Uni 1962
- डक प्रम
Social Background of Guardians Teachers and Students in Primary Education
M A (Sociology) Udaipur Uni 1974
- दयागी राजकिशोर
सबे भाई बहना में प्रतिस्पर्धा भावनाओं का अध्ययन एवं उनका शिक्षा परिस्थितियाँ में प्रभाव,
एम एड, राज वि वि, 1972
- तामर रणजीतसिंह
A Comparative Study of Social Climate Factors of Low Achiever and High Achiever Schools
M Ed, Raj Uni 1968

दलिया, विद्यासागर	<i>The Socio Economic Background of Children in Vidya Bhawan and Other Indian Public Schools</i> M Ed Raj Uni 1953
दशोरा, यमुनाशकर	<i>Influence of Political Parties on Students Unions of the Colleges of Udaipur City,</i> M Ed Udaipur Uni 1969
द्विवेदी, गगारवरप	ढोकानेर शहर के उच्च प्राथमिक एव माध्यमिक विद्यालयो मे कार्यानुभव योजना की वियाविति का अध्ययन एम एड, राज वि वि, 1974
दीवान रीता	<i>Occupational Aspirations of Youth in an Urban Setting A Field Work Report</i> M A (Sociology) Raj Uni 1973
दुवे, उमेशचन्द्र	<i>A Mixed Higher Secondary School in the Social Structure of a Town in Tribal Area</i> M Ed, Udaipur Uni 1966
परवानी, चेतनदास	<i>Educational Problems of the Refugees in Rajasthan</i> M Ed Raj Uni 1954
पाटीदार, विजयपाल	शिन्वा स्नातक छात्राध्यापको के पारिवारिक प्रारूप का अध्ययन, एम एड, उदयपुर वि वि, 1971
पाण्डेय रामस्वरूप	समाज कल्याण विभाग राजस्थान द्वारा सञ्चालित छात्रवासो के सामाजिक एव भावार्थक वातावरण का मनोवैज्ञानिक अध्ययन एम एड, राज वि वि, 1972
पाण्डेय, त्रिभुवनपट	<i>The Mutual Contribution of School and Community in Badgaon Block</i> M Ed Raj Uni 1960
पालीवाल, शकरलाल	<i>The Culture Pattern of a School</i> M Ed Raj Uni 1961
मगू जसवंतसिंह	<i>A Study into Democratic Values of Ninth Class Students and their Relationship with the Mental Ability Academic Achievement and Socio Economic Status of these Students</i> M Ed Raj Uni 1972
महारी प्रमिला	<i>A Sociological Study of the Problems of Educated Women,</i> M A (Sociology) Udaipur Uni 1974
महारी, विजयसिंह	<i>A Boys Higher Secondary School in the Social Structure of a City,</i> M Ed Udaipur Uni 1966
भागीरथसिंह	<i>Attitudes of School Children towards Untouchability</i> M Ed, Raj Uni, 1939

- भाटिया विमल Instrumental and Expressive Roles of Parents in the Socialization of their Children
M S W Udaipur Uni 1967
- भागवत प्रेमनारायण Human Relationship in the Classroom An Exploratory Study in Sociometry
M Ed Raj Uni 1965
- भापुर, इन्दुबाना Life and Culture of the Teenagers A Study of the Inmates of a Girls Hostel
M A (Sociology) Raj Uni, 1965
- भापुर, दिनेशबिहारीलाल The Gurukul System of Education
M Ed Raj Uni 1953
- भीमा मुगाता Adjustment of Children from Migrated Families Some Case Studies
M Ed Raj Uni 1974
- भिम्या शशिप्रभा A Study of the Socio Economic Status and Teachers Attitudes toward Education
M Ed Raj Uni 1979
- भुरारीशाननिधि An Investigation into the Leisure time Activities of Secondary School Teachers of Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1966
- भागी इन्दुबाना The Social System of Girls Hostel A Study in Social Interaction
M A (Sociology) Raj Uni 1967
- भागीन्द्रनाथ Educational Thoughts of Ravindra Nath Tagore
M Ed Raj Uni 1958
- राजपूत कुमुद A Study of Harmony and Dis harmony between Parents and their School going Adolescent Girls
M Ed Udaipur Uni 1965
- लाल देवका डी Education of Bhil Girls in Middle and Secondary Schools of Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1969
- शर्मा गिरधाराशान बिहोर छात्रों में व्याप्त विद्यालय सम्बन्धी प्रसक्तों का एक अध्ययन
एम ए राज वि वि 1971
- शर्मा, विद्यानमा A Survey of Personal and Social Problems of Lady Teachers in Elementary Schools
M Ed Udaipur Uni 1967
- श्याम लक्ष्मीनारायण School Community Relationship in Higher Secondary Schools of Udaipur District
M Ed Udaipur Uni 1966
- शर्मा, दाऊदनाथ ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की शहरी विद्यालयों में समावेशन की समस्याएं
एम एड उज्जैन वि वि, 1970

शर्मा, शिवकुमार	The Socio Economic Status of Secondary School Teachers in Udaipur City M Ed Raj Uni 1954
श्रीमाली, नन्विशोर	Influence of Socio Economic Factors of the Environment on the Growth of Children M Ed Raj Uni 1954
श्रीवास्तव चम्पा	A Study of Some Aspects of Growing up of Adolescent Barla Girls M Ed Raj Uni 1957
सन्नेना, श्रीराम	A Study of Mixed Higher Secondary Schools in the Rural Social Structure M Ed Udaipur Uni 1966
स्याल, सावित्री	The Socio Economic Condition of Secondary School Women Teachers in Bikaner City M Ed Raj Uni 1955
सितोदिया जगभल	एस टी सी छात्राध्यापको की सामाजिक एव आर्थिक परिस्थिति, एम एड, उदयपुर वि वि, 1972
मुलवाल, बलाशदेवी	अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षण व्यवसाय के भयन के कारण, एम एड, उदयपुर वि वि, 1971
सुन्नुजाल	Adjustment of Hostel Boys from Affluent Homes and Tribal Homes in School M Ed Udaipur Uni 1974
हडपावत, न-हैयालाल	Adjustment Problems of Bhl Students in Secondary and Higher Secondary Schools of Udaipur City M Ed Udaipur Uni 1967
हिडसा हरिसिंह	The Education of the Handicapped in India M Ed Raj Uni 1955
हीरान्तानी, देविबा	A Comparative Study of Girls and Boys Secondary Schools in the Social Structure of Two Small Pilgrim Towns M Ed Udaipur Uni 1966

भाटिया विमल	Instrumental and Expressive Roles of Parents in the Socialization of their Children M Ed Udaipur Uni 1967
भागवत प्रेमनारायण	Human Relationship in the Classroom An Exploratory Study in Sociometry M Ed Raj Uni 1965
भापुर, इन्दुबाना	Life and Culture of the Teenagers A Study of the Inmates of a Girls Hostel M A (Sociology) Raj Uni., 1965
भापुर, विजयविहारीनाथ	The Gurukul System of Education M Ed Raj Uni 1953
भीम मुमाना	Adjustment of Children from Migrated Families Some Case Studies M Ed Raj Uni 1974
मिश्रा मणिप्रभा	A Study of the Socio Economic Status and Teachers Attitudes toward Education M Ed Raj Uni 1969
मुरारिगणनिधि	An Investigation into the Leisure time Activities of Secondary School Teachers of Udaipur City M Ed Udaipur Uni 1966
मोना इन्दुबाना	The Social System of Girls Hostel A Study in Social Interaction M A (Sociology) Raj Uni 1967
माण्डवनाथ	Educational Thoughts of Ravindra Nath Tagore M Ed Raj Uni 1958
राजकूत कुमुद	A Study of Harmony and Disharmony between Parents and their School going Adolescent Girls M Ed Udaipur Uni 1965
साल देवका डाल	Education of Bhil Girls in Middle and Secondary Schools of Udaipur City M Ed Udaipur Uni 1969
वमा गिरधारीनाथ	विद्योद छात्रा में व्याप्त विद्यालय सम्बन्धी समस्याएँ का एक अध्ययन एम एड राज वि वि 1971
वमा, विद्यानाथ	A Survey of Personal and Social Problems of Lady Teachers in Elementary Schools M Ed Udaipur Uni 1967
व्यास लक्ष्मीनारायण	School Community Relationship in Higher Secondary Schools of Udaipur District M Ed Udaipur Uni 1966
वमा, दाऊनाथ	ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की सहरी विद्यालयों में समाधान की समस्याएँ एम एड, उज्जयपुर वि वि, 1970

जर्मा, शिवकुमार	The Socio Economic Status of Secondary School Teachers in Udaipur City, M Ed Raj Uni 1954
श्रीमाला, नन्दिशोर	Influence of Socio Economic Factors of the Environment on the Growth of Children, M Ed Raj Uni 1954
श्रीवास्तव, चम्पा	A Study of Some Aspects of Growing up of Adolescent Barla Girls M Ed Raj Uni 1957
सक्सेना, श्रीराम	A Study of Mixed Higher Secondary Schools in the Rural Social Structure M Ed Udaipur Uni 1966
स्याल सावित्री	The Socio Economic Condition of Secondary School Women Teachers in Bikaner City, M Ed Raj Uni 1955
मिस्रोदिया, जगमल	एस टी सी छात्राध्यापको की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति, एम एड, उदयपुर वि वि, 1972
सुलवाल, कलाशदेवी	अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षण व्यवसाय के अवन के कारण, एम एड, उदयपुर वि वि, 1971
सुन्दुजाल	Adjustment of Hostel Boys from Affluent Homes and Tribal Homes in School M Ed Udaipur Uni 1974
हुडपावत, कल्यालाल	Adjustment Problems of Bhil Students in Secondary and Higher Secondary Schools of Udaipur City M Ed Udaipur Uni 1967
हिडसा हरिसिंह	The Education of the Handicapped in India M Ed Raj Uni 1955
हीरानदानी, देविना	A Comparative Study of Girls and Boys Secondary Schools in the Social Structure of Two Small Pilgrim Towns, M Ed Udaipur Uni 1966



शिक्षाक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें

□ डा. श्यामलाल बोस

□ पुढोत्तम लाल निहारी

यद्यपि राजस्वामि राज्य में राज्य स्तरीय शिक्षा नीति 1949 में लागू हो चुकी थी तथा पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें का राष्ट्रीयकरण 1952 में ही प्रभावशाली हो गया था किन्तु शिक्षाक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें में सम्बन्धित अनुसंधान कार्यों का आरम्भ 1954 में हीन का प्रमाण मिलता है। 20-21 वर्ष की अवधि में वर्षान् 1974 तक हम क्षेत्र में 44 अनुसंधान कार्य सम्पन्न हुए जो क्षेत्रगत व्याप्ति का दृष्टि में सामान्य शिक्षाक्रम भाषागत पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें सामाजिक ज्ञान पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें, विज्ञान पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें तथा सहान्वित कार्यक्रमों में सम्बन्धित हैं।

प्रधानता की दृष्टि में इनका व्याप्ति, स्तरीय शिक्षा में समाहित होन वाले विषयगत पाठ्यक्रमों पाठ्योत्तर कार्यक्रमों स्तरीय कार्यक्रमों व दार्शनिक आधारों, विज्ञान शिक्षा आगमना स्तरगत पाठ्यक्रमों और स्तरीय वातावरण में प्रचलित प्रयोग प्रवृत्तियाँ तक है।

प्रमुख अध्ययन विधियाँ की दृष्टि में उन्हें तो बचन चार अनुसंधान कार्यों में प्रयोगात्मक विधि प्रस्तावित है। जब प्रायः सभी में मर्यादित विधि का उपयोग किया गया। मर्यादित प्रयुक्त उपकरण प्रस्तावना (70 प्रतिशत से अधिक) और साक्षात्कार (लगभग 30 प्रतिशत) रहे। अभिवृत्ति मापन सम्प्रति परीक्षा, बुद्धि परीक्षा, सामाजिक आर्थिक स्तर मापन और अभिवृत्ति मापन आदि उपकरण भी काम में लिए गए, जिनका प्रयोग 10 प्रतिशत के लगभग रहा है। सांख्यिकी विधियाँ में प्रतिशत मध्यमान प्रामाणिक विचलन बाद स्ववाचक टा टेस्ट और सह-सम्बन्ध का प्रयोग किया गया।

सामान्य शिक्षाक्रम

1964 तक देश में और राज्य में बुनियादी शिक्षा का मुनिस्त्रित वातावरण था। उस क्षेत्र में एक विषय शिक्षाक्रम और स्वच्छिन्न अभिवृत्ति व प्रथम स्तरीय में चल रहा था। जमा में 1953 में बुनियादी शिक्षा का बीस वर्षीय यात्रा का प्रारम्भ तयार किया और बताया कि उसका शास्त्र प्रमाण और विस्तार व लिए मर्यादा तथा अन्य भवना व उपयोग में भी मर्यादा नया करना चाहिए। दूसरा द्वार मर्यादा में आवश्यक विज्ञान प्रारम्भ का प्रयोग भी का यह। शिक्षा का अविवर्धित पर यह एक

अच्छा अध्ययन है। 1955 में सक्मना न मालूम किया कि बुनियादी स्कूलें आत्मनिर्भरता का लक्ष्य सामन रखकर उसे क्ताई-बुनाई व कृषि उद्योग से प्राप्त करना चाहती थी, आत्मनिर्भरता की स्थिति शून्य प्रतिशत से 70 प्रतिशत तक थी, लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक कारण थे—उद्योग के लिए समय की कमी, अयोग्य शिक्षक, साधन सुविधाओं की कमी और विपणन की कठिनाइयाँ। श्रीमती साधी (1955) ने मालूम किया कि बुनियादी शिक्षा में मौखिक कार्य पर अधिक बल दिया जाता था और लिखित कार्यों में अनुभववाचित लेखों और वणन विवरणा को प्रोत्साहित किया जाता था। किन्तु मटाई (1959) ने सर्वेक्षण करने पर पाया कि वणन विवरण को केवल प्रतिभाशाली छात्र पसंद करते थे और औसत छात्रों की उनमें रुचि नहीं थी। बुनियादी शिक्षा में एक लगभग सामाजिक ज्ञान को संप्रथित इकाई के रूप में और विज्ञान को प्रायोजना कार्यों के रूप में पढ़ाने का था (श्रीमती साधी 1955)। किन्तु शुक्ल (1956) ने यह तथ्य निकाला कि स्कूलों में चल रही तत्कालीन पाठ्यपुस्तकें संप्रथित भाव से नहीं बनी हुई थी और उनमें इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र के प्रकरण असम्बद्ध और विच्छिन्न भाव से प्रस्तुत किए हुए थे। त्रिपाठी (1962) द्वारा किया गया एक ही अध्ययन सामाजिक विज्ञान के संप्रथित पाठ्यक्रम की समीक्षा करता है और उसमें (इंग्लैंड के पाठ्यक्रम की तुलना में) अनिश्चितता, असंप्रथिता और प्रायोगिक कार्यों का अभाव सक्कित करता है। इसी प्रकार बुनियादी शिक्षा द्वारा और परम्परित विषय प्रदान शिक्षा द्वारा की असंगति का जो सकेत इन अनुसंधान कार्यों में प्रत्यक्ष होत हैं व बताते हैं कि बुनियादी शिक्षा द्वारा के कुण्ठित हो जाने का एक प्रबल कारण यह रहा है कि उसकी पाठ्यक्रमीय प्राकाशाएँ समानांतर भाव से परिपूर्ण नहीं हो पाई थीं, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें एक दिशा में चल रही थी और बुनियादी शिक्षा के कार्यक्रम और प्रयास अणन केंचुल में सिमट कर रह गए थे। एम ही तथ्य कारण (1957) ने उजागर किए और बताया कि बुनियादी शिक्षा उच्चतर शिक्षा से पूर्वापर जुड़ी हुई नहीं थी उसके योग्य पुस्तक का निता त अभाव था, कृषि भूमि का अभाव था, बुनियादी और अर-बुनियादी सस्याएँ समानांतर भाव से चल रही थी अर बुनियादी स्कूलों के क्वस नामपट्ट बदले गए थे, शिक्षका का प्रशिक्षण नहीं हुआ था और पाठ्यक्रम को गम्भीरतापूर्वक बदलने की चेष्टा नहीं हुई थी।

शिक्षाक्रम और पाठ्यपुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की लहर देश में 1947 के बाद आई थी। राजस्थान में राष्ट्रीयकृत शिक्षाक्रम और पाठ्यपुस्तकें 1952 में लागू हुई थी किन्तु दूसरे देशों की तुलना में इस राष्ट्रीयकरण का स्वरूप और संयोजन किस कोटि का था, इसका पता गिरधारीलाल (1958) ने लगाया। इस अध्ययन के अनुसार इस में पुस्तक लेखन के लिए दस लेखकों के पनल थे, केनिफोर्निया में नैतिक निर्धारण शिक्षा विभाग करता था और पाठ्यपुस्तक मण्डल पुस्तक के मूल्यांकन, लेखन व सुधार की एक स्वायत्त राष्ट्रीय इकाई थी, किन्तु भारत में बसी कोई स्थायी शिक्षाक्रम समिति या मूल्यांकन सुधार इकाई कार्यरत नहीं थी। राजस्थान में राष्ट्रीयकरण पाठ्यपुस्तक मंडल 1973 से स्वायत्तशासी संस्थान बन गया है किन्तु पाठ्यक्रम, शिक्षाक्रम सम्बन्धी स्थायी

समिति के अभाव की बात आज भी वायम है। हाँ, माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर पर वसी विषय समितियाँ माध्यमिक शिक्षा बाड के अधीन अस्तित्व में हैं।

शिक्षाक्रम में शिक्षार्षियों का आवश्यकताप्राप्त और उनके स्थान का महत्व दन का सिद्धांत एक विचार शक्ति चिंतन में भल पुराना रहा है, किन्तु अवधारणा फलित हान वाल पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक में वह किस बदर उपक्षित रहा है इसका पना फाटक (1961) ने लगाते हुए स्थापित किया कि कक्षा 3-4 के पाठ्यक्रम में ऐसा वृत्तियाँ कमियाँ थी कि वह छात्रों में विविष्ट वृत्तियाँ उत्पन्न करता था और छात्रों की आवश्यकताप्राप्त और क्षमताप्राप्त का ध्यान न रखने के कारण कक्षा 4 तक छात्रों में गुण सम्बन्धी और कक्षा 5 तक भाग सम्बन्धी सम्भाव नहीं बन पाता। मानसिक स्तर पर लगभग ऐसी ही अवस्था मुरडिया (1970) ने दर्शाई। इसका अनुसार माध्यमिक शिक्षा क्रम छात्रों की मानसिक योग्यता के अनुरूप नहीं था पाठ्यक्रम के प्रकरण पिछली कक्षाओं से सम्बद्ध थे अथवा विषय और उनके पाठ्यक्रम के प्रति छात्रों में 68 प्रतिशत अनचाह थी और गणित उनके लिए होता था। विभिन्न पाठ्यक्रमों के प्रकरणों में पारस्परिकता और सुसम्बद्धता का भी अभाव पाया गया था। इसी प्रसंग में राव (1974) ने पाया कि भारतीय स्कूलों में बनावटपाठ्यक्रम शिक्षाक्रम का निम्न अभाव है और स्कूलों में सम्बन्धित विषय विज्ञान के विकास का पूरा सम्भावना अभी तक रूप है। 1974 में ही मुरडियन द्वारा न पना लगाया कि माध्यमिक स्तर पर 92 प्रतिशत छात्र शिक्षाक्रम में अपने लिए मुरझित भविष्य की आकांक्षा रखते हैं, किन्तु अभिवादी के उमा वर के अध्ययन से यह तथ्य प्रकटित होता है कि पाठ्यक्रम छात्रों में न तो समसामयिक नागरिक समस्याओं पर विचार करने का क्षमता पैदा करता है और न ही उनमें सामान्य के विवेक एवं मृदुतापानना के तथ्य पैदा करने का अहसास होता है। फाट 1959 में ही शिक्षाक्रम का ये प्रवृत्तियाँ निरूपित की थी कि राज्य में सामाजिक सामाजिक आर्थिक विकास का स्थितिपूर्ण पाठ्यक्रम में नहीं उभर रहा है उच्च शिक्षा का महत्व घटना जा रहा है अथवा भाषा के प्रति योग्य कम होना जा रहा है और कृषि विज्ञान तथा वाणिज्य विषयों का भाग छात्रों में बढ़ती जा रहा है। या मने 1959 से 1974 तक प्रचलित शिक्षाक्रम में शिक्षार्षियों का आवश्यकताप्राप्त और उनके स्थानों की अवधारणा उम्मा स्पष्ट रूप से नमूना है।

यह तो हृद आधिकारिक रूप में निष्पष्ट और परीक्षात्मक पाठ्यक्रमों का वान किन्तु अब क्षमता क्रमों (1967) ने स्कूलों में बन रहा नवान प्रवृत्तियों की खोज का ता उद्देश्य पाया कि स्कूलों में उद्देश्य विषयों का महत्व स्थापित किया जा रहा था प्रायः कालीन प्राथमिक-समा, खंडक व पुन पुनः कालों की प्रवृत्तियों स्कूलों में वर्तमान थीं क्षमताक्रम का विरोध महत्व मिल रहा था और क्रान्तिकीय भूस्थान कायक्रमों का जो नों दे रहा था। शिक्षाक्रम में ये सब पानना आनुवंशिक अन्तरिक्षात्मिक पाठ्यक्रम के रूप में समर्पित है इन यह मानकर बना चर्चा। अन्य प्रस्ताव आर्थिक व नैतिक शिक्षा में उन्ना तरह के आनुवंशिक शिक्षाक्रम का अहं यह वान जन (1974) के अनुसंधान से नमूना है चिन्तन यह पाया गया है कि शिक्षाक्रम में शिक्षा का छात्रों

के लिए जरूरी मानते हैं, यद्यपि वे यह नहीं मानते कि जन्म के क्षण का ही प्राजीवन सिखाया जाए, उसके स्थान पर वे छात्रों का सवधम-सामाय मिद्धात सिखाना पसंद करते हैं। वह भी नियमित पाठ्यक्रम के रूप में नहीं, बरन प्रायः सभा की प्रवृत्ति के समय ।

दश के अग्र भागों की तरह राजस्थान में भी कुछ विशिष्ट शिक्षा धाराएँ यथा माटेसरी शिक्षा, पब्लिक स्कूल शिक्षा, बाघिता (अपग, अग्र) की शिक्षा विशेष तारी शिक्षा चलती हैं । किन्तु इन अनुसंधानों की सीमा में बस नहीं मिल पाई हैं । एक अध्ययन शिशु (नसरी) शिक्षा पर (शर्मा 1961) हुआ था जिसमें पाया गया कि अपन शिशुओं के सम्बन्ध में अभिभावकों की अपेक्षाएँ अध्यापकों में वही अभिन्न रहती हैं यह भी कि अल्पायु में शिक्षारम्भ करने में छात्रों की सीखन की गति में विशेष वृद्धि नहीं होती, किन्तु हाथ का काम करने में, विविध वस्तुओं का परिचय देने में और नाना रंगी पुस्तकें सामने आने से पठनीयता जल्द बढ़ती है । इसी तरह एक अध्ययन (श्रीमती आभा 1970) की शिक्षा मन्त्रालय की शिक्षा में परीक्षा, जिसमें स्वामी विवेकानन्द तथा भगिनि निवेदिता के पत्रा/माहित्य आदि के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला गया कि भारतीय परिवेश में स्त्री शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसमें (क) मातृभाषा (ख) एक विदेशी भाषा (ग) संस्कृत भाषा (घ) हस्तकला व चित्रकारी तथा (ङ) सामाय विज्ञान व सामाय ज्ञान सिखाने की व्यवस्था रहे ।

भाषागत पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें

ज्ञान की शिक्षा में अथवा सम्पूर्ण शिक्षाक्रम में भाषा का पाठ्यक्रम रीटवत होना है । इसीलिए यदि इन अनुसंधानों में इस क्षेत्र में सवाधिक (13) अनुसंधान कार्य मिलते हैं तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए । ज्ञान की शिक्षा में प्रारम्भिक पाठ्य पुस्तकों का अत्यधिक महत्व माना जाता है और उनके लिए बच्चा की व्यवहार शक्ति बली जानन-गुनन और उनकी पाठ्यपुस्तकों में उम्र अनित देवन की प्रवृत्ति भी रहती है । इस दिशा में पहला अनुसंधान श्रीमती रविमणी रामचन्द्रा ने 1958 में किया और पता लगाया कि आयु वर्ग 7-8 के बच्चा की व्यवहार शक्तियों 1232 थी जबकि पाठ्यपुस्तकों में 825 विभिन्न शब्द आए थे । बनी (1960) के अनुसार माटे रूप से 36 प्रतिशत व्यवहार के शब्द पुस्तकों के शब्दों में सम्मिलित थे और 6 प्रतिशत शब्द ऐसे थे जो बच्चा के प्रत्यक्ष ज्ञान के स्तर में परे के थे । उभी दायरे में बच्चा के व्यवहार शक्ति में दाहिनाई सना जद है और शेष में से सवाधिक क्रिया शब्द होते हैं और व सब खेल-कूद तथा सामग्रों परे लू काम-काज के पशु-जगत और प्रकृति सम्बन्धी होते हैं । इस प्रकार के अनुसंधानों का उपयोग प्रारम्भिक पठन पुस्तकों में किया जा सकता है और "व्यवहार शक्ति तथा पुस्तकीय शब्दों के लिए परस्पर परिपूरक सहायक सामग्रों की सम्भावनाएँ खोजी जा सकती हैं ।

भाषागत शिक्षाक्रम में बच्चा की पठन रुचियाँ और आवश्यकताएँ जानकर उनके लिए आवश्यक सामग्रों प्रस्तुत करना एक अनिवार्य मिश्रान्त होना है । यह शिक्षा

म शर्मा (1954) ने मालूम किया कि आयु वर्ग 8-12 के बच्चों में से 53.73 प्रतिशत कहानियाँ, 12.23 प्रतिशत जीवनियाँ और 9.7 प्रतिशत कविताएँ पसंद करते हैं, अभिभावक तथा शिक्षक दोनों बच्चों की मानसिक क्षमता और रुचि को उनके शिक्षाक्रम में मुख्य निर्णायक मानते हैं। इधर मटार्ड (1959) के अध्ययन से पता लगता है कि छात्रों में आत्मकथा, संक्षिप्तीकरण, सवादलेखन, विस्तार व अनुवाद जैसे रचनाकार्यों के प्रति रुचि बिल्कुल नहीं थी। तत्काल लेख भी एकदम नापसंद किए जाते थे, प्रतिभाशाली छात्र वर्णन विवरण वाले लेख पसंद करते थे किन्तु औसत दर्जे के छात्र उन्हें नापसंद करते थे। उधर औसत छात्रों का काल्पनिक लम्बा म आनंद आता है तो पिछड़े हुए छात्र उन्हें अच्छा नहीं मानते। छात्राएँ वर्णनात्मक लेख पसंद करती हैं और जीवनियाँ को नापसंद। छात्राएँ भी इस पसंद की पुष्टि सुधी माधुर (1968) के अध्ययन में भी होना है। जणक भायाम और जोडती है कि विशोर छात्राएँ (कक्षा XI की) सामाजिक कहानियाँ और उपन्यास ज्यादा पसंद करती हैं जबकि आयु वर्ग 8-10 की बच्चों परियाँ की और राजा रानी की कहानियाँ में रुचि रखती हैं। हमारे लिए यह कहन का आधार बनता है कि अगर अलग अलग समय की खोज से समान तथ्य उभरें तो उन्हें पाठ्य सामग्री का निरूप बनाने में उपेक्षित नहीं माना जाना चाहिए।

समकालीन पाठ्यपुस्तकों के जो विद्वत्पणात्मक अध्ययन हुए हैं वे बताते हैं कि शिक्षार्थी की अपेक्षाओं वाले मिद्धान की शिक्षाक्रम और पाठ्यपुस्तकों के न्यायत्मक प्रभाव व्यवहृति पक्ष में कितनी और कमी स्थिति है। पुरोहित (1970) ने पाया कि कक्षा VIII की हिन्दी पुस्तक शिक्षणगत उद्देश्यों की परिपूर्ति नहीं करती छात्रों के लिए अनुभव आधारित या जीवनगत मूल्य नहीं प्रदान करती और उसके अभिव्यक्ति पाठों को छात्र रचिपरक नहीं मानते। अरुण रहमान (1972) ने भी कक्षा VI VII VIII तीनों की हिन्दी पुस्तकों को छात्रों की जरूरतों के अनुकूल नहीं पाया। उनके अनुसार ये समाज की समकालिक विकास की अवस्थाओं और आकांक्षाओं को प्रतिफलित करती प्रतीत नहीं हुई इनमें चित्रों का अनावश्यक समावेश और विषयगत एकता की दृष्टि से असन्तुलन था।

किन्तु माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर एक दूसरा ही तथ्य इन अनुसंधानों में उभरता है। श्रीमती शर्मा (1970) ने पाया कि ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थी भाषा पुस्तकों के सामूहिक आशयों का समुचित श्लेषा करते हैं और अपने पारिवारिक और जातीय सांस्कृतिक परिवेश के मदद से पुस्तकीय आशयों की व्याख्या करते हैं। उधर तिवारी (1972) ने मालूम किया कि माध्यमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में भाषा का पक्ष अधिक मुखर हुआ था उद्देश्यनिष्ठता शत प्रतिशत आई थी, जबकि वह 1964 की पुस्तकों में केवल 50 प्रतिशत ही थी मौखिक काम के प्रसंग 14 प्रतिशत आए। लघुतर व वस्तुनिष्ठ प्रश्न व अभ्यास 90 प्रतिशत बढ़े जबकि लम्बे उत्तर वाले प्रश्न घट गए। यह प्रभाव सावजनिक परीक्षाओं का ढांचा बदल जाने के कारण भाषा और सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश की बदलाव चयन व कारण भी।

इन अध्ययनों के आशय से इतना तो कहा जा सकता है कि कक्षा VI, VII, VIII के स्तर को छोड़ कर, शेष स्तरों पर भाषागत पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में शिक्षार्थी की अपेक्षा से और युगवाच की अपेक्षा से सन्तोषजनक परिवर्तन की प्रवृत्ति मुखर है।

अंग्रेजी हमारे शिक्षाक्रम में एक अनिवार्य विषय रहा आया है, बावजूद इसके कि ग्रोड (1959) ने पाया था कि छात्र उसे पसन्द नहीं करते और छिस्वर (1959) के अनुसार 68.9 प्रतिशत छात्र उसे इसलिए पढ़ते थे कि वह उनके लिए अनिवार्य कर दिया गया था। 50 प्रतिशत छात्र उच्चारण और वतनी की कठिनाइयों के कारण दुखी थे, और अगर छात्रों का विश्वास हो जाए कि तकनीकी उद्योगों और विज्ञान में उसके बिना काम चल सकेगा तो वे उसे पढ़ने को भी तयार नहीं थे। हर्हर (1961) के अनुसार मानवी कक्षा के छात्रों की अंग्रेजी शब्दावली विज्ञान रूप में उनकी पाठ्यपुस्तक में बँधी रहती है और अमूर्त छात्रों की अपेक्षा प्रतिभाशाली छात्र कुछ ही शब्द ज्यादा जानते हैं। सुथी वागची (1973) के अनुसार उनकी गलतियाँ के दायरे वतनी, शब्दावली केपिटल वण और विराम चिह्न हैं जिनमें प्रतिभाशाली छात्र कम गलतियाँ करते हैं और पिछड़े छात्र सवाधिक। वतनीगत त्रुटियों की सीमा 6.99 से 14.74 प्रतिशत तक शब्दावली की 7.29 से 16.69 प्रतिशत तक, केपिटल वण की 5.7 से 10.96 प्रतिशत तक और विराम चिह्नों की 12.71 से 24.24 तक थी। सुथी माथुर (1972) ने मालूम किया कि अंग्रेजी में केवल शब्द रूप में सिलाई गई बातें छात्रों को याद नहीं हो पाती प्रजेट इन्डेफिनिट के वाक्य उनके लिए कठिन होते हैं और cc, ie, e और ei वाले वतनी व उच्चारण रूप गृह्य कष्टनायक होते हैं।

अंग्रेजी के शिक्षाक्रम में इन तथा ऐसे ही अन्य अनुसंधान कार्यों से प्राप्त तथ्यों का उपयोग करके, उस शिक्षाक्रम और शिक्षण सामग्री को भारतीय/प्रादेशिक स्तर पर ढालने की अत्यन्त आवश्यकता प्रतीत होती है।

भाषा के क्षेत्र में संस्कृत आदि तृतीय भाषाएँ भी हमारे शिक्षाक्रम का एक आवश्यक अंग हैं किन्तु उनका धार में एक भी अध्ययन हमारे सामने उपलब्ध नहीं है।

सामाजिक ज्ञान पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें

भाषा के साथ-साथ सामाजिक ज्ञान हमारे शिक्षाक्रम का दस वर्षीय अनिवार्य अंग है। या इस शिक्षा अवयव की मद्द्वातक भूमिका बहुत 'यापक' और आदर्श लक्ष्यी मानी जाती है किन्तु हमारा प्रचलित पाठ्यक्रम इसे सम्बोध के किस घरातल पर उतारे हुए है, इसका पता हम रागसिंह (1962) के अध्ययन से लगता है। तदनुसार उसमें समामयिक सामाजिक आर्थिक स्थितियों का समावेश नहीं है सामाजिक जीवन के शक्ति उद्देश्य को पूरा करने में पाठ्यक्रम सफल नहीं है और यह बात राजस्थान और पंजाब दोनों राज्यों के लिए समान रूप से लागू है। यही तथ्य शुक्ल (1956) ने प्राप्त किया था जब उन्होंने उस समय की कक्षा VI, VII, VIII की सामाजिक ज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन किया था। उसमें उन्होंने समामयिक प्रसंगा के अभाव के

[illegible][illegible]

विज्ञान पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें

विज्ञान व मन्त्र म धनुषाधान क प्रथम सन् 1962 म दृश्यावान् । जगद्वा 10 वर्षावा नम्रा प्रनगान् । धीमन्त्र सन् 1972 त मन्त्र म धनुषाधान

वाय हाने दिखाइ देते हैं। 1972 सु सम्भवत इस कारण भी कि इसी वष से मैट्रिक शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर न विशेषत विज्ञान म एम एड पाठ्यक्रम आरम्भ किया था।

1962 म त्रिपाठी न राजस्थान के सामान्य विज्ञान पाठ्यक्रम की इम्प्लेंट के समवर्ती पाठ्यक्रम से तुलना करके पता लगाया कि वहा की तुलना म यहा का पाठ्य क्रम अनिर्दिष्ट और गोलमाल ढंग स तयार हुआ था, उनम छात्रा की रुचिया और उनकी क्षमताओं का ध्यान नहीं रखा गया था, पुस्तकें केवल सूचनात्मक थी और उनम समझदारी या समालोचना जगाने की क्षमता नहीं थी, उनम प्रयोग के उपकरण, उत्प्रे रणा और उपयोजन के अवसर नहीं दिए गए थे। किन्तु सन 1970 म जिस नये पाठ्य क्रम का प्रचलन हुआ और उसमें जिन जिन प्रकारों/विषयों को सामान्य विज्ञान नाम से अ त्रय पित किया गया उनके बारे में सुधी जमजीत कौर (1973) न माधूम किया कि ब्रह्मांड 52 प्रतिशत रसायन विज्ञान 30 प्रतिशत भौतिक शास्त्र 40 प्रति शत, जीव विज्ञान 30 प्रतिशत वनस्पति जगत 7 प्रतिशत, कृषि विज्ञान 10 प्रतिशत, शरीर विज्ञान 19 प्रतिशत पापण 9 प्रतिशत और रोग विज्ञान 19 प्रतिशत छात्रों की रुचिया प्राप्त करते हैं। पुस्तक में उनका समानुपात क्या है उसका निर्धारण करने में ये तथ्य उपयोगी मान जा सकत है। किन्तु पुस्तक के बारे में सुधी जसजीत का कहना है कि वे सद्भाविक निरूपण ज्यादा करती है और छात्र उस पर नही करते। विज्ञान की पुस्तक की इस कमी वाले तथ्य को मिथा (1972) के अध्ययन मे भी पुष्टि का प्रमाण मिलता है। वे कहत है कि इन पुस्तक में न तो अनुसंधान पद्धति पर प्रस्तुती करण हुआ है न समस्या समाधान की शैली पर, न ही उनमें छात्रा की कल्पना को मूलरित करने के अवसर ह। गुप्ता (1974) भी इसी निष्पत्ति पर पहुँचे कि पुस्तकें अनुसंधान पद्धति पर तैयार की जाना चाहिए। 1974 में ही शर्मा न पाया कि माध्य मिक स्तर का सामान्य विज्ञान पाठ्यक्रम शक्ति उद्देश्य भौगोलिक आवश्यकताओं व भारतीय परिस्थितियों के लिए अनुपयुक्त ह। पुस्तक में प्रयोग या तो आडम्बरपूर्ण या असम्भव स्थितियाँ वाले हैं। सबसे बड़ी कमी यह है कि मानविकी व विज्ञान सँकाया के लिए एक ही पाठ्यक्रम है।

इन सब अध्ययनों स यह मति बनती है कि राजस्थान के सामान्य विज्ञान तथा विज्ञान पाठ्यक्रमा म अभी भी साको-मुलता और जीवनोपयानिता की भारी गुजा-इश बनी हुई है। एक विचार यह भी है कि यदि पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें सम्यक् पूरा न हा ता शिक्षकों के लिए विज्ञान सदशिक्षाएँ तयार कराई जानी चाहिए। कस दिशा म गुप्ता (1972) ने रसायन विज्ञान सदशिक्षा की रूपरेखा विकसित की जिसके अनुसार उसम प्रकरण/इकाई की परिभाषा यथारगत शिक्षण उद्देश्य मूल्यांकन उद्देश्य सहायक सामग्री प्रयोग चित्र, उदाहरण उपयोजन के अवसर और पूवापर सम्बन्धों की जानकारी आनी चाहिए।

सहशैक्षिक कार्यक्रम

आज स्कूला म हम जिन प्रवृत्तियों/कार्यक्रमों को सहशिक्षण प्रवृत्तियाँ व नाम से जानत मगरन है वे वस्तुन हमार घापित और प्रभावित पाठ्यक्रमा के

25 प्रतिशत विद्यालय प्रदर्शनी और 20 प्रतिशत वाटिका निमाण के कार्यक्रम चला रहे थे। विभिन्न घटका का और खास करके 73 3 प्रतिशत छात्रों का मत था कि उनसे छात्रों की शिक्षक चेतना में वृद्धि होगी है किन्तु 26 7 प्रतिशत छात्र या तो परीक्षा के भय से या आर्थिक-सामाजिक हीन भावना के कारण, या अभिभावकों के असहयोग के कारण उनमें इच्छुक नहीं पाए गए। जब सिधवी ने 1970 में स्थिति का जायजा लिया तो छात्रों की सामाजिक गतिशीलता और इन कार्यक्रमों में उनके प्रतिभागीत्व के मध्य घनात्मक सहसम्बन्ध पाया, किन्तु विद्यालयों में शिक्षक कार्यों और सह शिक्षक आयोजनों के बीच सम्बन्ध समन्वय की कोई स्थिति नहीं थी। योजनाबद्ध कार्य का अभाव, शिक्षकों की अरुचि और अभिभावकों की उपेक्षावृत्ति मुख्य थी।

सम्भावनाएँ एवं सुभाव

विश्वविद्यालयीय उपाधियाँ प्राप्त करने हेतु किए गए इन अनुसंधान कार्यों में भी वे 'यूनिताएँ स्पष्ट भलवती हैं जो ऐसे अनुसंधान कार्यों में प्रायः रह जाया करती हैं। य भी सामित 'यान्त्रिक पर आधारित है जिनका विस्तार क्षेत्र प्रायः एक कक्षा, एक विद्यालय अथवा एक नगर तक ही है। फिर 'यादश के चयन में अनुसंधानकर्ता की सुविधा प्रायः निर्णायक घटक रही है परिणाम स्वरूप 'यादश प्रतिनिधि नहीं बन पाए हैं। जसा कि पूर्व विश्लेषण से स्पष्ट है इन अनुसंधान कार्यों में से अधिकांश (90 प्रतिशत से अधिक) में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त हुई है और प्रश्नावली प्रमुख उपकरण (70 प्रतिशत से अधिक में) रहा है। ये दोनों विश्वसनीयता की दृष्टि से सत्यापन नहीं माने जाते और इन पर आधारित निष्कर्षों की पुष्टि करने की आवश्यकता बना रहती है। कमिकता का अभाव होने के कारण इन अनुसंधान कार्यों में अनेक क्लिप्ताएँ रह गई हैं और कोई पूर्ण चित्र प्रायः उभर नहीं पाए हैं।

परिष्कारिता की दृष्टि से दत्तें ता 80 प्रतिशत से अधिक अनुसंधान कार्य माध्यमिक स्तर के शिक्षाक्रम से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि अग्र स्तरों के शिक्षाक्रमों पर अनुसंधानकर्ताओं का समुचित ध्यान नहीं गया है। प्राथमिक स्तरीय शिक्षा (जिस सावजनीन बनाने के लिए हमारा दश विशेष रूप से प्रयत्नशील है) के विषय में अनुसंधान कार्य का यह अभाव विशेष रूप से खटकने वाली बात है, क्योंकि इस क्षेत्र में व्याप्त अतिशय अप्रत्यक्ष एवं अवरोधन और धीमी प्रगति के प्रमुख कारणों में प्रचलित शिक्षाक्रम की अनुपयुक्तता भी सम्भवतया एक है।

किन्तु इन सीमाओं के बावजूद गत बीस वर्षों में किए गए इन अनुसंधान कार्यों ने शिक्षाक्रम एवं पाठ्यपुस्तक सम्बन्धी एक अनेक तथ्य उजागर किए गए हैं जो न केवल भावा अनुसंधानकर्ताओं का ही उपयोगी आधार प्रदान करते हैं बल्कि शिक्षाक्रम आयोजकों एवं पाठ्यपुस्तक निर्माताओं के लिए भी महत्वपूर्ण शिक्षा निर्देशन करते हैं। कक्षा शिक्षकों के लिए अपने अध्यापन कार्य का अधिक प्रभावी बनाने एवं उपयोगी क्रियानुसंधान कार्य आरम्भ करने में सहायक अनेक सम्भावनाएँ एवं सुभाव भी इन अनुसंधान कार्यों में निहित हैं।

- शिक्षाक्रम आयोजन में शिक्षका, अभिभावकों, छात्रा, गजननिक एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के सम्मिलित्व की सम्भावनाओं की खोज,
- वर्तमान परिस्थितियाँ एवं आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षाक्रम प्रतिमान का निर्माण,
- पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों एवं प्रकरणों के समावेश के निष्कर्ष तयार करना,
- शिक्षा की उत्पादन में सम्बद्ध करने के लिए किए गए प्रयोगों का अध्ययन करके इस दिशा में उपयुक्त प्रतिमानों का निर्माण एवं परीक्षण,
- प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षाक्रम में परिवर्तन के लिए किए गए प्रयासों का अध्ययन और सामयिक आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्निर्माण एवं बहिष्कारण,
- महिलाओं और पुरुषों के लिए समान अवसरों और प्रकारों की शिक्षाक्रम के अधीनस्थानीयता का अध्ययन, तथा
- अनौपचारिक शिक्षा प्रौढ शिक्षा एवं अश्वकालीन शिक्षाचक्रों में सम्बन्धी अनुसंधान कार्य ।

संदर्भित अनुसंधान

अग्निहोत्री, रवीन्द्र	An Evaluation of the Arts Curriculum at the Higher Secondary Stage in Rajasthan M Ed Udaipur Uni 1974
अब्दुल रहमान	कक्षा VI, VII और VIII की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का एक मूल्यांकन, एम एड, जयपुर वि वि 1972
अभ्या, सीतादेवी	स्त्री शिक्षा में भूमि निवेदिता का योगदान, एम एड, राज वि वि, 1970
आड, लक्ष्मीलाल केसरीलाल	A Comparative Study of Curriculum Development at the Secondary Stage M Ed Raj Uni 1959
अपूर, बी के	An Experiment in Developing Appreciation for a Foreign Culture M Ed Raj Uni 1961
अष्ट, सुनीलाल	Evaluation of History Text Books for High School Classes M Ed Raj Uni 1957
अश्व, जी हृषि	Basic Education in the Light of Montessori Principles M Ed Raj Uni 1960

- धुपानाजी गणेशदास
श्यामदास A Study of Some Correlates in Work Experience of the D-Ita Class
M Ed Raj Uni 1968
- गिरधारीदास The Trends in Nationalization of School Text Books
M Ed Raj Uni 1968
- गुप्ता बलदेवीदास An Evaluation of the Text book of Social Study of Class VII
M Ed Raj Uni 1971
- गुप्ता मनमोहन Evaluation of Science Curricula in the State of Rajasthan
M Ed Raj Uni 1974
- गुप्ता मन्मथदास Developing Curriculum Guide in Chemistry for Secondary School Teachers in Rajasthan
M Ed Raj Uni 1972
- कल्याणदास भामिनी उच्च प्राथमिक कक्षाओं में लिए निर्धारित सामाजिक ज्ञान पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीय एवम् राज्य स्तर पर मापन का प्रयोग में विवरणानुसार अध्ययन,
एम एड, राज वि वि 1974
- काशी, मन्मथदास Problems of Conversion of Non-Basic Schools into Basic Schools in Udaipur City
M Ed Raj Uni 1957
- शिंदे बलदेवीदास Secondary School Pupils Attitude towards English
M Ed Raj Uni 1969
- जयदास कीर्ति छात्र विज्ञान में मन्दमय माध्यमिक कक्षाओं में लिए निर्धारित सामान्य विज्ञान पाठ्यक्रमों का अध्ययन,
एम एड राज वि वि 1973
- जय मन्मथदास माध्यमिक विज्ञान में शिक्षकों का योगदान एवं उनकी शिक्षा में प्रति प्रतिबद्धता,
एम एड उदपुर वि वि, 1974
- जय शक्ति उच्च माध्यमिक विज्ञान में पाठ्यपुस्तक प्रवृत्तियों का प्रति प्रति एक अध्ययन,
एम एड, उदपुर वि वि 1974
- जिंदगी गुणानन्ददास The Effects of Rajasthan Board's New Type Question Papers on the Teaching of Compulsory Hindi at Secondary Level
M. Ed., Raj. Uni. 1972
- जय शक्ति गुणानन्ददास An Investigation into the Mental Abilities Developed in Higher Secondary School Girls Offering Optional Subjects in Humanities and Science Groups
M. Ed., Raj. Uni. 1976

पुरोहित, जेठ एन	A Critical Study of Nationalized Text Books in Hindi VIII Standard in relation to the Objectives Determined by the State Institute of Education Udaipur (Rajasthan) M Ed Jodhpur Uni 1970
फाटक, ए बी	Diagnostic and Remedial Work for Curriculum Development M Ed Raj Uni 1961
बागची, नमीता	Diagnosis of Language Errors in English for Class VIII and Exploration of Probable Causes M Ed Raj Uni 1973
बीदाबत, शेरसिंह	राष्ट्रगान अथ एव उद्गम और माध्यमिक विद्यालय छात्र (एक सर्वेक्षण), एम एड राज वि वि 1970
बनी, निर्वाणमिह	A Study of the Vocabulary of the Children of the Eight plus Age group M Ed Raj Uni 1960
भारतीय, सुधा	A Comparative Study of the Interests and Attitudes towards Family Life of the XIth Grade Girl Students Studying Domestic Science and Not Studying Domestic Science M Ed Raj Uni 1974
मटाई भगवानदास चंदीराम	Likes and Dislikes of Pupils in Written Hindi Composition (Class IX) M Ed Raj Uni 1959
माधुर आभा	An Investigation into the Types of Stories Liked by Girls between the Age of 8 and 10 Years M Ed Raj Uni 1968
माधुर, सुशीलरानी	Diagnosis of Language Errors in English in Class VI M Ed Raj Uni 1972
मिश्रा, श्यामपाल	A Comparative Study of Prescribed Chemistry Text Books for Schools in Rajasthan M Ed Raj Uni 1972
मुरडिया, सुन्दरसिंह	माध्यमिक विद्यालय के छात्रा और छात्राओं को बत मान पाठ्यक्रम के प्रति मनोवृत्तियाँ, एम एड, राज वि वि, 1970
रघाबा, जीवासिंह	Influence of Home on the Efficiency in Craft in Basic Education M Ed Raj Uni 1955
राजदान, प्राणनाथ	A Study of the Recent Efforts to Promote International Understanding through School Programmes M Ed Raj Uni 1963

रावेसिंह	A Comparative Study of Social Studies Syllabus in Higher Secondary Schools of Rajasthan and Punjab M Ed Raj Uni 1962
रामचन्द्रा, रविमणी	A Study in Children's Vocabulary M Ed Raj Uni 1958
रामचन्द्रा, रविमणी	A Study of the Development of Vocabulary of Children of Age group 6 to 8 Ph D (Edu) Raj Uni 1967
राव, एन सगमश्वर	Environmental Studies in Indian Schools M Ed Raj Uni 1974
रम्या, भाग्यशक्ति	A Study into the Understanding of National Integration at the Different Age Levels of the Adolescents in Secondary Schools of Rajasthan M Ed Raj Uni 1969
राजपूत, आनन्दबिहारी	Innovative Practices in Schools An Investigation M Ed Udaipur Uni 1973
रत्नकर, रत्नलाल	Attitude of Geography Students towards Geography M Ed Udaipur Uni 1973
शर्मा, कृष्णकुमार	विश्वीय छात्र-छात्राओं का राष्ट्रीय सम्बन्धी अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1973
शर्मा, राजेंद्रपाल	An Investigation into the Provisions made for Co-curricular Activities in High and Higher Secondary Schools for Boys and Girls of Bikaner Division M Ed Raj Uni 1962
शर्मा, चन्द्रप्रकाश	A Study of Children's Literature in Hindi M Ed Raj Uni 1954
शर्मा, पुष्पलता	A Survey of XI Class Students Evaluation of the Cultural Content of Higher Secondary Text Books in Hindi M Ed Jodhpur Uni 1970
शर्मा, वासुदेव	A Plan of Compulsory Basic Education M Ed Raj Uni 1953
शर्मा, रामचन्द्र	Outcomes of Nursery Education M Ed Raj Uni 1961
शर्मा, सत्यदे	A Study of New Trends in Secondary Schools M Ed Udaipur Uni 1967
शर्मा, मुशीलकुमार	राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण की वर्तमान प्रवृत्ति का अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1974
शुक्ल, अम्बाप्रसाद	Critical Study of Social Studies Text Books for Class VI VII and VIII M Ed Raj. Uni 1956

सकसना, के के	Self Sufficiency in Basic Education, M Ed Raj Uni 1955
साधी, गुणवती	Scope of Creative Expression in Basic School M Ed Raj Uni 1955
सारस्वत, हरिमकर	Understanding the Nature of Science A Comparison of Science Teachers and Science Students M Ed Raj Uni 1972
सिधवी, बजरंगमल	A Survey of Co curricular Activities of the Students of Class IX of Some of the Higher Secondary Schools of Jodhpur and their Effect on their Sociability M Ed Jodhpur Uni, 1970
सिधी सिराजमहमद	A Survey of Extra curricular Activities in Udaipur High Schools M Ed Raj Uni 1956
हडा, सूरजमाल	The Needs of Secondary Class Boys and their Implications for Developing a Core Curriculum for them M Ed Udaipur Uni 1974
हेहर अमरजीतसिंह	A Study of English Vocabulary with reference to Pupils of VII Class M Ed, Raj Uni 1961
त्रिपाठी, जयतशिवदेवकुमार	General Science Curriculum A Compara tive Study of Rajasthan with England M Ed Raj Uni 1962



अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया

□ डा प्रोफेसर सिंह देवत

□ कलासावित्री बाजपयी

अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया का अर्थ अध्ययन विधियाँ की समूह अधिक व्यापक है। साथ ही अध्ययन व अध्यापन प्रक्रिया एक-दूसरी से अलग अलग सम्बन्धित हैं कि उन्हें ही अलग अलग प्रक्रियाएँ मानकर उन पर हुए अनुसंधान कार्यों का विश्लेषण करना कठिन लगता है। वास्तव में शिक्षानुसंधान के सर्वेक्षण में पाठ होता है कि अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया से सम्बन्धित या अध्ययन अथवा अध्यापन ही है, उन्हें क्षेत्र की दृष्टि में निम्नलिखित दृष्टि से वर्गीकृत किया जा सकता है शिक्षण विधियाँ व उनके प्रति अभिवृत्ति अभिवृत्ति अध्ययन अभिवृत्ति, छात्र व शिक्षक के अलग-अलग का स्वल्प हृदय-अन्तर मादग का उपयोग शुद्धता एवं बुद्धि का विश्लेषण मानात्मक विकास सम्बन्धी अध्ययन तथा अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में सम्बन्धित अन्य क्षेत्र।

अनुसंधान का अर्थ में पाठ होता है कि शिक्षण विधियाँ में सर्वाधिक अध्ययन अभिवृत्ति अध्ययन पर हुए हैं जो 1969 से 1974 तक ग्राह्य है। बुनियादी शिक्षा पर कुल चार मात्र-काय उपलब्ध हैं जो मरी 1959 से पूर्व के हैं। कायानुभव के रूप में बुनियादी शिक्षा के एक पक्ष का पुनः 1970 में प्रस्तावित किया है। विविध शिक्षण विधियाँ एवं उपायों का लेकर कुल 14 अध्ययन हुए हैं जिनमें से मात्र सिर्फ शिक्षण विधि पर हैं।

छात्र-काय में सर्वाधिक अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित हैं। प्रयागात्मक विधि पर आधारित 14 अध्ययन उपलब्ध हैं। एडिनामिक एवं प्रकरण विधि का लेकर एक भी अध्ययन नहीं किया गया लगता है।

शिक्षण विधियाँ एवं उनके प्रति अभिवृत्ति

इस क्षेत्र में 12 अध्ययन एम एड स्तर के तथा 5 अध्ययन राज्य शिक्षा समिति द्वारा किए गए हैं।

एक अध्ययन मिश्रा (1973) द्वारा समस्या समाधान में पूर्व कल्पना के माध्यम पर किया गया। उन्होंने मान्यता किया कि वास्तव में शिक्षा में समस्या समाधान के लिए पूर्व कल्पना का उपयोग करने का क्षमता विकसित नहीं होता। उन्होंने यह भी पाया कि इस अवस्था के विद्यार्थियों के प्रयाग का स्तर भी निम्न पाठ के था।

त्रिपाठी (1974) ने बड़ी वक्षाम्रा की समस्याका का एव उनम शिक्षण विधिया की उपयुक्तता पर अध्ययन किया । उनने अनुसार बड़ी वक्षाम्रा म अनुशासन की समस्याएँ आती ह छात्रा व शिक्षका के अत सम्बन्ध नहीं बन पाते व एक दूसरे स विचारों के आदान प्रदान म बाधा आती है । बड़ी वक्षाम्रा मे बालका की अभिवृत्ति आम सनिकवादी बन जाती है व अध्यापक आधुनिक व उन्नत शिक्षण विधिया का प्रयोग नहीं करते ।

एक महत्वपूर्ण तथ्य जो इन अध्ययनों से प्रकट होता है, वह यह कि विद्यालय के विभिन्न विषयो एव उनकी शिक्षण विधिया मे से केवल तीन विधिया की छुआ गया है । बुनियादी शिक्षा पर कोई भी अध्ययन 1960 व 1970 के बीच मे नहीं किया गया ।

हिंदी शिक्षण

रामावतार शर्मा (1973) ने यह सर्वेक्षण किया कि हिंदी भाषा के प्रशिक्षित शिक्षक कहीं तक आधुनिक शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हैं । उन्होंने पाया कि आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रति प्रशिक्षित हिंदी अध्यापक की सकारात्मक अभिवृत्ति थी । उन्होंने यह भी पात किया कि अध्यापक कविता एव नाटको व अध्यापन म आधुनिक शिक्षण तकनीकों का म नहीं लेते थे । चौधरी (1969) का निष्कर्ष था कि मौनपठन से ग्रथग्राह्यता म वृद्धि होती है तथा अभ्यास स वाचन की गति म । रघुनाथ सिंह गौड (1970) न शिक्षका द्वारा अवधारणात्मक भाषा शिक्षण की विभिन्न तकनीका—(अ) शब्दकोष तकनीक, (आ) सश्लेषण तकनीक (इ) परिभाषा तकनीक व (ई) प्रत्यक्ष अनुभव की तुलना करके पात किया कि चारों तकनीका की प्रभावशीलता म काफी अंतर है, शब्दकोष तकनीक ग्रथ तरुनाका की अपेक्षा कम प्रभावशाली है । पचाली (1968) न अक्षर विधि एव वाक्य विधि का तुलनात्मक अध्ययन करके पाया कि हिंदी भाषी श्रेश्ठो म, जहाँ हिंदी मातृभाषा के रूप में सिखाई जाती ह वाक्य विधि विशेष प्रभावशाली सिद्ध नहीं हुई । अक्षर विधि भाषा तत्वा का पान देन में विशेष उपयोगी पाई गई । अक्षर विधि को अपनाने म वाचन व लेखन गति में बाधा नहीं आती । वाजपयी एव पचाली (1970) न हिंदी में कलम, होल्डर, पेन व पे सिल द्वारा सुलेख लिखन के परिणाम का तुलनात्मक अध्ययन किया । इससे पाया गया कि हिंदी के अच्छे लेखन में सभी प्रकार से प्रथम स्थान पेन का व तत्पश्चात क्रमशः पे सिल, होल्डर व कलम का रहता है । तिवारी (1967) न त्रुटि सशोधन की दो विधिया— सीधा सशोधन व सांकेतिक सशोधन—का एक प्रयोगनिष्ठ तुलनात्मक अध्ययन राज्य शिक्षा सस्थान के तत्वावधान में किया । उन्होंने पाया कि सीधे सशोधन की अपेक्षा सांकेतिक सशोधन समय की बचत व त्रुटि परिहार में अधिक प्रभावशाली था । सीधे सशोधन के परिणाम स्वरूप त्रुटियों का प्रतिशत 18 स गिनकर 13 जबकि सांकेतिक

गालाघ्रा में मुमज्जित पुस्तकालय नहीं था न ही उनमें टीक म रखा जाता रखा जाता था। अतः उच्च माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों में वाचन प्रवृत्ति का विकास नहीं हो पाता था। साल में छठ पुस्तकें पढ़ने का छात्रों की संख्या 8 प्रतिशत या 18 प्रतिशत एक विद्यार्थी पाए गए जिन्होंने एक भा पुस्तक नहीं पढ़ी। जिनमें कुछ पुस्तकें पढ़ी उनमें से 43 प्रतिशत न कचन उपयोग व कहाना का पुस्तकें पढ़ी।

पंचांगी (1967) ने कहा 8 वं कक्षा का छात्रों की शिक्षा में रचित पर राज्य शिक्षा मन्त्रालय के तत्वावधान में अनुसंधान किया जिसमें पाया कि छात्रों उन कविताओं में अधिक रचित हैं जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा व बार में आ। वाचक उन कविताओं में भी अधिक रचित हैं जो भक्ति की हैं। अथवा महान पुष्पा के बारे में हैं। वाचक राजस्थानी में दिया कविताओं का अधिक पसंद करते हैं।

शर्मा (1968) ने शिक्षा विषय में शिक्षा के अध्ययन प्रक्रिया का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि उच्च एवं मध्यम माध्यमिक शैक्षिक स्तर के विद्यार्थी शिक्षा में पठन-पाठन के प्रति ज्यादा जागरूक थे। छात्रों ने यह भी पाया कि शिक्षा के कुछ अध्यापक पढ़ाने में काफी अभिरुचि थे। कुछ प्रधानाध्यापकों में शिक्षा शिक्षण प्रक्रिया के प्रति अभिरुचि पाई गई। बजनाथ शर्मा (1969) ने शिक्षा के प्रशिक्षित एवं अध्यापक अध्यापक के द्वारा अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि प्रशिक्षित एवं अध्यापक अध्यापक का शिक्षण विधियाँ में वाद विवाद अंतर नहीं था। शर्मा ने यह भी पाया कि शिक्षा शिक्षण के प्रति प्रशिक्षित शिक्षा अध्यापक का मकसद अभिरुचि या नया ज्ञान प्रसार के अध्यापक अपने व्यवसाय में अच्छा तरह समझाते हैं।

संस्कृत शिक्षण

अग्रवाल (1971) ने संस्कृत शिक्षण का प्रक्रिया एवं समझ पर शोध कर अध्ययन में पाया कि सभी शिक्षकों में (विशेषकर शिक्षकों ने छात्रों को) संस्कृत का ज्ञान वास्तव में शिक्षा में नहीं था। सभी संस्कृत साहित्य का सभी पाठ नहीं, हरेक अन्य सामग्री भी उपलब्ध नहीं थी और कचन अनुवाद पढ़ने के बाद जाना था। धारकर (1971) ने संस्कृत के प्रति विद्यार्थियों का अभिरुचि का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि उन छात्रों का अध्ययन जो संस्कृत का अभिरुचि विषय के रूप में पढ़ रहे थे। एच्छिक विषय के रूप में पढ़ने वाले छात्रों में अधिक मकसद अभिरुचि पाई गई। उन्होंने यह भी पाया कि मराठी भाषा परिवार में राजस्थानी भाषा परिवारों की अपेक्षा संस्कृत के प्रति अधिक अनुसंधान अभिरुचि रखती हैं।

अन्य विषय शिक्षण

भास्कर (1974) ने उच्च माध्यमिक शिक्षा में गणित शिक्षण का अध्ययन किया। छात्रों ने शिक्षा के पढ़ने वाले अध्यापकों का गणित में शिक्षण रचित नहीं था।

पाठ्यक्रम भारी व असंतोषजनक था, प्रभावहीन शिक्षण विधियाँ अपनाई जा रही थी तथा पढ़ाने में कोई भी सहायक सामग्री काम में नहीं ली जा रही थी। नवीन गणित में अधिकांश विद्यार्थियों की विशेष रुचि नहीं थी।

बलवत्सिंह (1958) ने पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के बच्चा की खेल क्रियाओं का सर्वेक्षण किया। उन्होंने पाया कि शिक्षण में खेल विधि बालक का अधिक रुचि पूर्वक ग्रहण रखती है परन्तु विद्यालयों में इस विधि को उचित महत्व नहीं दिया जा रहा था। त्रिपाठिया (1974) ने किंडर गार्टन व प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण के तुलनात्मक अध्ययन से बात किया कि जहाँ तक सामाजिक ज्ञान व गणित के अध्यापन का प्रश्न है, वहाँ दोनों की शिक्षण विधियों में विशेष अंतर नहीं था। लेकिन उन्होंने देखा कि हिंदी शिक्षण में दोनों की विधियाँ में उल्लेखनीय अंतर था।

दो अध्ययन बुनियादी विद्यालयों में प्रयुक्त विधियाँ पर मिलते हैं। शर्मा (1957) ने पाया कि जो कक्षाएँ बुनियादी शिक्षा के ढंग से पढ़ाई जाती थी, उनका स्तर पारम्परिक ढंग से पढ़ाई जाने वाली कक्षाओं की अपेक्षा अच्छा था। किन्तु उन्होंने यह भी पाया कि जो अध्यापक बुनियादी विद्यालय में काम करते थे उन्हें बुनियादी शिक्षण विधियों का बहुत अपूर्ण ज्ञान था। बुनियादी विद्यालय शिक्षण सामग्री के मामले में शोचनीय स्थिति में थे। जुल्का (1957) ने पाया कि बहुत थोड़े अध्यापक सहसम्बन्ध की तकनीक के सही अर्थ को समझते थे तथा कोई भी विद्यालय पूर्णरूपेण सहसम्बन्ध की तकनीक को नहीं अपनाता था।

सिन्ही (1957) ने बुनियादी शालाओं में अध्ययनरत बच्चा की अभिवृत्ति में हुए परिवर्तन का अध्ययन किया जिसमें बुनियादी शालाओं के बच्चा न रचनात्मक एवं सत्यता आदि गुणों के लिए अधिक धन प्राप्त किए। सामाजिक एवं सहयोगपूर्ण रहने सहन के सम्बन्ध में बुनियादी व गैर बुनियादी शालाओं के बच्चा में सार्वजनिक दृष्टि से कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं था, परन्तु बुनियादी शालाओं के बच्चा में धर्म के प्रति विशेष झुकाव पाया गया।

अन्य अध्ययनों में बिजयवर्गीय (1970) ने कार्यानुभव का सर्वेक्षण करते हुए पात किया कि 67-68 में केवल 56 विद्यालयों में और 68-69 में 190 विद्यालयों में कार्यानुभव का कार्य चल रहा था। इन विद्यालयों में 42 प्रकार के कार्य लिए गए थे। कार्यानुभव में लगे छात्रों को शैक्षिक संप्राप्ति पढ़ाई लिखाई, खेलकूद व अन्य प्रवृत्तियों में उन्नत पाया गया।

छिन्नर (1959) ने अंग्रेजी के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि समग्र रूप से विद्यार्थियों की अभिवृत्ति अनुकूल थी। अभिवृत्ति एवं संप्राप्ति में धनात्मक सहसम्बन्ध भी पाया गया। असारअहमद (1969) ने रचनात्मक उपायों के प्रति अंग्रेजी के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता होता है कि उस उपायों के प्रति छात्राध्यापकों में सेवारत शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति थी। उन्होंने यह भी पात किया कि प्रशिक्षित

अध्यापन की अभिवृत्ति भी समागतमर की एक पुष्प शिक्षण की अभिवृत्ति महिला शिक्षण की अपेक्षा अधिक अनुसूत थी। पत्र (1967) ने अश्वेजी व अध्यापन की समस्याएँ पान की। उन्होंने पाया कि अश्वेजी में जानका की 'यून सप्राप्ति व कारण व अचूत और प्रगतिन अध्यापकों की समा, उपयुक्त पाठ्य-पुस्तक का अभाव तथा नाच या कथाप्राप्त म गतन विधियाँ म शिक्षण काय करना। अध्यापन का मूल समस्या यन् पान यह कि जानका का पुनर्गान टोक नहा जाना अतः उपजागतमर काय करने पर भी यह जानका वता व अपाति मर तव आ हा नहा पात।

विश्लेषणा (1969) ने उन घटना का अध्ययन किया जा नद शिक्षण विधियाँ व प्रति नर प्रगतिन शिक्षण का रचि म हाम लात है। उ हाने पात किया कि रचि म अभिवृत्ति या एक महत्वपूर्ण भूमिका रानी है तथा नद नरनीरा व विषया व प्रति प्रगतिन शिक्षण का समागतमर अभिवृत्ति रना है।

अभिवृत्ति अध्ययन

अभिवृत्ति अध्ययन पर प्रयागात्मर काय करने दृष्ट मायुर (1969) न नागर्वि पात्र म स्वर्णि श मासप्रा मयार था। उन्होंने स्वर्णि श मास पाठ्यगिरि विधि म पढ़ाए जाने पान विद्याधिया का निष्पत्ति का पुनर्गान अध्वयन किया। उन्होंने पाया कि प्रायोगिक रूप की व निर्यात्रन रूप का उपर्यात्र म उपर्यात्र अंतर रहा। तथा श्री अंतर समा (1971) न अध्यापन व मरम म पाया। समा व अध्वयन म यन् निर्यात्र मासम आया कि प्रायोगिक रूप का सप्राप्ति निर्यात्रन दन का अपेक्षा अच्छा रना। यन् भी पाया गया कि विद्याधिया ने अभिवृत्ति अध्ययन व प्रति अतिर अनुसूत अभिवृत्ति शिक्षा। पत्र (1971) ने अभिवृत्ति अध्ययन मासप्री का व्यापन विधि स पुनर्गान का। दाना रना का पत्र था तान-पत्र किया गया, जिससे पान दृष्टा कि विद्याधिया की सप्राप्ति अभिवृत्ति अध्ययन विधि म पान पर उपर्यात्र रूप म अधिक रना। भागव (1972) न तान विधिया—पारम्परिक विधि अभिवृत्ति अध्ययन व निर्यात्रन अभिवृत्ति अध्ययन का पुनर्गान अध्वयन किया। उन्होंने पाया कि अभिवृत्ति अध्ययन का नरना पारम्परिक शिक्षण का अपेक्षा अच्छा था। निर्यात्रन अभिवृत्ति अध्ययन का दन का सप्राप्ति उपर्यात्र रना। पुनर्गान (1972) न गतिन म पारम्परिक शिक्षण नरना का अभिवृत्ति अध्ययन नरना म पुनर्गान का एक जाना नरना का प्रति विद्याधिया या अभिवृत्ति का अध्ययन कर पाया कि विद्याधिया अभिवृत्ति अध्ययन नरना म ज्यान् अच्छा मागत है। किन्तु यन् भी पान किया कि उम दन था जिस अभिवृत्ति अध्ययन का विधि म पाना गया बुद्धि एक सप्राप्ति म महामयत्र गुणा 05 व स्तर पर साधन नहा था। विद्याधिया न अभिवृत्ति अध्ययन नरना व प्रति अनुसूत अभिवृत्ति प्रस्ट का। समा (1972) न मादूम किया कि निर्यात्रन म स्वर्णि श मासप्रा म अध्ययन करने पर उपर्यात्र बुद्धि पान विद्याधिया अधिा सप्राप्ति प्रशिन ररत है। किन्तु उया विषय म

छात्र (1973) ने पाया कि अभिन्नमित अध्ययन विधि बुद्धिमान लड़कियों के लिए बहुत सहायक नहीं थी। उन्होंने यह भी पाया कि उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाली लड़कियाँ अभिन्नमित अध्ययन विधि से अधिक सम्प्राप्ति नहीं कर सकी।

मुद्गल (1973) ने पात किया कि रेखीय अथवा शाखीय अभिन्नमा से पढ़ाए जाने पर विद्यार्थियों की सम्प्राप्ति में कोई सायब अंतर नहीं होता। यादव (1974) ने पाया कि अभिन्नम वाले शिक्षक अनभिन्नम वाले शिक्षकों की अपेक्षा अधिक छात्रों को पुनर्बलन का प्रयोग करते थे।

अभिप्रेरण

अभिप्रेरण से सम्बन्धित केवल एक अध्ययन शाकल्य (1971) का उपलब्ध है। शाकल्य ने शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त प्रेरणा एवं प्रतिरोधका के प्रति विशोर छात्र व छात्राओं की अभिवृत्ति की जाँच की। अध्ययन से प्रकट हुआ कि विद्यार्थी जिन प्रेरणा की ओर सर्वाधिक अनुकूल अभिवृत्ति रखते थे वे थे पारितोषिक, विशेष उत्तरदायित्व देना, सामाजिक प्रतिष्ठा देना (कक्षा नायक आदि चुनकर) तथा उत्साहवर्द्धक टिप्पणी देना (मया सतोपजनन, अक्षुब्ध, उत्कृष्ट आदि)। जिन प्रतिरोधका के प्रति सर्वाधिक प्रतिकूल अभिवृत्ति पाई गई वे थे दूसरे विद्यार्थियों के सामने किसी विद्यार्थी को शर्मिन्दा करना, दूसरा व सामने तिरस्कारपूर्वक अस्वीकार करना तथा बड़े शब्दों में अपमानित करना। ऐसा प्रतीत होता है कि अनुसन्धान की दृष्टि में अभिप्रेरण का क्षेत्र लगभग उपमित सा हो रहा है।

छात्रों व शिक्षकों के सम्बन्धों का प्रतिरूप

दो अध्ययन छात्रा व शिक्षका में सम्बन्धों का प्रतिरूप पर किए गए। कुल्लर (1959) द्वारा हुआ अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान से अधिक सम्बन्धित है, तथा उसमें विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों की भूमिका के बोध और शिक्षकों द्वारा छात्रों की भूमिका के बोध का अध्ययन किया गया। श्रीवास्तव (1974) ने जीव विज्ञान के शिक्षकों के शैक्षिक व्यवहार का अध्ययन किया। उनमें निम्न प्रकार से रहे अध्यापक एवं अध्यापिकाएँ दोनों ही अपेक्षा से अधिक बातें करते हैं, भावनाओं, विचारों आदि को स्वीकार करते हुए, अध्यापक अध्यापिकाओं की अपेक्षा अधिक पुनर्बलन (Reinforcement) का प्रयोग करते हैं, अध्यापिकाएँ अध्यापकों की अपेक्षा निर्देश देना व आलोचना करने में अधिक समय बिताती हैं, प्रशिक्षित शिक्षकों की अपेक्षा अप्रशिक्षित शिक्षकों की कक्षा में छात्रों की अधिक समय तक चलता है तथा प्रशिक्षित शिक्षक अप्रशिक्षित शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पुनर्बलन का प्रयोग करते हैं।

दृश्य श्रव्य सामग्री का उपयोग

विद्यालयों में दृश्य-श्रव्य साधनों के उपयोग से सम्बन्धित अध्ययनों में गीहल (1961) ने राजस्थान व पंजाब के विद्यालयों में दृश्य श्रव्य साधनों के उपयोग के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात किया कि पंजाब के विद्यालय दृश्य श्रव्य सामग्री के माने में

सप्रत्यय और अवबोध की वृद्धि के साथ सम्बन्ध है। रुचि का भी सप्रत्यय की वृद्धि के साथ सम्बन्ध देखा गया।

गड्ड (1965) ने शिक्षण-कौशल के तत्त्वा के निश्चायक की जाँच की। उन्होंने पता लगाया कि अध्यापक की बुद्धिबल, अभिवृत्ति व शिक्षण अभ्यास मुख्य निश्चायक तत्त्व हैं। उन्होंने यह भी देखा कि दीर्घकालीन अध्यापन अनुभव और अध्ये शिक्षण में कोई सम्बन्ध नहीं है। उनके अनुसार अध्यापकों के व्यक्तित्व का समायोजन समक बहुत कम स्तर पर था। व्यास (1971) ने पाया कि अध्ययन गति बौद्धिक क्षमता व प्रत्यक्षानात्मक गति से सम्बन्धित है और वह आयु के साथ बढ़ती है।

सम्भावनाएँ एवं सुझाव

प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक स्तर के 'यादश' पर शोध काय उपेक्षित सा रहा लगता है। प्राथमिक शिक्षा के विस्तार एवं महत्त्व को देखते हुए सर्वाधिक शोध इसी स्तर के 'यादश' पर किए जान चाहिए। एक अध्यापकीय प्राथमिक विद्यालयों में प्रयुक्त तथा अपेक्षित शिक्षण विधियों के स्वरूप पर शोध काय का अभाव खटकने वाला है, जब कि आज राजस्थान में ऐसे प्राथमिक विद्यालय 55% हैं। इस पक्ष पर अब शोधकर्त्ताओं का ध्यान जाए, इसका भी औचित्य है। अब जबकि प्राथमिक शिक्षा सावजनीन होने जा रही है, तब शोधकर्त्ता एवं अध्यापकों को यह जानने की आवश्यकता रहेगी कि वे वग जो कि अब तक उपेक्षित रहे हैं, की रुचि व विषय व अभिप्रेरण के घटक आदि क्या हैं।

प्रयोगात्मक अध्ययनों में एक शिक्षण विधि की दूसरी शिक्षण विधि से तुलना करने की अपेक्षा एक ही विधि के विभिन्न परिवर्तकों पर अध्ययन अधिक उपादय हो सकते हैं। साथ ही इस दृष्टि से भी प्रायोगिक शोध काय किए जाने चाहिए कि देश के मातावरण में ही किसी व्यावहारिक शिक्षा विधि का विकास किया जा सके।

प्रशिक्षित शिक्षकों में आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित की है। परन्तु इस सकारात्मक प्रवृत्ति व उपरांत भी विद्यालयों में आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रभावशाली उपयोग का अभाव क्यों है यह शोध का विषय बन सकता है।

गृहकाय से सम्बन्धित कई क्षेत्र ऐसे हैं जो अभी तक अछूते हैं यथा-विभिन्न वक्षाओं, विभिन्न विषयों व सत्र के विभिन्न महीनों में गृहकाय की अपेक्षित मात्रा पर भी अनुसंधान किया जा सकता है। नुटि विश्लेषण के क्षेत्र में गणित सामाजिक ज्ञान, सामान्य विज्ञान जैसे महत्वपूर्ण विषय शोध की परिसीमा से लगभग अछूते रहे हैं।

ज्ञानात्मक विकास अभिप्रेरण तथा छात्र शिक्षक अंतःसम्बन्ध का स्वरूप जैसे आधुनिक कहे जा सकने वाले वर्गों में केवल एक एक अध्ययन हुआ है। उन्हें अधिक महत्वपूर्ण माना जाकर आजकल अधिक बल दिया जाता है। इस और भी शोधकर्त्ताओं का ध्यान अपेक्षित है। एसा लगता है कि आधुनिक कहा जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण विधियों पर शोध बिल्कुल नहीं हुए हैं जिनमें दल शिक्षण परिसीमित शिक्षण (Micro Teaching) व जन संचार माध्यम (Mass Media) आदि प्रमुख हैं।

सन्दर्भांकित अनुसंधान

- अग्रवाल कमला राजस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण का संगठन, कक्षाध्यापन विधि तथा छात्रोपसर्गिण का सर्वेक्षण,
एम एड उदयपुर विवि 1971
- अग्रवाल प्रमोदगान A Study of the Attitude of English Teachers towards the Structural Approach to the Teaching of English
M Ed Udaipur Uni 1969
- अग्रवाल रामचन्द्र An Investigation into the Causes of Errors in Geometry for Class IX
M Ed Raj Uni 1956
- अग्निवाक प्रमोदी To Investigate into the Relationship of Concept and Understanding of General Science with Intelligence and Interests of Girls of VIII Class
M Ed Raj Uni 1974
- अहलक्षर शरतिप्रमोदन Pattern of Teacher Pupil Relationship
M Ed Raj Uni 1959
- अहलक्षर मदनमदन An Investigation into the Determinants of Teaching Skill
M Ed Raj Uni 1965
- अहलक्षर मोहनमिन्द A Study of the Homework given in Upper Primary Classes
M Ed Jodhpur Uni 1970
- अहलक्षर हरद्विनाथ A Comparative Study of Conventional Teaching Technique with Programmed Instruction Technique as Applied to Teaching Set Theory in Mathematics and Study of Attitudes of Students towards Instructional Technique
M Ed Raj Uni 1972
- अहलक्षर अरुणा बच्चों की भाषा शिक्षा में प्रत्यक्ष निर्माण के लिए अध्यापक द्वारा प्रयुक्त विधियों का तुलनात्मक अध्ययन
एम एड गज विवि 1970
- अहलक्षर रघुनाथमिन्द A Comparative Study of Techniques used by Teachers in the Conceptual Teaching of Language to Children
M Ed Raj Uni 1970
- अहलक्षर जगमम A Comparative Study of the Use of Audio-Visual Aids in Schools (with special reference to the Teaching of Social Studies)
M Ed Raj Uni 1961
- अहलक्षर विजयलक्ष्मी शिक्षण छात्राश्रमों की संरचना के प्रति अभिवृत्ति,
एम एड, गज विवि, 1971

चौधरी, बच्चनसिंह	अथ ग्राह्यता और वाचन गति पर मौन पठन के अभ्यास के प्रभाव का अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1969
छाजेड, सरोज	इतिहास में स्वाध्याय कार्यक्रम का निर्माण एवं शैक्षिक परिस्थितियों में प्रभावोत्पादकता, एम एड, राज वि वि, 1973
छिन्नर, केवलकृष्ण	Secondary School Pupils Attitude towards English M Ed Raj Uni 1959
छिन्नर, विजयलक्ष्मी	अभिक्रमिता अध्ययन तथा परम्परागत प्रणाली की प्रभावोत्पादकता का तुलनात्मक अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1973
जुजा, गुलशनलाल	A Study of Correlation in Basic Schools of Udaipur M Ed Raj Uni 1957
जोशी, बहैयालाल	राजस्थानी भाषी छात्रों द्वारा हिन्दी लिखने में की जाने वाली वाक्य संरचनात्मक त्रुटियों का विवेचनात्मक अध्ययन, एम एड राज वि वि 1970
तिवारी, पुरपोत्तमलाल	लिखित कार्य के संशोधन की दो विधियों का एक प्रयोग निम्न तुलनात्मक अध्ययन, राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर 1967
पचौरी, अविनाशचन्द्र	Horizontal Decalage in Seven Nine Eleven and Twelve Year old Children of Contrasting Social Backgrounds M Ed Raj Uni 1974
पचौरी, घासीलाल	A Study of the Children's Interest in Hindi Poetry at the Stage of Class VIII S I E Udaipur 1967
पचौरी, घासीलाल	A Comparative Study of Alphabet Method and Sentence Method in Hindi S I E Udaipur 1968
पंत, हरिश्चन्द्र	An Enquiry into the Problems of English Teachers Teaching Class IX in the Schools of Udaipur City M Ed Udaipur Uni 1967
पाठे भामा	A Comparative Study of Efficacy in Learning through Programmed Learning Versus Traditional Learning M Ed Raj Uni 1974
बनवत्तसिंह	Play Activities of Nursery School Children M Ed Raj Uni 1958
बटन सत्यनसिंह	An Experimental Evaluation of the Technique of Programmed Instructions in Commerce at Secondary Stage M Ed Udaipur Uni, 1971

- भाटा, मन्मदिह
परिनिष्ठित हिन्दी सीखन में राजस्थानी छात्र छात्राओं की भाषा तात्त्विक (यतना प्रियमक) श्रुतिया का विवेचन नात्मक अध्ययन,
एम एड, राज विवि, 1969
- भायव, माया
A Comparative Study to show the Effectiveness in the Teaching of English to Primary Classes
M Ed Raj Uni 1972
- भायुर ग्रामप्रराज
Preparation of Auto Instructional Programmes in Civics
M Ed Raj Uni 1969
- भायुर, माहिना
A Critical Study of Mathematics Teaching in Higher Secondary Schools of Ajmer City
M Ed Raj Uni 1974
- मिथ, माहन
Role of Hypotheses in Problem Solving
M Ed Raj Uni 1973
- मुद्गात निगनम्बरा
A Comparative Study of Linear versus Branching Programmed Instructions to Teach Multiple Principles to Class IX
M Ed Raj Uni 1973
- मादव प्रन्तामि
A Comparative Study of Achievement of Two Groups of Students Exposed to Two different Instructional Strategies
M Ed Raj Uni 1974
- गणा प्रनामि
An Investigation into Teaching Learning Process in General Science for 12+
M Ed Raj Uni. 1968
- वाजपदा अरनविन्ता एव
पञ्चाना, धामाना
A Comparative Study of Handwriting with Kalam Holder Pen & Penril
SIE Udaipur 1970
- व्याम वा मी एव
मेन्ता वा एम
A Study of the Utilisation of Library for Promoting Proper Reading Habits among the Students of Secondary and Higher Secondary Schools
SIE Udaipur 1970
- व्याम मुना
Children's Learning as related to their Intelligence and Perceptual Speed
M Ed Raj Uni 1971
- विनयवर्गीय एा पा
कार्यानुभव सर्वेक्षण
गन्त निगा सम्यान उन्वयुद, 1970
- वित्रयराना
A Study of Factors that Deteriorate the Interests of Newly Trained Teachers in the New Methods of Teaching
M Ed Raj Uni 1969
- गमा नाधुता
An Auto Instructional Programme on Factors of Production Its Preparation and Evaluation
M Ed, Raj Uni 1971

शर्मा, राजनाथ	A Comparative Study of Teaching Learning Process of Trained and Untrained Teachers of Hindi in Rajasthan M Ed, Raj Uni 1969
शर्मा, यागीलाल	छात्रों के घम सन्तुष्टी ज्ञान एवं अभिवृत्ति में परिवर्तन एक प्रयोगात्मक अध्ययन, एम एड, राज वि वि 1969
शर्मा, रामनिवास	Diagnosis of Errors in Hindi, M Ed Raj Uni 1969
शर्मा, रामावनार	A Study into the Methods of Teaching Hindi in School Situations M Ed Raj Uni 1973
शर्मा, समर्थसिंह	इतिहास में स्वाध्याय कार्यक्रम का निर्माण एवं इसकी शैक्षिक परिस्थितियों में प्रभावोत्पादकता एम एड, राज वि वि, 1972
शर्मा, सूरजमाल	Relative Merits of Basic and Non Basic Methods of Teaching M Ed Raj Uni 1957
शर्मा, हरिश्चन्द्र	Auditory Discrimination of English Consonant Phonemes M Ed Udaipur Uni 1973
शाक्य उप	शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त प्रोत्साहकों व हतोत्साहकों के प्रति किशोर छात्र छात्राओं की मनोवृत्तियाँ एम एड उदयपुर वि वि 1971
श्रीवास्तव नगेन्द्रनाथ	Verbal Behaviour Pattern of Biology Teachers Variables Sex Training Experience and Students' Achievement M Ed Raj Uni 1974
शुक्ला, श्रीमप्रकाश	Developing a Strategy for Individualized Teaching in Chemistry at X Class Level M Ed Raj Uni 1972
सक्सेना, राधारानी	उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों का समावाजन तथा कक्षा में उत्पन्न सवेगात्मक समस्याओं का अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1969
स्वामी, नशानाल	An Investigation into the Teaching Learning Process of Adolescents in Hindi along with the Optimum Use of the Existing Facilities in Rajasthan M Ed Raj Uni 1968
सिंघी, धनराज	Change of Attitudes among Children in Basic Schools M Ed Raj Uni 1957
हैस्वरूप	A Study of the Use of Audio Visual Aids in Social Education in Rajasthan M Ed Raj Uni, 1963

हिमकर, चन्द्रमोहन

Spelling Errors in Hindi

M Ed Raj Uni 1961

त्रिपाठी, बजरदनलाल

Problems of Large Classes and Suitable Methods of Teaching

M Ed Raj Uni 1974

त्रिवाटिया भगवानसिंह

A Comparative Study of the Effective Teaching in Kindergarten and Primary Schools,
M Ed Raj Uni 1974

व्यक्तित्व

□ डा. छैल बिहारी मायूर

□ डा. चन्द्र प्रकाश मायूर

राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में पीएच डी तथा एम एड स्तर पर व्यक्तित्व को शोध का मुख्य विषय निश्चित करके डा. शोध काय 1974 तक सम्पन्न हुए उन्हें कुल 12 अनुभागों में विभाजित किया जा सकता है। यथा व्यक्तित्व के कारक, व्यक्तित्व के विभेदकारी घटक, व्यक्तित्व के धार्मिक नैतिक घटक व्यक्तित्व निवारण दुर्बलता एवं आत्मिक प्रवृत्ति, प्रत्यक्षन, आत्म प्रत्यय आवश्यकता एवं समायोजन, सामाजिक संबंध, सामाजिक व्यवहार, सृजनशीलता तथा शैक्षिक निहिनाय ।

व्यक्तित्व के कारक (Factors of Personality)

व्यक्तित्व के कारकों से सम्बंधित अनुसंधानों में अध्ययनकर्ताओं की रुचि किशोर एवं किशोरिया के बुद्धि स्तर एवं किन्हीं विशिष्ट व्यक्तित्व कारकों के बीच सम्बंध जान करने में ही रही है। द्विवेदी (1970) ने उच्च एवं निम्न सम्प्राप्ति स्तर के किशोरों की बुद्धिलिंग तथा व्यक्तित्व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष निकाले कि बुद्धि के स्तर का सम्प्राप्ति पर प्रभाव पड़ता है निम्न सम्प्राप्ति वाले बालक प्रायः कुसमायोजित एवं लापरवाह व उच्च सम्प्राप्ति वाले बालक प्रायः विचार, चिन्तन एवं मनन करने वाले होते हैं। सक्सेना (1973) ने विद्यालयी किशोरियों के व्यक्तित्व के कतिपय घटकों पर बुद्धिलिंग एवं मौलिक चिन्तन के प्रभाव का अध्ययन करके पता लगाया कि मौलिकता बुद्धि स्तर पर इतनी आश्रित नहीं है जितनी कि कल्पना पर, व्यक्तिगत सम्बंधों पर व्यचारिक भिन्नताओं का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता तथा किशोरिया की व्यक्तिक आत्मिक आवश्यकताओं (यथा, आत्मिकता स्वायत्तता, प्रभुत्व, परिपोषण सख्त इत्यादि) पर उनके बुद्धि स्तर एवं मौलिक चिन्तन का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता ।

व्यक्तित्व के विभेदकारी घटक (Differential Traits of Personality)

विभेदकारी घटकों के अध्ययन के क्षेत्र में कृष्ण (1966) ने पीएच डी स्तर पर अनुसूचित जनजाति एवं अन्य जातियों के बाल अपराधियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया। अपराधी व्यक्तित्व के जो महत्वपूर्ण विभेदकारी घटक प्रकाश में आए वे थे घर पर अमुरागी की भावना, धर्मनिरपेक्ष बालक अभिभावक सम्बंध, माँ-बाप की ओर से कटुता, मनोरंजन व साधना का अभाव, गरीबी,

उनमें सामान्य में उच्च स्तर की बुद्धिलब्धि मिलती है वे स्वयं का औरों से अधिक उच्च समझते हैं, वे आत्म विश्वासी, समाज में घुसने में मिलने वाले, बातूनी, महत्वाकांक्षी एवं सामाजिक होते हैं। वे अच्छी योजना बनाने वाले उच्च आदर्श वाले, आशावादी व अध्यवसायी उच्च आदर्श वाले होते हैं तथा वे प्रायः उच्च कुलीन परन्तु अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह करने वाले होते हैं।

रमाकुमारी शर्मा (1969) ने पब्लिक स्कूल व विद्यालयों का अध्ययन करके पाता किया कि वे भावनात्मक दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक परिपक्व स्थिर, जीवन के प्रति वास्तविक दृष्टिकोण वाले व एकाग्रचित्त थे। सामान्य स्कूलों के विद्यार्थियों में शर्मिले, आत्मोन्मुख, विपरीत सत्य वाला वे आत्म चुराने वाले दूसरों की भावनाओं के प्रति जागरूक छात्र मिले परन्तु पब्लिक स्कूल के छात्र अपेक्षाकृत अधिक सहृदयी, आत्मनिश्चित वाले सहयोग के लिए तत्पर औपचारिक समूह बनाने वाले आलाचना से न डरने वाले एवं स्वतन्त्र दृष्टिकोण वाले थे।

इनके प्रतिष्ठित का अध्ययन ऐसे भी हैं जिनमें शिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। धरनीधर शर्मा (1969) ने अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के अध्ययन में पाया कि महिलाओं की अपेक्षा पुरुष अधिक सामाजिक, स्थिर (संवादात्मक) मन स्थिति वाले, उत्साही, हठ परमग्रहण वाले साहसिक कार्य पसंद करने वाले नियमित एवं अनुशासित होते हैं जबकि महिलाओं में अपेक्षाकृत अधिक आक्रामकता शक्यता, रुढ़ियों से विपक्ष रहने की प्रवृत्ति एवं अपने संगठन पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति पाई गई। गुप्ता (1972) ने पाया कि अल्प विषय के छात्राध्यापकों की अपेक्षा विज्ञान के छात्राध्यापक अधिक बुद्धिनिष्ठ वाले शर्मिले परन्तु आत्मनिश्चय थे। वे वाणिज्य व छात्राध्यापकों से अधिक सकाची कला अध्यापकों से कम ग्रहण करने वाले परन्तु सकाची एवं व्यावहारिक, कृषि के छात्राध्यापकों से अधिक उच्च बुद्धि स्तर वाले, कल्पनात्मक एवं आत्मनिश्चय पाए गए।

व्यक्तित्व के धार्मिक नैतिक घटक (Religious & Moral Traits)

भूल्यो एवं अभिवृत्तियों का अध्ययन इस क्षेत्र में किया गया है। दामोदर व पाठक (1964) का अध्ययन ऐसे किशोरों की पहचान करने के लिए किया गया जिनमें आस्तिकता, अनात्मिकता अथवा अद्वैत आस्तिकता की स्थिति है। पता चला कि ईश्वर में विश्वास रखने वाले अपेक्षाकृत अधिक थे, अनात्मिकता का बुद्धिलब्धि स्तर आस्तिकों की अपेक्षा ऊँचा पाया गया किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण में उनके धरेलू वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया। आत्मनिष्ठ (1959) ने किशोरों की नैतिक मायनाओं का अध्ययन करके पाया कि धार्मिक शिक्षा एवं प्रार्थना का किशोरों की नैतिक मायनाओं से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है नैतिक मायना के परीक्षण में छात्राओं के अनेक छात्रों से कम रहे और यह अन्तर-प्रमाणकारी व सदस्य में अधिक साधक था। बुद्धि परीक्षण में उच्च अंक प्राप्त करने वाले सामान्यतः नैतिक मायनाओं में भी उच्च हो रहे। जैन (1962) ने जब ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की नैतिक मायनाओं का अध्ययन किया तो पाया कि धार्मिक दान व सदस्य में 11-12 वर्ष के समुदाय एवं 14-15

दुश्चिन्ता का रहा जिसमें अब तक पाँच शोध कार्य सम्पादित हुए हैं, उसके बाद कुण्डा प्रिय विषय रहा है।

पीएच डी स्तर पर जुल्का (1963) ने वच्चा में आक्रामक प्रवृत्ति, भय एवं दुश्चिन्ताएँ विषय पर शोधकाय किया। यादश था—भील व दूसरे बालक जो बीहड़ में रहते थे। निष्कर्षों में पाया गया कि—जंगली जानवरों तथा साँप से अध्यापक द्वारा दण्ड, भूत प्रेत, चोर इत्यादि से, घर पर दण्ड, जंगल, अंधरे से, बाढ़ तथा ऐसे ही मना-बनानिक भय के रूप क्रमशः सभी में विद्यमान थे। भील बालकों की अपेक्षा अन्य बालकों में अधिक आक्रामक प्रवृत्ति पाई गई। इसमें विशेष रूप से—हमना, गाली गलौज, खून करने संबंधी बातचीत व आक्रामक विचार विशेष थे। दूसरा म अस्वीकृति के कारण तथा हीनता की भावना के कारण भी दुश्चिन्ता पाई गई। शोधकर्ता ने पाया कि दोनों प्रकार के बालकों में भय व दुश्चिन्ताओं का साधक अंतर नहीं था, परन्तु दूसरे बालक भी बालकों की तुलना में अधिक आक्रामक प्रवृत्ति के पाए गए। जोशी (1966) ने पाया कि दुश्चिन्ता की अधिकता का सीधा प्रभाव शैक्षिक संप्राप्ति पर पड़ता है। दुश्चिन्ता के बढ़ने पर संप्राप्ति कम तथा उसके घटने पर अधिक होती है। अग्रजी गणित व सामाजिक विज्ञान के प्रति दुश्चिन्ता अधिक पाई गई। यह भी पाया गया कि लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक दुश्चिन्ताएँ हाती हैं। मगर बद (1972) ने दुश्चिन्ताओं तथा उनकी बुद्धिलब्धि व मध्य काई सम्बंध नहीं पाया। जोशी के अनुसार दुश्चिन्ता का आर्थिक सामाजिक स्तर में कोई सम्बंध दिखाई नहीं दिया। वीरमानी (1968) ने नवयुवतियों व यादश को लेकर किए गए अध्ययन में पाया कि कोई भी छात्र दुश्चिन्ता से मुक्त नहीं थी तथा उनकी दुश्चिन्ताएँ उनके जीवन में समापोजन से सीधी सम्बंधित थी। दुश्चिन्ताओं एवं दण्ड के प्रति प्रतिक्रिया सदैवात्मक थी। यह भी पाया गया कि दुश्चिन्ताएँ अधिकांशतः अभिभावकों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण थी। समामापोजित नवयुवतियों में दुश्चिन्ता की अधिकता थी। घांगट (1971) ने पाया कि खसने जाने छात्रों में न लेने वाले छात्रों की अपेक्षा कम दुश्चिन्ताएँ हानी हैं। हाश (1973) ने पाया कि स्कूली शिक्षा से शिक्षाविद्या में दुश्चिन्ताओं का प्रादुर्भाव नहीं होता। मगर कुण्डित व अकुण्डित विद्यार्थियों के नेतृत्व व गुणों एवं उनके आर्थिक सामाजिक स्तर में साधक अंतर हाता है।

कुण्डा के क्षेत्र में छनमाहन शर्मा (1962) का शोधकाय अपने ढंग का सब प्रथम था। यादश वर्गीकरण का आधार था मानसिक योग्यता। उन्होंने पाया कि उच्च स्तरीय व सामाजिक स्तरीय बालकों में निम्न स्तरीय बालकों की तुलना में कुण्डा की परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता अधिक होती है। निम्न स्तरीय बालकों में अहम् प्रतिरक्षा की कमी परमग्रह्य सामाजिक से कम तथा दंडित होने का आशय की भावना अधिक होती है। 1973 में अपने पीएच डी अध्ययन में उन्होंने कुण्डा प्रतिक्रिया मापनी का निर्माण तथा मानकीकरण किया जिसका विश्वसनीयता गुणांक (परीक्षण-पुनः परीक्षण विधि के आधार पर) 21 से 71 तक था। शर्मा ने निष्कर्ष निकाले कि किशोर युवक युवतियों में 12 से 16 वर्ष की आयु

मिलता। इस अध्ययन में पाया गया कि दृक्चित्रिका में होने वाली गति में प्रतिबोधन पदा होता है, गति के उपरांत विभेदीकरण की प्रक्रिया स्वरूप आकृतियाँ जनमती हैं। प्रतिबोधन में नसरी सूँझा के छात्र समान आयु के भील वादरा से अधिक मध्यम थे। प्रतिबोधन क्षमता ऐसे व्यक्तियों में अपभ्रष्ट वम पार्द गइ जो मानसिक रूप में अस्वस्थ थे।

आत्म प्रत्यय (Self concept)

व्यक्तित्व एवं आत्म प्रत्यय के क्षेत्र में कुल चार शोधकाय उपलब्ध हुए हैं। सर्वप्रथम 1968 में तथा उसके पश्चात् 1972 में 1974 के मध्य प्रति वष एक एक। सर्वप्रथम पाण्डे ने 1968 में निष्कर्ष निकाला कि किशोर बालक स्वयं अपने में दोष अनुभव करते हैं। दायित्व से दूर भागते हैं नवीन परिस्थितियों में समायाजित नहीं हो पाते तथा अपने में हीनता की भावना अनुभव करते हैं। उनमें उपनिधिगत शक्ति होती है तथा कुछ लाभप्रद व मूल्यात्मक काम करने की भावना होती है। किशोरिया अपेक्षाकृत भावधानी होती हैं। उनमें आत्मिक भावना होती है परन्तु वे परीक्षा के समय में सामान्यतया अधीर भी रहती हैं और आलाचना से दूर रहना चाहती हैं। आशाकुमारी शर्मा (1973) ने विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षा के परिणामों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक एवं आत्मिक अनुपात (नैटिकल रेशो) की गणना करने पर पाया कि किशोर छात्र छात्राओं का व्याख्यात्मक एवं उपाजित स्व बुद्धिनिष्ठा से सम्बन्धित है तथा आर्थिक सामाजिक स्तर का इसके विकास पर काइ प्रभाव नहीं होता। कक्षा स्तर के अनुसार इसने विकास में काइ अंतर नहीं पाया गया, परन्तु 15 आयु के छात्र छात्राओं के मध्य अंतर पाया गया। सरसाकुमारी शर्मा (1974) ने पाया कि लोकप्रिय एवं साधारण छात्राओं के व्याख्यात्मक एवं उपाजित स्व के मध्य काइ साधक अंतर नहीं था मगर दोनों के नेतृत्व विशेषता में साधक अंतर था। लोकप्रिय छात्राएँ साधारण छात्राओं का अपेक्षा अधिक दृढ़ निश्चयी, सवेगात्मक रूप में स्थिर तथा मेहनती थीं। चट्टोप (1972) ने पाया कि आत्म प्रत्यय एवं मानसिक योग्यता स्तर तथा असमायोजन के बीच उच्च तथा घनात्मक सहसम्बन्ध था। छात्रों की तुलना में छात्राओं में हीनता की भावना तथा सवेगात्मक अस्थिरता अधिक थी।

आवश्यकता एवं समायोजन (Needs & Adjustment)

व्यक्तित्व समायोजन के क्षेत्र में शकरलाल शर्मा (1966) ने मालूम किया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र तथा छात्राओं में उत्तरदायित्व की भावना के मध्य काइ साधक अंतर नहीं होता। उत्तरदायित्व की भावना का घनात्मक एवं साधक सम्बन्ध शक्ति सम्प्राप्ति एवं सामाजिक स्वीकृति के बीच प्राप्त हुआ परन्तु व्यक्तित्व समायोजन के साथ यह सम्बन्ध ऋणात्मक रूप में रहा। अन्नारायणसिंह (1968) तथा जन (1969) ने छात्रों के समाजमित्र स्तर की आधार बनाकर उनके व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन किया। उन्होंने लोकप्रिय एवं अल्पप्रिय, उपस्थित एवं अस्वीकृत छात्रों का चयन करके निष्कर्ष निकाला कि लोकप्रिय छात्रों का घर में समाज में तथा विद्यालय में सवेगात्मक समायोजन एकात्मिक, उपस्थित एवं अस्वीकृत छात्रों से

सामाजिक सम्बन्ध (Social Relationship)

व्यक्तित्व और सामाजिक सम्बन्धों के क्षेत्र में अटवाल (1960) ने पाया कि 60 प्रतिशत विद्यार्थियों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। परन्तु स्वीकृत एवं अस्वीकृत विद्यार्थियों के मानसिक योग्यता के स्तर में व्यक्तित्व की समस्याओं में साधक अंतर नहीं होता। मगर गुप्ता (1973) ने मालूम किया कि बुद्धि व आर्थिक सामाजिक स्तर सामाजिक स्वीकृति अथवा अस्वीकृति को प्रभावित करते हैं। इनके उच्च होने पर स्वीकृति तथा निम्न होने पर अस्वीकृति प्राप्त होती है। माधुर (1966) ने ज्ञात किया कि लड़के व लड़कियाँ की ईमानदारी व परहितवाची नैतिक गुणा में अन्तर होता है। परन्तु समाज मितिक उच्च व निम्न समूहों के मूल्यों में अंतर नहीं था। गौतम (1970) के अनुसार विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में बच्चों की सामाजिक संरचना लगभग समान सी होती है तथा लोकप्रिय लड़कियों का आर्थिक सामाजिक स्तर लोकप्रिय लड़कों की अपेक्षा उच्चतर होता है। चौधरी (1974) ने अस्वीकृति के कारणों का अध्ययन करने पर घमण, अधिक बोलना, लड़ाई की आदत, अनुशासन तोड़ना, बीमारी गवी आदतें, सुस्तीपन आदि को प्रमुख घटक बताया। चरित्र विकास के क्षेत्र में हुल्ट (1965) ने मालूम किया कि आयु के बढ़ने के साथ साथ चरित्र का विकास भी होता है। माहेश्वरी (1970) ने बर्तन व्यवहार की संरचना विषय पर शोधकाय करने पर पाया कि तीव्र रूप से प्रतिगामी विचार रखने वाले छात्र दूसरों के ध्यानाकर्षण हेतु असामाजिक व्यवहार अपनाते हैं तथा उच्च स्तर पर स्वोपक्रमित विद्यार्थी लजीले स्वभाव के होते हैं। दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों ने विद्यालय कार्यक्रमों में रुचि प्रदर्शित की।

सामाजिक व्यवहार (Social Behaviour)

सामाजिक व्यवहार के क्षेत्र में किए गए अनुसंधानों में सामाजिक व्यवहार के साथ ही लिंग व काम (सेक्स) सम्बन्धी अध्ययन भी सम्मिलित है। नसरी विद्यार्थियों की व्यवहारगत समस्याओं के अध्ययन में अटवाल (1960), गौतम (1967) तथा नरला (1972) ने मालूम किया कि नसरी विद्यार्थियों की समस्याएँ पर्यावरण पर अधिक आधारित होती हैं तथा उनमें व्यक्तिगत कारक कम होते हैं। इन शोधकर्त्ताओं ने यह भी पाया कि छात्रों की अपेक्षा छात्रों की व्यवहारगत समस्याएँ अधिक होती हैं। छात्रों की समस्याओं में प्रमुख समस्याएँ थी—ईर्ष्या, दबूपन, संकोच, अधीरता तथा विद्यालय में सामान की तान फोड़। छात्रों की समस्याओं में प्रमुख थी—भागना, पत्थर फेंकना, झगड़ना, चोरी आदि। गौतम (1967) ने अपने अध्ययन में यह भी पाया कि उच्च आर्थिक-सामाजिक स्तर के छात्र छात्रावास में व्यवहारगत समस्याएँ अधिक होती हैं।

जन (1970) ने ग्रामीण एवं शहरी किशोर बालकों के काम व्यवहार का अध्ययन करके पाया कि शहरी बालकों में ग्रामीण बालकों की अपेक्षा काम सम्बन्धी ज्ञान अधिक होता है। शहरी बालक लड़कियाँ से बातचीत करने में कोई संकोच नहीं

सम्पन्न शोधकार्यों में एक कमी विशेष रूप से सामने आई कि इनके-दुके शाध-वत्तामा को छात्रों के लिए न विदेशी मनोवैज्ञानिक उपकरणों तथा मानक का प्रयोग भारतीय 'यादश' पर किया जो शोधविधि के नियमों के अनुकूल नहीं है। यद्यपि तो यह रहता कि शाधवत्ता उन उपकरणों का भारतीयकरण करके, अपने यादश के आधार पर मानक तैयार करके, उनका उपयोग करते। कुछेक शोधकार्यों का छात्रों के 'जिनम प्रायोगिक' आधार पर शोधकाय किए गए अन्य शोधकाय मुख्य रूप से सर्वेक्षण विधि पर ही आधारित रहे।

शाधवत्तामा का 'यादश' भी मुख्यतः शहरी क्षेत्र और उमरों में विशेष रूप से किशोरावस्था के बालक-बालिकाओं तक सीमित रहा। बहुत कम अनुसंधानता ग्रामीण क्षेत्र की ओर आकृष्ट हुए तथा कुछ क्षेत्र के जनजाति के बालक-बालिकाओं के व्यक्तित्व का अध्ययन तो कभी एक ही शोधवत्ता न किया।

वर्तमान समय में सांख्यिकी का महत्व शाधकार्यों में निरंतर बढ़ता जा रहा है। सांख्यिकी भी विश्वस्तरीय तथा यद्यपि निष्कप विकास में शोधवत्तामा की पूर्णतः सहायता करती है। परन्तु इन शोधकार्यों में उच्च सांख्यिकी के प्रयोग का अभाव विशेष रूप से खटकता है।

शोधकाय किशोरावस्था के श्रुतिरित्त अन्य आयु के बालक-बालिकाओं का यादश लेकर भी सम्पन्न किए जाएँ तथा यादश में शहरी के साथ ही ग्रामीण तथा विशेष रूप से जनजाति क्षेत्र के बालक-बालिकाओं का भी चुना जाए। व्यक्तित्व के अन्य घटकों के साथ साथ प्रत्येक, व्यक्तित्व निर्धारण आत्म प्रत्यय आदि घटकों पर भी शोध काय होता जरूरी है। प्रायोगिक आधार पर शोधकाय नहीं हास तक तक मनोवैज्ञानिक शक्ति उपपत्ति नहीं होगी। विदेशों में निमित्त जहाँ उपकरणों का भारतीय परिप्रेक्ष्य में सत्यापन तथा मानकीकरण भी जरूरी है। बलित तैयार भारतीय उपकरणों के सत्यापन का काम भी किया जाए तथा नये उपकरण विकसित करने की चेष्टा भी रहे।

संदर्भित अनुसंधान

अग्रवाल, शांताकुमारी	Survey of Behaviour Difficulties of Nursery School Children M Ed Raj Uni 1960
अग्रवाल मोहिंदरसिंह	An Investigation into the Relationship of Social Acceptance with Intelligence and Personal Problems of the High School Students of Sardarshahar M Ed Raj Uni 1960
आतमसिंह	A Study of Moral Beliefs of Adolescents M Ed Raj Uni 1959
बाबरा, शमशेरचंद	The Religious Beliefs of Adolescents, M Ed Raj Uni 1962

- कुपू, सागर
Differential Personality Traits in Juvenile Offenders belonging to Scheduled Tribes and Others
Ph D (Edu) Raj Uni 1966
- कनर रामनिह
A Study of the Moral Judgment of the Students at Different Age levels and the Relationship between Moral Judgment and Other Related Factors
M Ed Raj Uni 1963
- कौन मूख
A Study of the Needs of Adolescents
M Ed Raj Uni 1969
- का साहाय मास्म
An Investigation into Social Attitudes
M Ed Raj Uni 1956
- कम निमता
क्या हम के छात्र एवं छात्राओं का चिन्ता, मनोराम
नाएँ एवं शक्ति अभिप्रेरणा का अध्ययन
एम ए राज वि वि, 1972
- कुप्ता रामनिवाम
A Study of the Personality Characteristics of Science and Non Science Student Teachers
M Ed Raj Uni 1972
- कुप्ता, शक्तिप्रता
क्या छात्र के सामाजिक स्वाकृत एवं उपनिन विद्या
मियों का बुद्धि सामाजिक धार्मिक स्तर एवं
व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों का अध्ययन
एम ए राज वि वि 1973
- कावर पुनरता
A Study of Loving and Punishing Maternal Behaviour as related to Extrovert and Introvert Tendencies among School going Girls of Class IX of Jodhpur
M Ed Jodhpur Uni 1970
- कौन गपुनामिह
A Comparative Study of Personality Characteristics of Urban and Rural Adolescents
M Ed Raj Uni 1970
- कौतम बुद्धिप्रकाश
Behaviour Problems of the Dita Class Students
M. Ed., Raj. Uni 1967
- कौतम राजेन्द्रकुमार
साक्षर्य उपनिन एवं एकाका बालक-बालिकाओं के
व्यक्तित्व समायाजन का सुननात्मक अध्ययन,
एम एड, राज वि वि 1970
- कनाथ टपा
A Study of Self concept in relation with their Intelligence Socio Economic Status and Adjustment of X Class Students
M Ed Raj Uni 1972
- चौगरी चन्द्रमिह
Reactions to Frustration Among the Children of Various Socio Economic Status Levels
M Ed Raj Uni 1967
- चौगरी माताकुमारी
छात्राओं में सामाजिक अस्वाकृति के कारण एवं सामाजिक अस्वाकृति का अध्ययन चरों में सबसे एक भाग काय,
एम ए, राज वि वि 1974

- चोहान, श्यामसिंह A Study of Perceptual Maturation Process,
M Ed Raj Uni 1958
- चोहान, हरिश्चन्द्र उच्च तथा निम्न उपलब्धि वाले छात्रों के व्यक्तित्व
विशेषक,
एम एड, राज वि वि, 1972
- फुल्का, गुलशनलाल Aggression Fear and Anxieties in Children
Their Educational Implications,
Ph D (Edu) Raj Uni 1963
- जन, प्राणा An Investigation into the Relationship bet
ween Personality Characteristics and Crea
tive and Intellectual Teaching of Student
Teachers
M Ed Raj Uni 1971
- जन, दुलीचन्द The Adjustment Problems of Stars and
Rejectees
M Ed Udaipur Uni 1969
- जन, प्रकाशचन्द्र प्रामोण और शहरी किशोर बालकों के काम व्यवहार
का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1970
- जन स्वल्पचन्द्र A Study of Moral Behaviour of Adolescents
M Ed Raj Uni 1962
- जोशी, नवलकिशोर Neurotic Tendencies among Teachers
M Ed Raj Uni 1970
- जोशी विद्याधर Anxiety and its Effect on Scholastic Achieve
ment
M Ed Raj Uni 1966
- जिल्लो, जागन्नासिंह Group Rorschach Test as a Tool for investi
gating Personality Differences between the
Intellectually Above Average and Below
Average Students
M Ed Raj Uni 1959
- जिल्ला, हरभजनसिंह A Study of Students Leadership Patterns
and Personality Traits of Student Leaders
of High and Higher Secondary Schools for
Boys of Amritsar City (Punjab) in relation
with their Intelligence Achievement Voca
tional Performances and Participation in
Co curricular Activities
M Ed Raj Uni 1963
- डाडियाल, सच्चिदानन्द Art as a Projective Technique for Deviant
Children
M Ed Raj Uni 1959
- डाडियाल, सच्चिदानन्द Art as a Projective Technique for Children
Ph D (Edu) Raj Uni 1964
- तवर उदयचन्द्र नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की जिम्मेवारी की भावनाओं
का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1972

- तारामिह
"यायाम प्रेमी तथा विलाडी छात्रों का व्यक्तित्व सचची अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1974
- दाहिया नयमल
अच्छे विलाडी तथा न खेलने वाले किशोर छात्रों का व्यक्तित्व का अध्ययन,
एम एड राज वि वि, 1970
- द्विवेदी प्रकाशचन्द्र
उच्च एवं निम्न संप्राप्ति स्तर के किशोरों की बुद्धिलब्धि, व्यक्तित्व कारक एवं व्यक्तित्व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन,
एम एड, राज वि वि 1970
- धागड श्रीचन्द्र
अच्छे विलाडी तथा न खेलने वाले छात्रों का दुरिचिता परीक्षण
एम एड, राज वि वि 1971
- नरना प्रतापकौर
Intelligence and Social Behaviour as observed among Nursery School Children
M Ed Raj Uni 1972
- नागपाल अरविन्द्र
Study of Personality Factors of the Talented Students
M Ed Raj Uni 1972
- नाटानी प्रकाशनारायण
Reading Readiness and Some Personality Correlates among Children
M Ed Raj Uni 1968
- पचानी, बन्नीलाल
Factors Leading to Aggressiveness
M Ed Udaipur Uni 1963
- प्रभाकर मराज
A Comparative Study of the Personality Factors of Boys and Girls Specialising in Various Fields of Study in relation to their Academic Achievements
M Ed Raj Uni 1970
- पाठक दामोदर शं०
Comparative Study of Atheists and Theists among Adolescents
M Ed Raj Uni 1964
- पाण्डे, रमणी
विभिन्न कक्षाओं के स्तर पर लड़के एवं लड़कियों की आवश्यकताओं का अध्ययन
एम एड, राज वि वि 1968
- पाण्डे रमाकांत
A Study of the Self Concept of the Students of Class X
M Ed Raj Uni 1968
- पारीज मनु
छात्रायापकों के व्यक्तित्व पारस्परिक मूल्यों के सन्दर्भ में अनुशासन के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन
एम एड राज वि वि, 1971
- पात्रम मुन्नाया
Friendship Formation among Adolescent Girls and its Relation to Personality Traits
M Ed Udaipur Uni 1969

- बहुगुणा, शक्तिधर A Study into the Moral Judgment of School going Children
M Ed Raj Uni., 1974
- वागची, कृष्णा Personality Adjustment among High and Low Anxious Children
M Ed Raj Uni 1972
- बादा, कुलवत A Comparative Study of Popular and Isolated Children
M Ed Raj Uni 1960
- बद, बसंतकुमारी छात्र एवं छात्राणां में दुरिचिताएँ,
एम एड, राज वि वि, 1972
- बनीवाल प्रोमप्रकाश राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट अभि
करणा के कार्यो का अध्ययन
एम एड राज वि वि, 1973
- बौराय, एच एच ए A Comparative Study of Some Trends of Personality Development and other Relevant Variables as revealed by Non Harijan and Harijan Children of 11 to 14 Years of Sardarsbahr (Rajasthan)
M Ed Raj Uni 1961
- भट्ट चिरजीलाल An Investigation into the Values of Students at Different Age levels and the Relationship between Values and other Related Factors
M Ed Raj Uni 1966
- भागव, शशि Projection of Personality in Spontaneous Drawings
M Ed Raj Uni 1972
- भापुर इशवरचन्द्र An Investigation into Some Religious Traits of Adolescents and their Relationship with other Relevant Factors at Different Age levels
M Ed Raj Uni 1970
- भापुर, राधेश्याम Sociometric Status and Moral Attitude of Adolescents
M Ed Raj Uni 1966
- भापुर, श्यामशरण उच्च सृजनशील तथा निम्न सृजनशील छात्रों के कुछ
तत्त्वों का रोजेन्वाइय तकनीक के आधार पर अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1974
- भापुर, धनविहारी An Analytical Study of Children's Paintings as Indicators of their Personality Patterns
Ph II (Edu) Udaipur Uni 1972
- माहेश्वरी, कृष्णा A Study into the Structures of Classroom Behaviour of Divergent and Convergent Thinkers of Class VII
M Ed Raj Uni 1970
- मीटा, मुशीला Adjustment of Children from Migrated Families
M Ed Raj Uni 1974

- राठीर, धीसूतिह A Comparative Study of Values of High School Boys and Girls,
M Ed Raj Uni 1972
- राय राज An Investigation into the Personality Values of High and Low Achievers among X Class Girls
M Ed Jodhpur Uni 1968
- रेवी गुरुशरण To Study the Needs and Adjustment of Residential and Non residential School-going Adolescent Girls
M Ed Raj Uni 1974
- सलवाना, गानावरी To Study the Personality Characteristics of Students Choosing Various Streams of Courses
M Ed Raj Uni 1972
- समा, जयवार अध्यापक व व्यक्तित्व सम्बन्धी शीतगुण
एम एड, राज वि वि 1970
- श्याम, भगवतीलाल Personality Patterns of Creative Students
M Ed Udaipur Uni 1973
- श्यास, रामेश्वरप्रसाद Psycho Socio Study of Tension among Professional Students
M Ed Raj Uni 1972
- श्यास, शिवशंकर Controlled Fantasy as Predictor of Personality
M Ed Raj Uni 1972
- श्रीरमानी स्नह A Study of Anxiety in Indian Adolescent Girls
M Ed Udaipur Uni 1968
- शमा, आशाकुमारी A Study of the Development of the Self Concept of the Boys and Girls of Higher Secondary Classes
M Ed Raj Uni 1973
- शमा छत्रमाह्न Reaction to Frustration among Adolescents in the School Situations
Ph D (Ed) Raj Uni 1973
- शर्मा छत्रमाह्न A Study of Reaction to Frustration among the Super Normals Normals and Sub Normals
M Ed Raj Uni 1962
- शमा, धरनाथर A Study of the Personality Traits of Higher Secondary School Teachers
M Ed Raj Uni 1969
- शमा मागीलाल छात्रों के घम सम्बन्धी ज्ञान एवं अभिवृत्ति में परिवर्तन
एक प्रयोगात्मक अध्ययन,
एम एड, राज वि वि 1969
- शमा, रमाकुमारी A Study of the Personality Characteristics of Public School Boys
M Ed Raj Uni 1969

शर्मा, लक्ष्मीलाल	An Investigation into the Personality Traits of Elected Student Leaders M Ed Raj Uni 1971
शर्मा, शंकरलाल	An Investigation into the Responsibility Feelings of X Class Students, M Ed Raj Uni 1966
शर्मा, सत्यप्रकाश	Personality Patterns of Stars and Isolates M Ed Raj Uni 1968
शर्मा, सत्यपाल	खिलाडियों एवं खेलने वाले छात्रों का "व्यक्तित्व" समायोजन सम्बन्धी अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1974
शर्मा सरलाकुमारी	A Comparative Study of Self Concept and Leadership Traits among Popular and Un popular Adolescent Subjects M Ed Raj Uni 1974
शर्मा हरदयाल	A Comparative Study of Responsibility Feelings of VIII Class Students belonging to Rural and Urban Areas, M Ed Raj Uni 1968
शास्त्री, कमला	A Study of Reactions to Frustration Adjustment and Attitudes towards Studies of the Girls during Pubertal and Prepubertal Periods M Ed Raj Uni 1967
सक्सेना, चंद्रशेखरकुमारी	An Investigation into the Personality Traits and Adjustment of Adolescent Girls in relation to their Intelligence M Ed Raj Uni 1966
सक्सेना निधिलेशकुमारी	A Study of the Impact of Intelligence and Thinking upon Certain Personality Dimensions of School going Adolescent Girls M Ed Raj Uni 1973
सिधू रणजीतसिंह	Social Maturity of Children M Ed Raj Uni., 1962
सिंह सत्यद्रपाल	A Comparative Study of Neurotic Trends among Sportsmen and Non sportsmen M Ed Raj Uni 1972
सिंह यशनारायण	A Study of the Personality Adjustment of the Populars Rejectees Neglectees and Isolates of Class IX of Ajmer M Ed Raj Uni 1968
हयस्क, बशीलाल	An Investigation into the Character Development of the Students of Rajasthan at different Age Levels and the Relationship between Character Development and other Related Factors M Ed Raj Uni., 1965
हाड, राजेंद्र	A Comparative Study of Leadership Traits of Anxious and Non Anxious Adolescents in Relation to Parents SES and their Academic Achievement, M Ed Raj Uni 1973

शैक्षिक संप्राप्ति के सह-सम्बन्धक

- जगदीशानारायण पुरोहित
- इष्टगोपाल बाजावन

विद्यार्थी शिक्षा में सम्मिलित प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह विद्यार्थी या प्राध्यापक
चाहे वह अभिभावक या प्राधानाध्यापक, चाहे वह शिक्षक प्रामाण्य या सा साक्षिक
प्रतिपक्ष, यह जानना है कि शिक्षक मन्त्रालय का स्वर की है। अतः यह तथ्य विद्या
मन्त्रालय का है कि विद्यापिपा का शिक्षक मन्त्रालय का स्वर दर्शाते स्वर म
निम्नतर है। अतः शिक्षक मन्त्रालय धनक घटका (factors) के परम्पर धनमन्त्रालय
का प्रतिफल है। अतः एक द्वार विद्यार्थी का बुद्धि तथा अतः अतः म सम्मिलित
धनक काय करण है ना दूसरी द्वार अतः पारिवारिक एवं सामाजिक शिक्षा म सम्मिलित
धनक काय है तथा तीसरी द्वार विद्यालय के सम्पूर्ण पारिवारिक विद्यालय प्रदान
धनक धनक धनक धनक धनक का तथ्यनिर्णय तथा मानव-बुद्धिधनक मन्त्रालय
धनक हात है। इन तीनों द्वारों म विद्यमान विभिन्न धनक के परम्पर धनमन्त्रालय
का प्रतिफल हम विद्यार्थी की शिक्षक मन्त्रालय के स्वर म अतः का मित्रता है।

राजस्थान में शिक्षा व भ्रष्ट मंत्रालय प्रारम्भ होने से पहले सन् 1974 तक प्राथमिक विद्यालयों के माध्यम-माध्यमिक के भ्रष्ट मंत्रालय द्वारा (विनियम नं 4 पीएच डी स्तर तथा पाठ्यक्रम एवं स्तर के) अर्थात् अध्यापन की मुद्रिका का दृष्टि से प्राथमिक विद्यालय तथा बुद्धि/आवश्यकता/प्रतिबुद्धि/चिन्ता/समाधान/समाश्रित/अध्यापन आदि/अभिज्ञान के अन्तर्गत पत्र/सामाजिक आर्थिक स्तर/गणना-कारण परिसर/सहायक प्रवृत्तियों/अध्यापन अध्यापन का स्थितिशील आदि वही संवांग या मक्का है।

बुद्धि एवं शायिक मन्त्राणि

इन का न 15 पाठ्यक्रमों में न केवल सम्मेलनों का व बुद्धि का गति का मन्त्रालय
 व साथ मन्त्रालय का विकासा है। इनमें (1957) न (1961) न
 (1964) न (1964) न (1964) न (1965) न (1965),
 मुद्रा (1967) न (1967) न (1967) न (1968),
 माह (1969) और पत्र (1973) न बुद्धि व गति मन्त्रालय का घनिष्ठ
 सम्बन्ध देता है। परन्तु गति (1970) व अनुसार गति मन्त्रालय न बुद्धि व
 मन्त्रालय सम्बन्ध नहीं है। कुछ पाठ्यक्रम न न के विकासा विकासा में

संप्राप्ति के सहसम्बन्ध का की जानकारी मिलती है। शर्मा (1966) ने विज्ञान विषय में योग्यता के पांच महत्वपूर्ण सहसम्बन्धों का तालिका तैयार की है जिनमें बुद्धि प्रमुख है। माथुर (1971) ने अपने पीएच डी अध्ययन में यह तालिका तैयार की है कि जलाटा सामान्य मानसिक-योग्यता मापनी विज्ञान तथा मानवीय विषयों की उपलब्धि का अच्छा प्राक्सूचक (Predictor) है। फाटक (1972) की पीएच डी भविष्यवाणी के अनुसार उच्च स्तर की संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों की मध्यमान बुद्धिलब्धि 131.2 और निम्न स्तर की संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों की मध्यमान बुद्धिलब्धि 93.7 पाई गई। यह तथ्य सिद्ध करता है कि बुद्धिमान शक्ति संप्राप्ति का प्रमुख सहसम्बन्ध है। शुक्ला (1972) के अनुसार रसायन विज्ञान में विद्यार्थियों की संप्राप्ति का बुद्धि से सहसम्बन्ध 60.9 पाया गया। मलिक (1973) का भी रसायन विज्ञान के क्षेत्र में ऐसा ही निष्कर्ष है। गुरगालसिंह (1972) के अनुसार भौतिक विज्ञान में विद्यार्थियों की संप्राप्ति तथा बुद्धि के मध्य सांख्यिक (Significant) तथा घनात्मक सहसम्बन्ध है। साहू (1973) ने अपनी भविष्यवाणी के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि बुद्धि के साथ सामान्य विज्ञान विषय की संप्राप्ति का सहसम्बन्ध 61 है।

भाषा के क्षेत्र में पूनिया (1970) की भविष्यवाणी के अनुसार हिन्दी पठन योग्यता और बुद्धि का गहरा सहसम्बन्ध है। श्याम (1971) के अनुसार बुद्धि का बालकों के सहज शब्द भंडार पर प्रभाव पड़ता है।

उक्त भविष्यवाणी में शिक्षकता में न बुद्धिमापन के लिए अधिकारत जलोटा सामान्य मासिक योग्यता मापनी काम में ली है। शेष न अन्य शाब्दिक बुद्धि-परीक्षणों का उपयोग किया है। शक्ति संप्राप्ति के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षा के प्राप्तियों, जामिया मिलिया संप्राप्ति परक्षा तथा स्वनिर्मित संप्राप्ति परक्षा को आधार बनाया गया है।

बुद्धि तथा शक्ति संप्राप्ति के क्षेत्र में हुए उक्त अनुसंधानों के आधार पर यह तथ्य स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आता है कि बुद्धि शक्ति संप्राप्ति का एक प्रमुख सहसम्बन्ध है।

आत्म प्रत्यय तथा शक्ति संप्राप्ति

इस काम में केवल दो ही शाब्दिक उपलब्ध हैं और वे भी एम एड स्तर के। देवल (1966) ने स्वनिर्मित आत्म प्रत्यय मापनी (Self Concept Scale) के द्वारा आत्म प्रत्यय तथा शक्ति संप्राप्ति का सहसम्बन्ध तालिका तैयार किया, जो 39 आया। यह सहसम्बन्ध 0.1 स्तर (Level of Significance) पर सांख्यिक पाया गया। रोहतगी (1970) ने विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के आत्म प्रत्यय व शक्ति संप्राप्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया। उस शोध के अनुसार विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के आत्म प्रत्यय तथा उनकी संप्राप्ति में समरूपता थी। यदि आदर्श आत्म (Ideal self) तथा वास्तविक आत्म (Real self) में घनात्मक असंगति (Positive discrepancy) थी तो शक्ति संप्राप्ति उच्च पाई गई और यदि आत्म आत्म तथा वास्तविक आत्म में ऋणात्मक असंगति थी तो शक्ति संप्राप्ति निम्न स्तर की पाई गई।

एन गरणणाया म भाषरताया ँ छागम प्रयय मापना तया ममैटिव विमरी
वरण मापना (S-matic Differential Scale) का छागम प्रयय मापन व त्रिण तया
मप्राजि वरया का मप्राजि व मापन व त्रिण उवयाग रिया ।

यद्यपि इस क्षेत्र में कुछ गवयणाया भ आगम प्रत्यय तथा गतिर साशानि वा
घनात्मक गम्यन्त मिद्ध दृष्टा ३ फिर भा य गम्यन्त विनना धनिष्ठ है य जानन व
निल धीर अपिर् धनुमधान की आवश्यकता स्पष्ट परिगणित होती है ।

अभिवसि तया शन्निह सप्राप्ति

इस वष म गयर (1960) न अधेजा विषय क प्रति विद्यापिया का प्रति
वृत्ति तथा विषयगत मप्राप्ति क मध्य सम्बन्ध जान रिया । इस अध्ययन क अनुसार
महारात्मक तथा महारात्मक प्रतिवर्ति का सीधा सम्बन्ध जमा उच्च एवं निम्नस्तर
की मप्राप्ति म है । मनु (1960) न अपन अध्ययन म हिन्दा, गणित सामाजिक ज्ञान
तथा सामान्य विज्ञान विषया क प्रति विद्यापिया की महारात्मक प्रतिवर्ति का उच्च
मप्राप्ति म पविष्ट सम्बन्ध जान रिया । माह्वर (1961) न विद्यापिया का
शृङ्खला क प्रति प्रतिवर्ति तथा उनका गणित मप्राप्ति क मध्य महारात्मक सम्बन्ध
पाया । यन् गन् सम्बन्ध अधिकांश विषया म 61 म 87 क मध्य था । दवन् (1966)
न अध्ययन क प्रति प्रतिवर्ति तथा गणित मप्राप्ति क मध्य 29 सहस्रम्बन्ध जान रिया
जा कि 0। स्तर पर मा रक बताया गया है ।

इन मापकताओं ने स्थितिगत प्रश्नोत्तरों का प्रतिक्रिया मापन के लिए तथा ज्ञानिया मितिया दृष्टान्ति-प्रश्न का प्रश्नोत्तर मापन के लिए उपयोग किया है।

अभिवृत्ति तथा "भित्त मश्राणि क क्षेत्र म हू" उक्त गवयपात्रा स यह स्पष्ट है कि अभिवृत्ति तथा "भित्त मश्राणि का साधन मह-मन्त्र" है परन्तु भाष का क्षेत्र स्तना सामित है तथा भाषा का मन्त्र भी इनकी कम है कि इनका आधार पर भित्त मश्राणि म अभिवृत्ति का साधन महत्व निश्चित कर पाना कठिन है ।

चिन्ता तथा शक्ति संप्राप्ति

इस क्षेत्र में एक एक स्तर के जो पाठ्य पाठ्य हैं उनमें से एक अध्ययन में प्रमा (1967) ने चिन्ता तथा भौतिक विज्ञान ग्राह्य विज्ञान और गणित में प्रमा 12 - 11 - 15 का सम्बन्ध पाया है। मन्वीरप्रसाद वर्मा (1968) ने चिन्ता तथा भौतिक मन्वीरप्रसाद वर्मा के मध्य क्रमिक मन्वीरप्रसाद वर्मा द्वारा किया गया अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि चिन्ता का भौतिक मन्वीरप्रसाद वर्मा पर प्रतिक्रिया प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन में यह भी निष्कर्ष निकाला गया है कि चिन्ताग्रन्थ विद्यार्थी अध्ययन में पड़ जाते हैं। गुप्ता (1971) ने भी भौतिक विज्ञान ग्रन्थ विज्ञान विद्यार्थियों तथा चिन्ताग्रन्थ विज्ञान विद्यार्थियों की भौतिक मन्वीरप्रसाद वर्मा के मध्य माध्यम के रूप में पाया। इन अनुसन्धानकर्ताओं ने चिन्ता का मापन करने के लिए प्रमाण के रूप में, प्रारंभिक मन्वीरप्रसाद वर्मा तथा मित्र द्वारा निर्मित चिन्ता मापन का काम भी लिया।

इस क्षेत्र में हुई उक्त शोधणात्मा से यह निष्कर्ष निकलता था सत्यता है कि शैक्षणिक चिन्ता का शक्ति संप्राप्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परन्तु इसमें समस्या का समाधान नहीं होता। क्या शैक्षणिक चिन्ता का शक्ति संप्राप्ति पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा? क्या चिन्ता अधिगम के प्रति ग्रहणशील नहीं बनाती? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर ढाल करना आवश्यक है।

समायोजन तथा शक्ति संप्राप्ति

इस क्षेत्र में जो अनुसंधान हुए हैं उनमें से एक पीएच डी स्नर का तथा शैप एम एड स्तर के हैं। पारीक (1968) ने विशारदों के समस्त विभिन्न विषयों में संप्राप्ति पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करने पर पाया कि समायोजन का विभिन्न विषयों की संप्राप्ति पर तत्काल प्रभाव पड़ता है। रत्ना (1964) ने उच्च संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों का अध्ययन समायोजन 79.11 तथा निम्न संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों का 56.34 पाते पाया। शर्मा (1966) ने व्यक्तित्व समायोजन का विज्ञान विषय में उच्च संप्राप्ति के पाँच प्राथमिकताओं में से एक ढाल दिया। शर्मा (1967) ने व्यक्तित्व समायोजन तथा भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित की संप्राप्ति के मध्य क्रमशः 25, 05, तथा 29 का सहसम्बन्ध ढाल दिया। शिखरचन्द जैन (1969) ने विद्यालय एवं परिवार में समायोजन का विद्यार्थियों की निम्न संप्राप्ति के साथ साथ सम्बन्ध पाया। शर्मा (1971) ने निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न क्षेत्रों में कुलमायोजन का कुलप्रभाव उच्च संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों पर पड़ता है। साथ ही यह भी ढाल दिया कि निम्न स्तर की संप्राप्ति का कारण घर, विद्यालय तथा समाज में कुलमायोजन भी है। फाटक (1972) ने अपने पीएच डी अनुसंधान में यह पाया कि विज्ञान विषय में उच्च संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों का समायोजन निम्न संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों में अपेक्षाकृत अच्छा है। वैकार (1973) ने भी बालिकाओं के समस्त में ऐसे ही निष्कर्ष निकाला।

उक्त शोधणात्मा ने समायोजन मापने के लिए बल की व्यक्तित्व सूची (Bales Personal Inventory), डा एम एस एस संस्कृत का व्यक्तित्व सूची तथा प्राय निधारण मापनिका (Rating Scales) का उपयोग किया।

इन अनुसंधानों से यह तथ्य स्पष्ट रूप से उभरता है कि समायोजन का शक्ति संप्राप्ति से सहसम्बन्ध तो है मगर समायोजन किस सीमा तक शक्ति संप्राप्ति को प्रभावित करता है, पारिवारिक समायोजन सहपाठियों के साथ समायोजन स्वास्थ्य समायोजन सवैगात्मक समायोजन आदि में से किसका शक्ति संप्राप्ति पर अधिक प्रभाव पड़ता है तथा शक्ति संप्राप्ति के विभिन्न घटकों में समायोजन का सापेक्षिक महत्व क्या है ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनकी ओर शोधणात्मा का ध्यान आकर्षित नहीं हो पाया है।

समाजमिति स्तर तथा शक्ति संप्राप्ति

इस क्षेत्र में एम एड स्तर के केवल दो शोधकार्य उपलब्ध हैं। उपमन्यु (1968) ने समाजमिति स्तरांक (Sociometric Status Score) तथा शक्ति

मग्राणि व मध्य निम्न स्तर का घनात्मक सहसम्बन्ध पाया। अलग अलग विषया की दृष्टि में अध्ययन करने पर यह सहसम्बन्ध अंग्रेजी, गणित तथा सामाजिक विज्ञान में साधक पाया गया जबकि हिन्दी सामाजिक ज्ञान, चित्रकारी सहित तथा उद्योग में यह सहसम्बन्ध साधक नहीं था। नीरमनता (1972) ने सामाजिक स्वादृति का हिन्दी, सामाजिक ज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा सम्पूर्ण गणित मग्राणि पर घनात्मक प्रभाव पाया। इस शोध के अनुसार गणित में सामाजिक स्वादृति भी मग्राणि पर अनुकूल प्रभाव डालती है।

इन शोधकर्त्ताओं ने समाजमिति स्तर तथा सामाजिक स्वादृति जात करने के लिए समाजमिति तन्त्रीय अपनाई है।

अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक संप्राप्ति

इस क्षेत्र में उपर्युक्त एक एक स्तरों पर अध्ययन में निरारी (1965) चारनिया (1969), पारीर (1970) तथा पेंवार (1973) ने अध्ययन आदतों का शैक्षिक संप्राप्ति से घनिष्ठ सम्बन्ध देखा। फाटन (1972) ने अपने पाण्डेय ने अनुसंधान में विज्ञान विषय में उच्च संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों निम्न संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में उच्च स्तर की पाई। रमन विपरीत पुराहित (1971) ने अध्ययन आदतों तथा संप्राप्ति का सहसम्बन्ध करके 0.9 बताया।

बुद्धि शोधकर्त्ताओं ने बुद्धि तथा अध्ययन आदतों का संबंध भी जात किया। चारनिया (1969) ने अध्ययन आदतों का बुद्धि से घनिष्ठ सहसम्बन्ध जात किया जबकि पुराहित (1971) ने इनके मध्य सहसम्बन्ध करने 17 पाया। शास्त्रा (1967) ने अध्ययन आदतों का शैक्षिक संप्राप्ति के प्राक्मूर्खता में सकारात्मक जात किया। शर्मा (1966) ने भी विज्ञान विषय में अच्छा उपदर्शक के प्राक्मूर्खता में अध्ययन आदतों का एक पाया। दत्त (1959) के अनुसार सामाजिक में उच्च स्तर वाले विद्यार्थी याज्ञनायक से अध्ययन करते पाए गए। धारमिन् (1972) ने राजस्थान एक सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में बाद साधक अंतर नहीं पाया।

इस क्षेत्र में शोधकर्त्ताओं ने अध्ययन आदतों का सर्वेक्षण करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का तथा एक एक स्तर की अध्ययन आदत तालिका (Study Habit Inventory) का उपयोग किया।

उक्त शोधकर्त्ताओं ने यह निष्कर्ष स्वाभाविक रूप में निकाला जा सकता है कि अध्ययन आदतें शैक्षिक संप्राप्ति का एक सहसम्बन्ध है। साथ ही अध्ययन आदतें शैक्षिक संप्राप्ति का एक प्राक्मूर्खता भी है।

व्यक्तिगत के श्रेय पत्र तथा शैक्षिक संप्राप्ति

व्यक्तिगत के विभिन्न पत्रों तथा शैक्षिक संप्राप्ति के मध्य सम्बन्ध जात करने का दृष्टि में चार एक एक स्तर के तथा एक एक स्तर के अध्ययन उपर्युक्त है।

ग्रपन पीएच डी अध्ययन म रस्तोगी (1964) ने रुचि तथा शक्ति संप्राप्ति के मध्य सहसम्बन्ध जात किया। किंतु निष्पन्न निष्कर्ष कि यह सहसम्बन्ध इतना उच्च नहीं है कि रुचि को शक्ति संप्राप्ति का प्राक्मूचक माना जा सके।

शर्मा (1965) ने व्यक्तिगत मूल्य तथा शक्ति संप्राप्ति सम्बन्धी गवेषणा म यह जात किया कि जो विद्यार्थी ऊँची आकांक्षा रखत हैं उनकी संप्राप्ति का स्तर भी ऊँचा होगा। रत्ना (1968) न ग्रपन पीएच डी अनुसंधान म उच्च स्तरीय मृज्जनशील बालको की शक्ति संप्राप्ति तथा निम्न स्तरीय मृज्जनशील बालका की शक्ति संप्राप्ति में सांख्यिक अन्तर देखा। माहेस्वरी (1969) ने अतमुखी तथा बहिमुखी व्यक्तित्व का शक्ति संप्राप्ति से सम्बन्ध जात करते हुए पाया कि इनका शक्ति संप्राप्ति पर प्रभाव नहीं पड़ता। गहनौत (1969) न आकांक्षा स्तर तथा शक्ति संप्राप्ति का घनिष्ठ सम्बन्ध पाया। उपासिंह (1972) न शक्ति उत्प्रेरणा का शक्ति संप्राप्ति पर घनारमक प्रभाव देखा।

इन शोधकर्त्ताओं न स्वनिर्मित प्रयत्नबलिया का, रत्ना (1968) न मिमसोटा मृज्जनात्मक चिन्तन मापनी, माहेस्वरी (1969) न अतमुखी बहिमुखी परख तथा गहनौत (1969) न आकांक्षा-स्तर परख का उपयोग किया। इस क्षेत्र में व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष पर एक-एक अनुसंधान हुआ है। अत आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक पक्ष पर शक्ति गहराई एवं विस्तार से अध्ययन आयोजित किए जाएँ, ताकि वाद स्पष्ट स्थिति उभर कर सामने आ सके।

सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शक्ति संप्राप्ति

शक्ति संप्राप्ति का सामाजिक आर्थिक स्तर से सहसम्बन्ध जात करने के लिए जो अनुसंधान हुए हैं, उनमें से बलदेवसिंह (1957) भटनागर (1958), शर्मा (1961), शिवचरण (1965), तिवारी (1965), महावीरप्रसाद शर्मा (1968), माहेस्वरी (1969), पूनिया (1970), उपासिंह (1972) काटक (1972) नीलमलता (1972) तथा पेंवार (1973) के अनुसार सामाजिक आर्थिक स्तर का शक्ति संप्राप्ति से घनिष्ठ सहसम्बन्ध है। परंतु चोरडिया (1969) पारीक (1970) शर्मा (1971) एवं शर्मा (1972) के अनुसार सामाजिक आर्थिक स्तर का शक्ति संप्राप्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता।

रत्ना (1964) न उच्च संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों के सामाजिक आर्थिक स्तरांक (Mean Socio Economic Score) का मध्यमान 15.95 तथा निम्न संप्राप्ति वाले अभिभावकों के सामाजिक आर्थिक स्तरांक का मध्यमान 12.86 जात किया। तिवारी (1965) ने अनुसार अभिभावकों की शक्ति योग्यता का बालको की शक्ति संप्राप्ति पर तत्त्व प्रभाव पड़ता है। शर्मा (1972) ने समान सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों म डाक्टर, वकील तथा अभियन्ताओं के बालक-बालिकाओं का संप्राप्ति स्तर अन्य व्यवसाय वाला से उच्चतर पाया। गुरुदयाल सिंह (1972) ने अनुसार निम्न शक्ति योग्यता वाले अभिभावकों के बच्चों को घर

पर प्राप्त यह जागरित बात बरत पड़ने है कि नतीजा उनका विज्ञान विषय का कुशलतापूर्वक पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। महावीरप्रसाद तामा (1968) ने सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक संप्राप्ति का महसूस 6 रखा। पूनिया (1970) ने सामाजिक-आर्थिक स्तर का शिक्षा पटन-साध्यता का मुख्य घटक माना तथा पाटल (1972) ने विज्ञान विषय में उच्च संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर निम्न संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों का अपेक्षा उच्चतर पाया।

इस क्षेत्र में शोधकर्ताओं ने सामाजिक-आर्थिक स्तर का मापन करने के लिए मुख्य रूप से कुलुम्बासो का सामाजिक-आर्थिक-स्तर-मापनी का उपयोग किया।

अधिकांश शोधकर्ताओं से यह तथ्य उभरता है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर का शैक्षिक संप्राप्ति से घनिष्ठ सम्बन्ध है। कुछ शोधकर्ताओं ने यह भी स्पष्ट किया है कि शैक्षिक मापन का शैक्षिक योग्यता का उनका बच्चा का शैक्षिक संप्राप्ति पर प्रभाव पड़ता है।

ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश तथा शैक्षिक संप्राप्ति

जम शत्रु में तामा (1964) ने अपने अध्ययन में ग्रामियाँ मिलियाँ वस्तुनिष्ठ संप्राप्ति परम्परा का उपयोग करने शुरू पाया कि निम्न संप्राप्ति वाले विद्यार्थियों में से अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र के थे। परन्तु शिखाना (1970) ने स्वनिर्मित परम्परा का उपयोग करने शुरू भूगोल विषय का संप्राप्ति पर ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश का बाद महत्वपूर्ण प्रभाव नही पाया। इतिहास विषय में श्रीवास्तव (1971) ने निम्न परियोजना (1970) के समान ही रहे।

सांख्यिक प्रवृत्तियाँ तथा शैक्षिक संप्राप्ति

इस क्षेत्र में गुप्ता (1965) के अनुसार सांख्यिक प्रवृत्तियाँ में प्रतिभागी-वर्ग शैक्षिक संप्राप्ति के बीच घनात्मक सम्बन्ध है। शारदा (1971) ने जागरित प्रवृत्तियाँ में प्रतिभागी-वर्ग शैक्षिक संप्राप्ति के बीच ऋणात्मक महसूस पाया। जागल (1969) ने सांख्यिक कुशलता तथा बौद्धिक उपरति के मध्य 0.2 महसूस पान किया जा कि नगण्य है। जम अध्ययन में यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि शैक्षिक संप्राप्ति तथा जागरित कुशलता में स्वतंत्र घटक है तथा उनका परस्पर बाद सम्बन्ध नही है।

इस क्षेत्र में शिखाना (1959) ने विद्यार्थियों के अवकाश के समय का प्रवृत्तियाँ का शैक्षिक संप्राप्ति से सम्बन्ध पान करने पर मान्य किया कि विद्यार्थियों का अवकाशकारी प्रमुख प्रवृत्तियाँ पुस्तक पढ़ना तथा खेती, धर्मभावकों का अपने व्यावसायिक कार्यों में मग्न होना पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ना तथा खेती करना आदि हैं और इनमें लगाए गए समय का शैक्षिक संप्राप्ति से महसूस 40 है। मिनाचा (1969) ने नमरी स्कूल के बालक-बालिकाओं का खेती निराशा का खेती में अंतर पाया। साथ ही बालिकाओं का चित्रकारी-मक और रंगारामक प्रवृत्तियाँ का, तथा बालक की चित्रकारी-मक का प्रवृत्तियाँ का तुलना में बुद्धि से अधिक सम्बन्ध पाया गया।

इस क्षेत्र में प्रवृत्तियों का सर्वेक्षण करने के लिए प्रश्नावलियाँ, साक्षात्कार तथा विद्यालय देकाड का उपयोग किया गया, तथा शैक्षिक संप्राप्ति के लिए विद्यालय एवं बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं के अंकों का आधार बनाया गया था।

अध्ययन अध्यापन स्थितियाँ तथा शैक्षिक संप्राप्ति

इस वर्ग में हुए एम एड स्तर के शोध कार्यों में हुपक (1970) ने चार विद्यालयों के प्रकरण अध्ययन (Case Study) के आधार पर यह बात किया कि अधिन स्टाफ तथा अधिव साधना का संप्राप्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बलवीर कौर (1972) के अनुसार नया म अध्यापिकाएँ अध्यापका की अपेक्षा अधिव अनुकूल सामाजिक सवगात्मक पर्यावरण बनाने में सफल होती हैं। अग्रवाल (1973) ने अध्यापक के मौखिक व्यवहार और विद्यार्थियों की शैक्षिक संप्राप्ति का सम्बन्ध जान किया। उसमें यह तथ्य उजागर हुआ कि अध्यापक की अनवरत भाषण विधि का विद्यार्थियों की संप्राप्ति के साथ ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। डा अध्यापक विद्यार्थियों के वादित कार्यों को मगहने हैं तथा जो प्रमवद्ध ढंग से प्रश्न पूछने हैं, उनके विद्यार्थियों की संप्राप्ति का स्तर उच्च पाया गया।

हुपक (1970) ने प्रकरण अध्ययन विधि, बलवीरकौर (1972) ने सामाजिक सवगात्मक स्थिति जात करने के लिए धार पी सिंह की सामाजिक सवगात्मक पर्यावरण मापनी तथा अग्रवाल (1973) ने 28 पाठों को टेप करने राइट एवं नट हाल विधि से उनका वर्गीकरण किया था।

समावनाएँ एवं सुभाष

जसा कि प्रारम्भ में स्पष्ट किया गया है शैक्षिक संप्राप्ति के सहसम्बन्ध का क्षेत्र उन सब की रुचि का है जिनकी विद्यालयी शिक्षा में रुचि है फिर भी सन् 1974 तक इस क्षेत्र में केवल 61 शोध काम हुए हैं जो दस क्षेत्र की व्यापकता तथा महत्ता को ध्यान में रखत हुए अपर्याप्त हैं। अतः भविष्य में इस क्षेत्र में अधिक नियोजित, व्यापक एवं गहराई से अनुसंधान काम करने की नितान्त आवश्यकता है।

अनुसंधान विधि की दृष्टि से देखा जाए तो लगभग सभी रवपणाओं में नामें निव सर्वे विधि का उपयोग किया गया है, जबकि क्षेत्र की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रयोगात्मक विधि अपनाने की आवश्यकता स्पष्ट परिलक्षित होती है। उदाहरण के लिए, इस क्षेत्र में हुए अनुसंधानों से आत्म प्रत्यय की पुनरचना करके शैक्षिक संप्राप्ति का सम्बन्ध तो जात होता है परन्तु इस बात का कोई प्रयोगात्मक साम्य (Experimental Evidence) उपलब्ध नहीं है कि किस प्रकार आत्म प्रत्यय की पुनरचना करके शैक्षिक संप्राप्ति के स्तर को उत्तम किया जा सकता है। अभिवृत्ति तथा शैक्षिक संप्राप्ति का महसम्बन्ध तो जात किया गया है परन्तु इसका कोई प्रयोगात्मक सादय उपलब्ध नहीं है कि किस प्रकार विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्तियाँ का विनास करके संप्राप्ति को उत्तम किया जा सकता है। अतः प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि अपनाने की आवश्यकता है।

एक क्षेत्र में हटाने अनुसंधानों में अध्ययन तथा शक्ति सम्प्राप्ति या तो उपक्षेत्र बहुत ही दुर्लभ हो गया है। यह ठीक है कि बुद्धि और शक्ति सम्प्राप्ति का घनिष्ठ सहसम्बन्ध सिद्ध किया गया है तथा यह भी ठीक है कि सामाजिक अधिभूत स्तर का शक्ति सम्प्राप्ति पर प्रभाव पड़ता है, परन्तु इनमें अध्यापक का अपने अतिरिक्त कार्य में विशेष सहायता नहीं मिलती। अध्यापक का सहायता तब मिल सकती है जब अनुसंधान में प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करें कि कौन सा अध्यापन विधियाँ गति सम्प्राप्ति का प्रयोग कृत अधिक उपलब्ध कर सकती है? कौन सी तकनीकें हैं जिनमें कक्षा में सामाजिक संवातावरण पर्यावरण में वांछित परिवर्तन लाया जा सकता है? कौन सी प्रणालियाँ हैं जिनमें बाल-शिक्षणों की रुचियाँ में अनुसंधान परिवर्तन लाया जा सकता है? शिक्षाधियाँ के समायाजन का क्या उत्पन्न किया जा सकता है? पिछड़े हुए शिक्षाधियों की कम मात्रा की जा सकती है? आदि आदि।

अनुसंधान हेतु नए नए 'यात्रा' का अध्ययन करें ता पता चले कि अधिभूत शक्ति-क्षेत्रों में नगरीय परिवर्तन में नई अपने 'यात्रा' का चुनाव किया है। शक्ति की दृष्टि में प्रतिनिधि 'यात्रा' चुनाव का प्रयोग बहुत ही कम अनुसंधानों में परिलक्षित होता है। सम्भव है अनुसंधान-क्षेत्रों में 'यात्रा' का चुनाव करने समय अपना ध्यान का अधिक रखा हो, परन्तु नगरीय परिवर्तन के आधार पर निष्कर्ष निकाल कर पूरे राज्य के लिए उनका सामाजिक-परिवर्तन करना भी तो उचित होगा। इन आवश्यकताओं के अनुसंधान के लिए समुचित 'यात्रा' चुनाव की। एक साथ ही जन जातियाँ पिछड़ी जातियाँ तथा परिलक्षित जातियाँ का 'फोकस' (Focus) बनाने में अनुसंधान आधारित किए जाने चाहिए।

यदि स्तर का दृष्टि में रखा जाय तो अधिभूत शक्ति-क्षेत्रों में माध्यमिक स्तर में सम्मिलित हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा नौवें वर्गमध्य शिक्षा तथा उच्च प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख अङ्ग हैं। इन क्षेत्रों का ध्यान भी शायद शिक्षा क्षेत्रों का ध्यान आकर्षित होना चाहिए।

विभिन्न विषयों की दृष्टि में रखा जाय तो अनुसंधान-क्षेत्रों में मुख्य विषयों में सामाजिक विज्ञान है। वाणिज्य, उद्योग वन तथा विज्ञान आदि विषयों में प्रमुख अङ्ग हैं। अर्थशास्त्र तथा शक्ति विषयों में, जिनमें कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर सम्प्राप्ति का स्तर बहुत मात्रा में अधिक व्यवस्थित अनुसंधान का प्रयोग हो रहा है। इसमें यह शक्यता है कि शायद अनुसंधान कार्य प्रायः शिक्षा प्राप्त करने का साधन मात्र बन गया है, इसका क्षेत्र का जल में समस्याओं में सम्मिलित नहीं किया जाता।

मैट्रोपिटन प्रवृत्तियों तथा शैक्षणिक सम्प्राप्ति का क्षेत्र भी अधिभूत शिक्षा अनुसंधानों की श्रेणी में आता है। एक आरंभ यह कहा जाना है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निराम होता है। इन शैक्षणिक प्रवृत्तियों का भी व्यक्ति के चोखाने निराम में पर्याप्त स्थान दिया जाना चाहिए परन्तु इनमें आरंभ अनुसंधान यह कहते हैं कि शारी

रिक प्रवृत्तियाँ म प्रतिभागीत्व का शैक्षिक सम्प्राप्ति में ऋणात्मक या नगण्य सहसम्बन्ध है। [ओवेराय (1971) तथा जागीड (1959)।] ऐसी स्थिति में यह भलीभाँति पात किया जाना चाहिए कि वास्तविक स्थिति क्या है।

इच्छा, आकांक्षा स्तर, मृज्जनशीलता, समायोजन समाजमिति स्तर आदि सभी क्षेत्रों में गिने चुने शोध कार्य हुए हैं। अतः इन क्षेत्रों में अधिक अनुसंधान करने की आवश्यकता स्पष्ट दिखाई देती है।

कलहाल तो यही कहा जा सकता है कि राजस्थान में अनुसंधान का यह क्षेत्र आरम्भिक अवस्था में ही है। परन्तु राज्य शिक्षा संस्थान की सक्रियता के साथ ही राज्य शिक्षक प्रशिक्षण मण्डल की स्थापना तथा शिक्षा निदेशालय में शाय प्रबोद्ध स्थापित होना तथा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का योजनाबद्ध व समन्वित सामूहिक प्रयत्न शोधकर्त्ताओं को पर्याप्त प्रोत्साहन देकर स्थिति में काफी सुधार ला सकता है।

सन्दर्भित अनुसंधान

अग्रवाल, विष्णुप्रकाश	A Study of the Relationship between Teachers Verbal Behaviour and Pupils Achievement M Ed Raj Uni 1973
उपमन्यु विश्वविजय	Sociometric Status and Scholastic achievement M Ed Udaipur Uni 1968
उपासिंह	A Comparative Study of the Academic Motivation and Personality Characteristics of Male and Female Students in Relation with Academic Achievement of Class X M Ed Raj Uni 1972
ओवेराय, अमरजातसिंह	A Critical Study of the Academic Achievement of Students Participating in Co-curricular Activities M Ed Raj Uni 1971
बलर, रामसिंह	A Study of the Moral Judgment of the Students at Different Age Levels and the Relationship between Moral Judgment and Other Related Factors M Ed Raj Uni. 1963
गहरोत, जुगलसिंह	Level of Aspiration of the Scheduled and Non Scheduled Caste Boys M Ed Udaipur Uni 1969
गुप्ता प्रभा	An Investigation into Adolescents Responses and Achievement (On the basis of Text Book in Domestic Science) and their Relationship with other Relevant Factors M Ed Raj Uni 1970

- गुप्ता राधाश्याम An Investigation into Relationship between Scholastic Achievement and Personality Variables
M Ed Raj Uni 1969
- गुप्ता शान्ति चिन्ताश्रयन विद्यार्जनो का शक्ति उपनयनों का एक अध्ययन
एम एड, राज वि वि 1971
- गुप्ता मनपात्र Scholastic Accomplishments as Affected by Intelligence and Participation in Co-curricular Activities
M Ed Raj Uni 1965
- गुप्तापारमिन्दू An Investigation into the Scientific Skills Acquired by the Students of Science
M Ed Raj Uni 1972
- चारनिया मोनाम्बमन An Investigation into Factors Responsible for Low Achievement by the Students having Above Average Study Habits
M Ed Raj Uni 1969
- जागल रामकुमार शारीरिक क्षमता और बुद्धि निष्पत्ति का सम्बन्ध,
एम एड राज वि वि 1969
- जन शिवरत्न सामाजिक अस्वीकृति के कारण और उसका कुछ सहसम्बन्धक
एम एड राज वि वि 1969
- जन मुन्नानकुमारी A Study of the Non-Scholastic Factors Responsible for High and Low Scholastic Achievement of Girls Studying in Higher Secondary Schools at Banasthali and Jaipur
M Ed Udaipur Uni 1967
- जाना विद्याधर Anxiety and its Effects on Scholastic Achievements
M Ed Raj Uni 1966
- जिवारी प्रमनारायण An Investigation into the Factors Responsible for Low Achievement (Scholastic) of Above Average Intelligent Students
M Ed Raj Uni 1965
- दरियानानी मनाहर अजमेर की दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की मुद्रागत विषय में सशक्ति का एक अध्ययन,
एम एड राज वि वि, 1970
- द्व पी एम An Investigation into the Relationship between Study Habits and School Achievements of High School Boys of Sardarshahr
M Ed Raj Uni 1979
- दवन, ऑक्टाविह Self-Concept Attitude and Achievement of Secondary School Pupils in English,
M Ed Udaipur Uni 1966

नीलमलता	Effects of Social Acceptance and Socio-Economic Status on the Academic Achievement of School Children M Ed Raj Uni 1972
पेंवार जयचंदनाल	छाठवीं कक्षा की उच्च व निम्न उपलब्धि वाली छात्राओं का एक तुलनात्मक अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1973
पारीक बलावती	A Study of the Effect of Intelligence Study Habit and Socio-Economic Status on X Class Students Scholastic Achievement M Ed Raj Uni 1970
पारीक, शीलकुमारी	विशोरावस्था के समय विभिन्न विषयों की शैक्षिक निष्पत्ति और अनुकूलन के प्रभाव का अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1968
प्यारसिंह	भाष्यता प्राप्त निजी एवं राजकीय विद्यालयों के ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उसे प्रभावित करने वाले मुख्य तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन, एम एड राज वि वि, 1972
पुरोहित, आनंदराज लाल	An Investigation into the Relationship between Study Habits of Higher Secondary School Students and their Academic Achievement M Ed Raj Uni 1971
पूनिया देवकरण	An Investigation into the Adolescents Language Reading and its Relationship with other Variables M Ed Raj Uni 1970
फाटक धरविंद की	Factors Differentiating High and Low Achievers in Science Ph D (Edu) Udaipur Uni 1972
बलदेवसिंह	Correlation between Intelligence and Scholastic Achievement M Ed Raj Uni 1957
बलबीरकीर	कक्षा के सामाजिक एवं सव्यवहारक वातावरण तथा छात्र निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन, एम एड राज वि वि, 1972
भटनागर भगवतप्रसाद	Correlation between Socio Economic Status and Scholastic Achievement M Ed Raj Uni 1958
मनिव जयपालसिंह	A Study of the Relationship of Intelligence and Personality Factors with Achievement in Chemistry at Tenth Class Level M Ed Raj Uni 1973
माधुर, गोविन्दनारायण	Predictive Validity of Some Psychological Factors for Success in Science Courses Ph D (Edu) Udaipur Uni 1971

- मातृवर्गी, बाणन A Study of Students Attitude towards Home work and its Relationship with Educational Achievement
M Ed Raj Uni 1961
- मातृवर्गी गुरुनारा कृष्णा नी क छात्र एवं छात्राग्रा का बौद्धिक क्षमता, अतर्मुखी बहिर्मुखी व्यक्तित्व तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनका शक्ति मप्राप्ति के माप महमम्बर्धा का अध्ययन
एम एड राज वि वि, 1969
- मिनाचा समनरा समरा स्कूल के छात्र तथा छात्राग्री की गैर क्रियाग्री का अध्ययन व उनका बुद्धि में समनरा,
एम एड राज वि वि 1969
- मिश्रा, रवद्वनाथ A Study of Pre Adolescents Creative Expression in Art and Hindi at Different Age levels and their Relationship with other Relevant Factors
M Ed Raj Uni 1969
- मुगतविगागर शरार भार, डेचार्ड बममाय तथा म्दाम्म्य स्तर का समेक्षण,
एम एड राज वि वि 1969
- रगल, एम क Intelligence Personality Traits and Previous School Marks as the Predictors of School Performance
M Ed Raj Uni 1964
- रम्दागी कृष्णगायान A Study of the Relation b tween Intelligence Interest and Achievement of High School Students
M Ed Raj Uni 1964
- रामनान An Investigation into the Factors Pesponsible for the Failure of Pre University Students and the Study of Relationship between University Marks and the Factors that Contribute to Failure
M Ed Raj Uni, 1962
- रानर बीनरमिन् An Investigation into the Pelationship between Attitude towards and Achievement in English of High School Students of Sardar shahr
M Ed Raj Uni 1960
- रना, मनरागद्वन्ना A Comparative Study of Some Personality Characteristics and other Pelated Variables of High and Low Achievers with a view to Determine Some Correlates of Academic Achievement
M Ed Raj Uni 1964
- रना मनरागद्वन्ना A Study of Some Correlates of Creativity in Indian Students
Ph D (Ed) Raj Uni 1963

- रोहतगी, वृजकिशोर
A Study of the Self Concept of Students and that of Teachers as a Factor Affecting Achievement in Science
M Ed Jodhpur Uni 1970
- वास भाभा
Children's Spontaneous Vocabulary as Related to their Intelligence and Memory Span
M Ed Raj Uni 1971
- शर्मा, बासीलाल
A Study of Some Non Intellectual Correlates of Academic Achievement
M Ed Raj Uni 1967
- शर्मा, तेमचन्द्र
तीव्रबुद्धि बालिकाओं द्वारा निम्न स्तर की शक्ति उपलब्धि के कारणों का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1971
- शर्मा दिनशप्रकाश
Some Correlates of Science Ability
M Ed Raj Uni 1966
- शर्मा, बनवारीलाल
An Investigation into the Causes of Failure at the Secondary Stage in the Board's Examination
M Ed Raj Uni 1968
- शर्मा बजनाथ
Personal Values and Achievement of Higher Secondary Students
M Ed Udaipur Uni 1965
- शर्मा, भदनलाल
A Comparative Study of Academic Achievement of Boys and Girls from Equal Socio Economic Background
M Ed Raj Uni 1972
- शर्मा, महावीरप्रसाद
अनमेर की ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों की शक्ति विषयगत संप्रति तथा मानसिक चिन्ता के पारस्परिक सम्बंध का अध्ययन,
एम एड राज वि वि, 1968
- शर्मा, एम सा
An Investigation into Some Related Factors of Educational Backwardness in Tool Subjects of 83 VII Class Students of Sardar shahr,
M Ed Raj Uni 1961
- शर्मा, यशदव
An Investigation into the Relationship between the Leisure time Activities of High School Students in Sardarshahr with their School Achievement
M Ed Raj Uni 1959
- शास्त्री, शकुन्तला
Intelligence Memory Expression Power Study Habit and Internal Assessment as the Predictors of School Performance in General Science Mathematics Hindi and Social Studies
M Ed Raj Uni 1967

- शिवचरण An Investigation into the Why of the Students at Different Age-levels and the Relationship between the Why and Other Related Factors
M Ed Raj Uni 1965
- शरत्ता, ग्रामप्रकाश A Study of Achievement in Chemistry in Five Urban Schools
M Ed Raj Uni 1972
- श्रीरामस्तव, जगन्नीशानारायण अजमेर नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के दसवीं कक्षापाठ के विद्यार्थियों की इतिहास विषय में संप्राप्ति का एक अध्ययन,
एम ए राज वि वि 1971
- सधु, चरणपालसिंह An Analysis of the Attitude of IX Class Students of Sardarshahr towards Certain School Subjects and the Measure of Correlation between Attitude and Achievement
M Ed Raj Uni 1960
- साधा, रामशृंग Relationship between Cognitive style and Achievement in General Science An Exploratory Study
M Ed Raj Uni 1973
- सुधार, छताराम Some Intellectual Correlates of Academic Achievement
M Ed Raj Uni 1967
- सूरजभानसिंह A Study of the Relationship of Mental Abilities with Achievement in Physics at Tenth Class Level
M Ed Raj Uni 1972
- टुक्ड़, धीरान The Case Study of Four Higher Secondary Schools to Recognize Patterns of Schooling in Relation to Academic Achievement
M Ed Raj Uni 1970



मापन एवं मूल्यांकन

□ प्रो० बजरंगलाल भोजक

शिक्षा की प्रखरता सभी बनी रह सकती है जबकि समय व समाज की भागी के सन्दर्भ में सम्पूर्ण प्रक्रिया का यथावश्यक मूल्यांकन किया जाता रहे व प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उसमें परिवर्तन किए जाते रहें। इसे अनुसंधानात्मा का इस पक्ष पर ध्यान जाना स्वाभाविक ही है।

राजस्थान में हुए मापन एवं मूल्यांकन संबंधी शोध-कार्यों को 9 प्रमुख वर्गों में बांटा जा सकता है। यथा—अभिवृत्ति मापन, बुद्धि मापन, अभिक्षमता, अभिक्रिया एवं योग्यता मापन, सम्प्राप्ति परीक्षा, परीक्षा व असफलताएँ, 'यति' व का मापन विद्यालय संगठन का मूल्यांकन तथा विविध।

अभिवृत्ति मापन

इस क्षेत्र में हुए अनुसंधानों में अभिवृत्ति मापनी का निर्माण व अभिवृत्ति सर्वेक्षण संबंधी कार्य किया गया। कपूर (1967) ने विद्यालय कार्य के प्रति तथा रामानंद शर्मा (1969) ने संस्कृत विषय के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया। मूढ (1970) ने इतिहास विषय के प्रति 11 से 18 वर्ष के छात्रों की अभिवृत्तियाँ जानने हेतु एक मापनी का निर्माण किया। प्रयोग से पता हुआ कि इस विषय के प्रति सभी छात्रों की प्रवृत्ति अनुकूल ही थी। छात्रों में से नवी कक्षा की छात्राओं का मुकाबला आठवीं कक्षा की छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों की दृष्टि से विद्यालयों में समानता ही पाई गई। खत्री ने 1971 में प्रशिक्षण महाविद्यालयों में आयोजित शिक्षक व सह शिक्षक प्रवृत्तियों के प्रति छात्राध्यापकों की अभिवृत्तियों का मापन करने पर पाया कि शिक्षक प्रवृत्तियों के प्रति 48% छात्र राजमद, 11% उदामीन व 41% असहमत थे। वे उद्योग व कला शिक्षण के पक्ष में नहीं थे। सुधा भारती (1974) ने विज्ञान तथा गृह विज्ञान पढ़ने वाली छात्राओं की घरेलू जीवन के प्रति अभिवृत्ति जाँचकर मातृम किया कि घरेलू जीवन के प्रति विज्ञान समूह की छात्राओं की अभिवृत्तियाँ अधिक रुचिपूर्ण थी, जबकि गृह विज्ञान की छात्राओं में समान व स्वस्थ अभिवृत्तियाँ थी।

सेमुएल (1967) ने बोर्ड द्वारा लागू की गई वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रणाली व प्रति अध्यापकों की अभिवृत्तियों का मापन करके पाया कि 52% अध्यापक व 38%

- शिवचरण *An Investigation into the 'Why' of the Students at Different Age-levels and the Relationship between the 'Why' and Other Related Factors*
M Ed Raj Uni 1965
- गंगा, ग्रामप्रसाद *A Study of Achievement in Chemistry in Five Urban Schools*
M Ed Raj Uni 1972
- श्रीवामन, जगन्नीधनारायण अजमेर नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की इतिहास विषय में संप्राप्ति का एक अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1971
- मधु चरणपालमि *An Analysis of the Attitude of IX Class Students of Sardarshahr towards Certain School Subjects and the Measure of Correlation between Attitude and Achievement*
M Ed Raj Uni 1960
- माधी, रामशृंग *Relationship between Cognitive style and Achievement in General Science An Exploratory Study*
M Ed Raj Uni 1973
- मुयार, घनाराम *Some Intellectual Correlates of Academic Achievement*
M Ed Raj Uni 1967
- गुरजभानमि *A Study of the Relationship of Mental Abilities with Achievement in Physics at Tenth Class Level*
M Ed Raj Uni 1972
- शुक्ल, बी एन *The Case Study of Four Higher Secondary Schools to Recognize Patterns of Schooling in Relation to Academic Achievement*
M Ed Raj Uni 1970

मापन एवं मूल्यांकन

□ प्रो० बजरगसात भोजक

शिक्षा की प्रसरता तभी बनी रह सकती है जबकि समय व समाज की मांगों के सन्दर्भ में सम्पूर्ण प्रक्रिया का यथावश्यक मूल्यांकन किया जाता रहे व प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उसमें परिवर्तन किए जाते रहें। अतः अनुसंधानार्थी का इस पक्ष पर ध्यान जाना स्वाभाविक ही है।

राजस्थान में हुए मापन एवं मूल्यांकन संबंधी शास्त्र-कार्यों को 9 प्रमुख वर्गों में बांटा जा सकता है। यथा—अभिवृत्ति मापन, बुद्धि मापन, अभिगमता, अभिवृत्ति एवं योग्यता मापन, सम्प्राप्ति परख, परीक्षा व असफलताएँ, व्यक्तित्व का मापन, विद्यालय संगठन का मूल्यांकन तथा विविध।

अभिवृत्ति मापन

इस क्षेत्र में हुए अनुसंधानों में अभिवृत्ति मापनी का निर्माण व अभिवृत्ति सर्वेक्षण संबंधी कार्य किया गया। कपूर (1967) ने विद्यालय कार्य के प्रति तथा रामानंद शर्मा (1969) ने संस्कृत विषय के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया। मूद (1970) ने इतिहास विषय के प्रति 11 व 18 वर्ष के छात्रों की अभिवृत्तियाँ जानने हेतु एक मापनी का निर्माण किया। प्रयोग में पाते हुए कि इस विषय के प्रति सभी छात्रों की प्रवृत्ति अनुकूल ही थी। छात्राद्या में से नवी कक्षा की छात्राद्या का भुक्ताव प्राठवी कक्षा की छात्राद्या की अपेक्षा अधिक पाया गया। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों की दृष्टि से विद्यार्थियों में समानता ही पाई गई। स्वर्नी ने 1971 में प्रशिक्षण महाविद्यालयों में आयोजित शिक्षक व गृह शिक्षक प्रवृत्तियों के प्रति छात्राध्यापकों की अभिवृत्तियों का मापन करने पर पाया कि शिक्षक प्रवृत्तियों के प्रति 48% छात्र राजामण 11% उत्तमसीन व 41% असहमत थे। वे उद्योग व कला शिक्षण के पक्ष में नहीं थे। गुप्ता भारतीय (1974) ने विज्ञान तथा गृह विज्ञान पढ़ने वाली छात्राद्या की घरेलू जीवन व प्रति अभिवृत्ति जाँचकर मालूम किया कि घरेलू जीवन के प्रति विज्ञान समूह की छात्राद्या की अभिवृत्तियाँ में अनेक रूपता थी जबकि गृह विज्ञान की छात्राद्या में समान व स्वस्थ अभिवृत्तियाँ थी।

सेमुएल (1967) ने बोर्ड द्वारा लागू की गई वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रणाली व प्रति अध्यापकों की अभिवृत्तियों का मापन करने पाया कि 52% अध्यापक व 38%

का धनात्मक सम्बन्ध था। मानविकी समूह के छात्रों की अधिकतम रचि साहित्यिक व कृषि क्षेत्रों में तथा 'यूनतम' रचि विज्ञान क्षेत्र में थी। अभिरचिया की दृष्टि से वाणिज्य सहाय के विद्यार्थी विज्ञान सहाय के विद्यार्थियों की अपेक्षा बला सहाय के विद्यार्थियों के ज्यादा निकट पाए गए। उनकी रचि के क्षेत्र थे - ललित कला व घरेलू कार्य। 'यूनतम' रचि के क्षेत्र थे - विज्ञान व चिकित्सा। विज्ञान सहाय के छात्रों की सर्वोत्कृष्ट रचि के क्षेत्र विज्ञान व चिकित्सा पाए गए। सबसे कम चाहे जान वाले क्षेत्र थे - ललित कला तथा घर से बाहर की नियाएँ। गणित व विज्ञान के विद्यार्थियों ने सबसे अधिक रचि विज्ञान क्षेत्र में प्रदर्शित की। उनकी सबसे कम रचि कृषि व घरेलू कार्यक्षेत्रों में पाई गई।

संप्रति परख

त्रिपाठी (1953), बलराज (1954), लेखा (1955) लखरू (1956), कचरू (1956), भागव (1956), सरदारसिंह (1957), रघुनाथप्रसाद (1957), हृपालसिंह (1961), मन्वन्लाल (1961) वश्य (1962), सिधल (1964), उपाध्याय (1965), नारगदेवी (1966) व रामप्रसाद शर्मा (1972) ने कक्षा 5 से कक्षा 10 तक के छात्रों के लिए अपनी अपनी रचि के विषयों में संप्रति परख-पत्र तैयार किए। प्रायः सभी की विश्वसनीयता व वधता प्रमाणित की गई। प्राप्त निष्कर्ष थे कि भूगोल विषय में संप्रति की दृष्टि से आठवीं कक्षा के छात्र और छात्राओं में समानता पाई गई। जबकि नरदेव शर्मा (1962) के अनुसार छात्राओं का अवबोधन छात्रों की अपेक्षा अधिक था। प्राइवेट विद्यालयों के विद्यार्थियों की संप्रति राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से अपेक्षाकृत उत्तम पाई गई। सामाजिक ज्ञान में छात्रों ने छात्राओं की अपेक्षा अधिक अंक प्राप्त किए। सामान्य विज्ञान (कक्षा VIII) में अधिकांश विद्यार्थी 'ध्वनि' व 'प्रकाश प्रकरणों' से अनभिज्ञ पाए गए। रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान व वनस्पति विज्ञान में उनका ज्ञान बहुत ही निम्न स्तर का पाया गया। लगभग यही तथ्य 1965 में राजस्थान राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर ने कक्षा 5 के छात्रों की सामान्य विज्ञान व सामाजिक ज्ञान विषयों में संप्रति का मूल्यांकन करके निकाले। 1966 में मुल्तानकुमारी जैन ने अपने अनुसंधान में मालूम किया कि संप्रति में बुद्धि व अध्ययन आदतें प्रभावक घटक थे।

परीक्षाएँ

वाक्लीवाल (1968) ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा लागू छात्रों के मूल्यांकन-योजना के बारे में बताया कि छात्रों के मूल्यांकन का सम्पूर्ण अध्ययन प्रक्रिया का अभिन्न अंग नहीं बन पाया था। एक ही छात्रों के मूल्यांकन पद्धति सभी विद्यालयों के लिए अनुकूल नहीं रहती। शतान सिंह (1974) ने बताया कि छात्रों के मूल्यांकन के अन्तर्गत साहित्यिक, सांस्कृतिक व वैज्ञानिक प्रियाओं का दस्तुनिष्ट तरीके से भाषाजित नहीं किया गया था। मुल्तानकुमारी जैन की दृष्टि से वाक्लीवाल उच्च माध्यमिक

विद्यार्थियों में अवधारणाओं का विकास किया गया। व्यापक विद्यायात्रा या यात्रायात्रा वातावरण का विकास विद्यार्थियों में एक जगह हो पाया। अथवा त्रिधातु (उपरात या छात्र) दोनों प्रकार के विद्यार्थियों में उपस्थित रहे। आंतरिक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रभावी अवधारणा अधिष्ठाता अधिष्ठाता पाए गए। उक्त कार्य प्राप्ति भी तभी किया जा रहा था।

वर्ष 1963 में ग्यारवी कक्षा के विद्यार्थियों के आंतरिक मूल्यांकन के माध्यम परीक्षा के द्वारा का मध्यम पाठ के पाठ्य विद्यायात्रा मूल्यांकन के द्वारा का मध्यमा 32.04% से 63.73% या जहाँ बाह्य परीक्षा के द्वारा का मध्यमा 37.93% से 44.84%। यह अंतर सामान्य विज्ञान में 23.31% से गणित में 50% तक पहुँच गया था। बाह्य परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने वाले छात्रों का भी आंतरिक मूल्यांकन में बहुत अच्छे अंक मिले थे। हिम्मतगिरी (1972) में बाह्य परीक्षाओं में अनिर्णय शिरी के नागरिक शास्त्र विषय में यह पाया 'अ' गण में 'ब' गण की अपेक्षा अधिक अंक प्राप्त हुए। इन अंकों से पता चलता था कि छात्रों में सुधार में छात्रों का बड़ी महत्ता मिली। शिक्षा की अपेक्षा नागरिक शास्त्र में यह गण और 'ब' गण के अंक में अधिक अंतर था। यह पाया कि गण के अंकों का महत्त्वपूर्ण गुणांक शिरी में 57 से नागरिक शास्त्र में 78 था।

परीक्षा में शिक्षा के ज्ञान और प्रश्नों के पाठ्यपुस्तकों में शिक्षा के प्रश्नों की तुलना में परीक्षा क्षेत्र का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। इस सम्बन्ध में यादव (1974) ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक शिक्षाओं के लिए प्रस्तावित पुरानी के नई भौतिक विज्ञान के पुस्तकों के अध्ययन प्रश्नों तथा परीक्षा में शिक्षा के प्रश्नों का उद्देश्यनिष्ठ विश्लेषण किया और पाया कि पुरानी पाठ्यपुस्तकों में अध्यास के प्रश्नों अधिष्ठाता पुनरास्मरण प्रकार के थे जहाँ नई पुस्तकों के गण अ में पान के अध्यास के प्रश्न 92% और 'अ' गण में अध्यास और उपयोग के प्रश्न 87.3% पाए गए। नई पुस्तकों में पान की अपेक्षा अध्यास के गुणवत्ता पर अधिक ध्यान दिया गया था। प्रश्न पत्रों की तुलना में पाया गया कि यद्यपि दोनों ही प्रकार के प्रश्न पत्रों में पुनरास्मरण प्रकार के प्रश्नों की अधिष्ठाता थी किन्तु नई प्रश्न पत्र में पान की अपेक्षा अध्यास के प्रश्न अधिक रहे।

असफलताएँ एवं अनुसंधान

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत का एक महत्त्वपूर्ण मानकर उसका शिक्षा विभाग द्वारा कार्यान्वयन किया। मन्त्र (1955) तथा मन्त्रालय (1961) ने माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के अनुसंधान करने के कारणों का अध्ययन किया। दोनों के निष्कर्ष बताते हैं कि विद्यार्थियों के विभिन्न विषयों में अक्षर के उपयोगिता निम्न बोद्धि स्तर के अस्वस्थ अध्ययन करने के अभिभावकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति, मनोवैज्ञानिक कारणों के कारण शिक्षा में अक्षर के समय लगाना—यह अनुत्तीर्णता के प्रमुख

कारण थे। कक्षा में छात्रों की संख्या का बहुत अधिक होना, कमजोर अध्यापन पाठ्यक्रम में विषमता, विचलितता विद्यालय भवन का उचित जगह पर न बना होना, स्थानीय परीक्षाओं में कक्षात्रति में उदारता, अभिभावकों के सहयोग में कमी आदि प्रमुख कारण पाए गए। मुप्ता (1972) ने गणित विषय में असफलता के कारणों का मूल्यांकन करके बताया कि बुद्धि का निम्न स्तर, 'यत्नित्व' कुसमायोजन दुर्बलता व प्रेरणा की कमी असफलता के मुख्य कारण थे। प्रधानाध्यापक व अध्यापकों के मनानुसार असफलता के कारण थे घर की हीनतर आर्थिक स्थिति घर के वातावरण का अनुकूलन न होना माँ-बाप द्वारा सहाय्य की कमी, व्यक्तिगत ध्यान कम दिया जाना गुरु-बाप की असंतुलित मात्रा, सहायक सामग्री की कमी, मनोरंजन की सुविधाओं का अभाव, नीचे की कक्षाओं में निम्न स्तर का अध्यापन, व्यवसाय मिलन की अनिश्चितता लक्ष्य निर्धारण की कमी, कमजोर स्वास्थ्य, कक्षा में कम उपस्थित रहना पाठ्यचर्या में गल्ती जल्दी परिवर्तन और पठन में कम रुचि होना।

परीक्षा और संप्राप्ति अध्ययन व साध-साध छात्रों की विभिन्न विषयों में अशुद्धियाँ की भी खोज की गई। राठोड़ (1966) ने कक्षा 6 व 7 व 8 के छात्रों की अशुद्धियों की जाँच की व पाया कि छात्रों ने कुल 40206 शब्दों में से 5690 अर्थान्तर 14% शब्दों की वतनी गलत लिखा। अशुद्धियाँ करने में छात्र व छात्राएँ एक जैसे ही पाए गए। हर प्रायः समूह के विद्यार्थियों में समान रूप से ही अशुद्धियाँ की। ये अशुद्धियाँ मात्रा, अनुस्वार और गलत अक्षर के प्रयोग की थी। वतनी की अशुद्धियों का मुख्य कारण अशुद्ध उच्चारण बताया गया। रामनिवास शर्मा (1969) ने नवी कक्षा के छात्रों के लिए एक निदानात्मक परख पत्र तैयार किया तथा पाया कि छात्रों ने मात्राओं व अनुस्वारों की सबसे अधिक गलतियों की। अशुद्धियों के मुख्य कारण व्याकरण का कम ज्ञान, अशुद्ध उच्चारण गुरु लिखावट और शीघ्रता से लिखने की आदतें थी। उपदेशकुमारी (1973) ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय कक्षा के विद्यार्थियों की हिंदी में अशुद्धियों की जाँच हेतु एक परख पत्र तैयार किया। इस परख-पत्र का विश्वसनीयता गुणांक 96 व वषता गुणांक 51 से 57 तक था। भादू (1965) ने भी इसी तरह का एक निदानात्मक परख पत्र तैयार किया। जयप्रकाश शर्मा (1954) ने नवी व दसवीं कक्षा के छात्रों द्वारा अंग्रेजी में की जाने वाली अशुद्धियों की जाँच की। आपने पाया कि सबसे अधिक अशुद्धियाँ क्रिया के उपयोग हिंदी वाक्यों का अंग्रेजी में अक्षरशः अनुवाद वतनी, शब्दों का अशुद्ध प्रयोग और भ्रूहारा के प्रयोग से सम्बन्धित रही।

सुश्री माथुर (1972) ने कक्षा 6 के विद्यार्थियों के लिए एक निदानात्मक परख पत्र बनाया व छात्रों द्वारा अंग्रेजी में की जाने वाली अशुद्धियों का मूल्यांकन किया। आपने पाया कि उन्हें /i/ /ee/ /ie/ /e/ और /ei/ से युक्त शब्दों की वतनी निम्नलिखित गलतियाँ महसूस हुईं। एकात्री रूप में सिलाई गद्द सजावट सही रूप में आत्म सात नहा हो पाई। विद्यार्थियों की सामान्य वर्तमान काल के वाक्य बनाने में थोड़ी गलतियाँ महसूस हुईं। वागचा (1973) ने छाठवा कक्षा के विद्यार्थियों की अंग्रेजी की अशुद्धियों का वतनी, शब्दों का अशुद्ध प्रयोग व अक्षरों का उपयोग और विराम चिह्नों के सम्बन्ध

में मूल्यांकन करने पाया कि सबसे कम संप्राप्ति वाले छात्रों में चारों प्रकार के अनुद्वितीय श्रेणी के छात्र संप्राप्ति प्राप्त छात्रों की तुलना में अधिकतम संप्राप्ति में थे। आपन बुद्धिमान व अनुद्वितीय में भी मायका सम्मिलित पाया। कम बुद्धिमान विद्यार्थियों ने अधिकतम अनुद्वितीयों को।

यह ता हृद व्यक्तित्व अध्ययन में अनुद्वितीयों को पाल करने का ज्ञान। संध्याका न भी विभिन्न विषयों में छात्रों का गतिविधि पाल करने का प्रयास किया। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अधिनियम नवम्बर 1974 में उत्प्रेषण आदेशों के अन्तर्गत नवम्बर 1972 का उच्च माध्यमिक व माध्यमिक परीक्षा के अग्रज प्रतिपाद विषय व प्रश्न-पत्रों के स्तर व विद्यार्थियों द्वारा इनका गतिविधि का मूल्यांकन किया। उच्च माध्यमिक परीक्षा अग्रजों (अनिवार्य) विषय सम्मिलित पाठ्य क्रम के निम्नलिखित विषयों में छात्रों के प्रयासों का रचना और अग्रजों में सम्मिलित भाषा प्रश्न ता ठीक सिंग पर जय निम्नलिखित/प्रश्न-पत्रों का अग्रजों को था ता व उच्च मध्य स्तर में सम्मिलित में मनी का रचना व प्रयास करने में सम्मिलित रहे। उत्प्रेषण के बाद विद्यार्थियों को प्रयास सम्मिलित करने के बाद, विद्यार्थियों को विद्यार्थियों को मनी का रचना व मरीका के सम्मिलित काया अनुद्वितीयों को। माध्यमिक स्तर के छात्रों को अग्रजों (अनिवार्य) (1972) के उत्प्रेषण में भी छात्रों को भाषा पाल अग्रजों निम्न स्तर का पाया गया। निम्नलिखित/प्रश्न-पत्रों का भाग में इनका रचना के निम्नलिखित था। छात्रों ने अधिकांश आधिकारिक विषयों का रचना सम्मिलित गतिविधि को। प्रश्न-पत्रों के सम्मिलित में बनाया गया कि एक ही प्रश्न-पत्र में उत्प्रेषण की अग्रजों के ज्ञान की जा सकती। प्रश्न-पत्र में प्रयास तथा का रचना निम्नलिखित पर पर्याप्त संध्या में प्रश्न नहीं सिंग गए। सिंग गए प्रश्न पूरा पाठ्यक्रम का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे। इन पत्रों के बाद वास्तव में मनी कायों की रचना के निम्नलिखित में छात्रों के भाषा प्रयास का मूल्यांकन किया जा सकता है। बहुत विविध प्रकार के प्रश्नों में अधिकांश विविध तकमपद नहीं थे। अधिकांश प्रश्न पुनरावृत्ति का परीक्षा करने वाले थे भाषा-प्रयोग का पर्याप्त करने वाले थे।

यह तरह का पाठ्य क्रम माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (1974) ने सामान्य विज्ञान में भी किया। अनुसंधान प्रश्न-पत्रों के अग्रजों के स्तरों में विभिन्न उत्प्रेषणों का ज्ञान के लिए गए अग्रजों के प्रतिभा में बहुत अग्रजों थे। पाठ्यक्रमों की विभिन्न रचनाओं में अग्रजों का अग्रजों को था मगर अग्रजों प्रयोगों में विनिर्माण का काम था, इनके कारण अग्रजों में व्यक्तित्व का प्रभाव रहा। छात्रों ने अग्रजों में व स्तरों की रचना अधिक अग्रजों प्राप्त किए। जहाँ स्मृति व अनुमान से काम लेना था अग्रजों की प्राप्ति अधिक थी। अधिकांश वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिए प्रयोग के लेना थे। सामान्य विज्ञान में छात्रों ने महत्वपूर्ण प्रयोगों के मिश्रणों का सम्मिलित में था ता स्तरों की या समझ में नहीं। पारिभाषिक प्रश्नों का निम्नलिखित में मायका का बहुत अधिक अनुद्वितीयों को गड। बार-बार एक ही विषय के दौरान की आपन भाषा में।

धृष्टित्व का मापन

बोशिन (1963) 7 घर, विद्यालय, समाज, स्वास्थ्य व सवेग के क्षेत्रों में समायोजन का मूल्यांकन करने हेतु एक 'यत्तित्व' समायोजन परख तयार की। इसका विश्वसनीयता गुणांक 70 से 82 व वधता गुणांक 47 से 62 था। वधा में सहपाठी एक दूसरे का कितना चाहते हैं इस स्वीकृति का अर्थ चरों से क्या सम्बन्ध होता है, आन्ति को लेकर दाधीच (1968) व गुप्ता (1973) ने शोध काय किए। दाधीच ने पाया कि अधिक सामाजिक स्वीकृति के कारण वे शक्ति सामाजिक और खेल में उच्च योग्यताएँ। माँ बाप की सामाजिक आर्थिक स्थिति व बुद्धि का सामाजिक स्वीकृति में माथ कोई साधक सम्बन्ध नहीं पाया गया, मगर शक्ति संप्राप्ति का इसके साथ साधक सम्बन्ध प्रमाणित हुआ। जिन छात्रों को सामाजिक स्वीकृति अत्यल्प प्राप्त हुई उनमें समस्या प्रवृत्तियाँ अपेक्षाकृत बहुत अधिक पाई गई, उनकी शक्ति संप्राप्ति बहुत निम्न श्रेणी की थी। शक्तिप्रभा गुप्ता के निष्कर्षों के अनुसार बुद्धि व सामाजिक आर्थिक स्तर ने सामाजिक-स्वीकृति को प्रभावित किया। साहित्यिक व वनानिक रचियों वाले खेल में दक्ष आत्मनिर्भर, आत्मनिष्ठ और मवेगात्मक रूप से स्थिर विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हुई। छात्रों में मौ-दर्यात्मक व साहित्यिक अभिरुचियाँ विशेष स्वीकृति का कारण बनीं। जिन विद्यार्थियों में उपरोक्त योग्यताओं व अभिरुचियों की कमी थी, उन्हें सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई।

उमिला शर्मा (1971) ने किशोर छात्र-छात्रों की कुण्डा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया और बताया कि 13 से 16 वर्ष के किशोर छात्रों और छात्राओं में 'ग्रह प्रतिरक्षा' सम्बन्धी कुण्डा का तत्त्व सबसे अधिक सक्रिय था। आवश्यकता प्रशसन व अवरोधन का तत्त्व 13 वर्षीय छात्राओं में क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर था जबकि 14 15 व 16 वर्ष की छात्राओं में अवरोधन' तत्त्व दूसरे स्थान पर व 'आवश्यकता प्रदर्शन' तीसरे स्थान पर था। यही तथ्य 13 14 वर्ष के छात्रों में पाया गया। 15 16 वर्ष के छात्र और 13 वर्ष की छात्राओं में इस दृष्टि से समानता थी। 13 से 16 वर्ष की किशोरियों व 14 से 16 वर्ष के किशोरों में सबसे अधिक 'अतिरक्तमण' इसके बाद अनाक्रमण व सबसे कम 'अतःप्रतिक्रमण' पाया गया। 13 वर्ष के किशोरों में यह क्रम 'बाह्य अतिरक्तमण', 'अतःप्रतिक्रमण' व 'अनाक्रमण' था। 1973 में छत्रमाहन शर्मा ने अपने पीएच डी अनुसंधान काय में 'विद्यालय परिस्थितियों में किशोर छात्र-छात्रों की कुण्डा प्रतिक्रियाएँ' नामक परीक्षण तयार किया। विभिन्न आयु स्तरों के मदभ में इसका विश्वसनीयता गुणांक 57 से 76 रहा। अध्यापकीय मता के आधार पर तो इसकी वधता कम रही, पर 30 अपराधी किशोरों पर यह उपकरण वध प्रमाणित हुआ। इस परीक्षण के अनुसार किशोर छात्राओं में बाह्य अतिरक्तमण तत्त्व 14 वर्ष की उम्र तक बढ़ता जाता है। दूसरी ओर अतःप्रतिक्रमण' 12 से 15 वर्ष की उम्र में घटता जाता है। किशोर छात्रों में भी आयु वृद्धि के साथ साथ ग्रह प्रतिरक्षा तत्त्व घटता जाता है।

व्यक्तित्व का मापन

बोनिव (1963) 7 घर, विद्यालय, समाज, स्वास्थ्य व मजदूरी के क्षेत्रों में समायोजन का मूल्यांकन करने हेतु एवं व्यक्तित्व समायोजन-परन्व तयार की। इसका विश्वसनीयता गुणांक 70 से 82 व वयता गुणांक 47 से 62 था। कक्षा में सहपाठी एक दूसरे का कितना चाहते हैं इस स्वीकृति का अर्थ चरों से क्या सम्बन्ध होता है आदि को लेकर दाधीच (1968) व गुप्ता (1973) ने शोध कार्य किए। दाधीच ने पाया कि अधिक सामाजिक स्वीकृति के कारण ये शक्षिक सामाजिक और खेल में उच्च योग्यताएँ। माँ बाप की सामाजिक-आर्थिक स्थिति व बुद्धि का सामाजिक स्वीकृति के साथ कोई साधन सम्बन्ध नहीं पाया गया, मगर शक्षिक संप्राप्ति का इसका साधन सम्बन्ध प्रमाणित हुआ। जिन छात्रों को सामाजिक स्वीकृति अत्यल्प प्राप्त हुई उनमें समस्या प्रवृत्तियाँ अपेक्षाकृत बहुत अधिक पाई गई, उनकी शक्षिक संप्राप्ति बहुत निम्न श्रेणी की थी। शक्षिप्रभा गुप्ता ने निष्कर्षों के अनुसार बुद्धि व सामाजिक आर्थिक स्तर ने सामाजिक-स्वीकृति को प्रभावित किया। साहित्यिक व बचनानिक रचियाँ वाले, खेल में दक्ष आत्मनिभर आत्मनिष्ठ और सवगात्मक रूप से स्थिर विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हुई। छात्राभा में सौंदर्यात्मक व साहित्यिक अभिरुचियाँ विशेष स्वीकृति का कारण बनीं। जिन विद्यार्थियों में उपरोक्त योग्यताएँ व अभिरुचियाँ की कमी थी, उन्हें सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई।

उर्मिला शर्मा (1971) ने किशोर छात्र छात्राभा की कुष्ठा प्रतिन्रियाओं का अध्ययन किया और बताया कि 13 से 16 वष के किशोर छात्रों और छात्राभा में 'अह प्रतिरक्षा सम्बन्धी कुष्ठा का तत्त्व सबसे अधिक सक्रिय था। आवश्यकता प्रन्शन' व 'अवरोधन का तत्त्व 13 वर्षीय छात्राभा में क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर था, जबकि 14, 15 व 16 वष की छात्राभा में अवरोधन' तत्त्व दूसरे स्थान पर व 'आवश्यकता प्रदशन' तीसरे स्थान पर था। यही तथ्य 13 14 वष के छात्रों में पाया गया। 15 16 वष के छात्र और 13 वष की छात्राभा में इस दृष्टि से समानता थी। 13 से 16 वष की किशोरियाँ व 14 से 16 वष के किशोरों में सबसे अधिक 'अतिजमण इसके बाद 'अनाक्रमण व सबसे कम 'अत अतिक्रमण' पाया गया। 13 वष के किशोरों में यह क्रम बाह्य अतिजमण, अत अतिजमण व 'अनाक्रमण था। 1973 में छत्रमोहन शर्मा ने अपने पीएच डी अनुसंधान कार्य में 'विद्यालय परित्स्थितियाँ में किशोर छात्र छात्राभा की कुष्ठा प्रतिन्रियाएँ नामक परीक्षण तयार किया। विभिन्न आयु स्तरों के सन्दर्भ में इसका विश्वसनीयता गुणांक 57 से 76 रहा। अध्यापकीय मता के आधार पर तो इसकी वयता कम रही पर 30 अपराधी किशोरों पर यह उपकरण वय प्रमाणित हुआ। इस परीक्षण के अनुसार किशोर छात्राभा में बाह्य अतिक्रमण तत्त्व 14 वष की उम्र तक बढ़ता जाता है। दूसरी ओर अत अतिजमण 12 से 15 वष की उम्र में घटता जाता है। किशोर छात्राभा में भी आयु वृद्धि के साथ साथ अह प्रतिरक्षा तत्त्व घटता जाता है।

म मूलावन रश्मि पास कि मयम रम मप्राप्ति वात छात्रा न चाग। प्रकाश की अगुदिया
 प्रोवन न रश्मि मप्राप्ति प्राप्त छात्रा की तुलना म अत्रिकनम मयम म की। आपन
 बुद्धिनि व अगुदिया म ना मायक रममय पास। कम बुद्धिमान विद्याधरा न
 अत्रिकनम अगुदिया की।

[illegible]

नवी नम्र का गात्र रात्र माध्यमिन् गित्वा वा (1974) न मासाय विज्ञान म
भी जिया । तन्नुसार प्रत्यक्ष व अं एव वं स्यात् । म विभिन्न स्त्रियों का श्रावक विज्ञ
गित्वा वा प्रका के प्रतिष्ठानों म वस्तु अन्तर ग । पाठिका का विभिन्न स्त्रियों म प्रका का
अभिप्राय टीक ग मन्त्र अन्तर प्रकाता म विभिन्नान्न वा कभी पाठ ग त्रिभुव काग
प्रक दन में व्यक्तित्वता वा प्रभाव ग । अत्रा न अं स्यात् म वं स्यात् वा अद्वया
अधिक प्रक प्राप्त विज्ञ । ज्ञानं स्मृति व अनुमान म वान नना ग अन्त का प्राप्ति
अधिक थी । अत्रिका स्मृतिष्ठ प्रान् उक्ति प्रकार के नहीं थ । मासाय विज्ञान म
गात्रा न मन्त्रगुण प्रका ग व मिद्वाना वा नमन्त्र म या ग स्त्रिया की वा
गमना ग स्या । पारिभाषिक गना न गित्वा म मात्राओं की दन्त अत्रिक अष्टुटिषी
पाठ ग । वाग्यार एक वा नम्र का स्त्रियन की श्रावत भा स्यात् ।

व्यक्तित्व का मापन

बोशित (1963) त घर, विद्यालय समाज, स्वास्थ्य व सवंग के क्षेत्रो म समायोजन का मूल्यांकन करने हेतु एव व्यक्तित्व समायोजन-परम तयार की। इसका विश्वसनीयता गुणांक 70 से 82 व बधता गुणांक 47 से 62 था। कक्षा मे सहपाठी एव दूसरे को कितना चाहत हैं इस स्वीकृति का आय चरो से क्या सम्बन्ध होता है, ग्रानि को लेकर दाधीच (1968) व गुप्ता (1973) ने शोध काय किए। दाधीच ने पाया कि अधिक सामाजिक स्वीकृति के कारण ये शिक्षक, सामाजिक और खेल म उच्च योग्यताएँ। मो-बाप की सामाजिक ग्रानि स्थिति व बुद्धि की सामाजिक स्वीकृति व साथ कोई साथ सम्बन्ध नहीं पाया गया, मगर शिक्षक संप्राप्ति का इसक साथ साथ सम्बन्ध प्रमाणित हुआ। जिन छात्रा को सामाजिक स्वीकृति अत्यल्प प्राप्त हुई उनम समस्या प्रवर्तियाँ अपेक्षाकृत बहुत अधिक पाई गई, उनकी शक्ति संप्राप्ति बहुत निम्न श्रेणी की थी। शक्तिप्रभा गुप्ता के निष्कर्षों के अनुसार बुद्धि व सामाजिक ग्रानि स्तर ने सामाजिक-स्वीकृति को प्रभावित किया। साहित्यिक व यत्निक रचिया वाले, खेल म दक्ष, आत्मनिष्ठ और सकारत्मक रूप से स्थिर विद्यार्थियों का अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हुई। छात्राभा म सौन्दर्यात्मक व साहित्यिक अभिरुचियाँ विशेष स्वीकृति का कारण बनी। जिन विद्यार्थियों म उपरोक्त योग्यताओं व अभिरुचियाँ की कमी थी, उन्हें सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई।

उमिता शर्मा (1971) ने किशोर छात्र छात्राभा की कुण्डा प्रतिक्रियाभा का अध्ययन किया और बताया कि 13 से 16 वष के किशोर छात्रा और छात्राओं मे 'ग्रह प्रतिक्रिया सम्बन्धी कुण्डा का तत्त्व सबसे अधिक सक्रिय था। 'आवश्यकता प्रश्न' व अवरोधन का तत्त्व 13 वर्षीय छात्राभा म क्रमश दूसरे व तीसरे स्थान पर था, जबकि 14, 15 व 16 वष की छात्राभा म 'अवरोधन' तत्त्व दूसरे स्थान पर व 'आवश्यकता प्रदर्शन' तीसरे स्थान पर था। यही तथ्य 13 14 वष के छात्रा म पाया गया। 15 16 वष के छात्र और 13 वष की छात्राभा मे इस दृष्टि से समानता थी। 13 से 16 वष की किशोरियों व 14 से 16 वष के किशोरों म सबसे अधिक 'अतिक्रमण' इसके बाद 'अनाक्रमण' व सबसे कम 'अतःअतिक्रमण' पाया गया। 13 वष के किशोरों म यह क्रम 'बाह्य अतिक्रमण, अतःअतिक्रमण' व अनाक्रमण था। 1973 मे छत्रमोहन शर्मा ने अपने पीएच डी अनुसंधान काय मे 'विद्यालय परिस्थितियाँ म किशोर छात्र छात्राभा की कुण्डा प्रतिक्रियाएँ नामक परीक्षण तैयार किया। विभिन्न आयु स्तरों के सन्दर्भ मे इसका विश्वसनीयता गुणांक 57 से 76 रहा। अध्यापकीय मता के आधार पर तो इसकी बधता कम रही, पर 30 अवस्थाओं किशोरों पर यह उपकरण बध प्रमाणित हुआ। इस परीक्षण क अनुसार किशोर छात्राभा म बाह्य अतिक्रमण तत्त्व 14 वष की उम्र तक बढ़ता जाता है। दूसरी ओर अतःअतिक्रमण 12 से 15 वष की उम्र मे घटता जाता है। किशोर छात्रा म भी आयु वृद्धि के साथ साथ अतःअतिक्रमण तत्त्व घटता जाता है।

अनवधान में मुकायम भी असफल हो जाता है। पाया गया कि जिस लग्न व उत्साह से यह विद्यालय शुरू किए गए थे उससे पांच वर्षों में ही नमी आ गई। उनमें एक अध्यापक आ गए, जो योजना से परिचित नहीं थे। उन प्रयोगाधीन विद्यालयों पर शिक्षा विभागीय नियम समानतः लागू कर लिए गए उससे बाधा पहुँची। आवश्यक शिक्षण सामग्री का काफी अभाव रहा।

विविध अध्ययन

वृजकिशोर शर्मा (1973) ने फ्लंडर की दस वर्गीय प्रणाली (Flanders Ten Categories) के अनुसरण पर विज्ञान अध्यापकों के लिए एक व्यवहार-तालिका का विकास करके मालूम किया कि रसायन विज्ञान विषय में अध्यापक कथन छात्र कथन से साठे छह गुना अधिक था। अध्यापक द्वारा किए जाने वाले परीक्षा कथन 12% थे। छात्रों में विचार का विकास के या उनके विचारों की प्रगति के अवसर नहीं थे बरबस रहे। अध्यापकों के अधिकार प्रदान की स्थिति की किसी न आलोचना नहीं की। यह भी पाया गया कि कक्षा में विचार प्रवर्तन के अवसर छात्रों का नहीं दिए जाते। अध्यापकों की कक्षागत व्यवहारों का सापेक्ष प्रतिशत इस प्रकार से था—अध्ययन स्थिति का निर्माण 51.7%, अधिगम स्थिति का निर्माण 15.5%, सामग्री निर्माण की स्थिति 7%, कक्षा नियंत्रण के व्यवहार 8.2%, मौन किया जाने के अवसर 7% और अनिश्चित व्यवहार 10.5%।

मुन्गाही (1968) ने महाविद्यालयी छात्रों के लिए एक अध्ययन आदत जांच प्रश्नावली तैयार की, जिसका विश्वसनीयता गुणान्तर 78 व वक्तव्य गुणांक 43 रहा। सार था कि अर्द्धी शिक्षक संप्राप्ति केवल अध्ययन-आदतों पर ही निर्भर नहीं करती इसके लिए बुद्धिमत्ता व अभिरूपाता जैसे तत्त्व भी उत्तरदायी होते हैं।

कर्णाड (1971) ने कक्षा के बाहर चलने वाली (सहशिक्षक) नियामकों का मूल्यांकन करके पाया कि 70% से 75% अध्यापकों के छात्रों के मतानुसार इन नियामकों के संगठन व संचालन हेतु कोई अर्द्धी योजना नहीं बनाई जाती थी। इनकी योजना बनाने हेतु या क्रियाविधि हेतु छात्र समिति के सुझावों पर ध्यान नहीं दिया जाता था। इन नियामकों का मूल्यांकन प्रायः सत्र के अंत में किया जाता था। इस मूल्यांकन में छात्र समिति का कोई योगदान नहीं रहता। छात्रों के मतानुसार ये नियामक जनताधिकार नागरिकता और भावनात्मक एकता का विकास करती हैं। ये छात्रों में जिम्मेदारी, सहयोग व दक्ष भक्ति के गुण पैदा करती हैं।

समावनाएँ एवं सुझाव

मापन एवं मूल्यांकन के उपकरणों में संप्राप्ति परम्परा पर विशेष ध्यान देना। वस्तुतः इस क्षेत्र में अध्यापकों को स्वनिर्मित परीक्षणों का उपयोग अधिक करना चाहिए क्योंकि प्रमाणीकरण परखें पाठ्यक्रम परिवर्तन के साथ ही बेकार हो जाती हैं। परीक्षाओं की असफलता के उसके कारण छात्रों की अनुपस्थिति, उनकी आवश्यकताओं, अभिवृत्तियों, व्यक्तित्व समायोजन आदि सामाजिक सम्बन्ध आदि विषयों में और

अधिक मूल्यांकन शोध काय किया जाने अपेक्षित है। खेल भारीयुक्त विकास आदि क्षेत्रों में मूल्यांकन का क्षेत्र तो आवश्यकताओं के लिए अद्यतन सा है।

मान्यता की दृष्टि में अधिकांश शोध काय विशाल छात्र-छात्राया पर किए गए हैं। मगर पूर्व प्राथमिक व प्राथमिक स्तर के बच्चा पर मूल्यांकन शोध काय भी उतने ही आवश्यक है। यह ठीक है कि छात्र बच्चा के लिए तयार परम्परागत/जाच पत्र नहीं मिलते या कम मिलते हैं मगर आवश्यकतानुसार उनका निमाण किया जाना चाहिए।

उपकरणों की दृष्टि में यह मानना चाहिए कि भारतीय स्थितियों में निम्न उपकरण ही सही निष्पक्ष दे पान में सहायक होते हैं। विन्ची घानावरण में विकसित परीक्षण का प्रयोग भ्रात निष्पक्ष दे सकना है। यदि कुछ न हो सके तो उनका भारतीयकरण तो किया ही जाना चाहिए। इस तरह प्रयोग करने में निश्चय क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों का सही उपकरण प्राप्त हो सके।

इन अनुसंधानों में प्रयोग विधि का कम स्थान मिला है जबकि निष्पक्ष प्राप्त करने की दृष्टि में सबसे अधिक बघना व विश्वमनीयता प्रयोग में ही मिलती है।

छात्र/अध्यापक की अभिवृत्तियों का मापन शैक्षिक विकास में सन्तुष्टिजनक है पर एक-दो विषयों में ही समा करने से प्रयोजन मिटने लगा हो सकता है। इसी तरह एक प्रायः जगह के छात्रों की अभिवृत्ति जानने से राज्य-स्तर पर विभागात्मक प्रयोग की शक्ति नहीं बन सकती। यदि इतिहास विषय में लड़कों की अभिवृत्ति उठाने का अपेक्षा अधिक सकारात्मक पाई गई लड़कियों की आपसी तुलना में नवा बर्ग का संश्लेषण में अधिक सकारात्मकता प्रदर्शित हुई तो तब सम्बन्धित परिपूरक अनुसंधान होना चाहिए व मगर समा कही हुआ नहीं।

उसी तरह यदि सरकारी विद्यालयों व विद्यार्थियों की संप्रति प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का तुलना में कम रहा तो शिक्षा विभाग में अध्यापकों के चूाव उनके व्यावसायिक विकास उनके अभिवृत्त्यात्मक परिवर्तन उनके व्यापारिक गतिविधियों पर भी अनुपूरक या परिपूरक अध्ययन की आवश्यकता थी। यदि वह हो तो उन्हें इनसे सम्बद्ध करने की दृष्टि में आवश्यकता भी है और उनके आधार पर प्रणाली में सुधार करने की उद्यमता की भी उत्पत्ति है।

तथापि एक सराहनीय प्रवृत्ति यह उभरती है कि इस अनुसंधानों में कुछ तो भारतीय वातावरण में निम्न परीक्षणों का आधुनिक प्रमाणिकरण करने का प्रयास हुआ है कुछ विन्ची परीक्षणों का। परम्परागत मूल्यों का भारतीयकरण करके भारतीय परिवर्तन में उनके प्रमाणीकरण करने का प्रयास हुआ है और कुछ स्वतंत्र परीक्षण/परम्परागत मूल्यों/संप्रति परम्परा बनाने के लिए प्रमाणिकरण का प्रयास किया गया है। इस प्रयत्न में निम्नलिखित नवनिर्मित पद्धतियों का उपयोग करना आवश्यक

(1954, 72, 74), भाषागत अशुद्धियाँ निदानात्मक परख (1954, 66, 69, 72, 73, 74) व्यक्तित्व समायोजन तालिका (1963, 68, 73), कुष्ठा प्रतिश्रिया परख (1971, 74), मूल्य निर्धारण सम्बन्धी परख (1971, 72, 74) अध्यापक-व्यवहार तालिका (1973), अध्ययन आदत तालिका (1968), शुद्धि खेल किट (1971) व बालों की समायोजन तालिका का भारतीयकरण (1962)। इनके उपयोग एवं परीक्षण का दायित्व उन सभी का होना चाहिए जो शिक्षा काय से सम्बन्धित हैं और उसके समुन्नयन की भावना रखते हैं।

सन्दर्भित अनुसंधान

अग्रवान प्रार एन	Reading Tests and Diagnosis of Reading Difficulties of Children of Class VI of Nearly 11+
	M Ed Raj Uni, 1957
अमृतवीर	To Develop Battery of Tests and Procedure for the Educational Guidance of the Pupils in Different Streams of the Higher Secondary Schools
	Ph D (Edu) Raj Uni 1970
अनन्तकुमारी	कक्षा प्रथम, द्वितीय व तृतीय की हिन्दी में होने वाली वतनी सम्बन्धी अशुद्धियों की जात करने के लिए निदानात्मक परीक्षण का निर्माण,
	एम एड राज वि वि, 1973
उपाध्याय राधेश्याम	पाठवीं कक्षा में सामा य विज्ञान की पढाई का मूल्यांकन एक अध्ययन,
	राज्य शिक्षा सस्थान, उदयपुर 1965
अचल वानडुण्ड	Construction of an Achievement Test in Social Studies for Class IX
	M Ed Raj Uni 1956
अनुर रामनाथ	Students Attitude towards School and School Work Development of a Scale
	M Ed Raj Uni 1967
अर्णवित, चान्मल	A Critical Evaluation of Out of class Activities in Secondary and Higher Secondary Schools of Udaipur City
	M Ed Udaipur Uni 1971
अपालसिंह	Construction of an Achievement Test in Mathematics for Class VIII
	M Ed Raj Uni 1961
वीशिव आचारप्रकाश	Construction of Personality Adjustment Inventory (Students Form)
	M Ed Raj Uni 1963
सहा, दुर्गाप्रसाद	Construction of an Attitude Scale on Likert Technique
	M Ed Raj Uni 1971

अधिक मूल्यांकन प्राप्त करके जान अप्रतिष्ठ है। मूल प्रायोगिक विभाग आदि क्षेत्रों में मूल्यांकन का क्षेत्र तो गहनतापूर्वक व लिंग अन्वेषण मा है।

प्राप्त का दृष्टि में अधिकांश प्राथमिक विभाग छात्र-छात्राओं पर रित मा है। मगर पूर्व प्राथमिक व प्राथमिक स्तर के बच्चा पर मूल्यांकन प्राप्त करके भी अनंत है आवश्यक है। यह ठीक है कि छात्र बच्चा के लिए तयार परम्परागत/जीव पत्र नहीं मिलते या कम मिलते हैं मगर आवश्यकताओं के अनुसार विभाग दिया जाना चाहिए।

उपकरणों की दृष्टि में यह मानना चाहिए कि भारतीय स्थिति में निम्न उपकरण है सभी निष्पक्ष द पान में सहायक हैं। विद्वानों के द्वारा म निम्न परीक्षणों का प्रयोग प्राप्त निष्पक्ष द मकता है। यदि कुछ न है मक तो उनका भारनायकता का किया ही जाना चाहिए। इस तरह प्रयोग करने में शिक्षा क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों का सही उपकरण प्राप्त है मकेंगे।

इन अनुसंधानों में प्रयोग विधि का कम स्थान मिला है, जहाँ निष्पक्ष प्राप्त करने का दृष्टि में मक अधिक बचना व निष्पक्षनीयता प्रयोग में भी जानी है।

छात्र/अध्यापकों की अभिवृत्तियों का मापन प्रायोगिक विभाग में मकता प्राप्त है पर एक-एक विषय में मा मक करने में प्रयत्न मित नहीं मा करता। मक तरह प्रायोगिक जगत् के छात्रों का अभिवृत्ति जान उन में प्रायोगिक पर किसी मुद्दे का जिज्ञा नहीं बन मकती। यदि इतिहास विषय में मकता का अभिवृत्ति मकता का अपेक्षा अधिक मकारात्मक पाद गद नदकिया की आपसी तुलना में मकता पक्षा का नदकिया में अधिक मकारात्मकता प्रदर्शित हुई, तो मक मक विधन परिपूर्ण अनुसंधान जान चाहिए, मगर मक नहीं हुआ न।

उमा तरह यदि मकरागी विद्यालयों व विद्यालयों का मकता प्रायोगिक विद्यालयों व विद्यालयों का तुलना में मक रता तो शिक्षा विभाग में अध्यापकों के धुताक उनके व्यावसायिक विकास, उनके अभिवृत्तात्मक परिवर्तन उनके मकतातरण आदि पर भी अनुपूर्व या परिपूर्ण अध्ययन की आवश्यकता मा। यदि मक रता तो उह मक मक करके वहीं दक्षता की आवश्यकता भी म और उन प्रायोगिक पर प्रयोगों में मुद्दे करने की उत्तमता की भी जगता है।

तथापि एक मरान्नाय प्रवृत्ति यह उभरती है कि मक अनुसंधानों में कुछ तो भारनाय वातावरण में निम्न परीक्षणों का आर्थिक प्रमाणाकरण करने का प्रयोग हुआ है कुछ विद्वानों परीक्षणों का। परम्परागत मकता का भारनायकरण करके भारनाय परिवर्तन में उनके प्रमाणाकरण करने का प्रयोग हुआ है और कुछ स्तर पर परीक्षण/परम्परा मकता/मकता पर मकता उनके प्रमाणाकरण का प्रयोग किया गया है। इस प्रयोग में निम्नलिखित नवनिम्न उपकरणों का मकता करना मकता मकता योग्य अभिवृत्ति मापना (1967, 69, 70 71) बुद्धि परीक्षा (1954 57 68 72) मकता परीक्षा (1953 54 56 57 61 62 64 65 66 72) अभिवृत्ति अभिवृत्ति परीक्षा परम्परा मकता (1970) निम्नलिखित परीक्षा (वाचन)

(1954, 72, 74), भाषागत अशुद्धियाँ निदानात्मक परम (1954 66 69, 72, 73 74) व्यक्तित्व समायोजन तालिका (1963, 68 73), कुष्ठ प्रतिरक्षा परम (1971, 74), मूल्य निर्धारण सम्बन्धी परम (1971, 72, 74), अध्यापक-व्यवहार तालिका (1973), अध्ययन आदत तालिका (1968) गुडिया खेल किट (1971) व बल्स की समायोजन तालिका का भारतीयकरण (1962)। इनके उपयोग एवं परीक्षण का दायित्व उन सभी का होना चाहिए जो शिक्षा काय से सम्बन्धित हैं और उसका समुपयन की भावना रखते हैं।

सन्दर्भार्थित अनुसंधान

- अग्रवाल, आर एन Reading Tests and Diagnosis of Reading Difficulties of Children of Class VI of Nearly 11+
MEd Raj Uni 1957
- अमृतकौर To Develop Battery of Tests and Procedure for the Educational Guidance of the Pupils in Different Streams of the Higher Secondary Schools
Ph D (Edu) Raj Uni 1970
- उपदेशकुमारी कक्षा प्रथम, द्वितीय व तृतीय की हिन्दी में होने वाली धतनी सम्बन्धी अशुद्धियों को ज्ञात करने के लिए निम्न नामक परीक्षण का निर्माण,
एम एड, राज वि वि, 1973
- उपाध्याय, राधेश्याम पाठ्यपुस्तक में सामान्य विज्ञान की पढ़ाई का मूल्यांकन एवं अध्ययन,
राज्य शिक्षा सस्थान उदयपुर 1965
- बचर वालकृष्ण Construction of an Achievement Test in Social Studies for Class IX
MEd Raj Uni 1956
- बनूर, रामनाथ Students Attitude towards School and School Work Development of a Scale
MEd Raj Uni 1967
- बर्णाड चामल A Critical Evaluation of Out of class Activities in Secondary and Higher Secondary Schools of Udaipur City
MEd Udaipur Uni 1971
- कृपालसिंह Construction of an Achievement Test in Mathematics for Class VIII
MEd Raj Uni 1961
- कौशिक आचारप्रकाश Construction of Personality Adjustment Inventory (Students Form)
MEd Raj Uni 1963
- खत्री, दुगाप्रसाद Construction of an Attitude Scale on Likert Technique
MEd Raj Uni 1971

गुप्ता कवच	A Study into the Relationship of External Examination Marks and Internal Assessment of XI Class Students of Jaipur and Ajmer Districts of Rajasthan MEd Raj Uni 1963
गुप्ता गतिप्रभा	A Study into the Personality Traits Intelligence Socio Economic Status and Interests of the Socially Accepted and Rejected Children of VIII Class MEd Raj Uni 1973
गुप्ता मयराज	Causes of Failures in Mathematics MEd Paj Uni 1972
वर्मा उषा	Study of Self Concept of Tenth Class Students in relation with their Intelligence Socio Economic Status and Adjustment MEd Raj Uni 1972
वर्मा जगन्नाथ	Problem of Assessment in Basic Education MEd Paj Uni 1955
जन गणतन्त्र	विद्यार्थन बुद्धिमानता शास्त्र एवं एक मर्यादी उच्च प्राथमिकशास्त्र का मूल्या मम मम मयपुर वि वि 1974
जन गुप्तानन्दमारी	A Study of the Non-Scholastic Factors Responsible for High and Low Scholastic Achievement of Girls Studying in Higher Secondary Schools at Banasthali and Jaipur MEd Paj Uni 1966
जाना जा क	पौर्वी कक्षा में सामाजिक ज्ञान का पढ़ाई का मूल्यांकन एक अध्ययन गज शिक्षा मन्त्रालय मयपुर 1965
जयच माताशम	A Comparative Study of the Over Chosen and Under Chosen X Class Students MEd Raj Uni 1968
जय नवराज	Relationship between the Socio Economic Status of Parents and the Intelligence of their Wards MEd Jaipur Uni 1963
नारणेश	Construction of an Achievement Test in Chemistry for Class IX MEd Raj Uni 1966
पाराज मातामहान	An Investigation into the Creative Thinking of Students at Different Age levels and the Relationship between Creative Thinking and Other Related Factors MEd Paj Uni 1966
वदगज	Construction of an Achievement Test in Hindi for class VIII MEd Paj Uni 1974

बाबलोवाल, केशरीमल	An Appraisal of the Comprehensive Internal Assessment Scheme Recently Introduced in the Secondary Schools of Rajasthan M Ed Raj Uni 1968
बागची, नमिता	Diagnosis of Language Errors in English for VIII and Exploration of Probable Causes M Ed Raj Uni 1973
भादू हजारीलाल	Evaluation of Pupils Attainment in Hindi (Class VIII) through Dr Bloom's Technique M Ed Raj Uni 1965
भागवत, रामशरण	Construction of an Achievement Test in General Science for Class VIII M Ed Raj Uni 1956
भारतीय, सुधा	A Comparative Study of the Attitudes of Class XI Domestic Science and Non Domestic Science Girl Students towards Domestic Life M Ed Raj Uni 1974
भारद्वाज, पुरुषोत्तम	Prognostic Values of VIII Class Marks M Ed Raj Uni 1965
भक्तवतलाल	Construction of an Achievement Test in Mathematics for Class VIII M Ed Raj Uni 1961
भायूर सुशीलारानी	Diagnosis of Language Errors in English in Class VI M Ed Raj Uni 1972
मेहता, ऋषियल्लभ	A Study of the Students Failures at the High School Stage M Ed Raj Uni 1955
मोटवानी सुशीला नानकराम	सिन्धी विद्यार्थियों द्वारा हिंदी सीखने में की गई त्रुटियों का अनुसंधान एम एड, राज वि वि, 1968
मादव दिलीपसिंह	An Experimental Study of the Effect of Fatigue on Bilateral Transfer M Ed Raj Uni 1972
मादव राधेश्याम	राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद की भौतिक विज्ञान सम्बंधी माध्यमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास प्रश्नों तथा परीक्षा प्रश्नों की उद्देश्यनिष्ठता मूलक विश्लेषण एवं अनुसंधान एम एड राज वि वि, 1974
रघुनाथप्रसाद	Construction of an Achievement Test in Geography for Class VIII M Ed Raj Uni 1957
राठौ मातीसिंह	Disabilities in Hindi Spelling M Ed Raj Uni 1966

राजस्थान में शिक्षा	An Investigation into Factors Responsible for High Percentage of Failures in High School Examination of U.P. Board M Ed Raj Uni 1974
राजस्थान में शिक्षा	A Study of the Development of Vocabulary of Children of Age Group 7 to 8 Ph D (Ed) Raj Uni 1974
राजस्थान में शिक्षा	Indian Adaptation of Bliss Adjustment Inventory (Student Form) for High School Students M Ed Raj Uni 1974
राजस्थान में शिक्षा	Construction of an Achievement Test in History M Ed Raj Uni 1974
राजस्थान में शिक्षा	Construction of an Achievement Test in Algebra and Geometry for Class VIII M Ed Raj Uni 1974
राजस्थान में शिक्षा	A Study of Students Common Errors with special reference to the Efficiency of the Objective based Examination System in Compulsory English Higher Secondary Examination 1972-1974
राजस्थान में शिक्षा	A Study of Students Common Errors with special reference to the Efficiency of the Objective based Examination System in General Science Secondary Examination 1972-1974
राजस्थान में शिक्षा	A Study of Students Common Errors with special reference to the Efficiency of the Objective based Examination System in Elementary Mathematics Secondary Examination 1972-1974
राजस्थान में शिक्षा	A Study of Students Common Errors with special reference to the Efficiency of the Objective based Examination System in Compulsory English Secondary Examination 1972-1974
राजस्थान में शिक्षा	Evaluation of Three Hours School An Experiment 1967
राजस्थान में शिक्षा	प्रश्न वाटिकाओं के माध्यम से शिक्षा का सुधार 1972
राजस्थान में शिक्षा	Construction of a Scale of Altruistic Attitude M Ed Raj Uni 1973
राजस्थान में शिक्षा	Construction of an Achievement Test in Social Studies for Class VIII Students M Ed Raj Uni 1972
राजस्थान में शिक्षा	विद्यार्थी बालक-बालिकाओं में कक्षा के पर्यावरण प्रति क्रियाओं के विकास के माध्यम से शिक्षा का सुधार 1971

- शर्मा, कन्हैयालाल Doll play as a Technique of Evaluating Attitude of Children towards Home
M Ed Udaipur Uni 1971
- शर्मा, छनमोहन Reactions to Frustration among Adolescents in the School Situations
Ph D (Edu) Raj Uni 1973
- शर्मा, जयप्रकाश Common Errors in English at the High School Stage
M Ed Raj Uni 1954
- शर्मा, नरदेव Measurement of Understanding in Geography,
M Ed Raj Uni 1962
- शर्मा, वृजकिशोर Developing a Science Teacher Behaviour Inventory
M Ed Raj Uni 1973
- शर्मा रविकान्त Draw a Man Test as Predictor of Intelligence of Children
M Ed Raj Uni 1972
- शर्मा, रामनिवास Diagnosis of Errors in Hindi Class IX
M Ed Raj Uni 1969
- शर्मा, रामप्रसाद Construction of an Achievement Test in Social Studies for Class V
M Ed Raj Uni 1972
- शर्मा रामानन्द छात्रों की सस्कृत विषय के प्रति अभिवृत्ति (लिखित पद्धति से मापनी रचना)
एम एड, राज वि वि 1969
- शर्मा लक्ष्मीनारायण Construction of a Verbal Intelligence Test for Eleven plus
M Ed Raj Uni 1954
- शाह श्रीकृष्ण Standardization of Alexander's Pass Along Test for Eleven plus
M Ed Raj Uni 1957
- शेखावत सवाईसिंह माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा प्रवर्तित तथा तदनुसृत राजस्थान के माध्यमिक विद्यालयों में क्रिया वत व्यापक आंतरिक मूल्यांकन योजना के प्रति विभिन्न विद्यालयीय घटकों की अभिवृत्ति का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि 1973
- शतानसिंह उदयपुर नगर के राज० उ० मा० विद्यालयों में आंतरिक मूल्यांकन
एम एड, उदयपुर वि वि, 1974
- सरदारसिंह Construction of an Achievement Test in Agriculture for Class VIII
M Ed Raj Uni 1957
- सारस्वत नृत्याणमल भीलवाड़ा जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के कद व यजन सम्बन्धी मानकीकरण हेतु अध्ययन
एम एड राज वि वि, 1971

- माहसन्धान दो शैक्षिक मन्त्रालयों में विद्याचिन्ता व आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन
एम एड उदयपुर वि वि, 1971
- मिथन प्रमत्तानन्द Construction of an Achievement Test in General Science for Students of Class VIII
M Ed Raj Uni 1964
- मिश्राकुमार A Critical Study of a Group Intelligence Test in Hindi by Dr Prayag Mehta
M Ed Udaipur Uni 1968
- मुद्गला, मनीष Development of Study Habits Inventory for College Students
M Ed Raj Uni 1968
- मूख रमणान विद्याचिन्ता का इतिहास विषयक अभिवृत्ति एक सर्वेक्षण,
एम एड राज वि वि 1970
- मसुणन मन डण्डू An Investigation into the Attitudes of Teachers towards the Objective based Questions Introduced by the Board of Secondary Education Rajasthan Ajmer
M Ed Udaipur Uni 1967
- मदाराज Causes of High School Failures
M Ed Raj Uni 1961
- माशिकारी उमरान विचार जनो में व्याप्त स्नातु शैक्षिक का एक अध्ययन,
एम एड राज वि वि 1971
- मिर्मलमिह Relationship between the Marks of Sections A and B Obtained at the Board's Examination
M Ed Raj Uni 1972
- मिवाटा विष्णुदत्त Construction of an Achievement Test in Arithmetic for Class VIII
M Ed Raj Uni 1953



शैक्षिक निर्देशन

□ डा अरविन्द जी फाटक

□ वामुदेव जी शर्मा

वैसे तो मानव का आदिकाल से निर्देशन की आवश्यकता रही है और वह अपने बच्चा से अथवा मित्रों से अनौपचारिक रूप से निर्देशन प्राप्त करता रहा है किन्तु शिक्षा में निर्देशन सेवाओं का सुव्यवस्थित प्रारम्भ बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में अमेरिका में हुआ था। इसकी आवश्यकता औद्योगिक क्रांति के बाद विशेष अनुभव की जान लगी है। भारत में तो इस विचारधारा का जन्म और भी बाद में हुआ। बम्बई नगर में पारसा पचायत नामक संस्था द्वारा निर्देशन के क्षेत्र में सर्वप्रथम काम प्रारम्भ किया गया था। यह एक विचित्र सी बात है कि शिक्षा के इस महत्वपूर्ण पक्ष के जन्मदाता शिक्षाजगत से बाहर के व्यक्ति थे। यह एक संयोग का विषय है कि भारत में अमेरिका जैसा ही देश में निर्देशन सेवाओं का प्रारम्भ व्यावसायिक निर्देशन में हुआ था और इस विचारधारा के जन्म के बाद कुछ वर्षों तक निर्देशन का अर्थ 'व्यावसायिक निर्देशन' से ही लिया जाता रहा था। धीरे-धीरे निर्देशन के संप्रत्यय में परिवर्तन आया व इसको अधिक व्यापक रूप में लिया जाने लगा। इसके अंतर्गत आज मानव जीवन से संबंधित सभी आयामों की समस्याओं का समावेश किया जाता है।

आज निर्देशन के विभिन्न रूप हमारे सामने हैं यथा—'व्यावसायिक निर्देशन', शैक्षिक निर्देशन, व्यक्तिगत निर्देशन आदि। आज यह माना जाने लगा है कि निर्देशन शिक्षा का अविभाज्य अंग है और यही कारण है कि विभिन्न राज्यों में निर्देशन ब्यूरो स्थापित किए गए हैं। राजस्थान में निर्देशन ब्यूरो की स्थापना सन् 1958 ई० में हुई। इसी के साथ निर्देशन की विचारधारा का प्रचार व प्रसार होने लगा व इस क्षेत्र में गतिविधियाँ बढ़ने लगीं।

इस क्षेत्र में अनुसंधान की प्रचुरता को कल्पना इसी से की जा सकती है कि हम क्षेत्र के अनुसंधान नामों को प्रवृत्ति निरूपण हेतु दो भागों में बाँटना पड़े—
(1) शैक्षिक निर्देशन तथा (2) व्यावसायिक निर्देशन। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उपयुक्त होगा कि शैक्षिक निर्देशन के अन्तर्गत यहाँ छात्रों की व्यक्तिगत समस्याओं का भी समावेश किया गया है।

गति निश्चयन व अनुसंधान अनुसंधानों का यह वर्गीकरण किया जा सकता है कि प्रत्येक प्रकार का अनुसंधान - छात्रों की समस्याओं, छात्रों की अभिरूचियों, छात्रों का अध्ययन करने में गति, विद्यार्थियों के प्रतिभावान एवं मृदुल छात्र छात्रों का निश्चयन करना आसानी से निश्चयन-समाधान का प्रभावित करने का अध्ययन करने का समीक्षा तथा विचार।

सबसे पहले यह न्याय करना है कि अनुसंधान-समाधान का ध्यान छात्रों की समस्याओं, छात्रों का अध्ययन करने का ध्यान करना है निश्चयन-समाधान का प्रभावित करने का अध्ययन करने का ध्यान करना है। विचार का अर्थ है कि छात्रों का अध्ययन करने का ध्यान करना है। प्रत्येक प्रकार का अनुसंधान - छात्रों की समस्याओं, छात्रों की अभिरूचियों, छात्रों का अध्ययन करने में गति, विद्यार्थियों के प्रतिभावान एवं मृदुल छात्र छात्रों का निश्चयन करना आसानी से निश्चयन-समाधान का प्रभावित करने का अध्ययन करने का समीक्षा तथा विचार।

छात्रों का अध्ययन करने का ध्यान करना है कि छात्रों का अध्ययन करने का ध्यान करना है। प्रत्येक प्रकार का अनुसंधान - छात्रों की समस्याओं, छात्रों की अभिरूचियों, छात्रों का अध्ययन करने में गति, विद्यार्थियों के प्रतिभावान एवं मृदुल छात्र छात्रों का निश्चयन करना आसानी से निश्चयन-समाधान का प्रभावित करने का अध्ययन करने का समीक्षा तथा विचार।

कॉलेज के छात्रों के अध्ययन पर खामोश (1973) ने यह मातृम किया कि छात्रों की समस्याओं, छात्रों का अध्ययन करने का ध्यान करना है। प्रत्येक प्रकार का अनुसंधान - छात्रों की समस्याओं, छात्रों की अभिरूचियों, छात्रों का अध्ययन करने में गति, विद्यार्थियों के प्रतिभावान एवं मृदुल छात्र छात्रों का निश्चयन करना आसानी से निश्चयन-समाधान का प्रभावित करने का अध्ययन करने का समीक्षा तथा विचार।

वी एस शर्मा (1966) न टी डी भी प्रथम वष के छात्रा की समस्याओं के बारे में मात्र म किया कि व स्ववेदित होत ह आर्थिक समस्याओं में पीडित होत हैं, भविष्य के बारे में अनिश्चितता उनकी एक प्रमुख समस्या है तथा दूसर साधिया स मुख्य सवधा का अभाव उनकी चिंता का विषय बना रहता है।

अनक अनुसधानकर्त्ताओं के अनुसधाना से यह तथ्य सामने आया है कि बुद्धिलब्धि व समायोजन में घनात्मक सहसंबध है। उच्च बुद्धिलब्धि वाले छात्रा के समायोजन स्तर के अधिक अच्छे होने की संभावना है। इसी प्रकार शाला विषय में उपलब्धि-स्तर व समायोजन का भी घनात्मक संबंध होता है यह निष्कर्ष जन (1969), भागिया (1970) तथा आय (1970) के अनुसधाना से निकलता है। इसके अतिरिक्त कुछ अनुसधाना में 'आर्थिक-सामाजिक' स्तर, अध्ययन आदत्त, शाला में उपस्थिति, शारीरिक स्वास्थ्य, मौलिक चिंतन आदि कारका के साथ भी समजन का घनात्मक सहसंबध देला गया है। इन अनुसधाना की सरथा यद्यपि बहुत अधिक नहीं है फिर भी एक निर्देशन कायक्ता के लिए बच्चों के समजन में सहायता हेतु उपयुक्त निष्कर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं। समजन में समन्याओं के कारण का पता लग जाए तो वह छात्रा को कुसमायोजित होने से बचा सकता है। पारीक (1970) का निष्कर्ष है कि ग्रहम तथा परम ग्रहम की सुरक्षा, आवश्यकताओं की पूर्ति तथा आक्रमकता का प्रभाव अनुकूलन पर पडता है। सिसोदिया (1967) ने सामाजिक दृष्टि से परित्यक्त बच्चा के सम्बन्ध में यह पाया कि वे अपने माता पिता के व्यवहार से असंतुष्ट थे। उनमें सवेगात्मक नियन्त्रण की कमी थी साथ ही उनमें आत्मविश्वास की कमी व जिम्मेदारी बहन करने में जी चुराने की प्रवृत्ति पाई गई।

शाला की एक प्रमुख समस्या पलायन की है। शालाओं से अक्सर भाग जान वाले बालक अपने शिक्षका माता पिता तथा शाला प्रशासकों के लिए एक सिरदद बन जाते हैं। निर्देशन कायक्ता का एक प्रमुख काम इन बालकों को शाला में समायोजित होने में सहायता करने का है। उसके लिए यह जानना जरूरी है कि पलायन की समस्या के कारण क्या हैं। बेतनस्वरूप (1970) ने यह माधूम किया कि पलायनवादिता का बुद्धिलब्धि से कोई संबंध नहीं है किन्तु कुछ सीमा तक आर्थिक एवं सामाजिक स्तर से यह समस्या जुड़ी हुई है। किन्तु सवेगा (1966) ने शक्षिक पिछड़ेपन का पलायन शान्ति से घनात्मक सह-संबध बताया है। उनके निष्कर्षों के अनुसार पलायन बर्ति वाले छात्रा में से बहुत ही कम प्रतिशत ऐसे छात्रा थे था जो कि उच्च बुद्धिलब्धि के थे 86.5 प्रतिशत तो निम्न शक्षिक उपलब्धि वाले ही थे। बलवीरसिंह (1959) के अनुसधान से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि पलायन करने वाले बालका में से 80 प्रतिशत के माता पिता अशिक्षित थे। पलायनवादिता के कारण के विश्लेषण के सम्भ में ग्पुवीरसिंह (1958) ने पाया कि व्यावसायिक निर्णोजन की कमी माता पिता की निरक्षरता पिता का कुसमजन अवांछित मित्र अत्यधिक काम, पिता द्वारा व्यक्तिगत ध्यान का अभाव सेना में अत्यधिक (अतिरिक्त कर्च) भाग लेना आदि पलायन के कारण थे। सवेगा (1966) के अनुसार इस समस्या के प्रमुख कारण हैं शाला द्वारा गेन छात्रा

की जांच न करना प्रयत्न बालाग ॥ उपस्थिति न लेना पाठ्य म पठान ज्ञान वान विषय म अनिश्चित एवं अयशस्वि गन्ताव । बाला व अश्विचारक बालावरण का भी इस समस्या व निरा उत्तरदाया पाया गया ।

छात्रों की अभिरूचियाँ

छात्रा की समग्रत समस्याओं व माय-माय छात्रा की अभिरूचियाँ पर ना अनुसंधान किए गए । उन अनुसंधानों का तीन प्रमुख भागा म बाग जा सकता है - वाचन अभिरूचियाँ का अध्ययन पाठ्योत्तर विज्ञाया म संबंधित अभिरूचियाँ का अध्ययन एवं छात्रा का सामान्य अभिरूचियाँ का अध्ययन । अश्विचार अनुसंधानों म यत् नध्य उभरता है कि विज्ञा व बालक व ज्ञानिचारों वाचन म काफी रुचि लेता है । बालक श्रीरामन्व (1959) न यह पाया कि छात्रा का रुचि वाचन म कम होता है । बाडू (1963) व अनुसंधान म यत् राचक एवं आरचयजनक नध्य ज्ञानिन छाया कि उनक पाठ्य म म लगभग एक तिहाइ अध्यापका म वाचन व प्रति रुचि का अभाव था । 30 प्रतिशत अध्यापका न एक वर्ष म बाडू भा व्यावसायिक पत्रिका नहीं पढ़ा था तथा 20 प्रतिशत अध्यापकों न अवन विषय म संबंधित बाडू भी पुस्तक नहीं पढ़ी थी ।

वाचन न सम्बंधित दूसरा महत्वपूर्ण नध्य यत् सामन छात्रा है कि छात्र तथा छात्राया की वाचन अभिरूचियाँ भिन्न पानी है । छात्र बालनिक भावित्य सामाजिक उपयाम एतिहासिक ज्ञानियाँ तथा बीर रम का बलितामें अधिक पसन्द करत है जबकि छात्राए न्यु ज्ञानियाँ नाटक तथा जामूसी उपयाम अधिक पसन्द करत है । अधिक बुद्धिनीय बाल तथा उच्च सामाजिक शक्ति स्तर बाल परिवारा स छात्र बाल बालक वाचन म अधिक रुचि लेते है । किन्तु यत् भी पाया गया कि पाठ्याया म तथा घर पर बालका का वाचन सम्बधा मायमान नहीं भितना । कुछ अनुसंधानों म यत् स्पष्ट हुआ कि पाठ्याया में वाचनालय का अभाव और समय-मागिणी म वाचनालय बाला का अभाव वाचन अभिरूचियाँ व प्रामाटन म बाधक सिद्ध पाना है । गन्वाय का बाटून भा वाचन अभिरूचि म बाधक पाया गया ।

पाठ्योत्तर प्रवर्तियों म अभिरूचि व क्षत्र म बारिगा (1959) व अनुसंधान ॥ यत् नध्य निरुता कि छात्र महत्विक विज्ञाया म रुचि नहता उन, उन् भितना तथा मन्ता मगत अश्वि प्रिय पाना है । जामा (1968) व अनुसंधान छात्रा का अभिरूचियाँ म पाठ्यायिक विज्ञा बाला का द्वितीय स्थान प्राप्त है । बलिता का अभाव उन्क छत्र का अश्वि पसन्द करत है । यत् एक निरुच्य बात है कि अश्विचार छात्रा न मन्तु का अन्वयन म बाधक नपा माना ।

जमरकुमार जामा (1970) न छात्र व छात्राया का सामाय रुचियाँ का अध्ययन करक यत् मातृम विज्ञा कि छात्रा का रुचियाँ का वर्गीयता का क्रम पन्ना रहिया मुनना व धार्मिक स्थाना पर जाना है । जबकि छात्राया का रुचियाँ का वर्गीयता क्रम रहिया मुनना पन्ना विज्ञा व ज्ञाना करना स्थाना बनाना घर का बाय करना बनना व धार्मिक स्थाना पर जाना है । ज्ञाना ना समता न गण्ये उपायन म दूबाना पर

बढ़ने में व धूमकण्डूपने में कोई रुचि नहीं बताई। निशोरा की रुचियाँ पर श्रौटिच्य (1969) ने श्रौत्र प्रज्ञाज्ञ डाता है। तदनुसार भारतीय तथा अमेरिकी विश्वर सुन्दर दिग्ने में, अच्यो पोशाक पटिनन में पढ़ने में और अच्ये स्वास्थ्य में रुचि रखते हैं।

छात्रों की अध्ययन आदतें

छात्रों की अध्ययन आदतों में सर्वप्रथम अनुसंधान में मुख्यतः दो प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। एक प्रकार के अनुसंधान तो वे हैं जिनमें अध्ययन आदतों का प्रत्यक्ष चरों में सहस्रबध्द दग्ने का प्रयास किया गया है तथा दूसरे प्रकार के अध्ययनों में दो समूहों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक संप्राप्ति में धनात्मक सहस्रबध्द होता है। टागरा (1960) तथा मास्कोजा (1970) ने अध्ययन से अध्ययन आदतों का बुद्धिलब्धि के साथ धनात्मक सहस्र पाया गया। दामगुप्ता (1966) ने भी अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ धनात्मक वितु साधक सहस्रबध्द बताया है। राव (1966) ने निहालसिंह शर्मा (1967) ने छात्रों के शैक्षिक-सामाजिक स्तर एवं अध्ययन आदतों में नगण्य सम्बन्ध की स्थिति पात की। वारनॉक (1960) ने नमरी स्कूल के बच्चों के बुद्धिस्तर का सर्वेक्षण करके यह पाया कि 3 वर्ष की आयु के बालक शैक्षिक परीक्षणों की अपेक्षा निष्पादन परीक्षणों (Performance Tests) में अच्छे अंक प्राप्त करते हैं। इस आयु से पूर्व दोनों ही परीक्षणों के आधार पर अंकों में कोई अंतर नहीं पाया गया। छात्राध्या की अपेक्षा छात्रों का स्तर प्रत्येक परीक्षण में थोड़ा-सा ऊँचा पाया गया। शैक्षिक सामाजिक स्तर बुद्धिलब्धि को प्रभावित नहीं करता। निहालसिंह शर्मा (1967) ने अध्ययन से यह पता चलता है कि छात्र एवं छात्राध्या की अध्ययन आदतों में बहुत अंतर होता है। अध्ययन में छात्राध्या को छात्रों से अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। बोधरा (1970) ने यह पाया कि निजी संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्र तथा छात्राध्या की अध्ययन आदतें राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र तथा छात्राध्या से अच्छी होती थी। शर्मा (1969) ने अनुसार विज्ञान के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें वाणिज्य एवं कला के छात्रों से अच्छी होती हैं तथा वाणिज्य के छात्र इस क्षेत्र में बला के छात्रों से अच्छे होते हैं। राव (1966) के शोध से निम्न एवं उच्च शैक्षिक संप्राप्ति वाले बालकों की अध्ययन आदतों में बहुत अंतर पाया गया। उच्च संप्राप्ति के छात्र छात्राध्या में परस्पर साधक अंतर नहीं पाया गया।

शैक्षिक पिछड़ापन

छात्रों के पिछड़ेपन पर किए गए अनुसंधान निर्देशन कार्यक्रमों के लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं। इस क्षेत्र में जो अनुसंधान हुए हैं उनमें से अधिकांश में पिछड़ेपन के कारणों का पता लगाने का प्रयास किया गया है। इस लक्ष्य हेतु अधिकांश अनुसंधानकर्ताओं ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। माधुर (1971) ने पिछड़ेपन के निम्नलिखित कारण मान्य किए अत्यधिक अवकाश कक्षाओं में अधिक छात्र संख्या, वांछित पाठ्यक्रम प्रयोगशालाओं का व सहायक

के माथ क्या सबध है यह नान होता है। हरकुट के निष्कर्षों के अनुसार निर्देशन आवश्यकताओं का बुद्धिलब्धि स चाई सज्ज नहीं हाता। शमा के अनुसधान म भी यह सबध नगण्य पाया गया। आर्थिक सामाजिक परिस्थितिया एवं निर्देशन आवश्यकताओं का कोई साथक सहसंबध शमा के अनुसधान से नहीं मिलता, जकि हरकुट के निष्कर्षों से यह पता चलता है कि आर्थिक-सामाजिक स्तर निर्देशन आवश्यकताओं को प्रभावित अवश्य करता है।

निर्देशन सेवाओं की प्रभावशीलता

शर्मा (1965) तथा पुरोहित (1973) न प्रयोगात्मक विधि से निर्देशन काय की प्रभावशीलता देवने का प्रयास किया। शर्मा के अनुसार प्रयोगात्मक समूह म शिक्षा क्रमा एवं व्यवनाया सज्जी जानकारी म बद्धि हुई तथा "यत्किगत एवं सामाजिक समस्याओं म बढी हुई। प्रयोगात्मक एवं नियन्त्रित दाना ही समूहों के सदस्या की अध्ययन आन्ता म सुधार हुआ। पुरोहित के परिणाम भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि उपरोक्त से प्रयोगात्मक समूह को लाभ हुआ।

चयन की कसौटिया

इन अनुसधाना म विनान तथा वृषि विषय के लिए छात्रा का चयन करने की कसौटिया निर्धारित करने के प्रयास भी हुए हैं। बीज (1967) के अनुसार उच्च बुद्धिलब्धि तथा वनानिक रमान वाले बालका का विनान विषय म लिया जाना चाहिए। भल्ला (1963) के अनुसार वृषि विषय म सफरता के लिए केवल बुद्धि ही महत्वपूर्ण घटक नहीं है। इस विषय मे सफरता के लिए छात्रा की अभिरुचि का भी महत्वपूर्ण स्थान हाता है। छात्रा के व्यक्तित्वन समजन का प्रभाव भी इस विषय म सफरता पर पडता है।

विविध

उपयुक्त अध्ययना के अतिरिक्त कुछ ऐम भी अध्ययन शिक्षक निर्देशन के क्षेत्र म हुए हैं जे अलग अलग प्रकार के हैं। चारण (1968) न छात्रा की शक्षिक योजनाओं का अध्ययन करके यह जाना कि केवल 25 प्रतिशत छात्र व्यावसायिक क्षेत्रा म जाना चाहते थे। विनान के अधिकांश छात्र अभियांत्रिकी म जाना चाहते थे। बाफना (1969) न यह देखा कि माताओं के सेवारत हान का प्रभाव उनके बच्चों की आकांक्षाओं तथा शक्षिक उपलब्धि पर पडता है। शिक्षित सेवारत माताओं के बच्चा की आकांक्षाएँ तथा शक्षिक उपलब्धि शिक्षित किंतु नोकरी न करने वाली माताओं के बच्चा स ऊँची पाद गद। मुशी (1955) ने उज्जपुर के छात्रा के स्वास्थ्य का अध्ययन करके यह पाया कि उन छात्रा म कुपोषण की समस्या सामान्य रूप से थी। घर का वातावरण आर्थिक सामाजिक स्तर एवं शाला का वातावरण बच्चा के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालत हैं। गुप्शनपुमार (1958) न निर्देशन हतु व्यक्तित्व मूचनाएँ एवन्त्रित करने के लिए कुछ उपकरणों का निमाण किया जिनम व्यक्तिगत मूचना पत्र अभिरुचि-पत्र एवं अभिभावक मन-नयन प्रमुग हैं।

बालको के लिए विशेष प्रयासा द्वारा छात्रा के समजन का अच्छा बनान म सहायता की जा सकती है । अभिरचिया क्या हैं यह जानना तभी साधन हो सकता ह जबकि शिक्षा के माध्यम से अभिरचिया का विकसित करन का प्रयास किया जाए । शिक्षा का चाहिए कि अध्यापन विद्याला स तथा पाठ्येतर त्रियाला के माध्यम से छात्रा म विभिन्न रचिया का विकास करे । शोध निष्कर्षों म यह उल्लेख मिलता है कि शाला पुस्तकालया की स्थिति सतापजनक नहीं है । अत इस ओर शाला प्रशासका का ध्यान विशेष रूप स जाना चाहिए । कुछ अनुमधाना से ये निष्कर्ष सामन आए ह कि शाला म ब घर पर छात्रा की अध्ययन प्रादतो की ओर ध्यान नहीं दिया जाता । अध्ययन आगें शक्षिक सप्राप्ति का प्रभावित करती हैं । अत शिक्षक और अभिभावक इस ओर ध्यान दें ता छात्रा को अधिक लाभ हो सकेगा । गहकाय के भार एवं श्रोचकता को घटान का प्रयास भी जरूरी है । सजनशील बालका न यह मत यक्त किया है कि गहकाय एवं परीक्षाएँ उह चुनौतीपूर्ण नहीं लगती । अत इन बालका की विशेष आवश्यकताओ की ओर भी हमारा ध्यान जाना चाहिए ।

सदभक्ति अनुसधान

अप्रवाल आर क	An Investigation into the Reading Interests in Hindi among Adolescent Boys and Girls of Various Schools of Sardarshahr M Ed Raj Uni 1961
अप्रवाल चंद्रकाश	A Study of the Superstitions of the Students of the Various Age Levels (11 plus to 15 plus) and the Measure of the Relationship between Superstitions Intelligence and Personality Adjustment of 200 Students of Bikaner Division M Ed Raj Uni 1962
अप्रवाल, प्रेमचंद्र	The Impact of Cinema on Adolescents M Ed Raj Uni 1960
अवस्थी, रमेशप्रसाद	सुसमायोजित व कुसमायोजित किशोर छात्रा मे कुण्ठा की प्रतिप्रियाओ का रोजेजवोग तकनीक के आधार पर अध्ययन, एम एड राज वि वि 1973
आशादेवी	An Investigation into Personal Problems of the Adolescent Girls in Relation to their Intelligence and Achievement M Ed Raj Uni 1967
आय, एम क	A Study of Some Causes of Maladjustment of IX Class Students of Jodhpur M Ed Jodhpur Uni 1970
उपशुबुमारी	A Comparative Study of Adjustment Problems and Independent Yielding Nature of High and Low Adolescent Original Thinkers M Ed Raj Uni 1970

आगरा स्पर्शित	An Investigation into the Relationship of Personality Adjustment Problems with Intelligence and Age of the Delinquents of Barstal Jail Hissar M Ed Raj Uni 1960
औरिच्य निरजननाथ	Current Trends of Adolescent Interests A Comparison with the Trends of Adolescent Interests in U S A M Ed Udaipur Uni 1969
बाबू चूरीवाल	Study Habits and Skills in Mathematics M Ed Udaipur Uni 1964
बाबू मकलनलाल	A Study of the Reading Interests of Secondary School Teachers M Ed Raj Uni 1963
बाबरा रामचन्द्र	प्रतिभाशाली छात्रा की पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएँ एम एड उदयपुर वि वि 1970
बीर स्क्यान	Parental Attitude as a Causative Factor of Maladjustment in Children M Ed Raj Uni 1959
बीर खान	A Comparative Study of Behavioural Adjustment of Boys and Girls Secondary Schools M Ed Raj Uni 1972
बीन श्यामाकुमारी	Selection Criteria for Admission of Students to the IX Class Science Course M Ed Udaipur Uni 1967
बीन मूरज	A Study of the Needs of Adolescents M Ed Raj Uni 1969
बुराणा कमलाकुमारी	Social Beliefs of a Group of Teachers and Pupils in a Higher Secondary School M Ed Raj Uni 1960
गुप्ता अशाककुमार	Backwardness in Reading Ability in English M Ed Raj Uni 1959
गुप्ता वृजमान	A Study of Gifted Children in Udaipur M Ed Udaipur Uni 1960
गुप्ता बन्धुका	विशेष विद्यार्थियों में व्याप्त समस्याओं का प्रति सतोष प्रसन्नोप का एक अध्ययन एम एड राज वि वि 1972
गुप्ता निताजीनाथ	Reading Interests of Adolescent Boys and Girls of Class IX of Ajmer City, M Ed Raj Uni 1966
गुमास्ता ब्रजभूषण	Investigation into Personal Problems of Adolescent Boys Studying in the High Schools of Sardarshahr M Ed Raj Uni 1969
चढाव उपा	A Study of Self Concept in Relation to Intelligence Adjustment and Socio Economic Status of the Students of Class X M Ed Raj Uni 1972

- चारण, हरिदान छात्रों की शैक्षणिक एवं व्यावसायिक योजनाएँ कक्षा 9 का एक सर्वेक्षण
एम एड, राज वि वि 1968
- चेतनस्वरूप A Study of the Causes of Truancy in IX Class in Higher Secondary Schools of Jodhpur
M Ed Jodhpur Uni 1970
- चौधरी, चन्द्रकला प्रथम वर्ष स्नातक विद्याविद्या के अनुत्तीर्ण होने के कारणों का अध्ययन
एम एड राज वि वि 1973
- जागीड़, रामलाल जयपुर स्थित विद्यालयों की नवम कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की खेल संबंधी अभिरुचियों का सर्वेक्षण,
एम एड, राज वि वि, 1968
- जुगलविहारीलाल Investigation into the Activities of Brilliant Children
M Ed Raj Uni 1955
- जन, शिवरचंद Causes of Social Non Acceptance and Some of its Correlates
M Ed Raj Uni 1969
- जाशी, विष्णुनाथ निम्न सम्प्राप्ति वाले किशोर एवं किशोरिया की रुचियों का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि 1969
- टण्डन रामलाल A Comparative Study of Guidance Needs of IX Class Arts Commerce and Science Students
M Ed Raj Uni 1969
- टुह्र दुगानाथ Maladjustment among Adolescents
M Ed Raj Uni 1957
- डोगरा द्वारकानाथ Study Habits and Skills of Science Students
M Ed Raj Uni 1960
- दत्त चन्द्रकांत A Study of Reading Interests of XI Class Boys with special reference to its Relation with Intelligence and Socio Economic Status
M Ed Udaipur Uni 1968
- दासगुप्ता, मीरा Backwardness and Study Habits in Girls
M Ed Udaipur Uni 1966
- द्विवेदी, मजु A Study of the Adjustment of Adolescent Students (Male & Female) of Uni sex and Co educational Schools
M Ed Raj Uni 1974
- दीननराम A Study of Social Acceptance of Delta Class Students of Churu District (Rajasthan) in Relation to their Intelligence Achievement Friendship Personality Adjustment Socio Economic Status and Participation in Group Activities
M Ed Raj Uni 1964

- परिवार, पृथ्वामिह Adjustment Difficulties of College Students
M Ed Raj Uni 1963
- पाठे तन्मो विभिन्न कक्षाओं के स्तर पर लड़कें एवं लड़कियों का
आवश्यकताओं का एक अध्ययन,
एम एच राज वि वि 1968
- पानीवान अम्मा पूर्व तहसीलस्थिता तहसीलस्थिता तथा उत्तर तहसीलस्थिता
आयु समूह की छात्राओं की आवश्यकताओं तथा पढ़ने
की रुचियों का अध्ययन,
एम एच, राज वि वि, 1973
- पाराव पानि छात्र एवं छात्राओं के अनुकूलन पर भगवताओं के प्रति
प्रतिबिम्बों का प्रभाव,
एम एच, राज वि वि 1970
- पुगानि, चन्द्रमान An Experimental Evaluation of Counselling
M Ed Udaipur Uni 1973
- पुराहित तन्मानाशयन Sociometric Status Adjustment Problems of
Altruistic Teachers
M Ed Raj Uni 1974
- बल गुरमिन् परिवार के सबसे बड़े एवं सभ्य छोटे बालक के समा
योजन की समस्याएँ,
एम एच, राज वि वि 1973
- बनबीरमिह An Investigation into the Problems of Truancy
among High School Boys of Sardarshahr
M Ed Raj Uni 1959
- रापना, चन्द्रकाश Mothers Employment and their Children's
Aspirations and Achievement
M Ed Udaipur Uni 1969
- वारिगा लाममिह Investigation into the Hobbies and Co curri
cular Activities of Class IX and X Boys in
Churu District in relation to their Educational
Vocational Choice and Guidance
M Ed Raj Uni 1959
- बाथरा मन्नातन सरकारी एवं सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त विद्यालयों
की अल्पम आयु के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का
एक तुलनात्मक अध्ययन,
एम एच राज वि वि 1970
- बागविकर तन्तना A Survey of Intelligence of Nursery School
Children in Udaipur
M Ed Raj Uni 1960
- भन्नागर बा एन Reading Difficulties of Class VI Students in
Hindi
M Ed Udaipur Uni 1966
- भन्ना प्रजातमिह An Investigation to Evolve Selection Criteria
for Admission to the Degree Course in
Agriculture
M Ed Raj Uni 1963

- भवानीसिंह Personality of Least and Most Anxious Adjustment of Students
M Ed Raj Uni 1971
- भागिया, सुपमा A Study of School Adjustment of Pupils in Relation to Achievement Intelligence and Sex
M Ed Jodhpur Uni 1970
- भाटी, घोमप्रकाश A Study of the Family Educational Social and Economic Background of Academically Brilliant Students,
M Ed Raj Uni 1971
- भागव, विमला A Study of Vocational Aspirations of Adolescent Girls of Class X
M Ed Udaipur Uni 1966
- भोजक, बी एन An Investigation into the Problem Tendencies of 576 Children (11+ to 14+) of Bikaner Division and the Measure of Correlation between Problem Tendencies Intelligence Achievement and other Related Factors
M Ed Raj Uni 1961
- महरोत्रा, पुष्पलता छात्र एव छात्राघो की सामान्य एव तक बुद्धि का उनकी आवश्यकताओ से सम्बन्ध,
एम एड राज रि वि 1970
- महेशचन्द्र Sociometric Status and Personal Problems of Adolescents An Exploratory Study
M Ed Raj Uni 1966
- माखीजा, मनाहरलाल भूगोल मे अध्ययन आवर्तों एव कुशलताएँ दशन धेखी पर आधारित एक अध्ययन
एम एड उदयपुर वि वि 1970
- माथुर, चन्द्रप्रकाश Effectiveness of Group Guidance in Developing Study Habits in Tenth Grade Students in English
M Ed Udaipur Uni 1968
- माथुर मिथिलशकुमारी Adjustment Problems of M Ed Students
M Ed Udaipur Uni 1967
- माथुर योगेश्वरदयाल Underachievement Some Case Studies
M Ed Raj Uni 1971
- मीना मुशीला Adjustment of Children from Migrated Families Some Case Studies
M Ed Raj Uni 1974
- मुशी मनमनलाल Students Health in Udaipur
M Ed Raj Uni 1955
- मुशी शांता Reading Interests of Boys and Girls of VIII Class in Udaipur Schools
M Ed Raj Uni 1958
- मोहनसिंह Adjustment Problems of College Students
M Ed Raj Uni 1969

- घान्ति मनोरमिन्
A Study of Intelligence Vocational Preference and Personal Adjustment of School Children Showing High Scholastic Achievement
M Ed Raj Uni 1962
- रघुशर्मा रघु
मधुशर्मा
Causes of Truancy in High Schools
M Ed Raj Uni 1953
- रघुशर्मा प्रमोदशर्मा
विद्यार्थियों के पारिवारिक जीवन में वर्तमान तनाव तथा समाधान के सम्बन्ध का अध्ययन,
एम एड राज वि वि 1969
- रघुशर्मा दृष्टान्तशर्मा
Study of Expressed Manifest and Tested Interests of the D Ita Class Students
M Ed Paj Uni 1959
- राजशर्मा रघुशर्मा
A Study of Harmony and Dis harmony between Parents and their School going Adolescent Daughters
M Ed Udaipur Uni 1965
- राजशर्मा सुमनशर्मा
An Investigation into the Reading Interests of Boys and Girls of Class IX in Jodhpur City Schools
M Ed Jodhpur Uni 1970
- राजशर्मा
Investigation into the Reading Interests of High School Students in Udaipur City Schools
M Ed Paj Uni 1957
- राजशर्मा सुमनशर्मा
A Comparative Study of Study Habits of the High Achievers and Low Achievers in Class VIII
M Ed Raj Uni 1966
- राजशर्मा सुमनशर्मा
A Study of the Personality Problems Adjustment Traits and Vocational Interests of Super Normal School Children
M Ed Paj Uni 1964
- राजशर्मा सुमनशर्मा
शैक्षणिक महाविद्यालयों के छात्रों के कुलमाध्यमन का अध्ययन,
एम एड राज वि वि 1968
- राजशर्मा सुमनशर्मा
Bakward region Arithmetic Diagnostic Study of Children of Class VI
M Ed Paj Uni 1964
- राजशर्मा सुमनशर्मा
Factors of Home Adjustment of School going Adolescents with Different Socio Economic Background
M Ed Paj Uni 1964
- राजशर्मा सुमनशर्मा
A Study of Home Adjustment of Home Science College Girls
M Ed Udaipur Uni 1964

- शर्मा, कृष्णामुरारी माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले सवर्ण एवं अनुसूचित व पिछड़ी जनजातियों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1971
- शर्मा कृष्णशनाथ An Experimental Investigation to Evaluate the Efficiency of Guidance Services in Secondary Schools
M Ed Udaipur Uni 1965
- शर्मा हेमाराम An Investigation into the Guidance Needs of IX Class Students
M Ed Raj Uni 1968
- शर्मा दाऊलाल प्राथमिक क्षेत्र के छात्रों के शहरी विद्यालयों में समायोजन की समस्याएँ
एम एड उदयपुर वि वि 1970
- शर्मा निहालसिंह A Comparative Study of the Study Habits of X Class Boys and Girls
M Ed Raj Uni 1967
- शर्मा परमानंद Personal Adjustment of Degree Class Students
M Ed Raj Uni 1969
- शर्मा, वृजनारायण A Study of Justice Principle of Students at Different Age Levels and the Relationship between the Justice Principle and other Related Factors,
M Ed Raj Uni 1964
- शर्मा, महावीरप्रसाद A Comparative Study of the Study Habits of Tenth Class Science Commerce and Arts Students
M Ed Raj Uni 1969
- शर्मा महेंद्रकुमार अध्यापक प्रेरणा तथा उसका दक्षता से सम्बन्ध,
एम एड, राज वि वि 1974
- शर्मा भातीलाल Front Benchers and Back Benchers An Exploratory Study in Psychometry
M Ed Raj Uni 1966
- शर्मा, रतनलाल Social Maladjustment Its Causes and Remedies
M Ed Udaipur Uni 1964
- शर्मा रमेशचन्द्र The Leisure time Activities of the High School Students in Udaipur City
M Ed Raj Uni 1954
- शर्मा रामकृष्ण Problem Tendencies of Adolescent
M Ed Raj Uni 1968
- शर्मा, रामदेव तीव्र बुद्धि और निम्न बुद्धि के छात्रों की समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन,
एम एड राज वि वि 1971

- नमो गुरुकुमार विहार छात्र व छात्रिकाओं की पढ़ाई व व्यवसायिक शिक्षण विधियों का एक अध्ययन
एम ए राज वि वि 1970
- नमो धी नम Personal Problems of the Ist Year T D C Science Students
M Ed Udaipur Uni 1967
- नमो गुरुकुमार Case Studies of Merit Scholarship Holders
M Ed Raj Uni 1973
- नवमी नवमर महाविद्यालय विद्यार्थियों की समस्याओं की समस्याओं
एम ए राज वि वि 1973
- नमनता नमनता An Investigation into the Causes of Truancy in Secondary/Higher Secondary Schools of Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1967
- नाथु जयारण A Study of Some Factors Related to Backwardness in Cities
M Ed Jodhpur Uni 1970
- नाथु यश विहार छात्राओं का शुरुआती विषय अध्ययन-प्रश्नांशों और राजस्थानी छात्राओं का अनुसंधान अध्ययन,
एम ए राज वि वि 1973
- निमानिया राजवर्गिन Socially Accepted and Rejected Children and their Adjustment Problems
M Ed Raj Uni 1967
- श्रीनारायण चार्ज क An Investigation into the Reading Interests of High School Students of Sardarshahr and Suggestions for Improving them
M Ed Raj Uni 1953
- गुरुकुमार An Investigation to Explore and Evolve Tools for Educational Guidance
M Ed Raj Uni 1958
- गुवानिया गुरु शिष्य Creativity Among Science and Arts Students A Study Based on Xth Class Science and Arts Students
M Ed Udaipur Uni 1969
- गुरु प्रार ना An Investigation into the Personal Problems Confronted in the School by the High School Students of Bikaner Division
M Ed Raj Uni 1961
- नवपाठा व द्वैपालाज Adjustment Problems of Bhl Students Studying in Secondary and Higher secondary Schools of Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1967
- हरगुरु यम तो कक्षा १० व विद्यार्थियों की निर्देशन की आवश्यकताओं का अनुसंधान अध्ययन,
एम ए राज वि वि 1974

व्यावसायिक निर्देशन

■ सत्यप्रकाश शर्मा

प्रारम्भ में निर्देशन का जन्म व्यावसायिक आवश्यकताओं के लिए ही हुआ। नवयुवकों का व्यावसायिक सूचना प्रदान करने तथा उपयुक्त व्यवसाय के चयन में सहायता देने के लिए व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा की स्थापना हुई। धीरे-धीरे वे शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा के रूप में बदल। राजस्थान में इस क्षेत्र में प्रथम शिक्षानुमधान काय 1956 में ही हो चुका था।

शोधकर्ताओं ने 1963 से 1969 तक व्यावसायिक निर्देशन सम्बन्धी अध्ययनों पर अधिक ध्यान दिया है। 1963 से पूर्व तथा 1970 से 1974 तक इक्की-दुक्के अध्ययन ही हुए हैं। जिन विषयों पर अध्ययन स्नातकोत्तर स्तर पर हुए हैं उनमें सर्वाधिक संख्या व्यावसायिक अभिरुचि, व्यवसाय चयन तथा पसन्द की है। व्यवसाय मान के अध्ययनों की संख्या उनके बाद है। बुद्धि तथा व्यावसायिक अभिरुचि व चयन के साथ सामाजिक आर्थिक स्तर, व्यक्तित्व, समायाजन व उपलब्धि के महत्त्वपूर्ण विषयों पर अध्ययन की संख्या उनके पश्चात् आती है। अन्य विषयों पर भी एक-एक का जो अध्ययन हुआ है।

व्यावसायिक अभिरुचि

व्यावसायिक अभिरुचि पर दलजीतसिंह (1956) ने उत्तराखण्ड के कक्षा नौ व दस के 300 विद्यार्थियों का लेकर अध्ययन किया। उनका निष्कर्ष था कि सर्वाधिक छात्रों की पसन्द अभियांत्रिकी के लिए थी। उससे कम क्रम में चिकित्सा व्यापार तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्यों को पसन्द किया गया। हरिश्चंद्र (1957) ने 77 महाविद्यालयों के 350 स्नातक कक्षा के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचि का अध्ययन किया जिसमें अनुसार विद्यार्थियों ने अभियांत्रिकी को सर्वाधिक पसन्द किया। 72 प्रतिशत विद्यार्थियों ने भूतना तथा निर्देशन सेवा की आवश्यकता का अनुभव किया। नागपाल (1969) ने शुरू जिन के विश्वविद्यालयों के व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन किया और पाया कि विज्ञान मन्त्रालयों के व्यावसायिक अनुमति का चयन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में जानवारी सर्वोत्तम थी। यह भी स्पष्ट किया गया कि ये विद्यार्थी अपनी अभिरुचि के अनुसार निर्देशन नहीं थे और न ही उनको उपयोगी व्यावसायिक निर्देशन दिया गया था। जैन (1963) ने कक्षा नौ के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का

सम्बन्धी व्यवसाया में अधिक रुचि दर्शाई गई। कला वगैरे छात्राग्रा की अधिक रुचि ललित कलाग्रा में पाई गई।

व्यावसायिक अभिरुचि एवं बुद्धि-स्तर

बुद्धि-स्तर तथा व्यावसायिक अभिरुचि में सहसम्बन्ध का अध्ययन भी किए गए हैं। उनम जिन्दल (1960) ने अजमेर के छात्रा की व्यावसायिक रुचि तथा बुद्धि स्तर के अध्ययन में पाया कि मानविकी वगैरे, वाणिज्य वगैरे, कृषि वगैरे तथा ललित कला वर्गों के लिए 'यूनितम बुद्धिसंख्या' क्रमशः 108, 104, 101 व 97 चाहिए। पसन्द के अनुसार धरीयता का क्रम यह था — पहला विमान, फिर तकनीकी, फिर कृषि फिर वाणिज्य उसके बाद ललित कला तथा सबसे अन्त में मानविकी वगैरे। कक्षा VIII के 5 प्रतिशत छात्र अपनी व्यावसायिक अभिरुचि नहीं बता सके। 20 प्रतिशत छात्रा की बुद्धिसंख्या 90 से कम थी। कुछ विद्यार्थियों ने ऐसे वगैरे का चयन किया जिसने लिए उनमें आवश्यक मानसिक प्रवृत्ति नहीं थी। गुप्ता (1966) ने चिकित्सा पाठ्यक्रम के 52 विद्यार्थियों (40 छात्र व 12 छात्राएँ) के इण्टरमीडिएट के प्राप्तांका और चिकित्सा पाठ्यक्रम में सफलता का सहसम्बन्ध जानने का प्रयत्न किया तथा निष्कर्ष निकाला कि दोनों में अनुकूल सम्बन्ध है। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि मात्र इण्टरमीडिएट परीक्षा के प्राप्तांक चिकित्सा पाठ्यक्रम की सफलता की भविष्यवाणी करने हेतु ठोस आधार नहीं बनते। उस पर अन्य पक्षों का भी प्रभाव पड़ता है।

व्यावसायिक अभिरुचि एवं सामाजिक आर्थिक स्तर

'व्यावसायिक निर्देशन में शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि का वास्तविक महत्त्व है तथा सामाजिक आर्थिक स्तर भी प्रभावी हो सकता है। इस संबंध में चौहान (1967) ने जयपुर के बसस्थली की छात्राग्रा के आर्थिक-सामाजिक स्तर, बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्ध जानने की चप्टा की। उनसे अध्ययन के अनुसार सामाजिक आर्थिक स्तर का व बुद्धि का व्यावसायिक चयन में वास्तविक (Significant) सहसम्बन्ध नहीं पाया गया और न ही बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि का ही कोई ठोस सम्बन्ध व्यावसायिक पसन्द के साथ देखा गया। उपाध्याय (1969) के अनुसार छात्राग्रा का आर्थिक सामाजिक स्तर उनकी व्यावसायिक अभिरुचि पर प्रभाव नहीं डालता तथा उच्च आर्थिक-सामाजिक स्तर के और निम्न आर्थिक सामाजिक स्तर के विद्यार्थियों की 'व्यावसायिक अभिरुचि में वास्तविक अंतर नहीं पाया गया। भटनागर (1971) ने मालूम किया कि सामान्य से उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाली लड़कियों की पसन्द चिकित्सा व्यवसाय के लिए थी। यह भी देखा गया कि अभिभावकों के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा विद्यार्थियों की 'व्यावसायिक पसन्द में अनुकूल सहसम्बन्ध है तथा अभिभावकों के व्यवसाय का विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचि पर प्रभाव पड़ता है।

व्यवसाय मान

व्यावसायिक अभिरुचि तथा व्यवसाय मान के विषय में भी कुछ अध्ययन किए गए हैं। शार (1964) ने विद्यार्थियों के तथा महाविद्यालय के विद्यार्थियों के 'व्यावसायिक

विविध

व्यावसायिक अभिरुचि तथा पाठ्योत्तर प्रवृत्तियाँ, बुद्धिबल व उपलब्धि के सबंध को जानने हेतु जो अध्ययन किए गए हैं उनमें भन्वर सिंह (1963) ने इस नाम के अजमेर जिले के छात्रों पर अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थियों की रुचि के व्यावसायिक क्षेत्र समाज सेवा, संगणक कार्य, संगीत, लिपिक कार्य, वित्तीय कार्य, कला, साहित्य तथा यांत्रिकी थे। छात्र तथा छात्राओं के प्रमुख रुचि वाले व्यवसायों में 52 का सहसम्बन्ध देखा गया परन्तु 40 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों के वक्तुपिक विषयों का चयन सहो आधार पर नहीं किया गया था, यह भी अध्ययन से पता चला। उत्तरपुर के विद्यार्थियों पर किए गए ऐसे ही एक अध्ययन में दत्त (1968) ने देखा कि 58 प्रतिशत विद्यार्थी अपनी रुचि के व्यावसायिक क्षेत्र को स्पष्टतः व्यक्त करने में समर्थ नहीं थे, फिर भी बहुत से विद्यार्थी गणित तथा विज्ञान के क्षेत्रों में रुचि रखते थे।

खोसला (1966) ने नर्सों के प्रशिक्षण हेतु प्रवेशार्थ चयन नियमों का अध्ययन करके देखा कि भट्टिक परीक्षा के प्राप्तांकों तथा व्यावहारिक परीक्षा के प्राप्तांकों में सीधा सहसम्बन्ध मूल्य है। इस अध्ययन में ए ए टी परीक्षा तथा व्यावहारिक परीक्षा के प्राप्तांकों में भी 'मूल सहसम्बन्ध पाया गया। सामाजिकता तथा सद्भावना परीक्षा के प्राप्तांकों में भी 'मूल सहसम्बन्ध पाया गया।

अध्यापन व्यवसाय के लिए चयन हेतु प्रेरक तत्त्वों का अध्ययन में मनमोहन कौर (1968) ने देखा कि आकर्षक छात्रों के चयन के लिए प्रेरक तत्त्वों में उच्च धार्मिक-सामाजिक स्तर अधिक प्रभावी नहीं है। परन्तु ज्यादा-ज्यादा प्रबुद्धता का स्तरोन्मेष होता है अध्यापन व्यवसाय के प्रति आकर्षण कम होता पाया गया है।

जोशी (1960) ने बीकानेर सम्भाग के शिक्षक एवं व्यावसायिक निर्देशन कार्यक्रम से सम्बंधित कुछ पक्षों का अध्ययन किया जिसके अनुसार विभिन्न स्तरों के प्राप्त सुझावों का छात्रों की व्यावसायिक अभिरुचि पर प्रभाव पड़ता है। अध्यापकों के प्रति छात्रों की पसंद आपस-द के अनुसार छात्रों की विद्यालय के प्रति भी अनुकूल या प्रतिकूल अभिवृत्ति बनती है।

भाट्टा (1963) ने लिपिक वर्ग की अभिवृत्ति से सम्बंधित पक्षों का लिपिकों पर अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि उनका बुद्धिबल का औसत 95.86 है। लिपिकों का कार्य अपनाते हेतु जो मुख्य कारण उत्तरदायी पाए गए थे वे विपरीत परिस्थिति तथा आय काय न मिलने पर जा मिले उस स्वीकार करना' थे।

टाक (1965) ने व्यावसायिक सूचना कार्यक्रम का कक्षा VIII के विद्यार्थियों की अभिरुचि तथा चयन पर प्रभाव का प्रायोगिक अध्ययन किया जिसके अनुसार प्रायोगिक समूह के छात्रों ने नियंत्रित समूह के छात्रों की अपेक्षा आरंभ से अंत तक अपने व्यावसायिक चयन में निष्पक्ष म अधिक परिवर्तन किए। यह भी देखा गया कि प्रायोगिक समूह ने अंतिम चरण में अधिक नये चयन किए तथा पुराने चयन का

तथा उनकी कठिनाइयों व समस्याओं के समाधान में भी सहायक सिद्ध हो। इसका भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जो आवश्यकताएँ समाप्त हो चुकी हों उन पर अध्ययन लाभकारी नहीं होगा। अतः विषय का चयन उनकी आवश्यकता व उपयोगिता को ध्यान में रखकर सावधानी में होना चाहिए।

व्यावसायिक निर्देशन व व्यावसायिक चयन सम्बन्धी अध्ययन तो अनेक हुए हैं, परन्तु किसी भी अध्ययन से यह स्पष्ट नहीं हुआ कि अमुक विद्यालय में व्यावसायिक चयन या अभिरुचि को दिशा देने की भी कोई व्यवस्था है या नहीं। सही चयन तो तब हो सकता है जबकि विद्यालयों में विस्तृत व्यावसायिक सूचनाएँ देने की समुचित योजना व व्यवस्था हो। व्यावसायिक निर्देशन की व्यवस्था की स्थिति जानने के लिए मान एक अध्ययन हुआ है जो अपर्याप्त है। इस निष्ठा में अधिक विस्तृत जानकारी व प्रयत्ना की बड़ी आवश्यकता है। अध्ययनों के जो निष्कर्ष निकाले गए हैं उनमें से कुछ साधारणतया स्पष्ट नहीं हैं, कुछ सांख्यिकी भाषा में बताए गए हैं जिन्हें विशिष्ट व्यक्ति ही समझ सकते हैं साधारण व्यक्ति नहीं। अध्ययन के परिणाम ऐसी भाषा में भी व्यक्त किए जाने चाहिए जो साधारण व्यक्ति की समझ से परे न हो। मानव शक्ति प्रायोजन के काम का विभिन्न स्तरों पर वरीयता के साथ प्रभावी ढंग से चलाने की आवश्यकता है जिससे कि व्यावसायिक निर्देशन व चयन सही तथा उपयोगी बन सकें।

व्यावसायिक निर्देशन सम्बन्धी जो क्षेत्र या विषय अध्ययनों से अछूते रह गए हैं या जिन पर काम शुरू हुआ है तथा जिन पर और अधिक अध्ययन, शोध कार्यों, सर्वेक्षणों की आवश्यकता है तथा जिनके परिणाम निम्न-देह उपयोगी होंगे वे इस प्रकार से होंगे -

- महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि और चयन,
- विद्यालयों महाविद्यालयों विश्वविद्यालयों में व्यावसायिक निर्देशन कार्यक्रमों की स्थिति तथा प्रभावशीलता
- व्यावसायिक निर्देशन कार्यक्रमों में अध्यापकों प्रधानाध्यापकों प्राचार्यों की रुचि व प्रभावशीलता,
- व्यावसायिक सूचना केन्द्र निर्देशन केन्द्र नियोजन कार्यालयों के सर्वेक्षण,
- उच्च स्तरीय, निम्न स्तरीय (प्रभावहीन) व्यावसायिक निर्देशन-सेवाओं का तुलनात्मक अध्ययन,
- शिक्षाधिकारियों में निर्देशन कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता,
- शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा निर्देशन कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने हेतु किए गए प्रयत्नों व अध्ययन/सर्वेक्षण,
- निर्देशन कार्यक्रमों की आवश्यकताओं व युक्तियों का अध्ययन,

- विभिन्न व्यवसायों व पेशा व विशेषण
- व्यावसायिक निर्णयन व नियंत्रण व व्यवहार
- व्यावसायिक रुचि व्यावसायिक चयन व वास्तविक नियंत्रण का तुलना
- वास्तविक जीवन तथा तुलना वास्तविक जीवन व तुलनात्मक अध्ययन ।

संदर्भित ग्रन्थसूची

प्रस्तावना श्यामसुन्दर	Vocational Interests of the VIII Class Students as Compared with Vocational Aspirations of their Parents M Ed Udaipur Uni 1967
प्रस्तावना ज्ञानेश्वर	A Study into the Relationship of some Correlates to Clerical Aptitude of Clerks of D Ihi with a view to Improve the Methods of Selection and Guidance of Prospective Entrants M Ed Raj Uni 1963
उपाध्याय नरसी	कक्षा दस व द्वादश एवं छात्राचार्यों व सामाजिक प्राप्ति स्तर का उनकी व्यावसायिक रुचियों से सम्बन्धित ज्ञान करना एम एड राज वि वि, 1969
कमलेश्वर कुमार	किशोर छात्र एवं छात्राचार्यों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन, एम एड राज वि वि 1973
श्यामला कर्मा	A Study of the Selection Criteria for Admission to the Training of Nurses M Ed Raj Uni 1966
गणेश श्याम	A Study of N C C Cadets and their Vocational Preferences M Ed Raj Uni 1966
गोपी जीतगान	A Comparative Study of Attitudes of S T C and Pre Ayurved Students towards the Profession M Ed Raj Uni 1969
गुप्ता ज्ञानप्रकाश	Intermediate Marks as the Predictors of Medical Success M Ed Raj Uni 1966
चारण शक्ति	छात्रों की शैक्षणिक एवं व्यावसायिक यात्राओं का नतीजा का एक सर्वेक्षण, एम एड राज वि वि, 1968

चीहान, पुष्पलता	An Investigation into the Relationship of Socio Economic Status Intelligence and Academic Achievement of Class X Girls with their Vocational Preference M Ed Raj Uni 1967
जिन्स, जागदरपाल	An Investigation into Correlation between Intelligence and Vocational Interest of Delta Class Students of Multipurpose Higher Secondary Schools M Ed Raj Uni 1960
जन कृष्णचन्द्रसिंह	Vocational Choices of Ninth Grade Students M Ed Raj Uni 1963
जन सज्जनराज	अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी छात्रों के व्यावसायिक चयन एवं प्राथमिकताएँ, एम एड, राज वि वि 1968
जाशी रूपलाल	An Investigations into some Related Factors of Vocational And Educational Guidance of Multipurpose Schools of Bikaner Division M Ed Raj Uni 1960
भम्बरमिह	A Study of Vocational Interests of XI Class Students of M P Hr Sec Schools of Ajmer District in Relation to their Vocational and Curricular Choices IQ Achievement Co Curricular Leisure time Activities and other Related Factors M Ed Raj Uni 1963
टाक, मुलमान	Influence of Career Instructional Programme on the Vocational Choices and Attitude of Delta Class Students M Ed Raj Uni 1965
दलजीतसिंह	Vocational Interests of High School Boys, M Ed Raj Uni 1956
दब बामुदय जी	Vocational Interests and A vocational Activities M Ed Udaipur Uni 1968
नागवान भगनराम	An Investigation into the Vocational Interests of High School Boys of Churu District Rajasthan and Need for Reorientation of Educational Programme M Ed Raj Uni 1959
शार, प्रीतमसिंह	Vocational Choices And Values of Adolescents M Ed Udaipur Uni 1964
बायली, जमनालाल	An Exploratory Study of Vocational Preference Job Values and Occupational Choices of Secondary School Leavers M Ed Raj Uni 1966

- शर्मा गणपतिराम *A Comparative Study of Vocational Interests of the Public School Students and Residential School Students*
M Ed Raj Uni 1965
- शर्मा दुर्गाप्रसाद विश्वोरो मे व्यावसायिक रुचियो और उनके व्यक्तित्व तत्वो का अध्ययन
एम एड राज वि वि, 1969
- सक्सेना, सरोज छात्रमेर जिले क उच्च माध्यमिक विद्यालयो क छात्रो द्वारा सभावित व्यावसायिक मूल्य एव रुचियो के म-य सवष का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1969
- सक्सेनातवीर *A Study of the Employment Opportunities in Delhi*
M Ed Raj Uni 1974
- हरिश्चन्द्र *Vocational Interests of Under graduates*
M Ed Raj Uni 1957



शिक्षक-प्रशिक्षण

□ डा. मुन्वरराज बिसनारा

□ प्रकाशचन्द्र द्विवेदी

शिक्षा भी शिक्षा कार्यक्रम व विद्यालय और सम्पादन में शिक्षक की कक्षा में भूमिका को व वास्तव शिक्षक प्रशिक्षण का मन्त्र भी विनियमित होता है। एक क्षण में अनुसंधान काय व प्रथम दान 1957 में हुआ है। तब से इस तरह अध्ययन मन्त्र 1964 तक आने तक मन्त्र सम्मान ही मन्त्र 1965 में मन्त्र अध्ययन मन्त्र ही गुना बढ़ि हा गद और तब से यूनायिड रूप में निरन्तर बढ़ि गान हुआ मन्त्र 1974 में वन्त्र मन्त्र 1957 का तुलना में 12 गुनी हा गन्। मन्त्र अध्ययन मन्त्र शिक्षक प्रशिक्षण व जा शायाम उमर हैं व हैं शिक्षक प्रशिक्षण का विराम प्रशिक्षण पाठ्यक्रम व प्रशिक्षण प्रशिक्षण में प्रथम प्रशिक्षण, शिक्षण प्रशिक्षण प्रथम और प्रशिक्षण तुलनात्मक अध्ययन तथा मन्त्र प्रशिक्षण।

शिक्षक प्रशिक्षण का विकास

प्रशिक्षणप्रमाण प्रमाण (1972) में पाण्डे डा. मन्त्र पर विभिन्न ध्यानमायि पाठ्यक्रम का समानता अध्ययन करके गान किया कि शिक्षक प्रशिक्षण में सामान्य निरन्तर वन्त्र मन्त्र था। निम्न मन्त्राद्या का मन्त्रा मन्त्र बढ़ि हाता रही मन्त्र उनम गानन सुविधाया का स्थिति मन्त्र नन्त्र रन्त्र थी। मन्त्रात्मक विराम व माथ यन्त्र भा पाया गया कि उम पर विन्त्रा प्रभाव वन्त्र ज्यन्त्र था और पाठ्यक्रम म परिवर्तन ना वान-वान गान रन्त्र व। अध्ययन और अवगानन प्राय नन्त्र था किन्तु प्रशिक्षणाधिया की मन्त्रा व्यवसाय का माग म पर वन्त्र लगा थी। मन्त्रा प्रथम म वान्त्र (1971) में मातूम किया कि प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण व क्षेत्र म म विधानय हा स्वतन्त्रता पूव वान व व और मन्त्र नौ वान म विकसित हुआ व। विकासामन्त्र वानन्त्र पर वपन पाण्डे डा. अध्ययन म मन्त्रा (1973) में प्रशिक्षण मन्त्राद्या म अध्य तीन मन्त्रा का तुलना में नवाचार ना अध्ययन करके मातूम किया कि मन्त्र मन्त्र (मानन एयर मान) का प्रमाण वन्त्र एक म मन्त्रा म मन्त्र रन्त्र था, जन्त्र मातूमिक मन्त्राद्या पाठ (मन्त्रा प्रशिक्षण टाचिंग) का प्रमाण 50/ मन्त्राद्या म था। वन्त्रातुमन्त्र वन्त्र (1971) में विद्यालयन म मन्त्र मन्त्र का प्रमाण का मन्त्रावन करके गान किया कि उमम वन्त्र पाण्डे मोन वान और स्वतन्त्रता का प्रवर्तित अधिक वन्त्र का जानी था।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम व प्रचार

शिक्षक प्रशिक्षण व नियमित और अवकाशकालीन पाठ्यक्रम व मन्त्रा पर जा अध्ययन हुआ है उनम माग मातूम (1970) व अनुसार शिक्षक अवकाशकालीन

प्रशिक्षण में अनुभव प्राप्त करने के लिए छात्रावासों में अतिवासी बनाकर रखे जाने में आपत्ति थी, अलग अलग सत्रों में अलग अलग प्रशिक्षक पदार्थों, इस पर आपत्ति थी और वे सद्धान्तिक चर्चा को शिक्षण-व्यवसाय के लिए अनुपयोगी मानते थे। उनमें अध्ययन आदत्तों का नया विकास नहीं हो पाया, तथापि यह अवश्य दखा गया कि वे प्रशिक्षार्थी छात्रों और प्रशिक्षकों के साथ अच्छे स्तर के स्नेह सम्बन्ध उपजा लेते थे। सह-शिक्षक प्रवृत्तियाँ में उनकी अच्छी रूचि विकसित होती थी और आंतरिक मूल्यांकन को वे पसंद करते थे। उन्होंने यह स्वीकार किया कि प्रशिक्षण के व्यय का उन्हें समुचित लाभ मिल जाता था। कुमुद शर्मा (1974) ने नियमित और अवकाशकालीन प्रशिक्षार्थियों के तुलनात्मक अध्ययन से यह मालूम किया कि नियमित प्रशिक्षार्थियों में 85% तक बिना किसी पूर्वानुभव के होते थे और उनके परिणाम भी अवकाशकालीनों की तुलना में निम्नतर होते थे। अवकाशकालीन प्रशिक्षार्थी अधिकतर 8-15 वर्ष के सेवा अनुभव वाले होते थे। यद्यपि उन्हें प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सकाशात्मक रूचि और उत्साह नहीं होता था मगर उनके परिणाम अपेक्षाकृत अच्छे रहते थे। वे प्रशिक्षण काल में आर्थिक और पारिवारिक चिन्ताओं में ग्रस्त भी रहते थे। लगभग यही तथ्य पारीक (1972) ने प्राथमिक प्रशिक्षणार्थी पत्राचार प्रशिक्षार्थियों के प्रसंग में पाते हैं। अतिरिक्त तथ्य यह बिंदित हुआ कि सदाशिव सामग्री की अपेक्षा दोना ही वर्गों में सामान्य थी मगर सवारत प्रशिक्षार्थी अपना निर्दिष्ट गृहकार्य अपेक्षाकृत जल्दी और समय पर कर लेते थे। प्राथमिक प्रशिक्षण के सत्र में शिवकुमार शर्मा (1966) ने यह भी निष्कर्ष निकाला कि एक वर्षीय पाठ्यचर्या पर्याप्त नहीं थी।

प्रवेश प्रक्रिया

शिक्षण-व्यवसाय की प्राथमिक आवश्यकताओं की अपेक्षा से प्रवेशार्थी के 'यत्नित्व भावनात्मक स्थिरता अकादमिक योग्यता और अनुकूलन की अभिवृद्धि का मास महत्व है। दीप्ति (1965) ने शिक्षक के कर्तव्य का अध्ययन करके बताया है कि उसके कुछ महत्वपूर्ण कार्य हैं शिक्षक उद्देश्यों की जानकारी रखना श्यामपट्ट का कुशल उपयोग शिक्षण को रुचिकर बनाना, गृहकार्य निर्दिष्ट करना, अध्ययन आदत्तों का विकास करना उपचारात्मक कार्यक्रम चलाना सह-शिक्षक प्रवृत्तियों कायंजित करना और सौम्यवर्ति जगाना। अग्रवाल (1974) ने मालूम किया कि शिक्षणगत कुशलता पर बुद्धिमान, अनुकूल अभिवृद्धि और सामाजिक मायताओं का अनुकूल प्रभाव पड़ता है। आर्थिक राजनतिक और धार्मिक मूल्य/मायताओं का शिक्षणगत कुशलताओं पर सीधा प्रभाव नहीं पड़ता। प्रवेश प्रक्रिया में इन मुद्दों पर विचार हो सकता है। उच्चर चौहान (1971) बताते हैं कि आयु स्तर की वृद्धि के साथ शिक्षण-कुशलता में धनात्मक वृद्धि दृग्गई है। अरोड़ा (1970) ने शिक्षण-कुशलता के निर्धारकों की खोज करके यह मालूम किया कि बुद्धिमान का शिक्षण-कुशलता पर कोई साधक असर नहीं है यद्यपि 01 स्तर पर कुशलता का यह एक निर्धारक तत्त्व ज़रूर है। इसकी अपेक्षा अभिव्यक्ति क्षमता अधिक मायक घटक है। हरग (1973) विज्ञान शिक्षकों के लिए अकादमिक योग्यता निम्नलिखित क्षमता, यत्नित्व सौष्ठव और प्रश्रयगत चतुराई को आवश्यक निर्धारक बताती

३। वयं ना वनाता ३ कि शिक्षा न म शिक्षण सुनता म अतर पाया जाता है मगर शिक्षा न म का अतर नहीं होता। नवाननम मातित्य क वयं म प्रार शिक्षा जानकारी रगत न ज्ञाना म्मगप्रयन जाता है। स्थान (1972) न प्रशिक्षाधिया क ग्राम प्रत्यय और उनका मप्राप्ति छात्रावासा न मर्मम्बर मात्र वर पता उगाया कि ज्ञाना म धनामक म्मवय या। व्याम (1967) क अनुसार 58% प्रशिक्षार्थी कवर छात्रिक लाभ का लक्ष्य लेकर शिक्षक प्रशिक्षण म आत ३ और यदि उन्हें वयं मीका मित्र ता वयं उवमाय का परिचाम भी वयं का उद्यन है। मर्ता (1970) न विभिन्न म्मसाक्षा की स्थिति का विश्लेषण करक पता उगाया कि छात्राय शिक्षा म्मगप्रयन म अपगाहृत उच्चतर अकादमिक मप्राप्ति क प्रशिक्षार्थी छात्रा हात ३ उनम 53 39% मवानुमावतुन भा य। गठो (1974) वनाता है कि नगर मत्र का मन्त्रिा प्रशिक्षाधिया म शिक्षण व्यवसाय क प्रति अत्रिक मकारात्मक रमान रता ३। मनमातृकीर (1968) न शिक्षण व्यवसाय क उद्वेगा का अध्ययन करक यह मातृम किया कि बौद्धिक उन्नतन क माध-माध शिक्षण व्यवस्था क प्रति छात्रपण निर्मलर घटना जाता ३। लर विनाग (1964) वतात है कि प्रशिक्षण म प्रव क शिक्ष अकादमिक मायता जवन अति क लक्ष्य बुद्धि परम और माथाकार का आधार वनाया जाए ता इतर पढ्या (1973) क अनुसार अकादमिक मप्राप्ति प्रशिक्षण क अक और मवानुमक म परम्पर काद धनामक मर्मम्बर नहा ॥। म प्रयम म रमा (1962) न सुनामा मातृम किया कि शिक्षण मायता का मर्मम्बर बुद्धिधमि शिक्षण प्रनिवति ध्यमिद्व समायात्रन और अकादमिक लपरि क मान कमा 64 78 55 और 55 है। प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण म नामावन पर धार्मिक घटका का अमुविना का प्रतिरुन प्रभाव पता है य् लक्ष्य श्रीमता (1969) न अवन अध्ययन न निकता है। जब एम टा मा म नद फीमें तामू का म और 25/- मासिक का प्रशिक्षण बनि टा दा गद ता प्रका-मप्रा घटका थी। म सुम्बर म मर्ता (1965) न मातृम किया या कि प्राथमिक प्रशिक्षण म्मसाक्षा म विर क हा प्रशिक्षार्थी 70% लर ज्ञान य। उनम म 60% धार्मीण क्षेत्र क हात य 90% माध्यमिक/उच्च माध्यमिक क ता उताण हात य और 3% दूरमाहिट। सरकारी आर निजी म्मसाक्षा म काम सुम्बर म्मसाक्षा प्रन्तर व्यापक थ यह लक्ष्य रमा (1971) न मात्र निवाला। न्हनि य् भी मातृम किया कि सुत्र हा प्रशिक्षाधिया का मासिक बति प्राप्त या।

शिक्षण प्रणालि

शिक्षक प्रशिक्षण का प्रभावकारिता का कमाग है - शिक्षण प्रणालि का याचना और उमका क्रिया-यन। इसी क अनात प्रशिक्षार्थी की मायताएँ सुनलाने और मनावताएँ सुनर जाता हैं। मागारम रमा (1974) न पता उगाया कि शिक्षा अन्नाम क्रम क लर अवन म्मवाकाता परम्पर अतिमान और अति हात य। न प्राप्ताता उन्हें समक पात य न प्रशिक्षार्थी। प्रशिक्षार्थी शिक्षण-अन्नाम का व्यावहारिक उपागिता के वां म आनवन्त नहा य। धमच रमा (1967) तात है कि पाठ निष्ठा और प्राप्ताता शिक्षण प्रणालि म विपन्न प्रनिवित न्दा हात न हा

शिक्षण अभ्यासक्रम परिवर्तनशील शिक्षा संवर्धन का अनुकरण करता था। बली (1966) का निष्पत्ति था कि शिक्षण अभ्यास में शिक्षक प्रशिक्षक के व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, उसे मानवीय संवर्धन का ज्ञान होना अपेक्षित है। शिक्षण-अभ्यास में प्रधानाध्यापक सहयोग नहीं करते गृहस्थ अपेक्षित रह जाता है और प्रशिक्षार्थी शिक्षक प्रयासों की अपेक्षा प्राप्ति के अनुसंधान पर अधिक ध्यान रखते थे - यह तथ्य सरिया (1972) ने उजागर किया। तम्बोली (1966) भी शिक्षण अभ्यास में सहयोग-समन्वय और नई विधियों के प्रयोग की आवश्यकता अनुभव करते थे। मगर वर्मा (1972) बताती हैं कि शिक्षण अभ्यास के लिए निर्दिष्ट स्कूलों की समस्याएँ भी प्रचुर होती हैं। प्रशिक्षार्थी पाठ्यक्रम को पूरा करने की चिन्ता नहीं करते उच्च विषय का पूरा ज्ञान नहीं होना, उनकी शिक्षण व्यवस्थित और क्रमबद्ध नहीं होता वे गृहस्थ निर्दिष्ट नहीं करते, उनकी कक्षाओं में अनुशासन की समस्या भी और वे शिक्षण की अवस्था की अपेक्षा विधियों की नाटकीयता पर ज्यादा समय व्यय करते थे। समाधान यह कि शिक्षण अभ्यास की योजना स्कूल के सहयोग से बनाई जाए और प्रशिक्षार्थी प्रतिदिन अध्यापक न रहकर स्कूल में काम करें और पूरे समय तक स्कूल के सभी कार्यक्रमों में भागीदारी करें। दत्त (1967) ने भी लगभग यही समस्याएँ लाज निराली। भार्गी (1968) के अनुसार भी प्रधानाध्यापक शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम को समय और शक्ति का अपेक्षित मानते थे। प्राथमिक प्रशिक्षण में बोलिया (1974) के अनुसार एक-एक अनुदेशक के पास 25 से 30 तक प्रशिक्षार्थी होते थे यद्यपि वहाँ शिक्षण अभ्यासों में स्कूलों का सहयोग अच्छा होता था। जनकदुलारीसिंह (1972) बताते हैं कि प्रशिक्षार्थी में आधुनिक प्रौढ़ता आने पर वह शिक्षण अभ्यास का लाभ नहीं उठा पाता।

प्रशिक्षार्थियों की प्रतिक्रिया पर भी अध्ययन हुए हैं। पाटुजा (1968) ने मालूम किया कि प्राथमिक प्रशिक्षार्थियों (महिलाओं) की लिखावट नितांत खराब थी। विराम चिह्न, बतनी और उच्चारण की गलतियाँ बहुत होती थी और हिन्दी पाठ योजनाओं में अनुदेशक काई सुझाव भी नहीं देते थे। गलहाना (1974) बताती हैं कि विज्ञान विषय में शिक्षकों का वाचिक व्यवहार कम होता था जबकि उच्च सामाजिक ज्ञान में शिक्षक छात्रों को बोलने-बतियाने का मौका ही नहीं देते थे। भाषा विषय में छान पर्याप्त बोलते थे। भट्टारी (1973) ने मालूम किया कि प्रशिक्षार्थी अधिकतर ज्ञानात्मक उद्देश्यों का ही उल्लेख करते थे और भावनात्मक क्षेत्र को एकदम से उपक्षिप्त छोड़ दिया जाता था। सुबाली (1972) के अनुसार अनुदेशक/प्राध्यापक अपनी टिप्पणियों में सहायक सामग्री के पक्ष को अलगाव छोड़ देते थे यद्यपि टिप्पणियों में निर्दिष्ट सुझावों की सम्पूर्ण पर्याप्त रहता थी। प्रशिक्षार्थी कक्षा में अपना पाठ भुगतान देने की चेष्टा में अधिक रहते थे और छात्रों की कमियाँ दूर करने का ध्यान नहीं रखते थे। उच्च प्रशिक्षार्थी भी इस बात से दुखी पाए गए कि प्रशिक्षण में उनकी कठिनाइयों पर भी कोई ध्यान नहीं देता। प्रभाकर (1974) ने यह मालूम किया कि विज्ञान विषय के अध्यापकों में अध्यापक अपना अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टान्त रहता है।

रणा (1970) ने पाया कि प्राथमिक उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में पठान वान प्रशिक्षाधिया के मापनिक कार्यक्रमों में बाद में नुन नहीं आता । छात्र प्रशिक्षाधिया में क्या अपेक्षाओं रखते हैं यह मन्व्य म अध्ययन करके दीनित (1969) ने मातृम किया कि यद्यपि छात्रों की बुद्धिनि और उनका अपेक्षाओं में घनामक महत्वपूर्ण नहीं था मगर उनका सामाजिक-आर्थिक स्तर और अपेक्षाओं में भावनामक व्यक्तिव मन्व्य और सामा्य व्यवहार मन्व्य आया म प्रमाण 01, 01 और 05 तक मन्व्य पाया गया । गुप्ता (1968) के अनुसार मन्व्य प्रशिक्षाधिया के विषय में और क्या म सामाजिक वातावरण बनाने की उनका प्रमत्ता के बारे में छात्रों का मन नकारात्मक पाया गया, मगर उनकी वांछना और व्यक्तिव का मनका के बारे में उनका मन सकारात्मक था । उर विज्ञान प्रशिक्षाधिया के बारे में नानकश (1974) बताते हैं कि छात्रों का अपेक्षा शिक्षा में विज्ञान विषय का प्रवर्ति का सुचारु अनुसरण था । उर एक और विज्ञान के छात्रों और अन्य छात्रों में बाद में नुन नुन पाया गया वहाँ दूसरी और विज्ञान और विज्ञानन शिक्षा में भी बाद में नुन नुन पाया गया । वापसी (1967) ने मातृम किया कि प्राथमिक प्रशिक्षाधी आरम्भिक कक्षाओं पठान के लिए उपेक्षित नुन किण पान के रचना शिक्षा और मन्व्य म नुन नुन लन और एक हा प्रसंग के बाद प्रशिक्षाधी प्रमिक रूप में पठान थे । जबकि राज्य शिक्षा मन्व्य द्वारा नुन किण गय एक अपेक्षा अनुसरण (1968) ने पता लगा कि अपेक्षा विषयों का अपेक्षा प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षाधी में शिक्षा विषय के पाठों का अनिप्रतिनिधित्व सतापत्र था । प्राथमिक प्रशिक्षाधी में मनावन की स्थिति दयनाय है, यह तथ्य ध्यान (1974) ने मातृम लगाकर उजागर किया कि प्राथमिक प्रशिक्षाधी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का प्रशिक्षाधी अपेक्षा ममकता का अपेक्षा कम था ।

प्रबंध और प्रशिक्षण

शिक्षक प्रशिक्षण मन्व्य की साधन-सम्पन्ना व्यवस्था और प्रबंधन कुशलता का जितना प्रभाव प्रशिक्षाधिया पर पड़ता है उतना ममवत औरचारिक कार्यक्रमों का भी नुन पठान । प्रशिक्षाधिया का आवश्यकताओं के सन्ध में रना (1970) ने मातृम किया कि पुण्य और मन्व्य प्रशिक्षाधिया के आवश्यकता माध्यम में अनुसरण है वम की विज्ञानिक विचारों के बाव में और नवयुवा नुन प्रोत्ते के बाव में । मन्व्य (1957) ने पता लगाया कि ममन्व्य-मन्व्य के स्तर पर प्रशिक्षाधी प्रशिक्षाधी मन्व्य पाए गए मगर नुन (1958) के अनुसार ममन्व्य-मन्व्य की ममन्व्य स पुण्य के महिना नुन का प्रमत्त और चित्ति रन थे यद्यपि मन्व्य का ममन्व्य पुण्य का अपेक्षा महिना म अनिक प्रमत्त रहती था । जब मायु (1974) ने ममन्व्य मन्व्य अनिवार्य कार्यक्रम के प्रभावों का मापन किया तो पाया कि एक कार्यक्रमों का प्रभाव प्रशिक्षाधी व्यवहार पर हा नुन पठान बकि मन्व्य स्थानान्तरण पारिवारिक ममानान में नुन हाता है । उरन य नुन निरूप निराना कि बुद्धिनि या सामाजिक-आर्थिक स्थिति का ममन्व्य में घनामक महत्व नुन हाता । मगर मन्व्य

जन (1971) कहती हैं कि सामाजिक आर्थिक स्थितियाँ प्रशिक्षार्थियों में समस्याएँ पैदा करती हैं और उन समस्याओं का मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और स्व-सुधार पर असर पड़ता है तथा ये पिछड़ी बातें शिक्षण कुशलता से सकारात्मक भाव से सम्बोधित हैं।

अग्रवाल (1971) ने 'यत्नित्व' संरचना और सह्योगी कार्यों के प्रति रुचियाँ में साक्ष्य सहसम्बन्ध नहीं पाया। जबकि पारीक (1971) ने सहज अनुशासन और नेतृत्व में तथा सामाजिक अनुशासन और नेतृत्व में उच्च स्तर का सहसम्बन्ध पाया, मगर नेतृत्व और 'यत्नित्व' अनुशासन में कोई सहसम्बन्ध नहीं पाया। प्रशिक्षार्थियों की चिन्ताओं के दायरे में 'यास' (1969) ने मान्यता दी कि निजी संस्थाओं में अधिक व्यय भार की अधिकता से जनित होती थी, तो ब्रू (1968) ने पता लगाया कि चिन्ताग्रस्तता तो पुरुष महिला दोनों वर्गों में प्राप्त थी। मगर, विवाहित महिलाओं में उसकी प्रचुरता ज्यादा रहती थी। पूर्वानुभव विहीन नवयुवाओं में प्रशिक्षण सम्बन्धी चिन्ताएँ और आशंकाएँ अधिक रहती थी। निष्कर्ष यह कि प्रशिक्षणकाल में भी निश्चिन्ता की व्यवस्था होनी चाहिए। कहेयालाल शर्मा (1967), ने प्राथमिक प्रशिक्षार्थियों की आर्थिक समस्याओं से बुरी तरह ग्रस्त पाया। साथ ही उन्हें आवास और भोजन की व्यवस्था से बहुत असंतुष्ट भी पाया। चिकित्सा और खेल सुविधाएँ भी उन्हें प्राप्त नहीं थी।

उधर सानार (1967) ने अनुदेशक/प्राध्यापकों के कार्यभार की स्थिति देखकर निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न कार्यभारों में असंतुलन की स्थिति थी और कुछ पर कार्यभार बहुत अधिक था। पारस्परिक संबंध भाषा की खोज करके अम्बिकाप्रसाद शर्मा (1966) ने बताया कि आतंकवादी, पक्षपाती और निरंकुश प्रशिक्षकों की बनिस्पद सहानुभूतिशील और उदार प्रशिक्षकों का प्रशिक्षार्थी ज्यादा पसंद करते थे। अनुभव की प्रौढ़ता और बौद्धिक सम्पन्नता में कसल (1969) ने बनिष्ठ सहसम्बन्ध पाया जिसका आशय यह है कि प्रशिक्षण संस्थाओं में ज्ञानवद्ध और अनुभवी प्राध्यापकों का रखा जाना चाहिए। लीलाबिहारी (1966) बताते हैं कि प्रशिक्षार्थी प्राध्यापकों में शक्तिक्षमता देखना चाहते हैं और प्राध्यापक प्रशिक्षार्थियों में अभ्यास शिक्षण की पुष्ट सवारी और परीक्षोपयोगी सावधानी देखना चाहते हैं।

मन्मथलाल शर्मा (1967) ने पता लगाया कि प्रशिक्षार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाएँ ता बहुत ऊँची थीं मगर उनकी उपलब्धियाँ उतनी ही निचले स्तर की थी। मिश्र (1966) ने पात किया कि प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण संस्थाओं से व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम की अपेक्षा करते थे। उधर, मेहता (1965) ने प्रशिक्षण संस्थाओं के कार्यात्मक ढाँचे का विश्लेषण करके बताया कि उनमें से 50% प्रशिक्षित स्नातक थे प्रवचन ग्राम प्रणाली थी, सहायक सामग्री और शिक्षा उपकरणों की स्थिति दयनीय थी पाठ्यक्रम की महत्वाकांक्षाएँ अवलम्बनीय थी। मगर अभ्यास शालाओं पर उन संस्थाओं का कोई नियंत्रण नहीं था। इन संस्थाओं में से 75% ने पास अपने भवन थे मगर पुस्तकालय की स्थिति नहीं बराबर थी। अधिकतर कोई अनुशासन या लिपिक ही पुस्तकालय का भी काम करता था। प्रशिक्षण भौतिक वास्तविक और सद्धान्तिक 'यापार' बनकर उभरता था।

ऐसा कार्यक्रमों के प्रति उदासीन हो नहीं विरुद्ध भाव भी रखने थे। विजयवर्गीय (1966) ने पाथमिक प्रस्ताव विभागा में वित्तीय कमी देखी तो भटनागर (1967) ने अनुवृत्ता में प्रवर्तनाध्यापका की भूमिका का अध्ययन करके मातृम दिया कि 90 प्रतिशत स्थिति में वे परिबीक्षण और अनुवृत्तन में अक्षम रहे। वावने (1974) ने ग्रीष्मकालीन हिन्दी शिविरों के अध्ययन में पाया कि वहाँ सबसे अनुभवविहीन और विषयगत शिक्षण भेजे गए थे। डोगरा (1960) ने पता लगाया कि सेवारत प्रशिक्षण के प्रति शिक्षकों का सामान्य भ्रूकाव ता नहीं था किन्तु जिनमें अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक रुझान था वे इन कार्यक्रमों में अपूर्व उत्साह रखते थे। दुर्गाप्रसाद माथुर (1970) ने शिक्षकों में सेवारत प्रशिक्षण के प्रति आशेष पाया, मगर विचार विमर्श के बाद वे इसकी उपयोगिता स्वीकार भी कर लेते थे ऐसा विदित हुआ। उनकी कठिनाइयाँ में आर्थिक निवेश, अवकाश की क्षति और प्रशिक्षणकाल में मुक्त विचरण की क्षति के कष्ट प्रमुखतया उभरे। येनी (1960) ने मालूम किया कि 80% अध्यापक केवल प्रशासनिक दबाव तथा अनिवार्यता के दबाव से इन कार्यक्रमों में भाग लेते थे। वावरा (1969) ने सेवारत प्रशिक्षण का तात्कालिक लाभ पुरुष व महिला दोनों पर समान रूप से पाया, मगर वर्ष भर के समय में भ्रूसन की गति भी उतनी ही तीव्र पाई। जबकि नम्बर (1970) बताते हैं कि सेवारत अभिनवन पाठ्यक्रमों से शिक्षकों के विषय ज्ञान और उनकी व्यवसाय दक्षता में अभिवृद्धि हो रही थी।

समाधानाएँ और सुझाव

इन अध्ययनों के प्रवृत्ति निरूपण से यह बात उभरकर सामने आती है कि इस क्षेत्र में कम से कम इतनी तो उत्साहप्रद बात निकली है कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रति आस्था का अभाव नहीं है। इतना अवश्य है कि प्रशिक्षण का जितना सकारात्मक प्रभाव शिक्षण पद्धतियाँ और कक्षा व्यवस्था पर है उतना विषय ज्ञान और गतिशीलता पर नहीं। उधर या तो स्कूलों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रति निष्ठा नहीं बनी या फिर नौनों स्तरों पर तालमेल की कमी रही है। अत्यन्त आवश्यकता तो यह है कि स्कूल और प्रशिक्षण संस्थाओं को परस्पर निबट लाने के उपायों पर अनुसंधान हो। सेवारत प्रशिक्षण की राजस्थान में जो प्रवर्तनकारी भूमिका रही है, वह आवश्यकता तो है मगर उससे पूर्व प्रशिक्षण का स्कूलों में व्यवहार में डालने वाला मध्य नहीं मिलती। पूर्व प्रशिक्षण में जो कमियाँ सामने आई हैं यथा—सिद्धान्त विषयों का व्यावहारिक पृष्ठभूमि से अलगव, महामो प्रवृत्तियों की उपेक्षा, स्वयं प्रशिक्षण संस्थानों में विविधता पारम्परिकता—इन सबके निराकरण की आवश्यकता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह विस्मयकारक ही है कि प्रशिक्षण संस्थाओं में ये सब सर्वक्षणोत्तम अनुसंधान तो हुए हैं मगर कहीं भी कोई प्रायोगिक प्रायोजना को लेकर किसी नवाचार को प्रतिपादित करने की चेष्टा नहीं हुई। इस तथ्य में प्रशिक्षण और अनुसंधानों का प्रथापालन प्रवृत्ति का आभास होता है। अधिवर्तन अनुसंधानों में प्रश्नावली मतवर्ती द्वारा ही तथ्य सारलन का सहारा लिया गया है। शिक्षण अभ्यास, प्रशिक्षण संस्थाओं की कार्यवली व्यवहार मोचा और कार्मिक दौचा का वायकारण भावी या परिणाम भावी अध्ययन

शिक्षा का दत्ता। प्रतिभालय तथा वे मानव संसाधन का मात्र निराकरण का धर्म ही नहीं बना है। और प्रतिभालय-आयुर्वेद की राशिकरिज्ञता का मान का प्रयत्न भी बना है। शिक्षण संस्थाओं के मानवसाधन का बाधक है। मगर स्कूल और प्रशिक्षण संस्थाओं के बीच सम्बन्ध समन्वय का स्थापना उभागत की धर्म शिक्षा का नहीं है। निराला का अभिवृत्ति कठिनायों उत्तरा। संस्थाओं के रूप में मात्र गुण जा उनमें महत्ता निष्ठा और संस्था पत्र कर।

रम्भुत शिक्षा प्रशिक्षण बहुत व्यापक क्षेत्र है और जगत् प्रतिस्पर्धा धर्म की मन्त्रा और संस्थाओं भाग भी धर्म है। अनुसंधान का स्वरूप धर्म प्रयोजन मन्त्रा है। और यह व्यापकता धर्मगत पत्र है। (जगत् धर्म धर्मगत मन्त्रा शिक्षा समन्वय के क्षेत्र में धर्म है।) उमत् प्रशिक्षण धर्म का मन्त्रा शिक्षा धर्मगत मन्त्रा मन्त्रा।

संदर्भित अनुसंधान

अध्ययन धर्म	शिक्षण कुशलता में सम्बंधित कुछ कारकों का अध्ययन एम ए राज वि वि 1974
अध्ययन गुण	छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व के कुछ पक्षों का संबंध रखने हुए उनकी पाठ्यक्रम सहायकों विद्यार्थी मन्त्रा का अध्ययन, एम ए राज वि वि 1971
अन्य निम्नलिखित	An Investigation into the Impact of B S T C Training Programme on the Trained Teachers M Ed Udaipur Uni 1965
अमरकोश	The Basic S T C Programme and the Needs of our Primary Schools M Ed Udaipur Uni 1965
अन्य धर्म	An Investigation into the Determinants of Teaching Skill M Ed Raj Uni 1970
अन्य धर्म	An Investigation into the Factors Affecting the Attitudes of Pupil teachers towards Students and the School Work M Ed Raj Uni 1969
अन्य धर्म	An Investigation into the Impact of Teacher Education Programme on the Teaching Practices of Trained Teachers M Ed Udaipur Uni 1965
अन्य धर्म	A Study into the Effectiveness of Refresher Training Centres with respect to Teachers Attainments and their Attitudes towards the Programme (Refresher Training Centres of Goner and Kishangarh) M Ed Udaipur Uni 1965

- गलहोत्रा, उषा
बी एड की छात्राध्यापिकाओं के कक्षा शिक्षण में
शाब्दिक व्यवहार का अध्ययन,
एम एड राज वि वि 1974
- गुप्ता, पुष्पादेवी
A Study of Effects of Secondary School
Teachers Personality Maturity on their
Adjustment
M Ed Raj Uni 1973
- गुप्ता बीना रानी
The Study of the Attitudes of the High
School Girl Students towards the Female
Trainees of the II Ed College,
M Ed Raj Uni 1968
- गौड, रवीन्द्रनाथ
बी एड सद्धातिक शिक्षण में उद्देश्य एवं उनकी प्राप्ति
का अन्वेषण,
एम एड, राज वि वि 1974
- चरणमेवर्सिंह
Relevance and Prognostic Value of B Ed
Examination as an Indicator of Performance
in Actual Practice in Schools
M Ed Udaipur Uni 1965
- चीहान, लक्ष्मणसिंह
माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक आर्थिक
स्थिति और उनकी व्यावसायिक कुशलता
एम एड, राज वि वि 1971
- जनकदुलारसिंह
An Investigation into the Supervision of
Selected School Subjects in Practice
Teaching
M Ed Raj Uni 1972
- जन वसंतकुमार
Evaluation of Open Air Session in Vidya
Bhawan
M Ed Udaipur Uni 1971
- जन सुधा
अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के बहालितरी प्वाइंट, शिक्षण
अनुभव व सामाजिक आर्थिक स्तर पर उनकी समस्याओं
का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि 1971
- जोशी निदेशचन्द्र
A Study of Innovations and Changes in
Teachers Colleges
Ph D (Edu) Udaipur Uni 1973
- डांगरा चमनलाल
An Investigation into the Attitudes of
Teachers towards In service Training
M Ed Raj Uni 1960
- सम्बोली कन्हैयालाल
A Study of the Block Practice Teaching Pro
gramme of a Teachers College
M Ed Udaipur Uni 1966
- तिवारा बा बी
Selection Criteria for Admission to the B Ed
Course
M Ed Raj Uni 1964

एन नरमसिंह	An Investigation into the Qualities of a Teacher M Ed Udaipur Uni 1966
एन सिधमान्न	An Investigation into the Problems of Practice Teaching Experienced by the Student Teachers of a Teachers College of Udaipur University M Ed Udaipur Uni 1967
एनपीएर अरुण	छात्राध्यापकों की स्वधारणा आदर्शानुसार एवं उपलब्धि में महत्वपूर्ण का अध्ययन, एम एड उज्जयपुर विवि 1972
राशिज आशा	A Study of Pupils Expectations from Teachers M Ed Raj Uni 1969
सीतल उत इराध	A Study of the Job of a Teacher M Ed Udaipur Uni 1965
सन्देश तन्नायाज	राजस्थान के अभिनवन प्रशिक्षण तथा उनका अनुभवों कायम का प्राथमिक शास्त्राध्यक्ष पर प्रभाव का अध्ययन, एम एड राज विवि 1970
नारायण	A Comparative Study of Fair Groups Under standing the Nature of Science M Ed Raj Uni 1974
पद्मा निमरा	A Study of Factors Affecting Theory and Practice Results of B Ed Examination M Ed Raj Uni 1973
प्रमोदकुमार	A Comparative Study of Attitude towards Teaching of Science and Non Science Student Teachers M Ed Raj Uni 1974
पाराशर मनु	छात्राध्यापकों के व्यक्तिगत पारस्परिक मूल्यों के सहम म अनुशासन के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन, एम एड, राज विवि 1971
पाराशर श्यामसुन्दर	राजस्थान में प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण हनु विद्यालयों एवं पत्राचार पाठ्यचर्या का तुलनात्मक अध्ययन, एम एड उज्जयपुर विवि 1972
पादुजा कीशया	Diagnosis of Language Errors of Student Teachers in Training Schools M Ed Udaipur Uni 1968
बगल गुरुनारा	Relevance of Aptitude and Intelligence with Teaching Success at the B S T C Level M Ed Udaipur Uni 1966
बगल नृनारा	छात्राध्यापकों की अभिरुचियों एवं सामान्य तथा अभ्यास सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन, एम एड राज विवि 1970

बूब, पुरपात्तमन्म	An Investigation into the Prevalence of Anxiety in Student Teachers of Rajasthan M Ed Raj Uni 1968
वेणी, रणदीपसिंह	Evaluation of In Service Teacher Training Programmes M Ed Raj Uni 1960
बोलिया, पुष्पा	उदयपुर के तीन बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों में प्रायोगिक कार्यक्रम के संगठन का अध्ययन, एम एड उदयपुर वि वि, 1974
बाहुरा डी आर	Teacher Education at Primary Level in Rajasthan SIE Udaipur 1971
भटनागर गणपतसिंह	The Role of the Supervisory Staff in the Follow up Programmes of In Service Teacher Education M Ed Udaipur Uni 1967
भट्टारी, पुष्पलता	A Critical Study of Statements of Objectives of Science Lessons M Ed Udaipur Uni 1973
भीमसिंह	अध्यापका के प्रशिक्षणकालीन एवं सेवाकालीन सफलताओं के मापन में सह सम्बंध, एम एड, राज वि वि, 1972
मनमाहन कौर	A Study of the Motivating Factors for the Selection of Teaching Profession by the Teachers M Ed Raj Uni 1968
माधुर दुगाप्रसाद	A Study of the Attitudes of Secondary School Teachers towards the In Service Training Programmes through Specialised Agencies M Ed Raj Uni 1970
माधुर नीना	The Effect of Adjustment Orientation Programme on the Adjustment Behaviour of B Ed Students M Ed Raj Uni 1974
माधुर मीरा	An Investigation into the Reactions of Vacation Course Students towards their B Ed Programme M Ed Jodhpur Uni 1970
माधुर, सज्जनराम	A Study of the Expectations of the Secondary School Teachers of Udaipur Area from the Programmes of the Extension Services Department M Ed Udaipur Uni 1966
मान स्वी-दरसिंह	Relationship between External Examination Marks and Internal Assessment of Junior Basic Student Teachers M Ed Raj Uni 1964

- माहेश्वरी श्यामराव
Problems of Trained Teachers in Service and their bearing on Teacher Education Programme
M Ed Raj Uni 1962
- मिशन प्रशिक्षण
A Study of the Expectations of Secondary School Teachers from the Teachers College Programmes
M Ed Udaipur Uni 1966
- महता यन्त्रभक्ति
राजस्थान के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के शैक्षणिक व्युत्पत्ति एवं अध्ययन
एम एड राज विवि 1970
- महता की रण
Status Study of Teacher Training Institutions at Primary level
SIF Udaipur 1965
- महोपा उमिदा
छात्राध्यापकों के अध्ययन-विकास एवं उनके कारण व्यवसाय पर रहने वाले प्रभाव का अध्ययन
एम एड राज विवि 1973
- माता कामधेयराय
A Study of Some Correlates of Effective Practice Teaching in Teachers Training
M Ed Raj Uni 1968
- रमा प्रवीर
A Study of the Attitudes of Science Teachers towards Science and Scientists
M Ed Paj Uni 1973
- राज शिक्षा संस्थान
शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों में शिक्षण विभाग उदयपुर की शैक्षणिक परीक्षा सन 1966 के व्यावहारिक भागों (हिन्दी) का अध्ययन 1968
- राजीव रजनी
शिक्षण व्यवसाय के प्रति शिक्षक-अभ्यास छात्राध्यापकों की प्रतिक्रिया
एम एड उदयपुर विवि 1974
- राज म. क. गोविन्द
History and Problems of Teachers Training in India
M Ed Raj Uni 1954
- रानी विमलाकुमारी
The Need Structure of Student Teachers
M Ed Raj Uni 1970
- तीनादिश्वरी
Mutual Expectations of Pupil Teachers and Teacher Educators in Training Colleges
M Ed Udaipur Uni. 1966
- वमा जयश्याम
अध्यापन-अभ्यास के समय सम्बद्ध विद्यार्थियों के बाधा एवं समस्याएँ,
एम एड, राज विवि, 1972
- वमा मानूराम
A Study into the Relationship of Some Correlates of Teaching Ability of Student Teachers in J H T Schools with a view to Improve the Methods of Selection and Guidance of Prospective Teachers
M Ed Raj Uni 1962

- वली, उपामुंदरी
Supervision and Evaluation of Practice Teaching Programme in a Teachers College A Case study
M Ed Udaipur Uni 1966
- वाजपेयी अवधविहारी
शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय, मसूदा (अजमेर) की याव
हारिक परीक्षा 1966 के हिंदी पाठों का अध्ययन
राज्य शिक्षा सस्थान, उदयपुर, 1967
- वावल, कुमुदिनी
ग्रीष्मकालीन हिंदी प्रशिक्षण शिविर का अध्यापकों की
यावसायिक क्षमता पर प्रभाव
एम एड, उदयपुर वि वि 1974
- व्यास, भरवलाल
An Investigation into the Qualities of Student Teachers of Teachers Colleges of Udaipur University
M Ed Udaipur Uni 1967
- व्यास, शशिशेखर
राजस्थान में शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों की कार्य
क्षमता
राज्य शिक्षा सस्थान, उदयपुर, 1974
- व्यास, वयामसुन्दर
How B Ed Students Meet Their Expendi-
ture
M Ed Udaipur Uni 1969
- विजयवर्गीय डी पी
An Investigation into the Programmes of the Extension Services Centres for Primary School Teachers in Rajasthan
M Ed Udaipur Uni 1966
- विश्वविजयसिंह
Contribution of Various Agencies to the In Service Programme of Teacher Education in Rajasthan
M Ed Udaipur Uni 1969
- वीरेन्द्रसिंह
A Comparative Study of the Organisation of Secondary Teachers Training Colleges in Rajasthan and Punjab
M Ed Udaipur Uni 1965
- शमा, अम्बिकाप्रसाद
Human Relationship and Pupil Performance A Study of Teacher pupil Relationship and its Impact on Pupils Performance
M Ed Udaipur Uni 1966
- शमा अम्बिकाप्रसाद
Development of Professional Education in Rajasthan
Ph D (Edu) Udaipur Uni 1972
- शमा आर क
Guidance Needs of Student Teachers
M Ed Raj Uni 1958
- शर्मा उपारानी
उदयपुर के शिक्षक महाविद्यालय में भाषा अध्यापन का
निर्देशन एवं परिवीक्षण,
एम एड उदयपुर वि वि 1972
- शर्मा क हैयालाल
A Study of Adjustment Difficulties of Student Teachers in S T C Schools
M Ed Udaipur Uni 1967

- शर्मा सुमुक्त
राजस्थान में माध्यमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु विद्यार्थियों एवं प्रोफेसरों की वातावरण का अनुसंधान अध्ययन,
एम एड उदयपुर वि वि 1974
- शर्मा समर
A Study of the Pattern of Supervision and Evaluation of Practice Teaching in a B S T C School
M Ed Udaipur Uni 1967
- शर्मा बजरंगनाथ
An Investigation into Creative Teaching in Practice Teaching
M Ed Raj Uni 1972
- शर्मा मन्मथनाथ
An Investigation into the Achievement and Attitudes of S T C Student Teachers towards the Profession
M Ed Raj Uni 1967
- शर्मा मोतीराम
An Investigation into the Objectives of Practice Teaching and their Realization
M Ed Raj Uni 1974
- शर्मा बी एम
A Study of the Economic Status of the Trainees in Elementary Teacher Training Institutions of Rajasthan
SIE Udaipur 1971
- शर्मा शिवकुमार
10 Case Studies of Elementary Training Institutions in the State
SIE Udaipur 1966
- श्रीमाना भैरवनाथ
राजस्थान में शिक्षक प्रशिक्षण विद्यार्थियों की प्रवृत्ति सम्बन्धी समस्याएँ एक अध्ययन
एम एड उदयपुर वि वि 1969
- सक्सेना रमणप्रकाश
A Comparative Study of Achievement of Student Teachers and Delta Class Students in Basic Subjects
M Ed Udaipur Uni 1968
- सक्सेना गणेशनाथ
Adjustment of Pupil Teachers at Vidya Bhawan Teachers College Udaipur
M Ed Raj Uni 1957
- सरिया गणपत
विद्यार्थक शिक्षक महाविद्यालय उदयपुर द्वारा संचालित व्यावहारिक अध्ययन अध्यापन का मूल्यांकन,
एम एड उदयपुर वि वि, 1972
- साधु पा गा
Expectations of Headmasters of Secondary Schools from T T College Programmes
M Ed Udaipur Uni 1965
- सामर महेंद्रसिंह
A Comparative Study of the Creative Talent of Science and Non Science Student Teachers
M Ed Raj Uni 1974
- सिधु मुपमा
सहाय, थैली, साधु व अध्ययन अनुभव का बी एड परीक्षा में कक्षा पर प्रभाव,
एम एड राज वि वि, 1973

- सीताराम *An Investigation into Some Factors of Teachers Training and its Relationship with Other Variables*
M Ed Raj Uni 1966
- मुखवाल, कलाशदेवी अध्यापिकाया द्वारा शिक्षण व्यवसाय के घयन के कारण,
एम एड, उज्जपुर वि वि 1971
- मुम्बाली, किरण *A Study of the Supervisory Remarks in Science Teaching*
M Ed Udaipur Uni 1972
- सोनार ऋद्धिकरण *A Study of Work Load on the Staff of Teachers Training Schools in Rajasthan*
M Ed Udaipur Uni 1967
- हल्गे, शिल्पे धना *A Study of the Characteristics of Science Teachers Implications for Teacher Education*
M Ed Raj Uni 1973



छात्र अनुपात 1 20 था, जबकि सरकारी विद्यालया म 1 17 5 था। किन्तु निजी सघात्रा म पढने वाले विद्यार्थिया का परीक्षा परिणाम सरकारी विद्यालया के विद्यार्थिया की तुलना म गुणात्मक तथा सख्यात्मक दृष्टि स उत्तम रहा। परन्तु 1968 म जमदीश प्रसाद वर्मा ने पाया कि जहाँ भारत मे 32 2% विद्यालय निजी सस्थात्रा द्वारा चलाए जाते थे, राजस्थान म निजी सस्थात्रा का प्रतिशत 2 9% था। 1974 म मुरलीमोहन शर्मा ने पाया कि उदयपुर शहर की 62% शिक्षासस्थाएँ गर सरकारी थी। अध्यापक-छात्र अनुपात 1 35 था, सरकारी स्कूलो की तुलना मे साधन सुविधाएँ इनमें अच्छी थी।

राजस्थान म 1959 म प्रशासनिक विवेकीकरण के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र मे शिक्षा प्रशासन पचायत राज ब्यवस्था को सौंपा गया। 1963 में नायक शिक्षा समिति न विवेकीकरण के इस नवीन प्रयोग के सदम में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति का जायजा लिया था। इस आयाम न शिक्षानुसधानात्रा का भी ध्यान आकर्षित किया। मेहता (1962), भामू (1965) द्विवेदी (1966), कौशिक (1969) तथा देवल (1973) न इसके विभिन्न पक्षों का लेजर अध्ययन किए। मेहता न राज्य एवं पचायत समितिया के बीच अछड़े सबधा के अभाव की स्थिति पाइ तथा मालूम किया कि मानवीय सबधो की वित्तीय तथा सगठनात्मक समस्याएँ इससे बढीं। भामू ने शिक्षा प्रसार अधिकारियो में द्विद्वैतमक स्थिति देखी तथा प्रशासन के विभिन्न स्तरा के बीच मधुर सबधा का अभाव पाया। द्विवेदी न अध्यापका का हौसला गिरा हुआ पाया तथा परिवीक्षण पबस्था में ह्रास के लक्षण देखे किन्तु यह भी पाया कि अध्यापका की उपस्थिति में बढोतरी हुई उहें बेगन समय पर मिलन लगा था तथा ग्रामीण सागा न शिक्षा के महत्व को अधिक समझता शुरु कर दिया था। व शिक्षा में अधिक रुचि लेने लग थ। कौशिक न अनुसार पचायत समिति की शिक्षा समिति में 78 / सदस्य उच्च प्राथमिक शिक्षा स्तर तक शिक्षित थे समिति की बढेँ कारण पूरा न हान के कारण प्राय स्थगित हो जाती थी। देवल के अनुसार पचायत समिति प्रशासन न अतगन सवारत अध्यापक सरकारी स्कूला में जाना ज्यादा पमद करत थ। स्कूला में पचा तथा नतात्रा का बचस्व बढ गया था। अध्यापको को शिमेतर काय करन का बाध्य होना पडता था। बी आर जोशी (1967) न एक पचायत समिति की स्कूला पर विवेकीकरण के प्रभाव का अध्ययन करन पर पाया कि अध्यापका को सरकारी अध्यापका के समान ही सुविधाएँ प्राप्त थी परिवीक्षकगण सदास नही थे कि शिक्षका का मागदशन कर सके। अध्यापको क धन में राजनतिक प्रभाव काम करता था 93% अध्यापक सरकारी सघा म जाना चाहते थे। भटनागर (1967) ने बडगाँव पचायत समिति के अन्तगत चल रहे प्राथमिक विद्यालया के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उही तथ्यो की पुष्टि की।

प्रबधगत विकास एवं वर्तमान स्थिति

शिक्षा में निजी सस्थात्रा की भूमिका न सदम में पाडे (1953) न विद्याभवन धसिक स्कूल का तथा मूँदरा (1970) न विद्याभवन सासायटी का विकासात्मक अध्ययन व उनकी उत्लेखनीय प्रवृत्तिया तथा मागदान की समीक्षा की। पाडे ने मालूम

मन्त्रालय दृष्टि में शिक्षा राज्य के अतिरिक्त क्षेत्र में आता है किन्तु केंद्र द्वारा माध्यमिक शिक्षा के माध्यम में परीक्षा नियंत्रण समिति के अधीन के प्रश्न का उत्तर जाता (1959) में जान लिया कि केंद्र शिक्षा का मन्त्रालय में शिक्षा पर नियंत्रण कर रहा था। उसने अनेक अभिवृद्धि तथा विवरणों के अनुमान आया कि केंद्र शिक्षा मन्त्रालय महत्वपूर्ण शिक्षा के रूप में नियंत्रण कायम में मन्त्रालय में रहें। समितियों (1959) में अभिवृद्धि के अध्ययन तथा मन्त्रालयों के शिक्षा में प्राप्त शिक्षा के विवरणों में यह निष्कर्ष निकला कि केंद्र शिक्षा तथा स्थानीय समितियों का शिक्षा में मन्त्रालय हाता जाता। समितियों (1962) में शिक्षा प्रशासन के क्षेत्रों के अध्येता अध्ययनों का विवरण के रूप में शिक्षा तथा पाया कि केंद्र शिक्षा के नाम पर शिक्षा में नियंत्रण उत्पन्न हुआ था। उन्होंने यह भी मालूम किया कि शिक्षा मन्त्रालय प्रशासन में भी प्रभुत्व था। स्वतंत्रता पश्चात् के शिक्षा प्रशासन का विकास मन्त्रालय के अधीन के उपायमन्त्रालय (1958) में मालूम किया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय शिक्षा पर मन्त्रालय के अतिरिक्त मामूली या किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् बहुत से शिक्षा में मन्त्रालय शिक्षा मन्त्रालय की शिक्षा के मद तथा उनका शिक्षा 66% में उत्तर 234% में मद। राजस्थान के राज्य में चार्ज (1953) में मन्त्रालयों का शिक्षा में निम्न शिक्षा मन्त्रालय का मन्त्रालय पूरा मूल्यांकन था। यह निम्न शिक्षा मन्त्रालयों के लिए रहा था। यह मन्त्रालय मन्त्रालय में यह 20% शिक्षा के निम्न शिक्षा मन्त्रालयों के लिए। निम्न शिक्षा मन्त्रालयों में अत्यधिक

छान अनुपात 1 20 था, जबकि सरकारी विद्यालयों में 1 175 था। किंतु निजी संपादा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में गुणात्मक तथा सत्यात्मक दृष्टि से उत्तम रहा। परंतु 1968 में जगदीश प्रसाद वर्मा ने पाया कि जहाँ भारत में 32.2% विद्यालय निजी संस्थाओं द्वारा चलाए जाते थे, राजस्थान में निजी संस्थाओं का प्रतिशत 2.9% था। 1974 में मुरलीमोहन शर्मा ने पाया कि उज्जयपुर शहर की 62% शिक्षा संस्थाएँ सरकारी थीं। अध्यापक छान अनुपात 1 35 था, सरकारी स्कूलों की तुलना में साधन सुविधाएँ इनमें अच्छी थीं।

राजस्थान में 1959 में प्रशासनिक विवेकीकरण के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा प्रशासन पचायत राज व्यवस्था का सौंपा गया। 1963 में नायक शिक्षा समिति ने विवेकीकरण के इस नवीन प्रयोग के सन्दर्भ में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति का जायजा लिया था। इस आयोग ने शिक्षानुसंधाताओं का भी ध्यान आकर्षित किया। मेहता (1962) भामू (1965), द्विवेदी (1966) कौशिक (1969) तथा देवल (1973) ने इसमें विभिन्न पक्षों को लेकर अध्ययन किए। मेहता ने राज्य एवं पचायत समितियों के बीच अछड़े सबंधों के अभाव की स्थिति पाई तथा मालूम किया कि मानवीय सबंधों की, वित्तीय तथा संगठनात्मक समस्याएँ इससे बनीं। भामू ने शिक्षा प्रसार अधिकारियों में द्विजात्मक स्थिति देखी, तथा प्रशासन के विभिन्न स्तरों के बीच मधुर सबंधों का अभाव पाया। द्विवेदी ने अध्यापकों का हौसला गिरा हुआ पाया तथा परिवीक्षण व्यवस्था में ह्रास के लक्षण देते किंतु यह भी पाया कि अध्यापकों की उपस्थिति में बढ़ोतरी हुई, उन्हें बतन समय पर मिलन लगा था तथा ग्रामीण लोग न शिक्षा के महत्व का अधिक समझना शुरू कर दिया था। व शिक्षा में अधिक रुचि लेने लगे थे। कौशिक के अनुसार पचायत समिति की शिक्षा समिति में 78/ सदस्य उच्च प्राथमिक शिक्षा स्तर तक शिक्षित थे, समिति का बैठकें कौम पूरा न होने का कारण प्रायः रुग्ण हो जाती थी। देवल के अनुसार पचायत समिति प्रशासन के अस्तित्व सवारत अध्यापक सरकारी स्कूलों में जाना ज्यादा पसंद करते थे। स्कूलों में पचा तथा नताओं का बचस्व बढ़ गया था। अध्यापकों को शिथिल काम करने का बाध्य होना पड़ता था। बी. आर. जोशी (1967) ने एक पचायत समिति की स्कूल पर विवेकीकरण के प्रभाव का अध्ययन करने पर पाया कि अध्यापकों को सरकारी अध्यापकों के समान ही सुविधाएँ प्राप्त थीं परिवीक्षण संग्रह नहीं थे कि शिक्षकों का भागदशन कर सकें। अध्यापकों के धन में राजनतिक प्रभाव काम करता था 93% अध्यापक सरकारी सेवा में जाना चाहते थे। भटनागर (1967) ने बड़गाँव पचायत समिति के अन्तर्गत चल रहे प्राथमिक विद्यालयों के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उहाँ तथा की प्रुष्टि की।

प्रबधगत विकास एवं यतमान स्थिति

शिक्षा में निजी संस्थाओं की भूमिका के मद में पाडे (1953) ने विद्याभवन यंत्रिका स्कूल का तथा गुँदेडा (1970) ने विद्याभवन भोसायटी का विकासात्मक अध्ययन व उनकी उत्तमनीय प्रवृत्तियों तथा योगदान की समीक्षा की। पाडे ने मालूम

रिया रि विज्ञानय ने वर्षा िगा यात्रा वा स्थान द यात्रा-योजना वा अनुक्रम टाग
पर मरणापरत नाम रिया या ।

[illegible][illegible]

प्रशान्तिश्च सर्वेषां एवं समस्तस्य॥

अध्यापन व व्यावसायिक विभाग एवं कार्य-मनुष्य में मध्यस्थता प्रणाली (Value System) तथा उनका अर्थ अनुसूत समझाया जा रहा है। इस प्रकार का यह काम किया गया है। साथ ही (1960) ने बताया कि लगभग तीन चौथाई अध्यापक संगठन कायदा के लिए, अभिभावकों की सम्मानना तथा पत्राचार नियमावली के कारण अपने व्यवसाय (job) से असंतुष्ट थे। उन्नीसवीं सदी (1967) ने मान्यता दी कि शिक्षण सामग्री का अभाव अध्यापकों को शिक्षा के प्रति उत्साहित करता था। समय विशेष क्षेत्र में शैक्षणिक परिवर्तन उनके मनोबल के कारण था। रिपोर्ट द्वारा (1968) ने और कहा (1972) ने शिक्षकों की आधुनिक क्षमता प्रवृत्तियों के प्रति अभिवृद्धि का अनुभव पाया तो हरचरणशेखर (1970) ने माध्यमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं का अध्यापकों की तुलना में अपने व्यवसाय में अधिक संतुष्ट पाया। जिन अध्यापकों ने स्वच्छता अध्यापक बनने का फैसला किया था वे उन अध्यापकों का अवस्था जाँच करके उन्हें कारण सहित व्यवसाय में धारा दे—अधिक संतुष्ट थे। सभी (1972) ने अनुसार यह पाया कि व्यावसायिक साक्षरता बढ़ाने का मात्र अध्यापिकाओं से अधिक थी जबकि अध्यापिकाएँ उपयोग करने की अधिक गौरीत पाई गई। भक्तानी समा (1967) ने अनुसार 23% प्राथमिक शिक्षिकाओं का व्यावसायिक अध्यापकों ने सर्वप्रथम एक

भी पुस्तक नहीं पढ़ी थी। पुरोहित (1969) ने यह निष्कर्ष निकाला कि कम उम्र वाले अध्यापकों का अपने व्यवसाय से कम मतोप था, मगर उम्र बढ़ने के साथ साथ व्यवसाय के प्रति मतोप बढ़ता जाता था। अधिन अधिन योग्यता वाले अध्यापक शिक्षण व्यवसाय के प्रति तुलनात्मक रूप से अधिक समतुष्ट पाए गए। गालव (1969) ने वरिष्ठ अध्यापकों की तुलना में सहायक अध्यापकों को अपने व्यवसाय के प्रति अधिक समतुष्ट पाया। उन्होंने अध्यापकों के व्यावसायिक मूल्या तथा व्यवसाय के प्रति मतोप के बीच सायक सहमद नहीं पाया। मांजीनाल शर्मा (1970) ने अनुसार व्यवसाय में प्रवेश के समय ता अध्यापकों के आशा उच्च थे, किन्तु अनुभव प्राप्त करने तथा कार्यरत रहने के बाद इन आदशों में ह्रास होता गया। यादव (1971) ने पाया कि अध्यापकों का स्तर उसके आदशों के आधार पर नहीं अपितु उसकी योग्यता तथा गुणों के आधार पर मांका जाता था। पट्टा (1974) ने अध्यापिकाओं की समस्याओं के अध्ययन से मालूम किया कि उनमें से अधिकांश ने अधिक कठिनाई में तंग आकर यह व्यवसाय छोड़ा था। झाड़ा (1974) ने भी इस तथ्य की पुष्टि की।

चौधरी (1974) ने राजस्थान व हरियाणा राज्यों के अध्यापकों की समस्याओं की तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि दोनों ही राज्यों के अध्यापक समय पर वार्षिक वेतन वृद्धि न मिलने, वेतन का भुगतान न होना, सत्र भर स्थानांतरण होते रहने तथा शिक्षण सामग्री के अभाव के कारण असंतुष्ट थे। कानाशनाय व्यास (1967) ने पाया कि गरीब सरकारी विद्यालयों के शिक्षक स्वतंत्र अभिव्यक्ति से डरते थे तथा प्रत्येक उनके कार्यों में दखलबाजी करता था। लाल (1967) ने इसी तथ्य की पुष्टि की तथा यह भी मालूम किया कि वे सरकारी स्कूलों के अध्यापकों की तुलना में अपने को कम सुरक्षित अनुभव करते थे। जाशी (1966) ने शिक्षक एवं प्रधानाध्यापकों की प्रभावी भूमिका में स्थानांतरण नीति का आघात पाया। गान्धिर (1967) ने स्थानांतरण में राजनीतिक दखलबाजी को प्रभावशील पाया। अध्यापकों के स्थानांतरणों के अनेक कारणों में पक्षपातपूर्ण रवय उनके कार्यक्षमता में कमी, घरेलू परिस्थितियाँ आदि भी थे। प्राथमिक स्तर पर सरयनारायण शर्मा (1967) ने अध्यापकों की तुलना में अध्यापिकाओं का अधिक समस्याग्रस्त पाया। एक अध्यापकीय विद्यालयों की समस्याओं पर एकमात्र शोध अध्ययन मवरला शर्मा (1966) का उपलब्ध है। तदनुसार एक अध्यापकीय विद्यालयों के अध्यापकों का कार्यभार से अधिक ग्रस्त थे। 80% से अधिक विद्यालयों में फर्निचर आदि की कमी से अध्यापकों परेशान थे। त्रिवेदा (1967) ने शिक्षा प्रशासन पर विभिन्न स्तरों के दबावों के अध्ययन में मालूम किया कि शिक्षा प्रशासन पर दबावों का औसत 42.3% था। स्थानांतरण के दबाव के 144 मामलों में से 68 सामने आए। दबावों के कई रूपा तथा उनके प्रभावों की जानकारी इस अध्ययन से मिलती है।

छानों में अनुशासनहीनता की समस्या को लेकर द्रोण (1969) मंडावत (1969) तथा रामदेव (1970) द्वारा किए गए तीन शोध उपलब्ध हैं। द्रोण (1969) के अनुसार छात्रों में अनुशासनहीनता के लिए 69% मामलों में राजनीतिक दल जिम्मेदार थे।

से बतलाते थे तथा उनमें पहल करने की भावना नहीं थी। इस पक्ष पर भूतयाकनपरक विस्तृत सर्वेक्षण राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीकानेर के तत्वावधान में मेहता मिश्रा तथा वर्मा ने 1972 में किया। शोधकर्त्ताग्रा ने पाया कि 53% विद्यालय सगम वार्षिक योजना बनाते थे, 49% में विषय समितियाँ कायम थी, 64% में प्रदर्शन पाठ देने की व्यवस्था थी, किन्तु ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय सगमा में दिए गए प्रदर्शन पाठों का औसत 15 था, जबकि शहरी क्षेत्र में 6 का औसत था। इन्हें अधिकांशतः कनिष्ठ एवं कम अनुभव वाले अध्यापक लेते थे। 56% विद्यालय सगम उत्सव परिवार के रूप में मनाते थे तथा उनमें समान परीक्षा व्यवस्था थी। सगम 5% विद्यालयों के अध्यापक अन्य विद्यालयों से प्राप्त पुस्तकों साधना आदि का लाभ उठाते थे। सहयोग का लाभ न उठाने का एक प्रमुख कारण था अध्यापकों की उदासीनता। उसी वर्ष 1972 में ही चित्तौड़गढ़ जिले के सर्वेक्षण के आधार पर श्रीवास्तव व वर्मा ने मालूम किया कि 74% अध्यापक तो विद्यालय सगमा की प्रवृत्तियाँ सही अनभिज्ञ थे। राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय बीकानेर के प्रस्तार सेवा विभाग द्वारा 1974 में किए 272 विद्यालय सगमा के सर्वेक्षण से पता चला है कि 91/ विद्यालय सगमा में प्रदर्शन पाठ के कार्य आयोजित हुए थे, किन्तु प्रदर्शन पाठ देने वाले अधिकांश अध्यापक सहायक अध्यापक ही थे। 170 विद्यालय-सगमा में विषय समितियाँ गठित थीं। 135 विद्यालय सगमा में उपकरणों का आदान प्रदान हुआ था। 95 ने सामूहिक उत्सव कार्यक्रम आयोजित किए।

व्यास (1969) ने प्रधानाध्यापक वाकपीठा का अध्ययन करके मालूम किया कि वे शिक्षक समस्याओं के समाधान पर अधिक ध्यान देते थे, यावसायिक उन्नयन में प्रभावी रूप में सहायक थे किन्तु वित्तीय कठिनाइयों से वे बुरी तरह ग्रस्त थे।

शिक्षा प्रशासन एवं परिवीक्षण

इस वक में एक और शिक्षा परिवीक्षण का भूमिका की लेकर तथा दूसरी ओर उनसे की जान वाली अपेक्षाओं की लेकर शोध-कार्य उपलब्ध है। पाठक (1974) ने इन्दौर (मध्यप्रदेश) के विद्यालयों के सन्दर्भ में ज्ञात किया कि परिवीक्षण का प्रशासनिक एवं परिवीक्षण कार्यक्रम बड़ा हुआ था। व पुरानी पद्धति से ही निरीक्षण करते थे। पानेरी (1966) ने राजस्थान में इसी पक्ष पर अपने अध्ययन में पता किया कि निरीक्षण का रवया सहानुभूतिपूर्ण नहीं था वे अधिकारी का सा व्यवहार करते थे शिक्षकों की सहायता करने की दृष्टि उनमें नहीं थी। वे प्रायः दैनिक प्रशासनिक कार्यों में ही उलझे रहते थे। चौधरी (1974) ने मालूम किया कि पन्तल परिवीक्षण के अध्यापकों के व्यावसायिक उन्नयन पर तो प्रभाव पड़ा किन्तु उससे पाठ निर्माण योजना में प्रभावी भागदर्शन नहीं मिला। हाँ अध्यापकों की प्रश्न प्रविधि में सुधार हुआ। के एल शर्मा (1961) के अनुसार परिवीक्षण वस्तुतः निरीक्षण था। सहयोग व सहायता करने की अभिवृत्ति परिवीक्षकों में नहीं थी।

प्राथमिक विद्यालय स्तर पर यादव (1966) ने पाया कि शिक्षा प्रसार अधिकारी माह में 39% दिन ही परिवीक्षण कार्य में लगाते थे। लड्डा (1967) के

अनुसार शिक्षा प्रसार अधिकारी को परीक्षा के लिए अपेक्षित समय नहीं मिलता था, क्योंकि वे पचासत सप्ति के अथवा वर्षों में व्यस्त रहते थे। विद्यालयों की संख्या का अनुपात अधिक से जान से सम्पूर्ण प्रणाली की समस्याएँ अनुभव की जाती थी।

दरबारीलाल (1967) ने सफल विद्यालय प्रशासन के 23 गुणों का पता लगाया। अतीरमानू (1971) ने पाया कि अध्यापकों के आदर्श परीक्षाओं में उच्च बौद्धिक स्तर भावात्मक वृत्ति के सामाजिक गुणों का पता दे दिया, जहाँ अध्यापिकाओं ने परीक्षाओं की मायमायिक कुशलता एवं शारीरिक सुष्ठुता का पता दिया। गोपालदास शर्मा (1974) ने अध्ययन के आधार पर परीक्षाओं से अध्यापकों का मित्र बन कर उसकी महत्ता करने की छात्रों के स्थानीय नेताओं ने अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने की अपेक्षा की। जनार्दनप्रसाद शर्मा (1968) ने प्रधानाध्यापकों के दृष्टि का अध्ययन करके मालूम किया कि जिन प्रधानाध्यापकों का दृष्टिकोण मनुष्यतावादी है, वे अच्छे प्रधानाध्यापक नहीं हैं तथा दृष्टि में पीछे रहते हैं। प्रधानाध्यापक मुख्यतः परीक्षाओं में मानवीय सम्बन्ध बनाने और मित्र के दृष्टिकोण स्थिति का अनुभव करते थे।

गोरी (1960) तथा वृजमाहन शर्मा (1960) ने परीक्षाओं के प्रति अध्यापकों की प्रतिक्रिया का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि विद्यालयों में परीक्षाओं के व्यस्तता में सहानुभूति का कमी थी। अध्यापकों में उनका व्यवहार के प्रति असन्तोष था।

शिक्षा प्रशासन एवं शिक्षा

स्वतंत्रता के पश्चात् तीव्र गति से शिक्षा का विस्तार हुआ है और शिक्षा शास्त्रियों एवं अध्यापकों की यह मान्यता बन गई है कि देश का विस्तार शिक्षा के प्रसार से सीधा सम्बन्धित है। अतः प्रतिवर्ष शिक्षा पर हानि बाल व्यय में प्रति व्यक्ति वृद्धि की दर क्या है उसकी उपाययोजना रितनी है ऐसी समस्याओं पर भी कुछ भाष्यकर्त्ताओं ने अध्ययन किए हैं।

उपायन (1954) ने राजस्थान में शिक्षा वित्त का अध्ययन करके पाता है कि शिक्षा पर हानि बाल व्यय का 15% राज्य सरकार चढ़ाने पर रही थी। स्थानीय निगम निजी समस्याएँ समाप्त ट्रस्ट और शेष वित्तीय व्यवस्था करते थे। शर्मा (1969) ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रति विद्यार्थी शिक्षा व्यय का गणना कर तुलना की तथा मालूम किया कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में प्रति विद्यार्थी शिक्षा व्यय शहरों के अपेक्षा बहुत अधिक था। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति दसह अक्षर व्यय का कारण अध्यापकों के अथवा कम अनुपात, अच्छे विषयों की उच्चता और। कुमारी तलमरा (1971) ने पाता है कि निजी शिक्षण संस्थाओं का प्रति दसह व्यय राजकीय शिक्षण संस्थाओं के अपेक्षा अधिक था। इस अधिक व्यय के कारण निजी शिक्षण संस्थाओं में अच्छे प्रयोगशालाएँ अच्छे पुस्तकालय, अच्छे स्तर के सामानिक वायुप्रद, अच्छे छात्रावास थे जिनके छात्रों का अक्षर मुक्ति प्राप्त होती थी।

राज्य शिक्षा सस्थान, उदयपुर के हेडा एव जोशी (1966) ने प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में प्रति इकाई व्यय का अध्ययन करके यह ज्ञात किया कि प्राथमिक स्तर पर अच्छे विद्यालय में प्रति इकाई व्यय 49.37 रुपये साधारण में 54.89 रुपये तथा हीन में 53.80 रुपये था। उच्च प्राथमिक स्तर पर अच्छे विद्यालय में प्रति इकाई व्यय 78.67 रुपये, मध्यम में 88.09 रुपये तथा हीन में 53.30 रुपये था। उच्च माध्यमिक स्तर पर अच्छे विद्यालय में प्रति इकाई व्यय 195.48 रुपये, साधारण में 241.86 रुपये तथा हीन में 154.45 रुपये था। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सुप्रबोधित अच्छे विद्यालय में चाहे वह किसी स्तर का हो, प्रति इकाई व्यय भी कम होता था और परीक्षा परिणाम भी श्रेष्ठ रहते थे।

विविध

टिक्कीवाल (1954) ने राजस्थान में शिक्षा प्रशासन के अधिकार विन्यास का अध्ययन करके मान्यता दी कि केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति से शिक्षा प्रशासन घटता था, शिक्षा के विभिन्न अभिकरणा में समुचित तारतम्य नहीं था, साक्षरता का प्रतिशत मात्र 8.4% था। जन (1960) ने भारत में उच्च शिक्षा का अन्तर्गत दशों की शिक्षा से तुलनात्मक अध्ययन करके पाता कि ब्रिटिश शासन में ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया गया था किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इस पक्ष पर समुचित ध्यान दिया जाने लगा था। बगू (1963) ने राजस्थान में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति की जम्मा और कश्मीर की शिक्षा से तुलना की तथा पाया कि राजस्थान परीक्षा सुधार कार्यक्रमों में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में, शारीरिक शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अग्रणी था।

जोशी (1969) ने शिक्षा प्रशासन में नीतिरक्षाही की भूमिका पर, तो उधर कौशिक (1972) ने अपने पीएच.डी. अध्ययन में शिक्षक संघों की भूमिका पर शोध किया। जोशी के अनुसार नीति सम्बन्धी मामलों में नीतिरक्षाही की भूमिका नगण्य थी किन्तु विन्यास में इसकी भूमिका प्रमुख थी। नीतियों पर विन्यास नियमानुसार केवल 10% मामलों में ही होता था। अधिकांश उत्तरदाताओं ने नीतिरक्षाही को नियमों में जब तक परिवर्तन करने का दोषी बताया। नीतिरक्षाही के अनुसार पक्षपातपूर्ण नियमों का कारण उन पर आने वाला दबाव था। कौशिक ने मान्यता दी कि भारत में शिक्षक संगठन प्रारम्भिक अवस्था में शिक्षक समस्याओं के समाधान पर बल देते थे, किन्तु शन-शन उनका भुक्तान शिक्षकों की आर्थिक समस्याओं के समाधान की ओर बढ़ता गया। इन संगठनों का शिक्षा के आयोजन व उसकी प्रक्रिया में नगण्य प्रभाव था, किन्तु वेतनमान बढ़वाने पर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों को सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के समान महंगाई भत्ता दिलाने उनकी सेवा शर्तों का संरक्षण दिलवाने में इन संगठनों ने सफलता प्राप्त की। आन्दोलनात्मक प्रवृत्ति इनमें देखी गई। कौशिक ने यह मान्यता दी कि इनमें आन्तरिक तथा बाहरी सम्प्रपण अवस्था का अभाव था। फलतः लोगो में इनके प्रति गलतफहमियाँ भी थी तथा इनमें अध्यापकों की अपेक्षित भावना नहीं थी।

सम्भावनाएँ एवं मुभाय

गन वाम वर्षों में शिक्षा प्रशामन क्षेत्र में 'गायकता' न प्रशामन व मानवीय संगठन पर अधिक ध्यान दिया। विभिन्न अभिकरणा की स्थिति का अध्ययन शाय का अधिक प्रिय विषय रहा। 'म तथ्य का उजागर किया गया कि कार्मिक जनता व शिक्षा काय की मानापजनन स्थिति शिक्षा का मूलभूत आवश्यकता है। स्वायत्त तथा निजी सम्प्राप्ता व अध्ययना में उह अधिक मननना दन की स्थिति स्पष्ट की गई पर विकलावरण व कुप्रभावा म वचन की आवश्यकता भी व्यक्त का गई थी।

बहु मध्यम 'गायकताओं' न (Normative survey) सर्वेक्षण प्रणाली स अध्ययन किए। सामाजिक तथा परीक्षा विधि म 'गाय' हा काद शोध किया गया। 'गाय' प्राय सामान्य विद्यालय म ही किए गए। विधि प्रकार व विद्यालय जस, पत्रिक स्कूल प्राविधिक स्कूल तथा शिक्षालयो व विद्यालयों व यादश नहीं दिए जा सक।

उपकरणों का दृष्टि स दर्शे ता प्राय मत्र 'गायकताओं' न स्वनिर्मित उपकरणों का ही प्रयुक्त किया। उगने मानसहित उपकरण बनाने अथवा बस तयार उपकरणों का प्रयोग म कम शक्ति निम्नाद।

सांख्यिक म सामान्य आकृति का ही उपयोग किया गया। प्राविधिक सांख्यिकी विद्यालयों का नगण्य उपयोग किया गया।

शोधकार्यों व अध्ययन म स्पष्ट होता है कि यदि अध्ययन व समय शोधकता विषय का गन्दाई म उत्तम का प्रयाम करत एवं उमक विभिन्न पन्ना का उभारन का प्रयाम करत ता अध्ययन और अधिक महत्वपूर्ण बन पात।

शिक्षा म नियंत्रण एवं प्रशामन व अन्तर्गत यद्यपि पर्याप्त समस्याओं पर गाय काय किए गए किन्तु शिक्षा नि ता अधिकारों व काय उमका समस्याएँ उमका विभिन्न इकाइया म मध्य उमक स्वयं व कायानय कमकारिया म अन्तर्गत पर गाय काय नगण्य हैं। 'मा प्रकार अध्यापकों व अन्तर्गत एवं मन्त्रालय तथा दन मवका व शाला प्रशामन पर प्रभाव का लकर नी 'गाय-काय' किए जान की जरूरत है। अध्यापकों की पारिवारिक एवं सामाजिक गृहस्थिति का लकर भी अध्ययना का प्रभाव है। अध्यापक अभिभावकों व अन्तर्गतों का शाला विकास पर छात्र छात्राओं व चर्चित निमाग पर उनका परीक्षा-परिणाम पर पड़न वाल प्रभाव का लकर अध्ययन भी व्यक्त है।

यद्यपि विद्यालयों की भौतिक एवं मानवाय समस्याओं पर कुछ अध्ययन किए गए हैं किन्तु शाला उन्नयन कार्यक्रम, कानानुभव मनकू एवं कीडा प्रतियोगिताएँ सांस्कृतिक एवं सामाजिक-समागह आयोजन, शिक्षागत अवकाश कार्यक्रम की उपस्थिति स्टाउट एवं गाइड आन्तर्गत का प्रभाव एन मा मी व प्रति दृष्टिकोण एवं उमका प्रभाव आदि स मवचित प्रशामनिक समस्याओं व मत्र गायकताओं की दृष्टि से उक्त रह गए हैं।

शिक्षा म विकलावरण स उत्पन्न समस्याओं न यद्यपि गायकताओं का ध्यान आवर्षित किया है और पचायत समितिया व अध्यापकों का समस्याओं शिक्षा प्रसार

शोधकारी की समस्याओं, एक अध्यापकीय शालाओं की समस्याओं पर कुछ अध्ययन उपलब्ध हैं, किन्तु पचायत समितियाँ व अध्यापकों के व्यावसायिक विकास शिक्षण-स्तर के समुपग्रह, समकक्ष राजकीय शालाओं के शिक्षण स्तर व उसकी तुलना, ग्रामीण शाला के सामुदायिक के व के रूप में विवक्षित होने के लक्ष्य की प्रगति आदि ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर शोधकर्ताओं को ध्यान देना जरूरी है। एक अध्यापकीय शालाओं की व्यवस्था एवं कार्य प्रणाली शोधकर्ताओं के लिए लगभग एक अछूता, मगर रोचक आयाम है।

परिवीक्षण के अंतर्गत, उसने प्रभाव के मूल्यांकन की दृष्टि से कोई अध्ययन नहीं किया गया। परिवीक्षण में आधुनिक तकनीक एवं उपकरणों का उपयोग एवं उपाययता, परिवीक्षण में मानव प्रयत्न व उपयोग से परिवीक्षण को सुगम एवं प्रभावी बनाने के प्रयास, स्व मूल्यांकन, प्रश्नावलियाँ के उपयोग एवं उनकी उपादेयता आदि ऐसे क्षेत्र हैं जो अब तन अछूते हैं।

राजस्थान में शिक्षा के विकास में निजी शिक्षण संस्थाओं की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन संस्थाओं ने अध्यापकों में व्याप्त असंतोष एवं उनके शोषण की घटनाएँ भी यदा-कदा प्रकाशित होती रहती हैं, किन्तु इन संस्थाओं ने परीक्षा परिणाम पर्याप्त अच्छे रहते हैं अभिभावक भी इन विद्यालयों को महत्व देते हैं, इसके पीछे क्या कारण हैं—इनका अध्ययन होना चाहिए। स्वतंत्रता के पश्चात् राज्य में अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा देने वाली निजी संस्थाओं की बाढ़ सी आ गई है उनमें प्रवेश की समस्या भी विवक्षित है किन्तु उनके प्रशासन को लेकर एवं भी शोध अध्ययन उपलब्ध नहीं है। निजी संस्थाओं की कार्य प्रणाली एवं स्थानीय समकक्ष राजकीय शिक्षण संस्थाओं की कार्य प्रणाली के तुलनात्मक अध्ययन का भी अभाव है।

शिक्षा एवं वित्त की समस्याओं पर जहाँ विवक्षित देशों में विगत बीस वर्षों में अत्यधिक अध्ययन हुए हैं, वहाँ राजस्थान में पीएच डी स्तर पर तो एक भी शाघ-कार्य अब तक नहीं हुआ, एम एड स्तर पर केवल चार शाघ अध्ययन दृष्टि में आए हैं। शिक्षा-यय एवं उत्पादकता में व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय अभिवृद्धि अंग्रेजी माध्यम की निजी शिक्षण संस्थाओं में प्रति व्यक्ति शिक्षा का व्यय, पब्लिक स्कूलों में प्रति व्यक्ति शिक्षा का व्यय एवं उसका प्रतिफल, ग्रामीण अंचल की शिक्षण-संस्थाओं में प्रति व्यक्ति-यय, प्रशासन पर हानि वाल व्यय का अनुपात, अन्य राज्यों में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर होने वाले व्यय से राजस्थान के व्यय की तुलना, शिक्षक प्रशिक्षण पर प्रति व्यक्ति-यय, महिलाओं पर होने वाला प्रति व्यक्ति व्यय एवं उसकी उपयुक्तता—ये कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें शोध की पूरी गुंजाइश है।

शिक्षा प्रशासन के अंतर्गत हुए अब तक के अध्ययनों में प्रयासात्मक अध्ययनों का अभाव खटकता है। यद्यपि प्रयोगात्मक अध्ययनों में कठिनाइयाँ अधिक हैं शोधकर्ता को भी अधिक परिश्रम करना पड़ता है फिर भी शाघ व क्षेत्र में ऐसे अध्ययन होने चाहिए। शिक्षा प्रशासन का वर्तमान स्वरूप अंग्रेजी राज्य की दृष्टि से किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् देश में हुए सामाजिक आर्थिक परिवर्तनों के मद्देन में इस प्रशासन के ढाँचे में

अपचित परिवर्तन का स्वरूप क्या हो सामान्य जनता एवं शिक्षक की आशाआशा की पूर्ति में प्रशासन का महत्वांग क्या हो, अथवा प्रशासन के स्वरूप में प्रमित परिवर्तन किम स्तरह न किए जान चाहिए—इन मुद्दों पर अनुसंधानकर्ताओं का गाम करके प्रशासन या सस्थागत स्तर पर प्रयोगात्मक प्रायाजना काय मा करन चाहिए ।

सन्दर्भा कित अनुसंधान

अताकबाबू	An Ideal Supervisor as Viewed by Teachers M Ed Raj Uni 1971
आहूजा, भगवती	A Study of the Familial Adjustment of the Women teachers of the School of Raja Park Jaipur B A (Adult Education) Raj Uni 1974
उदावत, जगन्मालाल	An Investigation into the Educational Finance in Rajasthan M Ed Raj Uni 1954
कोठारी, चन्मन	A Survey of A C C and Scouts Organisation in Bikaner Division with reference to Educational Organisational and Financial Factors M Ed Raj Uni 1962
कौशिक श्यामलाल	A Comparative Study of Teachers Associations in Rajasthan and the Neighbouring States Ph D (Edn) Udaipur Uni 1972
कौशिक मूरजनारायण	Qualifications of the Members of Education Committee of Panchayat Samities and their Effectiveness M Ed Udaipur Uni 1969
लक्ष्मी, रामलाल	A Study into the Attitude towards Studies of Primary and Secondary School Teachers in Chittorgarh District B A (Adult Education) Raj Uni 1972
गग, नैवरलाल	A Study of Reforms Introduced by the Board of Secondary Education Rajasthan and Their Impact on Teachers M Ed Udaipur Uni 1968
गालव नन्माल	A Study of Values and Job Satisfaction of Secondary School Teachers M Ed Udaipur Uni 1969
गोरी मधुमाहम्मद	An Investigation into the Attitudes of Secondary School Teachers towards the Prevailing Practices of Inspection in Rajasthan M Ed Raj Uni 1960
चारण मांवरलाल	The Role of Private High School in the Educational Development of Rajasthan M Ed Raj Uni 1953

- चौधरी सुपमा
माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर राजस्थान और हरियाणा के प्रधानाचार्यको एवं प्रधानाध्यापिकाओं की प्रशासकीय समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन
एम एड, राज वि वि, 1974
- चौधरी हरदीनाराम
नागौर जिले के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में परिवीक्षण के प्रभाव का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1974
- जगदीशनारायण
Trends in Local Educational Administration in India since Independence A Comparative Study
M Ed Raj Uni 1958
- जन प्रह्लादराय
A Comparative Study of the Development of Rural Higher Education in India U K U S A and U S S R ,
M Ed Raj Uni 1960
- जोशी, अनुराज
State Control over Higher and Secondary Education in India since 1947 A Comparative Study
M Ed Raj Uni 1959
- जोशी, धिरजीवलाल
Bureaucracy and Educational Policies
M Ed Udaipur Uni 1969
- जोशी दिनशचन्द्र
A Study of the Concept of School Improvement Programme as Conceived by Teachers and its Bearing on their Work
M Ed Udaipur Uni 1966
- जोशी धी भार
The Impact of Panchayat Raj on the Primary Schools of Panchayat Samiti Badgaon
M A (Rural Studies) Udaipur Uni 1967
- जोशी, लक्ष्मीनारायण
Professional Problems of Rural Secondary School Teachers of Udaipur District
M Ed Udaipur Uni 1967
- टिक्नावाल श्यामप्रकाश
Educational Administration in Rajasthan
M Ed Raj Uni 1954
- तलसरा हेमलता
उदयपुर शहर में सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा पर लागत व्यय तथा सावजनिक परीक्षा परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन,
एम एड, उदयपुर वि वि, 1971
- त्रिवेदी, शंकरलाल
Pressures on Educational Administration
M Ed Udaipur Uni 1967
- दरबारीलाल
Leadership Qualities of Successful Secondary School Headmasters in Rajasthan
M Ed Udaipur Uni 1967
- द्विवेदी हरिश्चन्द्र
The Impact of Decentralisation on the Primary Schools of Panchayat Samiti Simlawa
M Ed Udaipur Uni 1966

अभिनित परिवर्तनों का स्वल्प क्या हो, सामान्य जनता एवं शिक्षा की आसामाया की पुनर् में प्रशमन का मन्थाग क्या हो अथवा प्रशमन के स्वल्प में अभिनित परिवर्तन किम तरह से लिए जान चाहिये—इन मुद्दा पर अनुसंधानकर्ताया का, माग करके प्रशमन या सस्यागत स्तर पर प्रयागात्मन प्रायाजना काय भी बरन चाहिए ।

सन्दर्भा कित अनुसंधान

अनीकदानू	An Ideal Supervisor as Viewed by Teachers M Ed Raj Uni 1971
आहूजा, भगवती	A Study of the Familial Adjustment of the Women teachers of the School of Raja Park Jaipur B A (Adult Education) Raj Uni 1974
उत्पावत, जगन्मदालाल	An Investigation into the Educational Finance in Rajasthan M Ed Raj Uni 1954
काठारी, चन्दनमल	A Survey of A C C and Scouts Organisation in Bikaner Division with reference to Educational Organisational and Financial Factors M Ed Raj Uni 1962
कौशिक, श्यामदान	A Comparative Study of Teachers Associations in Rajasthan and the Neighbouring States Ph. D (Edu) Udaipur Uni 1972
कौशिक मूर्जनारायण	Qualifications of the Members of Education Committee of Panchayat Samities and their Effectiveness M Ed Udaipur Uni 1969
सुधी रामदान	A Study into the Attitude towards Studies of Primary and Secondary School Teachers in Chittorgarh District B A (Adult Education) Raj Uni 1972
गग, भैरवनाथ	A Study of Reforms Introduced by the Board of Secondary Education Rajasthan and Their Impact on Teachers M Ed Udaipur Uni 1968
मालव नन्ददान	A Study of Values and Job Satisfaction of Secondary School Teachers M Ed Udaipur Uni 1969
गौरी गुरूमोहम्मद	An Investigation into the Attitudes of Secondary School Teachers towards the Prevailing Practices of Inspection in Rajasthan M Ed Raj Uni 1960
चारण मावन्दान	The Role of Private High School in the Educational Development of Rajasthan M Ed Raj Uni 1953

- चौधरी मुपमा माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर राजस्थान और हरियाणा के प्रधानाचार्यको एवं प्रधानाध्यापिकाओं की प्रशासकीय समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1974
- चौधरी, हरदीनाराम भागौर जिले के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1974
- जगदीशनारायण Trends in Local Educational Administration in India since Independence A Comparative Study
M Ed Raj Uni 1958
- जन प्रह्लादराय A Comparative Study of the Development of Rural Higher Education in India U K U S A and U S S R
M Ed, Raj Uni 1960
- जोशी, अनुराज State Control over Higher and Secondary Education in India since 1947 A Comparative Study
M Ed Raj Uni 1959
- जोशी चिरजीवलाल Bureaucracy and Educational Policies
M Ed Udaipur Uni 1969
- जोशी, दिनेशचन्द्र A Study of the Concept of School Improvement Programme as Conceived by Teachers and its Bearing on their Work
M Ed Udaipur Uni 1966
- जोशी बी धार The Impact of Panchayat Raj on the Primary Schools of Panchayat Samiti Badgaon
M A (Rural Studies) Udaipur Uni 1967
- जोशी लक्ष्मीनारायण Professional Problems of Rural Secondary School Teachers of Udaipur District,
M Ed Udaipur Uni 1967
- दिवकादल श्यामप्रकाश Educational Administration in Rajasthan,
M Ed Raj Uni 1954
- तलेसरा हमलता उदयपुर शहर में सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा पर लागत व्यय तथा सावजनिक परीक्षा परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन, एम एड, उदयपुर वि वि, 1971
- निवेदी, शंकरलाल Pressures on Educational Administration
M Ed Udaipur Uni 1967
- दरबारीलाल Leadership Qualities of Successful Secondary School Headmasters in Rajasthan
M Ed Udaipur Uni 1967
- द्विवेदी हरिचन्द्र The Impact of De-centralisation on the Primary Schools of Panchayat Samiti Simla
M Ed Udaipur Uni, 1966

- द्विवेणी आनागयण इटावा जनपद के सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की समस्याओं का अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1973
- एन व गुमानमिन्द पचायत समिति और शिक्षा विभागीय प्राथमिक शाळा व शिक्षा की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम एड, राज वि वि 1973
- द्राण कृष्णदीन Factors Leading to Students Unrest A Psychological Study M Ed Udaipur Uni 1969
- धर्मपारमिन्द Trends in the Administrative Partnership between the Central State and Local Educational Authorities in India since 1947 M Ed Raj Uni 1959
- एन व मन्त्रकुमार अजमेर नगर के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की अध्यापन-स्थलस्था के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन एम एड राज वि वि, 1972
- एन व मन्त्रकुमार माध्यमिक शाळा स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की समस्याएँ, एम एड, राज वि वि 1974
- प्रमोद मवा विभाग राजस्थान में मंत्र 1973-74 में विद्यालय स्तरों के कार्यों का अध्ययन राजस्थान वि वि प्रवि 1974 मन्त्रविभाग द्वारा
- पादव, गानि A Study of a School Principal a Job M Ed Udaipur Uni 1967
- पादव, गानि The Role of Inspectorial Staff in Educational Administration of Indore District (Madhya Pradesh) M Ed Raj Uni 1964
- पादव गानि जी The Growth and Development of the Vidya Bhawan Basic School M Ed Paj Uni 1953
- पादव गानि जी The Role of the Inspector of Schools in the Educational Administration of Udaipur District M Ed Udaipur Uni 1966
- पादव गानि जी Job Satisfaction of Men and Women Teachers in Relation to their Experience M Ed Raj Uni 1972
- पुनर्निष्ठ एन जी A Study of the Self Esteem and Job Satisfaction of Teachers B A (Adult Edu) Raj Uni, 1969

- वेनीवाल, ओमप्रकाश राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट अभि-
करणों के कार्यों का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1973
- भटनागर, जगदीशनाथरायण An Investigation into Some Administrative
Problems of Primary Schools under Pancha-
yat Samiti Badgaon
M Ed Udaipur Uni 1967
- मडावत, उमरावमल Causes of Students Unrest in India
M Ed Raj Uni 1969
- भामू, गणपतिसिंह The Administration of Primary Education
under the Panchayat Samiti Fatehpur
M Ed Udaipur Uni 1965
- मानवद्रसिंह उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अप्रयय एवं अवरोधन,
एम एड, राज वि वि, 1974
- मिश्रा, हरिनन्दन A Study of Drop outs and Repeaters in
Secondary Schools of Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1968
- मू दडा, शकरलाल विद्याभवन सोसाइटी के विगत तीन बरस,
एम एड, राज वि वि, 1970
- मेहता, कृष्णचन्द्र Administrative Problems of School Complex
Programme in Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1973
- मेहता च सि मिश्रा, School Complex Programme in Rajasthan
Govt Teachers Training College Bikaner 1972
- ह न एव वर्मा प ला
- मेहता, पारसमल Diagnosis of the Problems of Educational
Administration in the Panchayat Raj
M Ed Raj Uni 1962
- यान्द, जी एल Survey of the Inspections of Primary Schools
by Education Extension Officers in Udaipur
District
SIE Udaipur 1966
- माधव, हरिराम अधिकतम स्वीकृत एवं न्यूनतम स्वीकृत अध्यापकों के
मूल्य
एम एड, राज वि वि, 1971
- यानिक, गोविन्दमाधव Transfer Problems of the Heads of Govt
Secondary/S T C Schools in Rajasthan
M Ed Udaipur Uni 1967
- रामदेव विजयराज A Comparative Study of the Views of Pupils
Teachers and Administrators of Secondary
Schools about the Problems of Indiscipline
M Ed Jodhpur Uni 1970
- लडडा गावधनलाल The Role of Education Extension Officers in
the Changing Pattern of Society
M Ed Udaipur Uni 1967

- लाल एमरन्त घनवज्जेड़ा A Comparative Study of the Service Conditions of Teachers in Government and Aided Secondary Schools in Rajasthan
M Ed Udaipur Uni 1967
- बगू माहन्तवाल A Study of Some Significant Developments in Secondary Education in the States of Rajasthan and Jammu & Kashmir
M Ed Raj Uni 1963
- बर्मा, जगन्नीशप्रसाद A Study of Contribution of Private Enterprise to the Educational Development of Udaipur
M Ed Raj Uni 1968
- बर्मा एन एन A Survey of the Uneconomic Secondary and Higher Secondary Schools of Rajasthan
SLE Udaipur 1968
- ध्याम प्रमचरन् बीरानेर शहर के माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों व अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन,
एम ए, राज वि वि, 1971
- ध्याम वनामनाथ An Investigation into the Working Conditions of Teachers of Aided Secondary and Higher Secondary Schools
M Ed Udaipur Uni 1967
- ध्याम जगन्नीशचन्द्र उदयपुर-बाटा परिक्षेत्र के प्रधानाध्यापक धाकपीठ एक अध्ययन
एम एड उदयपुर वि वि, 1969
- ध्याम जगन्नीशचन्द्र पाली जिले में प्राइवेट स्कूलों के स्तर पर शाला छोड़ने के कारणों का अध्ययन,
एम ए, राज वि वि, 1968
- ध्याम जानकीनाथ A Study of Aims Objectives Functions and Organisation of Central Schools in India
M Ed Udaipur Uni 1967
- विजय श्यामविहारी A Study of Teachers Unrest in Rajasthan
M Ed Udaipur Uni 1969
- वर्णन ममराज Patterns of Educational Finance in Government and Private Institutions
M Ed Udaipur Uni 1969
- शर्मा अमरनाथ Wastage and Stagnation in the Primary Schools of Udaipur City
M Ed Raj Uni 1955
- शर्मा क एन Supervision in Higher Secondary Schools of Udaipur District Rajasthan A Comparative Study with the U S A ,
M Ed Raj Uni 1961
- शर्मा, गोपादत्त Expectations from a Supervisor
M Ed Raj Uni 1974
- शर्मा, जगन्नाथप्रसाद A Study of Role Conflict in Headmasters of Secondary Schools in Rajasthan
M Ed Udaipur Uni, 1968

- शर्मा, वृजमोहन
An Investigation into the Attitudes of Teachers serving in Multi Purpose Schools of Rajasthan towards School Supervision
M Ed Raj Uni 1960
- शर्मा, भैरवलाल
The Problems of Single Teacher Primary Schools of Panchayat Samiti Ghatol District Banswara
M Ed Udaipur Uni 1966
- शर्मा, भरवलाल
A Study of the Reading Interests and Habits of Primary School Teachers
M Ed Udaipur Uni 1967
- शर्मा मांगीलाल
अध्यापक के कृत्या का अध्ययन,
एम एड, राज वि वि 1970
- शर्मा मुरलीमोहन
उदयपुर शहर में माध्यमिक शिक्षा में स्वच्छिक प्रयास की भूमिका
एम एड, उदयपुर वि वि, 1974
- शर्मा, मोहनप्रकाश
भारत के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के गठन एवं कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन,
एम एड राज वि वि, 1972
- शर्मा, रामदत्त
The Evaluation of Pattern of Educational Administration in India since 1813
M Ed Raj Uni 1962
- शर्मा, शिवकुमार
A Study to find out Wastage and Stagnation in Class I of a Primary School of Delwara Village
SIE Udaipur 1965
- शर्मा, शिवदत्त
An Investigation into the Attitudes of Teachers towards Modern Trends in Education
M Ed Raj Uni 1968
- शर्मा सत्यनारायण
A Study of the Problems of the Trained Teachers in Primary Schools
M Ed Udaipur Uni 1967
- शर्मा, हरिशंकर
School Complex A Case Study
M Ed Raj Uni 1974
- श्री जी, महावीरकुमार
Unit Cost of Higher Secondary Education in Rural and Urban Areas
M Ed Udaipur Uni 1969
- श्रीवास्तव, ए एल एवं
वर्मा पी एल
School Complex Programme in Chittorgarh District (With Special Referenceto its Impact on Teachers)
Inspector of Schools Chittorgarh 1972
- श्रीवास्तव प्रकाशचंद
A Study of Inspection Reports by Inspectors of Schools
M Ed Raj Uni 1973

- सानू शमशेरसिंह **An Investigation into the Personal and Professional Problems of Teachers Serving in Secondary Schools of Bikaner Division**
M Ed Raj Uni 1960
- सिसादिया, ज एस **A Study of the Factors influencing Girls Enrolment in Primary Schools of Panchayat Samiti Balesar**
M Ed Raj Uni 1969
- हरचरणवीर **A Study of the Attitudes of Secondary School Teachers towards their Profession**
M Ed Jodhpur Uni 1970
- हाफडा, पुष्पारानी **A Study of Professional Problems of Secondary School Teachers in Relation to their Experience (Quality point) and Adjustment**
M Ed Raj Uni 1970
- हुक्क, वा एन **The Case Study of Four Higher Secondary Schools to Recognize Patterns of Schooling in Relation to Academic Achievement,**
M Ed Raj Uni 1970
- हन्ना ग्रार सा एक
जागी जा के **Study of the Unit Cost on Primary Middle Higher Secondary and STC Schools of Good Medium and Poor Standards in the State of Rajasthan**
SIE. Udaipur 1966



विद्यालय-व्यवस्था

■ विद्यासागर शर्मा

□ शशिशेखर ध्यास

शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालया की व्यवस्था एवं उनके प्रशासन में सन्निहित पक्ष की वा स्वरूपा में देखा जा सकता है—एक शिक्षा प्रशासन और दूसरा विद्यालय-व्यवस्था । शिक्षा प्रशासन में विद्यालय सम्बन्धी उन सभी बाह्य एवं आन्तरिक प्रशासनिक क्रियाकलापों का सम्मिलित किया जाता है जिनके अंतर्गत शिक्षा की मशानरी का सुय वस्थित रूप से चलाने की व्यवस्था विद्यमान हो, जबकि विद्यालय-व्यवस्था में विद्यालय स्तर के वे सभी कायकलाप सन्निहित हैं जिनकी सहायता से शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों का प्राप्त किया जा सके । क्षेत्र की दृष्टि से शिक्षा प्रशासन इतना व्यापक है कि उसमें प्राथमिक विद्यालय से लेकर शिक्षा भन्नालय तक की सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था एवं गति-विधियाँ सम्मिलित होती हैं । इसके विपरीत विद्यालय व्यवस्था में प्रशासन का दायरा विद्यालय तक ही सीमित है, और इसमें विद्यालयी प्रशासन के साथ ही विद्यालय स्तरीय शानिक, सहस्रशिक्षक एवं अन्य वे सभी क्रियाकलाप सम्मिलित होते हैं, जिनका विद्यालय के अन्तर्गत स सीधा सम्बन्ध हो । वस्तुतः इन दोनों क्षेत्रों में इतना अधिक अन्तर्वेशन एवं सहसम्बन्ध है कि इन दोनों का पूरी तरह से अलग अलग परिप्रदय में देख सकना कठिन है । यदि शिक्षा प्रशासन को मात्र प्रशासन की दृष्टि स ही देखा जाए तो भी उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विद्यालय-व्यवस्था का पक्ष जुड़ा रहता है और इसी प्रकार विद्यालय-व्यवस्था में शिक्षा प्रशासन का ।

राजस्थान में विद्यालय व्यवस्था के क्षेत्र में शोध अध्ययन की प्रवृत्ति का विकास बीसवीं शताब्दी के छठे दशक से ही प्रारम्भ हुआ है । इस क्षेत्र में पहला शोध अध्ययन त्रिवेदी (1957) द्वारा किया गया मिलता है । जिसमें उदयपुर नगर के एक माध्यमिक विद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास हुआ । सन् 1951 से 1960 तक के दशक में केवल एक अध्ययन हुआ । सन् 1961 से 1970 तक के दशक में 17 अध्ययन एवं सन् 1971 से 1974 तक की अवधि में 10 अध्ययन हुए । यह स्थिति इस तथ्य को इंगित करती है कि अनुसंधानकर्त्ताओं का ध्यान इस क्षेत्र की ओर उत्तरात्तर आकृष्ट होता गया है ।

सन् 1974 तक सम्पन्न हुए विद्यालय व्यवस्था सम्बन्धी सभी शोध अध्ययनों का उनके अध्ययन प्रकार की दृष्टि से देखने पर, यह बात होता है कि अनुसंधानकर्त्ताओं ने

इस क्षेत्र में मुम्बईया सर्वेक्षण पुरनातम अध्ययन प्रकरण अध्ययन छात्रों का किया है। बहा नहीं विद्यार्थियों का विविध पत्रों का प्रति विद्यार्थियों का अभिवृत्ति पाठ करने का प्रयोग भी किया गया है। लेकिन एक पत्रों का नाम मात्र का किया ही था किया गया है।

अब तक किए गए छात्र अध्ययनों में सर्वोपरि मन्त्र प्रशासनात्मक सर्वेक्षण (Normative Survey) का है। मन्त्रों का दृष्टि न दूरगम स्थान प्रकरण अध्ययनों का माना है। प्रयोगात्मक अध्ययन करने का है किया गया है। प्रयोगात्मक अध्ययन का दृष्टि में एक एक का विद्यार्थियों का कोई प्रयोग नहीं किया गया प्रतीत होता है। इस शिक्षा में एकमात्र प्रयोग मन्त्रों-पर राजस्थान राज्य शिक्षा मन्त्रालय द्वारा (1965) द्वारा प्रारंभ पाठशाळा (Three Hours School) पर किया गया।

अब तक किए गए पाठ अध्ययनों में जो चार मुख्य पत्र उभर कर आते हैं, वे हैं विद्यार्थी योजना, विद्यार्थी कार्यक्रम का उनकी उपलब्धियों विद्यार्थी क्षेत्र का पारस्परिक मन्त्र और विद्यार्थी-व्यवस्था का उनकी समझना।

विद्यार्थी योजना

विद्यार्थी योजना का अन्तर्गत अब तक करने का अध्ययन का उपाय है। त्रिनम का एक राजस्थान राज्य शिक्षा मन्त्रालय राज्यपाल द्वारा और दूसरा एक एक मन्त्र पर किया गया है। मन्त्र (1974) में एक उच्च माध्यमिक विद्यार्थी की समुपयन योजना का सन्तर्भ में प्रकरण अध्ययन किया और पाया कि प्रधानाध्यापक का वाक्यांशिक व्यवहार में विद्यार्थी योजना का क्रियाविधि क्या सामान्य का जो करना है और मन्त्रित उभरेगा का प्राप्त किया जा सकता है। मन्त्रों पर राजस्थान राज्य शिक्षा मन्त्रालय राज्यपाल अध्ययन में अनुसंधान जगन्नाथ (1974) में पाया कि राजस्थान राज्य में विद्यार्थी समुपयन योजनाओं का विविध और योजनाबद्ध क्रिया-यन हुआ है। यह भी पाते हुए कि समुपयन-योजना का भ्रम में गति प्रवृत्तियों मन्त्रित प्रवृत्तियों अध्ययनों की आवश्यकता उभरती, विद्यार्थी नीतिव स्थिति में उभरती एक विभाग द्वारा सुभाषण का कार्यक्रम भी मुख्य रूप है। किन्तु जब इन योजनाओं का मूल्यांकन किया गया तो इनका स्तर अच्छा नहीं पाया गया।

विद्यार्थी कार्यक्रम एवं उनकी उपलब्धियों

बस इस पत्र में बसुन विद्यार्थी का एक प्रवृत्तियों माना है परन्तु त्रिन पर अनुसंधानकर्ताओं का ध्यान विद्यार्थी कार्यक्रमों का है—अध्यापक परिषद एक छात्र नृत्य, सह गति प्रवृत्तियों एवं विद्यार्थी उपलब्धियों।

(क) अध्यापक परिषद एवं छात्र नृत्य जन (1966) और नमिहनाम (1973) में प्रमश राज्यपाल और योजनाओं का राजकीय और अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यार्थी में विद्यार्थी परिषद का कार्यक्रमों का अध्ययन किया और पाते हैं कि अराजकीय विद्यार्थी में विद्यार्थी परिषद का राजकीय विद्यार्थी की अपेक्षा एक विविध स्थान है। जन ने अपने अध्ययन में पाया कि अराजकीय विद्यार्थी में गठित छात्र-परिषदों में सभी विद्यार्थी एक गतिविधियों का सम्मिलित किया जाता था, जबकि

राजकीय विद्यालयों में केवल एक अध्यापक और विद्यार्थियों के चुन हुए पदाधिकारियों को ही छात्र-परिषद में शरीक किया जाता था। नरसिंहादास ने अपने यादों में एक पत्रिका स्कूल को शामिल करते हुए पाया कि पब्लिक स्कूल में अत्यंत प्रकार के विद्यार्थियों के अध्यापकों की अपेक्षा गृहपति का ज्यादा प्रभाव होता था। अब्दुल गफ्फार (1971) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों में स्टाफ और कक्षा प्रतिनिधियों का नेतृत्व के गुणों की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि मानविकी दल की बालिकाओं के अलावा स्टाफ (बालक और बालिकाएँ) कई कार्यों में छात्र प्रतिनिधियों से श्रेष्ठ थे। दवे (1972) ने राजकीय और अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नियमावली सम्बंधी कामों में अध्यापकों के सहयोग पर एक अध्ययन किया। परिणाम स्वरूप पात हुआ कि राजकीय विद्यालयों में उजड़ बनाने में अध्यापकों का सहयोग नहीं लिया जाता। विद्यार्थियों की भर्ती के सम्बंध में भी राजकीय और अराजकीय विद्यालयों में क्रमशः 77 प्रतिशत और 72 प्रतिशत नियम प्रचानाध्यापक द्वारा लिए जाते थे। केवल 25 प्रतिशत मामले, जैसे पुस्तकालय व्यवस्था, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि में प्रचानाध्यापक अपने सहायक अध्यापकों की राय लेते थे।

(ख) सहगामी प्रवृत्तियाँ इन प्रवृत्तियों के अंतर्गत अनुसंधानकर्ताओं ने पुस्तकालय व्यवस्था, खेल व शारीरिक शिक्षा व्यवस्था और इन व्यवस्थाओं के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को प्रमुख मान कर शोध अध्ययन किया। श्रीमती सक्सेना (1971) ने माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों और राजस्थान राज्य शिक्षा संचालन के तत्वाधान में बोहरा (1973) ने उच्च प्राथमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों का अध्ययन किया। श्रीमती मन्सेना ने पात किया कि केवल 38 प्रतिशत विद्यालयों में पुस्तकालय अच्छी स्थिति में थे। 88 प्रतिशत विद्यालयों में पुस्तकों की सचिप पर्याप्त थी, किन्तु बठने की व्यवस्था ठीक नहीं थी। केवल 3 प्रतिशत विद्यालय ही ऐसे थे जिनमें प्रशिक्षित स्नातक पुस्तकालयाध्यक्ष थे और पुस्तकों का वर्गीकरण किया हुआ था। सत्र 1969-70 के अर्निडा के अनुसार बालकों द्वारा पढ़ी जाने वाली पुस्तकों की वार्षिक औसत सचिप 5 थी। 56 प्रतिशत छात्र केवल कहानी की पुस्तकें ही पढ़ते थे। बोहरा ने पात किया कि उच्च प्राथमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों में औसत 1130 पुस्तकें उपलब्ध थीं। सर्वाधिक पुस्तकें हिन्दी भाषा में थीं। बाल-साहित्य पर 47.1 प्रतिशत, विज्ञान पर 5.5 प्रतिशत और शेष पुस्तकें अन्य विषयों की थीं। पुस्तकालय की दृष्टि से अलग कमरा कमल 32 प्रतिशत विद्यालयों में था। कमल पुस्तकालयों का सुविधा केवल 10 विद्यालयों को उपलब्ध थी। प्रति विद्यालय वषर में औसत 24 छात्र ही पुस्तकालय का लाभ लेते थे। 92.3 प्रतिशत विद्यालयों में दैनिक समाचार पत्र पाते थे।

उपाध्याय (1973) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों में खेल एवं शारीरिक शिक्षा व कार्यक्रमों का प्रशासन और व्यवस्था की दृष्टि से अध्ययन किया और निष्कर्ष के रूप में यह पाया कि विद्यालयों में खेल कूद का सामान पर्याप्त था और विद्यार्थियों के लिए शारीरिक शिक्षा सुविधाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। दस-सन्धिव में अभिभावकों की वृत्ति भी उदासीन पाई गई।

के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया और पाया कि पारस्परिक सम्बन्धों का मूल आधार प्रधानाध्यापक का व्यक्तित्व है। नारण (1966) ने जयपुर के एक बड़े बहुउद्देशीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में सप्रेषणीयता के माध्यमों का अध्ययन करते हुए पाया कि सप्रेषण माध्यमों में अध्यापकों की बैठकों का एक प्रमुख स्थान था। वर्मा (1968) का अनुसार दो पारी विद्यालयों में पारस्परिक सम्बन्ध इतने अच्छे नहीं थे, जितने कि एक पारी विद्यालयों में। एक पारी विद्यालयों में सप्रेषण व्यवस्था सीधी होने से पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे थे। शिक्षक समितियों के गठन पर अध्ययन करके सक्सेना (1972) ने मान्यता दी कि उनके संगठन, कार्यप्रणाली, सविधान, पारस्परिक सम्बन्ध आदि में सुस्पष्टता नहीं थी। नियोजन और संचालन दोनों स्तरों पर सहयोग का अभाव था जिसके कारण ये समितियाँ न तो विद्यालय में सुदृढ़ वातावरण बना पाती थीं न ही शिक्षक चिन्तन कर पाती थीं।

विद्यालय प्रशासन एवं उसकी समस्याएँ

शोध अध्ययनों की दृष्टि से राज्य में यह पक्ष शोधकर्ताओं को सर्वाधिक प्रिय रहा प्रतीत होता है। इस क्षेत्र में अब तक 10 शोध अध्ययन किए जा चुके हैं, जिनमें अनुसंधानकर्ताओं ने शिक्षक परिबीक्षण प्रशासनिक समस्याएँ छात्रों का भ्रगोडेपन और उनकी विद्यालय में अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन किया है। इन शोध अध्ययनों में एक अध्ययन संस्थान स्तर पर व शेष नौ एम एड के विद्यार्थियों द्वारा सम्पादित किए गए।

गहलोत (1965) और चौहान (1970) ने उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक परिबीक्षण का अध्ययन किया। अपने प्रकरण अध्ययन में गहलोत ने पाया कि शिक्षक परिबीक्षण का कार्यक्रम व्यावसायिक उन्नति की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। चौहान ने उदयपुर के दस माध्यमिक विद्यालयों के सम्बन्ध में पाया कि विद्यालयों में दैनिक कार्य के परिबीक्षण के लिए प्रधानाध्यापकों को बहुत कम समय मिल पाता था और वे इस कार्य को साधारणतः अपने प्रथम सहायक को सौंप देते थे। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि विद्यालयों में परिबीक्षण का रेकाड नहीं रखा जाता था और अनुवर्तन कार्य भी नहीं सुभाए जाते थे।

चेतनस्वरूप (1970) ने बालकों के भ्रगोडेपन तथा शर्मा (1972) ने छात्रों के विद्यालय में अनुपस्थित रहने के कारणों का अध्ययन किया। चेतनस्वरूप ने पाया कि भ्रगोडेपन और छात्रों की बुद्धि में कोई साधक सम्बन्ध नहीं है लेकिन भ्रगोडेपन और सामाजिक आर्थिक स्तर में साधक सम्बन्ध है। विद्यार्थियों का विद्यालयी वातावरण के साथ सामंजस्य नहीं होना भ्रगोडेपन का एक प्रमुख कारण था। शर्मा के अध्ययन के अनुसार विद्यालयों में बालकों का उपस्थित नहीं रहने में उनके घरेलू वातावरण का प्रभाव होता है। उसका दुष्प्रभाव बालिकाओं की अपेक्षा बालकों पर अधिक पड़ता है। आर्थिक और सामाजिक स्तर की समस्याएँ भी बालकों की विद्यालय में अनुपस्थिति का प्रमुख कारण थीं। त्रिवेदी (1957) कमल (1963) शूद (1964) जैन (1969) और

गुप्ता (1970) ने विद्यालय व्यवस्था के विभिन्न पक्षों, यथा—पुस्तकालय, कक्षा निर्माण, गृह कार्य, पाठ्यक्रमों आदि के प्रति ग्रामीण के द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के विद्याधियों की प्रतिवृत्ति की जानकारी के और पाया कि दोनों ही क्षेत्रों के गरीब-दालितों की प्रतिवृत्ति इनका आग्रह अनुसरण थी। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि छात्रों का नुनता में छात्रों की प्रतिवृत्ति अत्यधिक के प्रति कम अनुसरण थी।

(iv) विद्यालयी उपलब्धियाँ विद्यालय व्यवस्था के अनुसरण से यह कि ग्रामीणों की प्राप्ति की स्थिति का अध्ययन करने के लिए (1966) ने जयपुर गेट के एक विद्यालय के प्रकरण अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि शिक्षकों की प्रतिवृत्ति एवं छात्रों की शिक्षा के पारम्परिक सम्बन्धों की मधुरता इस स्थिति में बड़ा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तालनाथान (1968) ने अन्वेषिक शक्ति से उच्च और निम्न उपरान्त दोनों क्षेत्रों के विद्यालयों के नुनता में अध्ययन किया और पाया कि उच्च उपरान्त प्राप्त करने वाले विद्यालयों में नौतिर माध्यम-शुविधायी पद्यान्त मात्रा में उपरान्त थी शिक्षकों का अनुशासन करने मिलता था। उन विद्यालयों में सामाजिक बालावर्ण, उपचारणक के लिए श्रमिकों की पर विचार ध्यान दिया जाता था। मराजना स्त्री (1971) ने एक छात्रागरी विद्यालय में अध्ययन करने वाली छात्राओं के प्रति मराजना उनका व्यक्तित्व की विचारणा तथा मनाकामनाओं के अध्ययन किया और पाया कि जो छात्राएँ छात्रावास में अधिक समय में रहती हैं उनकी शक्ति मराजना अथवा कुछ उच्च स्तरीय जाता है। अध्ययन के निष्कर्षों में यह भी पाया गया कि कुछ गुणात्मक—अननुशीलन व अनुशीलन बुद्धि सुवर्णमक स्थिति के विचारों पर छात्रागरी विद्यालय में अध्ययन करने पर भी का प्रभाव नहीं पड़ता। जो मनाकामनाओं छात्राओं की छात्रावास में प्रवेश करने समय जाता है वही अन्तर्गत रहती है।

पारम्परिक सम्बन्ध

विद्यालय व्यवस्था के अनुसरण पारम्परिक सम्बन्धों के क्षेत्र में जो अनु-अध्ययन उपरान्त है, उनमें से एक शीघ्र ही क्षेत्र का है। तालनाथान (1969) ने अन्वेषण के लिए प्रायोजना में राजस्थान के एक शीघ्र उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पारम्परिक सम्बन्धों के बारे में अध्ययन किया। इस अध्ययन में प्राक्कल्पना के आधार पर मराजरी, मुख्य और प्रतिगता विद्यालयों का व्याख्या करने के लिए शिक्षा विभाग की शक्ति से उनका क्षेत्र के एक विद्यालय के बारे में जानकारी प्राप्त की गई और गरीब में उपरान्त प्रत्यक्ष श्रेणी के शीघ्र विद्यालयों का चयन किया गया। बालक श्रेणी सिस्टम (Bales Category System) के आधार पर उन विद्यालयों के अन्वेषण के पारम्परिक सम्बन्धों, उनकी शैक्षणिक व शैक्षणिक प्रतिष्ठा समूहों का निर्माण और व्यावहारिक प्रतिमानों का गहन अध्ययन किया गया। तालनाथान ने निष्कर्ष निकाला कि प्रदानाध्यापकों का प्रतिष्ठा का लेका या कम जाना उनका शैक्षणिक प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है। जब अध्यापकों या प्रदानाध्यापकों के अन्वेषण के क्षेत्रों और वास्तविक कार्यक्षेत्रों में सामान्य नहीं होता, तभी स्थिति के सम्बन्ध में कार्य और अन्वेषण उत्पन्न होता है। गुप्ता (1964) ने जयपुर गेट के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रदानाध्यापकों के अध्यापकों

के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया और पाया कि पारस्परिक सम्बन्धों का मूल आधार प्रशानाध्यापक का व्यक्तित्व है। नारंग (1966) ने जयपुर के एक बड़े बहुउद्देशीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में संप्रेषणीयता के माध्यमों का अध्ययन करते हुए पाया कि संप्रेषण माध्यमों में अध्यापकों की बैठकों का एक प्रमुख स्थान था। वर्मा (1968) के अनुसार दो पारी विद्यालयों में पारस्परिक सम्बन्ध इतने अच्छे नहीं थे, जिनके कि एक पारी विद्यालयों में। एक पारी विद्यालयों में संप्रेषण व्यवस्था सीधी होने से पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे थे। शिक्षक समितियों के गठन पर अध्ययन करते सक्सेना (1972) ने मान्यता दी कि उनके संगठन, कार्यप्रणाली, सविधान, पारस्परिक सम्बन्धों आदि में सुस्पष्टता नहीं थी। निम्नलिखित वयन और संचालन दोनों स्तरों पर सहयोग का अभाव था जिसके कारण ये समितियाँ न तो विद्यालय में मुश्किल वातावरण बना पाती थीं न ही शिक्षक चिन्तन कर पाती थीं।

विद्यालय प्रशासन एवं उसकी समस्याएँ

शाध अध्ययनों की दृष्टि से राज्य में यह पक्ष शोधकर्ताओं को सर्वाधिक प्रिय रहा प्रतीत होता है। इस क्षेत्र में अब तक 10 शाध अध्ययन किए जा चुके हैं, जिनमें अनुसंधानकर्ताओं ने शैक्षिक परिवीक्षण प्रशासनिक समस्याएँ छात्रों का भ्रष्टाचार और उनकी विद्यालय में अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन किया है। इन शोध अध्ययनों में एक अध्ययन संस्थान स्तर पर व श्रेष्ठ नो एम एड के विद्यार्थियों द्वारा सम्पादित किए गए।

गहलोत (1965) और चौहान (1970) ने उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक परिवीक्षण का अध्ययन किया। अपने प्रकरण अध्ययन में गहलोत ने पाया कि शैक्षिक परिवीक्षण का कार्यक्रम 'यावसायिक' उन्नति की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। चौहान ने उदयपुर के दस माध्यमिक विद्यालयों के सम्बन्ध में पाया कि विद्यालयों में दैनिक कार्य के परिवीक्षण के लिए प्रधानाध्यापकों को बहुत कम समय मिल पाता था और वे कम कार्य को साधारणतः अपने प्रथम सहायक को सौंप देते थे। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि विद्यालयों में परिवीक्षण का रेकार्ड नहीं रखा जाता था और अनुवर्तन काम भी नहीं सुभाए जाते थे।

चेतनस्वरूप (1970) ने बालका के भ्रष्टाचार तथा शर्मा (1972) ने छात्रों के विद्यालय में अनुपस्थित रहने के कारणों का अध्ययन किया। चेतनस्वरूप ने पाया कि भ्रष्टाचार और छात्रों की बुद्धि में कोई साधक सम्बन्ध नहीं है लेकिन भ्रष्टाचार और सामाजिक आर्थिक स्तर में साधक सम्बन्ध है। विद्यार्थियों का विद्यालयी वातावरण के साथ सामंजस्य नहीं होना भ्रष्टाचार का एक प्रमुख कारण था। शर्मा के अध्ययन के अनुसार विद्यालयों में बालकों का उपस्थित नहीं रहने में उनके घरेलू वातावरण का प्रभाव होता है। उसका दुष्प्रभाव बालिकाओं की अपेक्षा बालकों पर अधिक पड़ता है। आर्थिक और सामाजिक स्तर की समस्याएँ भी बालकों की विद्यालय में अनुपस्थिति का प्रमुख कारण थीं। तिवरी (1957), कमल (1963), सूद (1964), जन (1969) और

के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया और पाया कि पारस्परिक सम्बन्धों का मूल आधार प्रधानाध्यापक का व्यक्तित्व है। नारंग (1966) ने जयपुर के एक बड़े बहुउद्देशीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में संप्रेषणीयता के माध्यमों का अध्ययन करते हुए पाया कि संप्रेषण माध्यमों में अध्यापना की बढकी का एक प्रमुख स्थान था। शर्मा (1968) के अनुसार दो पारी विद्यालयों में पारस्परिक सम्बन्ध इतने अच्छे नहीं थे, जितने कि एक पारी विद्यालयों में। एक पारी विद्यालयों में संप्रेषण व्यवस्था सीधी होने से पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे थे। शिक्षक समितियों के गठन पर अध्ययन करके सक्सेना (1972) ने मासूम किया कि उनके संगठन, कार्यक्रम, सविधान, पारस्परिक सम्बन्ध आदि में सुस्पष्टता नहीं थी। निम्नलिखित और संचालन दोनों स्तरों पर सहयोग का अभाव था जिससे कारण ये समितियाँ न तो विद्यालय में मुद्दत वातावरण बना पाती थीं न ही शैक्षिक चिन्तन कर पाती थीं।

विद्यालय प्रशासन एवं उसकी समस्याएँ

शोध अध्ययनों की दृष्टि से राज्य में यह पक्ष शोधकर्ताओं को सर्वाधिक प्रिय रहा प्रतीत होता है। इस क्षेत्र में अब तक 10 शोध अध्ययन किए जा चुके हैं जिनमें अनुसंधानकर्ताओं ने शैक्षिक परिवर्तन प्रशासनिक समस्याएँ छात्रों का भगोडेपन और उनकी विद्यालय में अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन किया है। इन शोध अध्ययनों में एक अध्ययन संस्थान स्तर पर व शेष नौ एम एड के विद्यार्थियों द्वारा सम्पादित किए गए।

गहलोत (1965) और चौहान (1970) ने उच्च माध्यमिक व माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक परिवर्तन का अध्ययन किया। अपने प्रकरण अध्ययन में गहलोत ने पाया कि शैक्षिक परिवर्तन का कार्यक्रम व्यावसायिक उन्नति की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। चौहान ने उदयपुर के दस माध्यमिक विद्यालयों के सम्बन्ध में पाया कि विद्यालयों में दैनिक कार्य के परिवर्तन के लिए प्रधानाध्यापकों को बहुत कम समय मिल पाता था और व इस कार्य को साधारणतः अपने प्रथम सहायक को सौंप देते थे। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि विद्यालयों में परिवर्तन का रेकार्ड नहीं रखा जाता था और अनुवर्तन कार्य भी नहीं सुझाए जाते थे।

चेतनस्वरूप (1970) ने बालकों के भगोडेपन तथा शर्मा (1972) ने छात्रों के विद्यालय में अनुपस्थित रहने के कारणों का अध्ययन किया। चेतनस्वरूप ने पाया कि भगोडेपन और छात्रों की बुद्धि में कोई साधक सम्बन्ध नहीं है, लेकिन भगोडेपन और सामाजिक आर्थिक स्तर में साधक सम्बन्ध है। विद्यार्थियों का विद्यालयी वातावरण के साथ सामंजस्य नहीं होना भगोडेपन का एक प्रमुख कारण था। शर्मा के अध्ययन के अनुसार विद्यालयों में बालकों का उपस्थित नहीं रहने में उनके घरेलू वातावरण का प्रभाव होता है। उसका दुष्प्रभाव बालिकाओं की अपेक्षा बालकों पर अधिक पड़ता है। आर्थिक और सामाजिक स्तर की समस्याएँ भी बालकों की विद्यालय में अनुपस्थिति का प्रमुख कारण थी। त्रिवेदी (1957) नमल (1963) सू (1964), जैन (1969) और

भारद्वाज (1966) ने राजस्थान और अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों का प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि राजकीय विद्यालयों में वायरलेस अध्यापकों की समस्याएँ अराजकीय विद्यालयों में काय करती हैं और अध्यापकों की अपेक्षा अधिक थी। अराजकीय विद्यालयों में शिक्षण स्तर अपेक्षाकृत उच्च था और इन विद्यालयों में अध्यापकों की समस्याएँ अधिकतर उनका व्यवस्थापकीय सम्बन्ध थीं। भारद्वाज मिश्र (1963) ने सरकारी विद्यालयों के उद्घाटन के अध्ययन करके मान्यता दी कि विभाग का नया विद्यालय के माध्यम से उमर दस्तावेजों में शैक्षिक उत्प्रेरण पत्र बनाने का होता है। प्रशासकीय अध्यापकों का नज़र में रखने की परामर्शों में अपना परीक्षा पत्र उत्पन्न करने का लक्ष्य होता है। अधिकांश का प्रत्यावाहन प्रशिक्षण अध्यापकों में होता है और वह शैक्षिक नियंत्रण भी स्वयं ही संभाल लेता है। इन विद्यालयों में अध्यापकों की स्थिति अध्यापकों छात्रों और स्वयं प्रशिक्षण अध्यापकों में भी मौजूद थी।

बनस (1968) ने एक पाठशाला के पाठशाला में बनाए जा रहे दो विद्यालयों का समन्वय के सम्प्रणालीयता की समस्याओं की दृष्टि से अध्ययन किया और पाता कि एक पाठशाला व्यवस्था में अध्यापकों पर कार्यभार अधिक पड़ता है। एक पाठशाला विद्यालयों में अध्यापकों की वृद्धि कम होती है और कम संख्या में अध्यापकों विद्यालयों कायलापा में उत्साह प्रदर्शित करते हैं। द्विभाषी तथा बहुभाषी विद्यालयों के तुलनात्मक अध्ययन में प्रज्ञानागमनमिह (1971) ने पाया कि बहुभाषी विद्यालयों में अध्यापकों की समस्याएँ अधिकतर थीं और शिक्षण अप्रशिक्षित। न तो वहाँ व्यावसायिक कार्यों की धारणा थी न छात्र औद्योगिक या वास्तविक कार्यों में रुचि रखते थे। द्विभाषी विद्यालयों में विज्ञान शिक्षकों का कार्यभार ज्यादा पाया गया और दोनों ही प्रकार के विद्यालयों में प्रयोगशाला का अभाव। 89 प्रतिशत मामलों में भवन, स्थान उपकरण और वित्तीय समस्याएँ प्रमुख थी, शैक्षिक समस्याओं का स्थिति 72 प्रतिशत थी।

राजस्थान राज्य शिक्षा मन्थान उत्तरपुर ने विद्यालय-व्यवस्था के सम्बन्ध में अध्ययन किया * वह है प्रहरे पाठशाला का प्रयोग। प्रहरे पाठशाला में प्रयोग किया गया कि विद्यालयों का राज्य सरकार द्वारा नियमित समय पर ही न चला कर समुदाय के आवश्यकतानुसार दिन में बिना भी समय एक प्रहरे तक चलाया जाए और यह जांचा जाए कि प्रारम्भिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों एक प्रहरे पाठशालाओं में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों का उपनियमन में क्या अंतर है। निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि इन दोनों व्यवस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों की विकासमूलक उपनियमन में कोई अंतर नहीं आता और विद्यालय-व्यवस्था के अन्तर्गत प्रहरे पाठशालाओं का एक वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में स्वीकारा जा सकता है।

सम्भावनाएँ और सुझाव

शिक्षा के प्रकार एवं सामान्य सुविधाओं के अत्यधिक विस्तार के उपरान्त भी हम भविष्य में जो अध्ययन करें हैं उनकी गम्भीर सन्तानुभव प्रतीत नहीं हानी।

विद्यालय-व्यवस्था के जिन क्षेत्रों में कार्य किया गया है उनमें भी अभी शोध की दृष्टि से बहुत कुछ किया जा सकता है। साथ ही इन क्षेत्रों के अतिरिक्त भी विद्यालयी व्यवस्था के बहुत से ऐसे पक्ष हैं जिन पर शोधरताओं का ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ है या बिना ही कारणों से उन पक्षों को छोड़ा ही नहीं गया है। ये महत्वपूर्ण पक्ष विद्यालय भवन विद्यालयों की भौतिक साधन-सुविधाएँ, विद्यालय समुदाय के घटकों का परस्पर सहसम्बन्ध, विद्यालयों में अनुसूचनात्मक सुविधाएँ अध्यापकों का कार्य भार विद्यालयी स्वास्थ्य सेवाएँ, अभिभावक शिक्षक सहसम्बन्ध आदि हैं। इन पक्षों पर अध्ययन किए जाने से विद्यालयी व्यवस्था से सम्बन्धित वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की जा सकती है, जिनके आधार पर विद्यालयी कार्यप्रणाली को शिक्षा में उत्थान की दृष्टि से अधिक उपयोगी और प्रभावी बनाया जा सकता है।

व्यवस्था पक्ष में निजी संस्थाओं की तरह राजकीय संस्थाओं को भी आद्यन्त विद्यालय (कक्षा I से कक्षा XI तक पूरा एक साथ) बनाया जाए तो उनकी सम्प्राप्ति और समस्याएँ क्या रहेंगी—इस दिशा में प्रयोगात्मक कार्य करने की आवश्यकता है। स्तरवार अलग-अलग का प्रभाव आँकना, शिक्षकों में वेतनवार विभेदीकरण का प्रभाव या अनीचित्य खोजना, शक्ति नियोजन और अधिकारों के प्रत्यायोजन की बारीकियाँ का सर्वेक्षण, समय विभाग चक्र और विषयवार समयानुपात का नई परिस्थितियों में पुनरीक्षण, शिक्षकों के कार्यभार की व्याख्या तथा अन्य व्यवसायों से उसकी तुलना आदि ऐसे प्रसंग हैं जो इस क्षेत्र में अनुसंधान/प्रयोग की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मात्र छिद्रावेष्टन करने से कहीं बहतर होगा कि कुछ रचनात्मक प्रयोग किए जाएँ और उनके आधार से परिवर्तन की दिशाएँ खोजी जाएँ।

संदर्भ कृत अनुसंधान

- | | |
|----------------------|---|
| अबुलकलाम | A Comparative Study of Leadership Functions Performed by the Representatives and Stars of the Higher Secondary Classes
M Ed Raj Uni 1971 |
| अमरजीतसिंह | A Study of the Administrative Set up of a Govt. Higher Secondary School at Udaipur
M Ed Raj Uni 1963 |
| उपाध्याय विनोदचन्द्र | उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में खेलकूद एवं शारीरिक शिक्षा का प्रशासन एवं संगठन,
एम एड राज वि वि, 1973 |
| कमल केवलदृष्ट | A Study of the Administrative Set up of a Privately Managed High School of Udaipur
M Ed Raj Uni 1963 |
| महंती नारहरसिंह | A Case Study of the Programme of Instructional Supervision in Vidya Bhawan M P H S School Udaipur
M Ed Udaipur Uni 1965 |

- गुप्ता रमणचन्द्र विद्यालय के विभिन्न वर्गों के प्रश्न छात्रों की अभिवृत्ति,
एम एड, राज वि वि 1970
- धननन्दन A Study of the Causes of Truancy in IX
Class Boys Reading in Higher Secondary
Schools of Jodhpur
M Ed Jodhpur Uni 1970
- श्रीमान उषाशिव A Study of the Instructional Supervision in
Secondary Schools of Udaipur City,
M Ed Udaipur Uni 1970
- जन कुन्दनलाल The Role of Student Unions in the Higher
Secondary Schools of Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1966
- जन बाबूलाल A Comparative Study of the Administrative
Problems of Government and Privately
Managed Secondary and Higher Secondary
Schools of Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1969
- तापनीबान धनश्यामलाल A Study of Factors Differentiating Academ-
ically High and Low Achieving Schools
M Ed Udaipur Uni 1968
- त्रिवेणी जी एम Some Problems of Administration of High
Schools in Udaipur
M Ed Raj Uni 1957
- शिव, धर्मनन्दन जी Teacher Participation in Decision Making in
Higher Secondary Schools of Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1972
- नारण धर्मनन्दन A Study of Communication Channels in a
Large Multipurpose School
M Ed Udaipur Uni 1966
- नमिन्द्राज उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत छात्र सतर्कों का
अध्ययन
एम एड राज वि वि 1973
- प्रह्लादनारायणशिव उदयपुर क्षेत्र की द्वितीयक एवं तृतीयक उच्च माध्यमिक
विद्यालयों में प्रशासनिक समस्याओं का तुलनात्मक
अध्ययन,
एम एड, राज वि वि, 1971
- बाहुरा देवराज राजस्थान में उच्च प्राथमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों
की स्थिति
राज शिक्षा मन्थन, 1973
- भास्कराज, शक्ति A Comparative Study of the Administrative
Problems of the Teachers Working in Govt
and Privately Managed Secondary and
Higher Secondary Schools of Udaipur City
M Ed Udaipur Uni 1966

माधुर छलबिहारी	An Investigation into the Functioning of Staff Councils in the Secondary Schools of Udaipur M Ed Raj Uni 1963
मिश्र कपिलदेव	Case Study of Institutional Planning in a School M Ed Raj Uni 1974
बर्मा पतानाल	A Study of Problems of Coordination and Communication in Double shift and Single-shift Schools M Ed Udaipur Uni 1968
शर्मा केदारनाथ	A Case Study of a Multipurpose Higher Secondary School of Udaipur, M Ed Udaipur Uni 1966
शर्मा जगदीशदत्त	A Critical Appraisal of the Implementation of School Improvement Plans in Rajasthan SIE Udaipur 1974
शर्मा, लालचन्द	सामाजिक आर्थिक स्तर, बुद्धि और लिंग भेद के सहर्ष में शालाओं में अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन एवं इसका निष्पत्ति पर प्रभाव एम एड राज वि वि, 1972
शर्मा शिवकुमार	A Study of the Staff Relations in the Multi purpose Higher Secondary Schools of Rajasthan Ph D (Ed) Udaipur Uni. 1969
शुक्ला, के सी	The Pattern of Relationship between the Head and the Members of the Staff in two Higher Secondary Schools of Udaipur M Ed Raj Uni 1964
सबमना राज्यधी	Functioning of the Teachers Councils in the Girls Secondary and Higher Secondary Schools M Ed Raj Uni 1972
सबमना स्वराज्यदेवी	बीकानेर मण्डल के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कार्य-व्यवस्था का अध्ययन, एम एड, राज वि वि, 1971
सरोजनीश्वरी	ग्रामीणीय विद्यालय में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षिक संप्रति, व्यक्तित्व की विशेषताओं तथा मनोकांक्षनाओं का अध्ययन, एम एड, राज वि वि 1971
सूद जे ओ के	Sharing of Responsibilities in School Organisation M Ed Raj Uni 1964

समाज शिक्षा

□ मोहम्मद हुसैन

समाज शिक्षा एक सामाजिक म राजनैतिक एक आर्थिक-सामाजिक सामूहिक चेतना जागृत करने, उनका अपन कर्तव्य एक अधिकार न प्रति मजबूत करने का एक मशकत सामान्य है । प्रजातन्त्र का मुक्त करके एक का समृद्धिमाना एक निश्चिन्ता बनाने में यह कार्यक्रम काफी सहायक हो सकता है । राजस्थान में राजनैतिक विकास के साथ ही यह कार्यक्रम मात्रावद्ध तरीके से आरम्भ होना । सर्वप्रथम हमका आरम्भ प्रौढ-माधरणा अभियान के रूप में हुआ । प्रौढ साक्षरता में प्रौढ शिक्षा तथा उसके परचान् समाज शिक्षा के रूप में यह कार्यक्रम व्यापक एक विस्तृत होना चना गया और एक नई सकल्पनाएँ उभर कर आई । प्रौढ-माधरणा प्रौढ शिक्षा व्यावहारिक साक्षरता, सामुदायिक शिक्षा सतत शिक्षा अनवरत शिक्षा ज्ञान प्रसारक साक्षरता अनीपचारिक शिक्षा आजादन शिक्षा आदि सभी मध्यम समाज शिक्षा के क्षेत्र में समाहित है और हम महत्व एक हमका उपस्थिता में उत्तमगमन वृद्धि के परिचायक है ।

राष्ट्रीय स्तर के हम मन्त्रपूण कार्यक्रम के स्वरूप मगठन, प्रबन्ध एक होन पक्षा की समीक्षा समानाधना एक सर्वेक्षण करके हम मुक्त सवाजन हनु उपाय सुमाना अनुमधानवर्तिका का एक पुनीत कर्तव्य है ।

आन्ध्र प्रदेश में राजस्थान में समाज शिक्षा के क्षेत्र में कुल 12 अनुमदान उपनगर हैं जिनमें में चार एम एच स्तर के चार एम ए (ग्रामीण समाज शास्त्र) के एक अतिरिक्त प्रौढ शिक्षा एक तान प्रौढ स्तान उपाधि के लिए किए गए थे । हम न एन शाधकाय प्रौढ-साक्षरता एक छठ समाज शिक्षा का अध्ययन करने हनु किए गए । ये शाधकाय सर्वेक्षण और प्रवरण अध्ययन की विधा पर आधारित है । अधिसाग पात्र कार्यों में प्रश्नात्तरी साक्षात्कार प्रपत्र एक अवगाहन प्रपत्रा का उपयोग किया गया है । पाठ्य सामाजिक एक चहरी जाना ही परिकल्पना में किए गए हैं परन्तु उनका आकार बहुत ही छोटा है । पाठ्य के छोटे आकार तथा समम्याया की विविधता के कारण किसी प्रकार का सामाजीकरण अथवा प्रवृत्ति निरूपण सुमगन प्रतात नही जाना । अतः प्रौढ-माधरणा एक समाज शिक्षा में सम्बद्ध हम शाध कार्यों का अलग अलग विवरण यहाँ प्रस्तुत है ताकि स्थानीय प्रवृत्ति का निरूपण हो सक तथा नार्वी शाधकार्यों के लिए शिक्षा निर्माण हो सक ।

प्रौढ-साक्षरता कार्यक्रम की समीक्षा सम्बन्धी शोधकार्यों के विश्लेषण से पता चलता है कि सामान्यतया यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक नहीं चल पा रहा है। इन शोधकार्यों से यह भी पता चलता है कि इस कार्यक्रम के सफल संचालन में इसका प्रति प्रौढ की उदासीनता एवं उत्प्रेरणा का अभाव (शर्मा 1972), कार्यक्रम शिक्षका की उत्पत्ती, प्रोत्साहन राशि का न मिलना (शर्मा 1972, रामावत 1974, मिश्रा 1974), अपर्याप्त प्रचार प्रसार एवं सम्बन्धित अधिकारियों की उदासीनता, सहयोग एवं समन्वय का अभाव, क्षेत्र पर साधन सुविधाओं (शिक्षण सहायक सामग्री) का अभाव एवं शिक्षण विधियों की अनुपयुक्तता (शर्मा 1972, मिश्रा 1974, रामावत 1974), मुख्य रूप से बाधक कारण हैं। महिला प्रौढ शिक्षा-क्षेत्र पर उपरोक्त कारणों के प्रतिरूप पुराने रीतिरिवाज, रूढ़ियाँ समुदाय पर की प्रतिकूल मनावृत्ति, बच्चा की दखरेन की समस्या एवं नव विवाहिताओं की पीढ़ी तथा समुदाय के बीच आकांक्षाही भादि बाधक तत्व हैं (मिश्रा 1974)। अधिक आयुवर्ग के प्रौढों में बीच में ही अध्ययन छोड़ देने की प्रवृत्ति अधिक है। जाति वर्ग का अंतर का इस प्रवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं है (जन 1972)। जन (1972) के ही अनुसार अधिकांश प्रौढ अपना हिसाब कितान रखते हैं एवं धार्मिक पुस्तकें पढ़ने की योग्यता में वृद्धि करने हेतु प्रौढ शिक्षा क्षेत्र में अध्ययन करते हैं। तिस्रोहिया (1972) ने पता किया है कि रात्रि महाविद्यालयों में अध्ययन करते प्रौढ अपनी धार्य बढ़ाने एवं जीवन स्तर ऊँचा उठाने हेतु अध्ययन करते हैं। योगी (1974) ने अपने शोधकार्य में निष्कर्ष निकाला है कि प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम शिक्षा के प्रति रुचि जागृत करने तथा सामाजिक बुराईयों को दूर करने में सहायक हो सकता है।

समाज शिक्षा के क्षेत्र में सम्पादित शोधकार्यों में से एक समाज शिक्षा के प्रति कार्यकर्ताओं की धारणाओं एवं दृष्टिकोण पर (विश्वनोई 1964), एक समाज शिक्षा के अंतर्गत संचालित पुस्तकालयों के सदस्यों की रुचियों पर (सिंह 1965), और चार समाज शिक्षा कार्यक्रमों के अंतर्गत मूल्यांकन एवं समीक्षा से सम्बंधित हैं (सिराहिया 1957, व्यास 1970, शर्मा 1964, कर्णावट 1954)। विश्वनोई (1964) के अनुसार समाज शिक्षा से सम्बंधित विभिन्न कार्यकर्ता इस कार्यक्रम की धारणा, संकल्पना, उद्देश्य एवं उपाययता के बारे में न तो स्पष्ट हैं और न ही एकमत। ये कार्यकर्ता अपने व्यवसाय से असंतुष्ट एवं बसंत व्या के प्रति उदासीन भी हैं। सिंह (1965) ने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि कम आयु एवं अधिक शैक्षिक योग्यता प्राप्त प्रौढ पुस्तकालयों में नियमित रूप से उपस्थित रहते हैं, वे राष्ट्रीय समाचारों को प्राथमिकता देते हैं एवं धार्मिक पुस्तकों की अपेक्षा हिन्दी साहित्य के प्रति अधिक रुचि रखते हैं। यह अध्ययन बिहार राज्य के प्रान्तों पर आधारित है। राजस्थान की पठन-भूमि में वृद्धावृद्धि भिन्नता पाई जा सकती है। जिन चार शाख कार्यों में समाज शिक्षा की समीक्षा एवं उसका मूल्यांकन किया गया है उनके विश्लेषण से पता होता है कि युवक मण्डल सामुदायिक क्षेत्र एवं पुस्तकालय सेवा सामान्यतः सफलतापूर्वक चल रहे हैं। (सिराहिया 1957 शर्मा 1964)। सभी शोधकार्य इस ओर इंगित करते हैं कि समाज शिक्षा कार्यक्रम कुन मिलाकर सुचारु रूप में संचालित नहीं हो पा रहा है।

उत्तर प्रश्न एवं चुन चुनो का सुलभतायक अध्ययन करना व साथ ही वायव्याया के प्रशिक्षण का स्वरूप, उत्तरी यात्रायाया, विमपयाया एवं मनातृत्तिया का निर्धारण भी किया जाता है। समाज शिक्षा प्रसार करने की प्रयास पद्धतियाँ एवं रीतियाँ प्राप्त की यान्त्रिक तकनीक के साथ उत्तरी समायायन, समाज शिक्षा की प्रत्यक्षता, विधि, पद्धत अध्ययन, साहित्य का स्वरूप, प्रयास तकनीक आदि व बार व प्रयास एवं परीक्षण करता अध्ययन है। शिक्षण में मध्यम नामधो, यथा शिक्षा धलतिश, काटूता वृत्तुतिया, नाटिकाया, रेडियो, टेल्ग्राफिकन एवं अभिव्यक्ति अध्ययन नामधो की प्रभावनीयता का सुलभतायक अध्ययन तथा इन वायव्याया की जीवत व शिवात्मता तथा म जाटा तथा सामुदायिक शिक्षा का रूप देने व सम्बन्ध में प्रयास किया जाता चाहिए। तबलेन स्वरूप नाया यथा-धनोरगायिका शिक्षा, छात्रायन शिक्षा, गान शिक्षा आदि व अध्ययन म पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तका, प्रतृत्तिया एवं पद्धतिया व शिक्षा प्रयन के अध्ययन का भी समाज शिक्षा के वृत्तार क्षेत्र में सम्मिलित किया जा सकता है।

यहाँ यह सुचेन करना आवश्यक है कि जहाँ एवं धार उपाधि प्राप्त करने वाले साथ छात्रा का इस क्षेत्र में अनुसंधान के लिए उत्प्रेरित करना की आवश्यकता है यहाँ सम्पादन एवं प्रयाजनान्तगत अनुसंधान-कार्यो का उचित प्रारम्भ एवं अनुशासन प्रदान करना, इन पया पर तथ्यात्मक सूचनाएँ प्रशिक्षित करवाकर उन्हें समाज शिक्षा में समर्थ सम्पादा एवं वायव्याया का उपलब्ध कराना भी आवश्यक नाया।

संदर्भा कित अनुसंधान

- | | |
|-----------------|--|
| बर्नार्ड बानसिह | A Plan of Social Education for Rajasthan
M Ed Raj Uni 1954 |
| जन, एम एन | A Study of Factors of Continuity and Drop
outs in Three Rural Adult Literacy Centres
M A (Sociology) Udaipur Uni 1972 |
| जिनाह एन एन | Social Education as Perceived by Block Fun
ctionaries
M A (Sociology) Udaipur Uni 1964 |
| मिश्रा शकुन्तला | श्रीवाणेर नगर में प्रवर्तमान प्रौढ़ महिला साक्षरता वाय
क्रम (संगठन शिक्षण पद्धति एवं सामधो) का सधा
नात्मक अध्ययन,
एम एड राज वि वि, 1974 |
| यागी जा यो | Aspirations towards Education of the Guar
dians in Scheduled Castes
B A (Adult Edu) Raj Uni 1974 |
| रामाचत, मंगलचत | विद्यालय निरीक्षण समितेर द्वारा परिचालित 'रात्रि
विद्यालय परियोजना' का आलोचनात्मक अध्ययन,
एम एड राज वि वि, 197 |

- श्याम जी डी A Study of Adult Education Programme in
Bikaner City
B A (Adult Edu) Raj Uni 1970
- शर्मा एच एन Adult Literacy Programme in Panchayat
Samiti Bandikui
B A (Adult Edu) Raj Uni 1972
- शर्मा, डा सी Evaluation of Social Education Programme
in Badgaon Block
M A (Sociology) Udaipur Uni 1964
- तिरोहिया जगतसिंह Critical Appraisal of Social Education Pro-
gramme
M Ed Raj Uni 1957
- सिंहादिया बालू A Study of the Level of Aspiration of Stu-
dents in the Night Colleges
B A (Adult Edu) Raj Uni 1972
- सिंह, आ ए पी Reading Interests of the Members of Five
Village Libraries in Bihar
M A (Sociology) Udaipur Uni 1965



परिचय

श्री इन्द्रजीत खन्ना जन्म 1943, दिल्ली, सीनियर कमिज एम एससी (गणित) जमान भाषा में डिप्लोमा प्राप्त, भारतीय प्रशासनिक सेवा में 1966 में चयनित, तब से विभिन्न प्रशासनिक पदा पर कार्यरत, 1975 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के अध्यक्ष रहें राजस्थान में शिक्षा पर उच्चस्तरीय समिति (1975) के सदस्य-सचिव, शिक्षा पर उच्चस्तरीय समिति प्रतिवेदन के प्रधान सम्पादक, शिक्षा पर कई लेख प्रकाशित तथा अनक रेडियो वार्ताएँ प्रसारित, सम्प्रति शिविरा एवं नया शिक्षक के प्रधान सम्पादक तथा निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर।

डा. पद्मलाल वर्मा जन्म 1934, नागौर जिला एम ए (अंग्रेजी), एम ए (संस्कृत), एम एड (स्वल्प पदक विजेता) बीएच डी (शिक्षा), अध्यापन का त्रिविध स्तरों का लम्बा अनुभव, 1972 में समीनार रीडिंग्स प्रोग्राम के अंतर्गत पुरस्कृत, एन सी ई आर टी प्रायोजना पर एक वर्ष सीनियर रिसर्च फेला रहें, राज्यस्तरीय, राष्ट्रस्तरीय तथा एशिया स्तरीय शिक्षा समीनारों में भाग लिया - पत्रवाचन किया विभिन्न पत्रिकाओं में लगभग एक दर्जन भाषा लेख तथा शिक्षा पर बीस निबंध प्रकाशित सम्प्रति अनुसंधान अधिकारी, राज्य बोध प्रकाष्ठ शिक्षा निदेशालय, बीकानेर।

श्री रवीन्द्र अग्निहोत्री जन्म 1937, लखनऊ, एम ए एम एड तीन परीक्षाओं में विश्वविद्यालय स्तर पदक विजेता, देश की विभिन्न शैक्षिक पत्रिकाओं में लगभग 150 शिक्षा संबंधी लेख प्रकाशित शिक्षा संबंधी छह पुस्तकें प्रकाशित - चार मौलिक तथा दो अनुसंधान। भारतीय शिक्षा दशा और दिशा पर उत्तरप्रदेश सरकार ने 1974-75 में मन्मोहन मानवीय पुरस्कार प्रदान किया वर्तमान में कतिपय भाषा प्रयाजनाया तथा पाण्डु डी भाषा काय में संलग्न, सम्प्रति राजस्थान शिक्षा मन्त्रालय बनसली विद्यापीठ।

नाराज जी	A Study of Adult Education Programme in Bikaner City B A (Adult Edu) Raj Uni 1970
शर्मा लक्ष्मण	Adult Literacy Programme in Panchayat Samiti Bandikui B A (Adult Edu) Raj Uni 1972
शर्मा टी मा	Evaluation of Social Education Programme in Badgaon Block M A (Sociology) Udaipur Uni 1964
सिराहिया जगतसिंह	Critical Appraisal of Social Education Programme M Ed Raj Uni 1957
मिस्राजिया, शान्ता	A Study of the Level of Aspiration of Students in the Night Colleges B A (Adult Edu) Raj Uni 1972
सिंह आर पा	Reading Interests of the Members of Five Village Libraries in Bihar M A (Sociology) Udaipur Uni 1965



परिचय

श्री इन्द्रजीत खन्ना जन्म 1943, दिल्ली, सीनियर केम्ब्रिज, एम एससी (गणित), जमन भापा में डिप्लोमा प्राप्त, भारतीय प्रशासनिक सेवा में 1966 में चयनित तब से विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्यरत, 1975 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के अध्यक्ष रहे। राजस्थान में शिक्षा पर उच्चस्तरीय समिति (1975) के सदस्य सचिव, शिक्षा पर उच्चस्तरीय समिति प्रतिवेदन के प्रधान सम्पादक, शिक्षा पर कई लेख प्रकाशित तथा अनेक रेडियो वार्ताएँ प्रसारित, सम्प्रति शिविरा एवं नया शिक्षक के प्रधान सम्पादक तथा निदेशक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

डा. पन्नालाल वर्मा जन्म 1934 नागौर जिला, एम ए (अंग्रेजी), एम ए (संस्कृत), एम एड (स्वयं पदक विजेता) पीएच डी (शिक्षा), अध्यापन का विविध स्तरों का लम्बा अनुभव, 1972 में सेमीनार रीडिंग्स प्रोग्राम के अंतर्गत पुरस्कृत एन सी ई आर टी प्रायोजना पर एक वर्ष सीनियर रिसर्च फेलो रहे, राज्यस्तरीय, राष्ट्रीयस्तरीय तथा एशिया स्तरीय शिक्षा सम्मेलनों में भाग लिया - पत्रवाचन किया विभिन्न पत्रिकाओं में लगभग एक दर्जन शोध लेख तथा शिक्षा पर बीस निबंध प्रकाशित, सम्प्रति अनुसंधान अधिकारी, राज्य शोध प्रकोष्ठ, शिक्षा निदेशालय, बीकानेर।

श्री रवीन्द्र अग्निहोत्री जन्म 1937, लखनऊ, एम ए एम एड, तीन परीक्षाओं में विश्वविद्यालय स्वयं पदक विजेता, देश की विभिन्न शैक्षिक पत्रिकाओं में लगभग 150 शिक्षा संबंधी लेख प्रकाशित शिक्षा संबंधी छह पुस्तकें प्रकाशित - चार मौलिक तथा दो अनूदित। भारतीय शिक्षा दशा और दिशा पर उत्तरप्रदेश सरकार ने 1974-75 में मन्मोहन मालवीय पुरस्कार प्रदान किया, वर्तमान में अनपेक्षित लाभ प्रयोजनाओं तथा पीएच डी लाभ कार्य में संलग्न, सम्प्रति प्राख्याता शिक्षा महाविद्यालय, बनसखली विद्यापीठ।

श्री वारे इ ममरवान जम 1936 जगौर सम स सम सम (स्वयं पत्रक विज्ञा)
 निष्क प्रणिष्ण म पांच वष ना अध्यापन अनुभव सा ना विभिन्न शास्त्र
 पत्रिकाया म 13 वर्ष प्रकाशित अग्रजा निष्ण म पाणव हा साय वाय म
 गहन सम्पत्ति प्रवना (निष्ठा) निष्ठा भगविद्यालय वनस्थिता विद्यापीठ ।

डा इशामलाल बोसिक जन्म 1929 यू पा लम ल (जिन्हा) लम ल (द्वद्रा)
लम लट पाण्डु डा (जिन्हा) पिटन छाठ वर्षों मं डा लम लम लट
रन्हाणें पन्नाल वा अनुभव अर तन 4 पुष्करें तया जिन्हा सबरा विपदा पर
तगभग 150 तग प्रकाशित विभिन्न समानाग म पत्रवाचन विद्या मन्ध्य
द्वन्ति २२ 1966 म समानार गन्तिग प्राणाम र अतगत पुष्कृत सम्प्रति
पुष्कृत प्राण्याना गन्तवाय जिन्हा प्रणिगण मन्विद्यातर गानतर ।

श्री पुष्पात्तमन्त्रालय निवारो जम 1928 उन्मुख विना लम ल लम ल विविध
मन्त्रा पर अध्यापन का उम्मा अनुभव विना भाषा र भाषा विना विना
रवि का क्षेत्र उमा विषय क विभिन्न पन्ना पर लपनन 20 लप प्रकाशित
विठन 12 वर्षों म लन मा २ धार ल लप ल ल म लम मचाविन
विविध म मन्त्रा ध्यनि पन्नी म लमवा कथा लव की लम ल तथा लपुल
लन पर विनी पाछुपुलका विनन मन्त्रिकाप्रा लया पाछुपुलन निमाण
का लमीटिया क निमाण का अनुभव ललललन म लया लन मी २ धार ल
लम प्रकाशित विना विषय का पाछुपुलका क मन्त्रा लन क निमाण म
पागलन विना भाषा विनन म लवविन 4 पुलके प्रकाशित मन्त्रा
मन्त्रा क विनागीन प्रकाशन विविध लललन ।

[illegible][illegible]

डा छैलबिहारी माधुर जन्म 1927, जयपुर, एम ए एम एड, पीएच डी (शिक्षा), टी ए टा की भारतीय परिप्रक्ष्य में व्याख्या सम्बन्धी नूतन तकनीक का निर्माण किया, बी एड कक्षाएँ पढ़ाने का 10 वर्ष का तथा एम एड कक्षाएँ पढ़ाने का छह वर्ष का अनुभव, शिक्षा के विभिन्न पक्षा पर अनेकों लेख प्रकाशित विज्ञान सम्प्राप्ति परखा के निर्माता शक्ति निर्देशन सभाओं का चिन्तामय दम से प्रस्तुतीकरण कला में मनाविमान में विशेष रुचि पीएच डी गाइड, सम्प्रति प्रोफेसर, राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महा विद्यालय बीकानेर ।

डा चन्द्रप्रकाश माधुर जन्म 1940 जोधपुर, एम एड, पीएच डी (शिक्षा), राजस्थान गाइड्स यूज सटर का तीन वर्ष तक सम्पादन कार्य किया, लगभग एक दर्जन गोष्ठि लेख प्रकाशित, निर्देशन सेवाओं के लिए 1966 में राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत, सम्प्रति अध्यापक, राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीकानेर ।

श्री जगदीशभारादर पुरोहित जन्म 1930, भीलवाड़ा जिला, एम ए एम एड, बी एड कक्षाएँ पढ़ाने का नौ वर्ष का अनुभव माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक के प्राशिक्षण, अनीपचारिक शिक्षा, शक्ति मूल्यांकन प्रशिक्षण शिविरा आदि में सदस्य व्यक्ति का कार्य किया, महत्वपूर्ण विचार गोष्ठियाँ में पत्र वाचन किया, शिक्षा पर प्रकाशित चार पुस्तकों में सहलेखक तथा 'शिक्षण के लिए आयोजन पुस्तक के लेखक, कई शोध लेख तथा शक्ति निबंध प्रकाशित, एन सी ई आर टी द्वारा स्वीकृत अनुसंधान एवं अनुदान प्राप्त आयोजनाओं में मुख्य अनुसंधानकर्ता रहे सम्प्रति प्राध्याता राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय अजमेर ।

श्री कृष्णगोपाल बीजावत जन्म 1934, अजमेर एम ए (हिन्दी) एम ए (प्रबंधशास्त्र) एम ए (शिक्षा), बी एड स्तर पर स्वयं पदक विजेता, चार प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों तथा तुलनात्मक शिक्षा नामक पुस्तक में लेखक, 10+2 योजना के अंतर्गत एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाश्य हिन्दी गद्य एवं पद्य पुस्तकों के सम्पादन में सलग कई शक्ति गोष्ठियाँ में पत्र वाचन किए, अजमेर के शक्ति विकास पर पीएच डी भाष्य कार्य में सलग सम्प्रति प्राध्याता राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय अजमेर ।

श्री बजरंगलाल भोवक जन्म 1926, सरदारशहर एम ए एम एड सी आई ई हेरारावत से अंग्रेजी में विशेष प्रशिक्षण, प्रशिक्षण महाविद्यालय की कक्षाएँ पढ़ाने का 15 वर्ष का अनुभव विश्वविद्यालय शिक्षण संस्थाओं, सामाजिक समस्याओं आदि के भाष्यों में निम्न भिन्न भूमिकाओं में मण्डल भारत की विभिन्न पाठ्य पत्रिकाओं में कई शक्ति शोध लेख प्रकाशित सम्प्रति प्रोफेसर गांधी विद्याभवन बर्मिक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, मरणागछी ।

डा अरविन्द बी काटव जन्म तमसी तम तम पीणव २५ (गि ११), विगत पन्द्रह वर्षों में शिक्षाभवन में सहायक, प्राध्यापक सम्पन्न तम उ मा विद्यालय व आचार्य पत्र पर कार्य किया स्नातकान्तर एवं पीणव २५ स्तर का अध्यापन अनुभव राज जिन्नी ग्रन्थ अन्तर्भागी द्वारा प्रकाशित २५ पुस्तिका व तम, भारत की विभिन्न शक्ति पत्रिकाओं में विज्ञान संबंधी व तम प्रकाशित, सम्प्रति प्राध्यापक शिक्षाभवन शिक्षा मन्त्रालय, उत्तरपुर ।

श्री कलाशिवहारी वाजपेयी जन्म 1936 उत्तरपुर तम त (अग्नेय) तम त (स्वयं पत्र विज्ञान), मचम्पू यूनिवर्सिटी (तम) में २५ ई आ म विज्ञान प्राप्ति, अमरीका जाकर वी स्टन यूनिवर्सिटी यूनिवर्सिटी में धर्म तथा ध्वनि विज्ञान एवं पटा योग्यताओं का मन्त्रालय सम्पन्न पाठ्यक्रम पूरा किया सम्प्रति प्रणामन एवं प्रधानाध्यापक राजराज नरान माध्यमिक विद्यालय उत्तरपुर ।

श्री सत्यप्रकाश शर्मा जन्म 1928, तम काम, तम त 15 वर्ष का अध्यापन अनुभव तथा 11 वर्ष का उपनिरीक्षण परामर्श राज्य निरीक्षण केंद्र एवं प्रधानाध्यापक का अनुभव शिक्षा पर व तम प्रकाशित 1969 में गान्धेय यूज लटर का संपादन किया शिक्षानुसंधाना वारपाठ के अध्यापन २५ सम्प्रति प्रधानाध्यापक, जौरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तानू (नागौर) ।

डा मुत्तराम चित्ताना जन्म 1934 पाकिस्तान (पञ्जाब) तम त तम पीणव २५ (गि ११) पास्त्रेजुण्ड डिप्लोमा (यूनिसा) 1970-71 में यूनिसा में वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी रहे अतः शिक्षा तथा अनुसंधान में 200 में भी अतिरिक्त तम त विज्ञान की पत्रिकाओं में प्रकाशित अध्यापक का सहायक अध्यापन पुस्तक के तम, पीणव २५ गान्धेय, सम्प्रति प्राध्यापक क्षेत्राध्यक्ष शिक्षा मन्त्रालय, अजमेर ।

श्री प्रकाशचन्द्र द्विवेदी जन्म 1942 पत्नी (वैभव), तम त (राजनीति शास्त्र), तम त, शिक्षानुसंधान एवं तम में विगत २५ सम्प्रति महायक प्रधानाध्यापक, राजकीय आगवान उ मा विद्यालय अजमेर ।

श्री हरिचन्द्र मिश्र जन्म 1928 तम त तम त मा तम त तम (आत्मन) अध्यापन तथा प्रणामन का तम अनुभव, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शिक्षा संबंधी व तम प्रकाशित सम्प्रति तम प्रायोजन अधिकारी शिक्षा विभाग मन्त्रालय जयपुर ।

श्री सूरजनारायण राव जन्म 1922 चीमू (जयपुर), एम ए (अर्थशास्त्र), एम ए (राजनीति शास्त्र), एम एड (स्वण पदक विजेता) लगभग 35 वर्षों का अध्यापन एवं प्रशासन संबंधी अनुभव, सम्प्रति प्रधानाचार्य राजकीय पोद्दार उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर।

श्री विद्यासागर शर्मा जन्म 1936, जिला भीलवाड़ा, एम एससी, एम एड, पीएच डी (शिक्षा) सम्पन्न, राजस्थान की पंचवर्षीय शिक्षा योजना की तयारी में योगदान रहा, सस्थान-स्तरीय प्रायोजनाएँ प्रकाशित, शिक्षा पर कई लेख प्रकाशित, सम्प्रति राज्य शिक्षा सस्थान उदयपुर में सहायक निदेशक।

श्री शशिलेखर व्यास जन्म 1933, उदयपुर, एम ए बी एड राज्य-स्तरीय कायगाष्ठियों में सम्मेल्य व्यक्ति, अंग्रेजी भाषा में तीन प्रकाशित पुस्तिका के लेखक, लेखन, सम्पादन व अनुसंधान में विशेष रुचि, सम्प्रति अनुसंधान सहायक, राज्य शिक्षा सस्थान उदयपुर।

श्री मोहम्मद हुसैन जन्म 1940, उदयपुर, एम ए एम एड (स्वण पदक विजेता), अभिनवित अध्ययन में विशेषण के नाते कई प्रशिक्षण शिविरो तथा नवाचारा पर आयोजित मगाष्ठिया में सदस्य व्यक्ति रहे देश की विभिन्न शिक्षा संबंधी परिव्यामा में अज्ञो लेख/शोध लेख प्रकाशित, टीचिंग ऑफ इंग्लिश के लेखक, सम्प्रति प्रधानाध्यापक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, रीछड़ (उदयपुर)।

श्री उषासुंदरी खली जन्म 1928 एम ए, एम एड, अध्यापक एवं प्रशासक के रूप में 27 वर्षों का अनुभव, शिक्षण प्रशिक्षण, विद्यालयी शिक्षा, पूर्व विद्यालयी शिक्षा व प्रीट शिक्षा के संबंध में अनेक लेख प्रकाशित, यूनेस्को फलाशिप के अंतर्गत एजुकेशनल प्लानिंग का अध्ययन कर रही हैं, सम्प्रति उपनिदेशक (प्रशासन) शिक्षा निदेशालय, बीकानेर।

श्री चतुरसिंह मेहता जन्म 1932 सोजत (पाली), एम ए, एम एड शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों का 26 वर्षों का अनुभव, शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित विद्यालय योजना तथा विद्यालय समूह के सहलेखक, राज हिंदी ग्रंथ प्रकाशनी द्वारा प्रकाशित शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धांत एवं समस्याएँ खण्ड 1 व 2 के सहलेखक राजस्थान की उच्च प्राथमिक कक्षाओं की सामाजिक पान पुस्तिका के सहलेखक, शक्ति पत्र परिव्यामा में शिक्षा संबंधी अनेक लेख प्रकाशित, सम्प्रति प्रोफेसर राजकाय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीकानेर।

श्री भगवानलाल व्यास जन्म 1925, कुशनगढ़ (बीसवाण), एम ए एम एड अध्यापन एवं शिक्षा प्रशासन का विविध स्तरों का सम्मेल्य अनुभव, राज्य स्तरीय

विभिन्न समीनारा म राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया, भारत के विभिन्न राज्या-तामिलनाडु पाकिस्तान, बंगल, महाराष्ट्र कनाटक, आंध्रप्रदेश, गुजरात-म भेज गए अध्यापन सेवा का नगत्व किया, शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित पांच पुस्तिका का लेखन/सम्पादन कार्य किया, विभिन्न शैक्षिक संगठना की नीति निर्धारण से संबंध, सम्प्रति निम्नशक, राज्य शिक्षा सस्थान, उदयपुर ।

श्री जनार्दन प्रसाद शर्मा जन्म 1928 एम ए (अर्थशास्त्र), एम एड , विभिन्न स्तर पर अध्यापन एवं प्रशामन का लम्बा अनुभव, उच्चैष्ठ सेवाका के लिए 1971 में राष्ट्रीय पुष्कर द्वारा सम्मानित, शक्ति एवं सामाजिक विज्ञान का पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित, शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकालय संबंधी पुस्तक के महत्वपूर्ण, शिक्षा संबंधी कई लेख प्रकाशित सम्प्रति शिक्षा अधिकारी, उदयपुर ।

□

